डा. श्याम पाराशर

गृह दृष्टिफल रहस्य



ग्रह दृष्टिफल रहस्य

ग्रह राशि, ग्रह भाव, भावेश-भाव स्थिति एवं
ग्रहों की परस्पर दृष्टि और युति जनित
प्राचीन मान्यतानुसार फल-निरूपण
और
आज तक के किसी भी ज्योतिष ग्रन्थ में अप्राप्य
सामान्य रूप से निरूपित उपरोक्त फलों का
ज्योतिषीय व्यवहार में प्रयोगात्मक
प्रस्तुतीकरण
तथा विचारणीय जन्म कुण्डली के सन्दर्भ में उपरोक्त
फलों को उपयुक्त ग्राह्यता सम्बन्धी विवेचना

•

लेखक

डॉ. श्याम पाराशर

(ज्योतिर्विद, कार्तान्तिकाचार्य)

•

प्रकाशक

दी ... क

कंचन मा ... आगरा–3

❖ प्रकाशक :

दीप पब्लिकेशन

अस्पताल मार्ग, आगरा-3

Ph : 2261220, 2111145

❖ लेखक

डॉ. श्याम पाराशर

❖ I. S. B. N.—81-87250-41-0

❖ मूल्य : 120/–रु.

❖ Typesetting— MRP Typesetting unit

❖ मुद्रक :

रामकृष्ण मुद्रणालय, आगरा—282 002

GRAH DRASHTIPHAL RAHASHYA

by : Dr. Shyam Parash

निवेदन

जब हम आकाश में देखते हैं तो एक ऐसा महान विस्तार दिखाई देता है—नीली गहनता का, जिसका न कोई अन्त ही मालूम होता है और न आदि ही। रात्रि की करोड़ों-अरबों तारों और चन्द्रमा की शोभा से वह भर जाता है, आकाशगंगा की दूधिया मार्ग आकाश को सजा देता है। दिन में दिवाकर का प्रखर आलोक उन्हें छिपा देता है; वह एकमात्र अपनी ही ज्योति से संसार और आकाश को प्रकाशित करता हुआ प्राची से उदय होकर पश्चिम तक के एक लम्बे मार्ग को तय करके अस्त हो जाता है।

इस विस्तृत निस्सीम आकाश में चमकने वाले तारों की तरह ही हमारी पृथ्वी भी एक तारा है। किसी अन्य तारे पर पहुँचकर यदि इस पृथ्वी को देखें तो यह भी वैसी ही दिखाई देती, जैसे अन्य तारे। कोटि-कोटि तारों की भाँति ही इस विशाल गगन में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि नामक ग्रह भी तारे ही हैं। यह तारे आकर्षण शक्ति में बँधे हुए सूर्य की परिक्रमा करते हैं, इसी कारण ग्रह कहलाते हैं।

हमारी पृथ्वी जीवन है। इस ब्रह्माण्ड में अन्यत्र किसी आकाशीय पिण्ड में हमारी पृथ्वी की तरह ही जीवन है या नहीं, अभी तक पता नहीं चल पाया है, भारतीय पौराणिक मान्यता है कि हमारी पृथ्वी की तरह ही अनेक लोक हैं, जिनमें देवता आदि उच्च स्तरीय प्राणी निवास करते हैं।

सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रह, सप्तर्षि मण्डल ध्रुव तारा तथा नक्षत्र समूह आदि सभी स्वर्गादि लोक हैं, जिनमें उन्हीं लोकों के जल, भूमि, वायु, अग्नि और आकाश तत्वों से निर्मित शरीरों के प्राणी निवास करते हैं।

सम्भव है, दूसरे लोकों में से भी किन्हीं लोकों और वहाँ के वासियों के जीवन और प्रारब्ध नियन्त्रण कर्त्ता ग्रहमण्डल में हमारी पृथ्वी भी उसी प्रकार सम्मिलित हो, जैसे हम पृथ्वी वासियों की जीवन लीला और इस पृथ्वी के कार्य, व्यवहार व अस्तित्व अन्य ग्रहों के प्रभाव से संचालित हैं।

विगत में कब, किस अतीत में हमें यह भास या यों कहा जाय कि ज्ञान हुआ था, और कैसे ज्ञान हुआ था कि आकाश के क्रान्तिपथ पर, स्थित राशियाँ बारह हैं, नक्षत्र सत्ताइस हैं और इसी मार्ग पर नवग्रहों का परिभ्रमण चलता रहता है तथा इनका यह परिभ्रमणीय प्रभाव इनकी राशि स्थिति के अनुसार पृथ्वी और पृथ्वी के प्राणीमात्र का नियन्त्रक बना हुआ है—इसका कोई ठीक-ठीक लेखा-जोखा हमारे पास नहीं है। किन्हीं विद्वानों का मत है कि ज्योतिर्विद आकाश में स्थित तारों और ग्रहों का अध्ययन करते रहे और खोज करते रहे, किन्तु यह खोज कितनी लम्बी चली होगी कि पूर्ण हो गई—पूर्ण इस प्रकार कि आज के ज्योतिर्विद विज्ञान के नवीनतम सूक्ष्मग्राही और अद्भुत शक्तिशाली उपकरणों की सहायता से भी उससे अधिक कुछ नहीं ज्ञात नहीं कर सके हैं, जो हमें पूर्व काल से—अनन्त पूर्व काल से—ही ज्ञात है; बल्कि यदि यह कहा जाय कि इन यन्त्रों की सहायता से आधुनिक ज्योतिर्विज्ञानी उस पूर्व कालिक ज्ञान की अभी तक पुष्टि ही कर पा रहे हैं तो भी कोई अत्युक्ति नहीं होगी। राहु और केतु के ग्रहणन सम्बन्धी अध्ययन के भौतिक प्रभाव का अध्ययन भी अभी तक किसी ऐसे निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा है, जो कि भारत में प्रचलित ग्रहणकाल की अशुभ प्रभाव

सम्बन्धी धारणा के विपरीत हो। इसी प्रकार क्रान्तिपथ का बारह राशियों और सत्ताइस नक्षत्रों में वि गया विभाजन, उसमें ग्रहों की परिभ्रमण स्थिति सम्बन्धी ज्ञान का भी आधुनिक विज्ञान ने कहीं उल्लंघन नहीं किया है, प्रत्युत आधुनिक विज्ञानी इस बात पर आश्चर्यचकित और विस्मय विमुग्ध कि पूर्वकाल में जबकि आधुनिक यन्त्र नहीं थे (जैसी कि अवधारणा आज बनी हुई है, सम्भव है युग में वैज्ञानिक उन्नति और भी अधिक रही हो) त्रुटिरहित ज्योतिर्विज्ञान मनुष्य को कैसे प्राप्त हु

भारतवर्ष में प्रचलित यही ज्ञान समस्त संसार में व्याप्त था—कैसे व्याप्त हुआ। इसका ऐतिहासिक उल्लेख हमें प्राप्त नहीं होता। समय की गर्त में क्या दब-छिप गया, कैसे जाना जा स है, किन्तु भारतीय संस्कृति ही समस्त विश्व में आज एक ऐसी संस्कृति है, जो आज भी ऐतिह काल के अपने आयुर्विज्ञान, दर्शन और ज्योतिर्विज्ञान को अपने पूर्वकालिक समृद्ध रूप में ही सहेजे है। काल की चपेट में भारतीय संस्कृति के यह तीन रत्न चाहे धूमिल भले ही हुए हों, लेकिन इनकी मिट नहीं पाई, क्योंकि भीषण आपदाओं के पड़ने पर भी, भारत की जीवन-संस्कृति की रक्षा, तीनों रत्न करते रहे।

आत्म तत्त्व और शान्ति के लिए भारत के औपनिषदीय दर्शन से उच्चकोटि का दर्शन, शारी व्याधियों की शान्ति के लिए आयुर्वेदिक ज्ञान से ऊँचा चिकित्सा विज्ञान (धीरे-धीरे आधुनिकता में हुए भारतीय ही नहीं विदेशी भी आयुर्वेदिक चिकित्सा को अपनाने लगे हैं) तथा पल-पल शुभता-अशुभता का ज्ञान देने वाले भारतीय ज्योतिर्विज्ञान से अधिक सूक्ष्म और त्रुटिहीन ज्योति ज्ञान संसार में दूसरे नहीं हैं, इसी कारण आज पुनः वह अपने रंगरूप में निखर रहे हैं, क्योंकि यह म जीवन से गुँथे हुए हैं और हमारे दैनिक जीवन की आज भी रक्षा करते हैं।

भारतीय धार्मिकता से आत्मदर्शन बँधा रहा, शरीर रक्षा आयुर्वेद से सम्भव रही तथा जी व्यवहारों के लिए शुभ घड़ी मुहूर्त का चयन और शुभ भविष्य की विश्वस्तता ग्रह विज्ञान पर आधा रही है।

हमारा ग्रह विज्ञान, कोरी कल्पनाओं या अंधविश्वासों पर आधारित नहीं है, सत्यों पर प्रतिष्ठि है। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु नाम नवग्रहों की रश्मियों से क्रान्तिपथ के केन्द्र में आने वाली इस पृथ्वी के जीवन व्यवहार नवग्रहों के अंश-कला-विकला प्रभाव से संचालित होते हैं। ग्रहों के अपने गति-सामञ्जस्य में उनका अंश-कला-विकलात्मक प्र कैसा है, किस स्थिति में वह कैसा रहता है, तथा किस स्थिति में वह कैसा रहेगा, क्या प्रभाव दे तदनुसार उस प्रभाव से क्या भविष्य हो सकता है, क्या घटनाएँ घटित हो सकती हैं, यह पूर्ण वैज्ञा ज्ञान पर आधारित हैं, क्योंकि ग्रहों का परिभ्रमण, उनका पल-पल परस्पर अंश-कला-विकला संयोग ही भूत, भविष्य और वर्तमान को नियन्त्रित करता रहता है।

पल-पल द्वारा विभाजित समय में किस पल, कौन-ग्रह किस-किस अंशकला विकला भोग करता है, इसकी गणना भारतीय ऋषियों ने समय के किस विगत अन्तराल में की, इसका तो ज्ञ चाहे हो सके या न हो सके, किन्तु उनके द्वारा प्रतिपादन यह ज्ञान मनुष्य मात्र के लिए आज भी उपयो है। शुभ के लिए मनुष्य हर क्षण उत्सुक रहता है, और अशुभ से बचना चाहता है, क्या विवाह, क अन्य किसी संस्कार या कार्य का आरम्भ। मनुष्य नहीं चाहता कि वह घड़ी मुहूर्त जिसमें कोई संस्का या कार्य किया जाय, वह अशुभ हो। कोई घड़ी शुभ है या अशुभ यह भी भारतीय ज्योतिषशास्त्र में बता गई। इसी प्रकार, किसी प्रकार किसी व्यक्ति के जन्म काल में (जन्म क्षण में) ग्रहों का किस-कि

अन्तराल पर जो संयोग होता है, वह भी भारतीय ज्योतिष शास्त्र द्वारा निर्दशित होता है, तथा ग्रहों के उस पारस्परिक संयोग या स्थिति का क्या शुभ या अशुभ फल हो सकता है, तथा ग्रहों के उस पारस्परिक संयोग या स्थिति का क्या शुभ या अशुभ फल हो सकता है, उस संयोग में जन्म लेने वाले का स्वभाव, प्रकृति, कर्म, आचार-विचार, व्यवहार तथा भविष्य क्या होगा, यह भी भारतीय ज्योतिष का ही विषय है।

भारतीय ज्योतिर्विदों ने प्रथम दृष्टि रूप जो भी फल ग्रहों की विभिन्न स्थिति, दृष्टि और संयोग से फलीभूत हो सकते हैं, उनका उल्लेख अपने ग्रन्थों में किया है। यह फल प्रथम दृष्टि रूप होते हैं; ग्रहों की अंश कलात्मक सूक्ष्म स्थिति का अनुशीलन करने पर उन फलों की घटित होने में समय, परिस्थितियाँ आदि का परिवर्तन सम्भव होता ही है, परन्तु मूल प्रकृति और प्रकृति के अनुकूल-कर्म-कार्य-व्यवहारों की ओर जातक की उन्मुखता बराबर बनी रहती है, और वैसी ही प्रेरणा प्राप्त होती है, तथा उसी के अनुसार घटना के घटित होने की सम्भावना बनती है, अतः इन प्रथम दृष्टि फलों की भी (भले ही प्रकटतः जातक के स्वभाव को देखकर, उसकी परिस्थितियों और स्थिति को देखते हुए वह त्रुटिपूर्ण लगे) ज्योतिर्विद को उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

प्रथम दृष्ट्या कुण्डली का अध्ययन आरम्भ होता है, कुण्डली में ग्रहों की स्थिति से। कौन-कौन ग्रह किस-किस राशि में स्थित हैं तथा वह कुण्डली के किन-किन भावों के अधिपति है। इसके साथ ही किस-किस ग्रह की किस-किस ग्रह पर दृष्टि है, तथा इन दृष्टियों के क्या फल सामान्यतः परम्परानुसार पूर्व काल के ज्योतिर्विदों को मान्य हैं।

वस्तुतः प्रारम्भिक रूप से इस ज्ञान का आधार ग्रहों का नैसर्गिक शुभत्व-अशुभत्व, उनकी नैसर्गिक शत्रुता-मित्रता होती है। ग्रहों की नैसर्गिक मित्रता-शत्रुता शुभत्व और अशुभत्व का उनके राशिपति के रूप में जो प्रभाव उनके शत्रु या मित्र की राशि में स्थित उनके शत्रु या मित्र ग्रह से प्राकृतिक रूप से होना चाहिए, उसी के आधार पर ज्योतिर्विदों ने इन फलों का प्रतिपादन किया है। ज्योतिष में फल निरूपणता का आधार तत्व भी यही है, किन्तु ज्योतिर्विदों ने कुण्डली फलाफल निरूपण के लिए इसके आगे भी गूढ़ रूप से विचार किया है, जैसे ग्रहों की तात्कालिक मित्रता-शत्रुता, ग्रहों की अंश-कला-विकलात्मक स्थिति, ग्रहों की अंशात्मक दृष्टि प्रभृति बातों पर—इनसे भी परे ग्रहों के अपने विशिष्ट योगायोग पर भी; किन्तु इन सभी बातों का आधार रूप कुण्डली में ग्रह स्थिति का नैसर्गिक प्रभाव ही है। यह बात ज्योतिर्विद के लिए अध्ययन की बात है कि कौन-सा प्रभाव प्रतिफलित होगा, कौन-सा नहीं। यह हमारी इस पुस्तक का विषय नहीं है, अतः उस पर भविष्य में इस विषय-वस्तु को लेकर ग्रन्थ रचना करने पर विचार करेंगे।

हमारे उपर्युक्त निवेदन को ध्यान में रखते हुए विज्ञ पाठक और ज्योतिर्विद इस पुस्तक को अवश्य ही उपयोगी पायेंगे, यह पूर्ण विश्वास है।

विनीत

—डॉ. श्याम पाराशर

सादर

उन ज्योतिष प्रेमियों को, जिन्होने इस विद्या को नये प्रामाणिक व वैज्ञानिक रूप में प्रतिष्ठापित किया है।

विषय-सूची

●●

ज्योतिष परिचय

काल सभी ग्रहों और नक्षत्रों को चलाता है; इस पृथ्वी को भी अपने नियन्त्रण में रखता है। सभी ग्रह व नक्षत्र अपनी परिभ्रमण गति से घूमते हुए समय का भोग करते हैं। एक निश्चित काल-क्रम का भोग करते हुए बार-बार एक बिन्दु पर आते हैं और वहाँ से आगे बढ़ लेते हैं। यह क्रम कभी नहीं टूटता। भारतीय ज्योतिष ने काल-गति की गणना के लिए मुख्यत: सूर्य और चन्द्र का सहारा लिया है। सूर्य प्रतिदिन उदय होकर दिन का कारण बनता है और अस्त होकर रात्रि का कारण। यह क्रम निरन्तर चलता रहता है, परन्तु दिन और रात्रि सदैव समान रूप से आतप, शीत और वर्षा युक्त नहीं होते। विशेष-विशेष समयावधियों में यह गर्मी, सर्दी या वर्षा से युक्त होते हैं। सूर्य के उदय काल से उसके अस्ताचल गामी होने तक भी वायुमण्डल में परिवर्तन होता रहता है। वैसे एक जैसे ही रूप में हर दिन में सूर्य चमकता है, परन्तु एक जैसे दिनों को सात-सात दिनों की सप्ताह नामक इकाई में बाँधा गया है और सप्ताह के सातों दिनों को सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि नामक ग्रहों के नाम पर, नाम रखकर अलग-अलग किया गया है।

एक सूर्योदय से द्वितीय सूर्योदय तक की अवधि को सामान्य रूप में साठ घटी का माना गया है। यह साठ घटी 24 होराओं में विभक्त की गयी हैं। एक होरा 2½ घटी की होती है। दिन और रात को एक अहोरात्र कहा गया है। अहोरात्र की इन चौबीस होराओं के स्वामी भी उपर्युक्त सात ग्रह माने गए हैं।

सूर्य मार्ग के दोनों और 9° की दूरी तक की चौड़ाई में फैला एक तारापथ है। इसकी समग्र गोल पट्टी पर तारा समूह छाए हुए हैं। इन्हीं समूहों के बारह भाग अलग-अलग राशि-रूप में पहचाने जाते हैं। इन्हीं के मध्य सत्ताइस नक्षत्रों के तारे भी स्थित हैं। यही तारापथ भचक्र या 'नक्षत्रवृत' भी कहलाता है। अँग्रेजी में इसे Zodiac तथा **सूर्यमार्ग** को जो भचक्र के ठीक मध्य में होकर है; Ecliptic कहते हैं। संस्कृत में यह 'अपामण्डल' या 'रविमार्ग' नाम से भी जाना जाता है। अपनी धुरी पर 'भचक्र' एक अहोरात्र (दिन-रात) में एक बार पूरा घूम जाता है।

उपर्युक्त बारह राशियों और सत्ताइस नक्षत्रों के स्वामी भी रवि चन्द्रादि ग्रह होते हैं।

ग्रह

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि भचक्र बारह राशियों और सत्ताइस नक्षत्रों में विभक्त है। इन्हीं राशियों और नक्षत्रों के बीच इसी तारापथ की पट्टी पर ग्रहों की भी स्थिति है। इन ग्रहों के नाम हैं–

(1) सूर्य (रवि), (2) चन्द्र, (3) मंगल, (4) बुध, (5) गुरु (बृहस्पति), (6) शुक्र, (7) शनि तथा (8) राहु और (9) केतु।

सूर्य की परिक्रमा सब ग्रह करते हैं। हमारी पृथ्वी भी सूर्य की परिक्रमा करती है। हम पृथ्वी वासी सूर्य की परिक्रमा करने वाले अन्य आकाश पिण्डों चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि को ग्रहों की संज्ञा देते हैं। यह सब अपनी धुरी पर भी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमते हैं; पृथ्वी भी घूमती है।

राहु और केतु नामक ग्रहों की कोई स्थूल पिण्डात्मक आकृति नहीं है। यह छाया ग्रह हैं, परन्तु इनकी छायात्मक स्थिति का भी जो प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है। वह बहुत तीव्र है। इसी कारण भारतीय ज्योतिष में इन्हें अन्य ग्रहों के साथ सम्मिलित किया गया है।

सूर्य की परिक्रमा करने वाले ग्रहों की तरह ही सूर्य को भी भारतीय ज्योतिष ने ग्रह ही माना है।

यूरेनस, नेपचून और प्लूटो नामक तीनों ग्रहों की नवीन खोज पाश्चात्य ज्योतिर्विज्ञानियों ने की है। पाश्चात्य ज्योतिष में इनको भी अन्य नवग्रहों की तरह महत्व दिया जाता है। लेकिन भारतीय ज्योतिष ने इनको नाममात्र स्वरूप में ही ग्रहण किया है। फलित के दृष्टिकोण से इन्हें भारतीय ज्योतिष ने करीब-करीब महत्वहीन ही माना है। सम्भवतः भारतीय ज्योतिषियों को आकाश के इस अनन्त क्षेत्र में फैले ज्योतिर्पिण्डों के बारे में विशद् ज्ञान था। इसी कारण उन्होंने जिन आकाशीय पिण्डों के प्रत्यक्ष प्रभाव को देखा, उन्हीं को ज्योतिष में स्थान दिया। सुदूरवर्ती और भी ग्रह उनके लिए अनजान रहे होंगे, यह विश्वास करने योग्य बात नहीं है। हरशल, नेपच्यून और प्लूटो पृथ्वी से बहुत दूर पर हैं। पृथ्वी से शनि की दूरी इनसे कम है। गुरु शनि से कम दूरी पर है। इसी क्रम में मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध और चन्द्रमा हैं। अर्थात् पृथ्वी से सबसे निकट का ग्रह चन्द्रमा है। चन्द्रमा की प्रबल आकर्षण शक्ति के कारण समुद्र में ज्वार आते हैं।

ग्रहों की गति

(1) सूर्य 24 घंटे या 24 होरा (एक अहोरात्र) में लगभग एक अंश प्रतिदिन की गति से भचक्र के बीचों-बीच चलते हुए 365 दिन 6 होरा में एक चक्कर पूरा करता है।

(2) चन्द्रमा भचक्र में एक अंश की दूरी को पार करने में 4 ½ घटी (1 घंटा 48 मिनट) का समय लेता है। एक राशि के 30° की दूरी को वह लगभग 2½ दिवस में पूरी करता है।

(3) मंगल भचक्र के एक अंश को 1½ दिन में पार करता है। 30° की एक राशि को 45 दिन में चलकर वह दूसरी राशि में प्रवेश करता है।

(4) बुध की गति एक दिन में 1½° चलने की है। वह 30° के एक राशि क्षेत्र की यात्रा औसतन 26 दिन में पूरी करता है। सूर्य के पास होने के कारण उसकी गति एक-सी नहीं रहती। वह कभी बहुत कम हो जाती है, कभी काफी बढ़ जाती है। सूर्य से वह कभी-भी 28° से अधिक की दूरी पर नहीं रहता।

(5) गुरु की गति एक वर्ष में 30° या एक राशि को पार करने की होती है, परन्तु कभी वक्र, कभी मार्गी होता हुआ वह पूरी बारह राशियों को पार करने में बारह साल से कुछ कम समय लेता है।

(6) शुक्र की गति औसतन 1° प्रतिदिन चलने की होती है। प्रायः वह भी एक राशि पर एक माह तक रहता है।

(7) शनि की गति सभी ग्रहों से कम होती है। यह भचक्र के एक अंश की यात्रा करने में एक माह का समय लेता है। तीस माह का समय लेकर यह ग्रह एक राशि की दूरी को पार करता है।

(8) राहु और (9) केतु दोनों छाया ग्रह 30° की दूरी को 18 माह में पूरी करते हैं। यह सदैव एक-दूसरे से 6 राशियों के अन्तर पर रहते हैं और इनकी सूर्य परिक्रमा अन्य ग्रहों की भाँति पश्चिम से पूर्व की ओर न होकर, पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर होती है।

प्रत्येक ग्रह की गति उतनी ही कम है, जितनी अधिक दूरी पर वह पृथ्वी से दूर है।

ग्रहों की मार्गी और वक्री गति

सीधी गति अर्थात पश्चिम से पूर्व की गति को मार्गी गति कहते हैं।

सूर्य व चन्द्रमा हमेशा मार्गी गति से चलते हैं। सूर्य और चन्द्रमा कभी भी वक्री नहीं होते अर्थात् उल्टी गति से नहीं चलते हैं।

अन्य ग्रह मार्गी व वक्री समय-समय पर होते रहते हैं। बुध पूर्व में अस्त व पश्चिम में उदय होता है, जबकि शुक्र पूर्व में उदय व पश्चिम में अस्त होता है।

राहु व केतु सदा वक्री गति से ही चलते हैं कभी मार्गी नहीं होते हैं। अस्त व उदय होते रहते हैं। बुध 25 दिन वक्री रहता है, मंगल 27 दिन, शुक्र 45 दिन वक्री रहता है तथा गुरु 4 महिने अर्थात 120 दिन वक्री रहता है और शनि 131 दिन वक्री रहता है।

होरा

अहोरात्र का अर्थ है दिन और रात्रि की सम्मिलित अवधि। इसे दिवस भी कहते हैं। अहोरात्र में चौबीस होरा होती हैं। साठ घटी के पूरे समय को जो कि एक दिन-रात का समय होता है, 2½-2½ घटी की एक-एक होरा में विभक्त किया गया है।

चूँकि सृष्टि के प्रारम्भ में सबसे पहले सूर्य के दर्शन हुए, अतः सबसे पहली होरा का स्वामी सूर्य को माना गया है। पृथ्वी से सूर्य की अपेक्षा कम दूरी पर शुक्र है, अतः होरा का स्वामित्व शुक्र को मिला, शुक्र की अपेक्षा पृथ्वी से बुध कम दूरी पर है, अतः तीसरी होरा का स्वामी बुध माना गया, इसी प्रकार बुध से कम दूरी पर चन्द्रमा की स्थिति है, अतः तीसरी होरा चन्द्रमा की मानी गयी है। इसके बाद की होरा शनि की मानी गयी, क्योंकि होराओं के स्वामित्व चक्र में चन्द्रमा पर चक्र समाप्त होकर पुनः पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर स्थित शनि से आरम्भ हुआ। शनि की होरा के बाद की होरा का स्वामित्व गुरु को

मिला, उसके बाद की होरा का स्वामी मंगल हुआ और मंगल के बाद की होरा रवि को हुई। क्रम-क्रम से इस प्रकार सब ग्रह होराओं के स्वामी हुए।

सूर्य की प्रथम होरा से आरम्भ होने वाला पहला दिन रविवार कहलाया, उसकी चौबीस होराओं के उपरोक्त क्रम से होने वाले स्वामियों के बाद दूसरे दिन प्रातःकाल की पहली होरा का स्वामी चन्द्रमा होता है, उसके बाद उस दिन की चौबीस होराओं के उपरोक्त क्रम से स्वामित्व के बाद तीसरे दिन की प्रथम होरा का स्वामी मंगल हुआ। क्रमशः इसी तरह बाद के दिनों की प्रथम होराओं के स्वामी बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि हुए। इस प्रकार जिस दिन की प्रथम होरा का स्वामी जो ग्रह होता है, उसी के नाम पर उस दिवस का नामकरण हुआ।

होरा नामक शब्द ही निश्चित रूप से लैटिन भाषा में आवर (Hour) बना। चौबीस आवर्स (Hours) या घण्टों का एक दिन। इसके बाद होरा का विभाजन घटी, पल, विपलात्मक तथा घण्टों का विभाजन मिनट-सेकण्ड में होता है।

राशियाँ

जैसा कि पहले बताया गया है कि भचक्र का पूरा वृत्त तारा समूह से आच्छादित है। तारों के समूह स्थान-स्थान पर ऐसे मालूम होते हैं जैसे उनके ढेर लगे हों। इन्हीं ढेरियों या समूहों को राशि भी कहते हैं। चूँकि भचक्र पर 30°-30° के भागों में तारों के यह समूह या ढेर विभिन्न आकृतियों के रूप में फैले हुए हैं, अतः 30°-30° के प्रत्येक क्षेत्र में तारा समूह की एक-एक आकृति दिखाई देती है। इन्हीं आकृतियों के नाम पर अलग-अलग तारा समूह या राशि का नाम रखा गया है।

भचक्र पर जितने-जितने अंश तक तारा समूह की जो-जो आकृतियाँ दिखाई देती हैं, वह इस प्रकार हैं—

(1) **मेष**—भचक्र के पूर्वी छोर पर विषवत् रेखा के ऊपर से हम भचक्र को अंशों में विभाजित करना आरम्भ करते हैं। 0° से 30° तक की सीमा में तारा समूह की आकृति 'मेढे' की तरह दिखाई देती है। मेढे को ही मेष कहते हैं। अतः प्रथम राशि का नाम मेष राशि हुआ। इस राशि का स्वामी 'मंगल' होता है।

(2) **वृष**—30° से 60° तक के क्षेत्र में तारा समूह की आकृति बैल जैसी दिखाई देती है, अतः दूसरी राशि को वृष (बैल) नाम दिया गया। इस राशि का स्वामी 'शुक्र' होता है।

(3) **मिथुन**—60° से 90° के बीच के तारा समूह में हाथ में गदा लिए हुए पुरुष तथा साथ में वीणा बजाती हुई स्त्री जैसा स्वरूप दिखाई देता है। अत; यह मिथुन राशि हुई। इस राशि का स्वामी 'बुध' होता है।

(4) **कर्क**—90° से 120° के बीच भचक्र पर तारों का समूह केकड़े जैसा दिखाई देता है। केकड़े को कर्क कहते हैं। इस राशि का स्वामी 'चन्द्रमा' होता है।

(5) **सिंह**—यह राशि 120° से 150° के बीच में दिखाई देती है। इसका स्वरूप सिंह जैसा दिखाई देता है। इस राशि का स्वामी 'सूर्य' होता है।

(6) **कन्या**—एक ऐसी कुमारी कन्या जो हाथ में धान की बाल और अग्नि लेकर नाव पर बैठी हो, आकाश में भचक्र के 150° से 180° के बीच के तारा समूह में दिखाई देने वाला स्वरूप है। कन्या के से स्वरूप के ही कारण छठवीं राशि का नाम कन्या है। इस राशि का स्वामी 'बुध' होता है।

(7) **तुला**—हाथ में तुला (तराजू) लिए हुए एक वैश्य जैसा स्वरूप 180° से 210° के सीमा क्षेत्र में दिखाई देता है। इसी कारण इस राशि का नाम तुला हुआ। इस राशि का स्वामी 'शुक्र' होता है।

(8) **वृश्चिक**—210° से 240° के बीच के भचक्र भाग में फैले तारा समूह की जो आकृति दिखाई देती है वह एक बिच्छू (वृश्चिक) जैसी है। अतः इसका नाम वृश्चिक राशि हुआ। इस राशि का स्वामी 'मंगल' होता है।

(9) **धनु**—धनुष-बाण धारण किये हुए एक योद्धा, जिसके पीछे का भाग घोड़े की तरह का है, 240° से 270° के बीच के तारा समूह का स्वरूप है। इस आकृति में धनुष (धनु) की विशेषता होने के कारण इस राशि को धनु कहा गया। इस राशि का स्वामी 'गुरु' होता है।

(10) **मकर**—270° से 300° के बीच के तारा समूह की आकृति में हरिण का मुख धारण लिए हुए मगर दिखाई देता है अतः इसे मकर (मगर) नाम दिया गया है। इस राशि का स्वामी 'शनि' होता है।

(11) **कुम्भ**—300° से 330° के बीच में भचक्र पर तारा समूह का स्वरूप पानी का घट (कुम्भ)लिए हुए एक पुरुष जैसा है, अतः इस राशि का नाम कुम्भ हुआ। इस राशि का स्वामी 'शनि' होता है।

(12) **मीन**—दो मछलियों जैसा स्वरूप जो एक-दूसरे की पूँछ को मुँह में लिए हुए हैं, 330° से 360° के बीच दिखाई देता है। अतः इस राशि को मीन के नाम पर पुकारा गया। इस राशि का स्वामी 'गुरु' होता है।

घूमते हुए भचक्र तथा पृथ्वी परिक्रमा के कारण एक राशि किसी भी स्थान पर दो होरा या दो घण्टे तक रहती है। अतः पूर्व दिशा में भी कोई राशि दो घण्टे तक रहती है और जन्म के समय जो राशि पूर्व दिशा में होती है, उसी को लग्न राशि कहते हैं।

नक्षत्र

भचक्र में जिस प्रकार 30-30 अंश के बारह भागों में तारा समूह की विभिन्न आकृतियों को 12 राशियों के रूप में जाना जाता है, उसी प्रकार इन्हीं राशि समूह के बीच में 13°20' की प्रति क्षेत्र सीमा में भी तारों की विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ दिखाई देती हैं। प्रति 13°20' द्वारा भचक्र सत्ताइस भागों में विभाजित हो जाता है और सत्ताइस तारा-आकृतियाँ ही इन भागों में दिखाई देती हैं। यह आकृतियाँ किसी वस्तु, जीव या अंग

विशेष जैसी होती हैं। इनं आकृतियों को नक्षत्र कहा गया है। जिस वस्तु, जीव, या अंग विशेष जैसी आकृति इन 27 भागों में तारों की दिखाई देती है, उसी के नाम पर इन नक्षत्रों का नामकरण किया गया है। यह निम्नलिखित हैं–

(1) अश्वनी–तीन तारे जो अश्व के मुख जैसे दिखाई देते हैं।
(2) भरणी–तीन तारे जो योनि(भरणी) की तरह दिखाई देते हैं।
(3) कृतिका–छ: तारे जो उस्तरे (कृतिका) की तरह दिखाई देते हैं।
(4) रोहिणी–पाँच तारे जो एक गाड़ी (बैलगाड़ी-शकट-रोहिणी) जैसे दिखाई पड़ते हैं।
(5) मृगशिरा–तीन तारे जो मृग के सिर की भाँति दिखाई देते हैं।
(6) आर्द्रा–एक तारा जो मणि की तरह दिखाई देता है।
(7) पुर्नवसु–पाँच तारे जो एक धनुष की तरह दिखाई देते हैं।
(8) पुष्य–तीन तारे जो एक पुष्प की तरह दिखाई देते हैं।
(9) अश्लेषा–छ: तारे जो एक सर्प या चक्र की तरह दिखाई देते हैं।
(10) मघा (मख)–पाँच तारे जो एक पालकी की तरह मालूम होते हैं।
(11) पूर्वा फाल्गुनी–दो तारे जो एक चारपाई, तथा
(12) उत्तरा फाल्गुनी–दो तारे जो उसके पायों जैसे लगते हैं।
(13) हस्त–पाँच तारे जो एक हथेली जैसे लगते हैं।
(14) चित्रा–एक तारा जो मोती जैसा चमकता है।
(15) स्वाति–एक तारा जो एक नीलम जैसा चमकता है।
(16) विशाखा–तीन तारे जो एक कुम्हार के चाक जैसे लगते हैं।
(17) अनुराधा–तीन तारे जो एक छत्र जैसे लगते हैं।
(18) ज्येष्ठा–तीन तारे जो कुण्डल के समान लगते हैं।
(19) मूल–छ: तारे जो सिंह के पुच्छ मूल की तरह लगते हैं।
(20) पूर्वाषाढ़–दो तारे जो हाथी दाँत के समान लगते हैं।
(21) उत्तराषाढ़–दो तारे जो मंच की तरह लगते हैं।
(अभिजित त्रिकोण के समान)
(22) श्रवण–तीन तारे जो एक बाण की तरह लगते हैं।
(23) घनिष्ठा–चार तारे जो एक मृदंग की तरह लगते हैं।
(24) शतभिष–सौ तारे जो एक गोल फूल की तरह लगते हैं।
(25) पूर्वा भाद्रपद–दो तारे जो मञ्च के समान लगते हैं।
(26) उत्तरा भाद्रपद–दो तारे यमल (जुड़वा बालकों) के समान लगते हैं।
(27) रेवती–तीन तारे जो मछली जैसे लगते हैं।

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण माने गए हैं। अत: नक्षत्रों द्वारा राशियों का विभाजन निम्नलिखित प्रकार होता है–

नक्षत्रानुसार राशि विभाजन

(चक्र 1)

राशि संख्या	राशि	नक्षत्र संख्या	नक्षत्र नाम	नक्षत्र पद (चरण)	क्रांति वृत्त पर अंश	क्रांति वृत्त पर कला
1	मेष	1	अश्वनी	4	13	20
		2	भरणी	4	26	40
		3	कृतिका	1	30	00
2	वृष	3	कृतिका	3	40	00
		4	रोहिणी	4	53	20
		5	मृगशिरा	2	60	00
3	मिथुन	5	मृगशिरा	2	66	40
		6	आर्द्रा	4	80	00
		7	पुनवर्सु	3	90	00
4	कर्क	7	पुनवर्सु	1	93	20
		8	पुष्य	4	106	40
		9	अश्लेषा	4	120	00
5	सिंह	10	मघा	4	133	20
		11	पूर्वा फाल्गुनी	4	146	40
		12	उत्तरा फाल्गुनी	1	150	00
6	कन्या	12	उत्तरा फाल्गुनी	3	160	00
		13	हस्त	4	173	20
		14	चित्रा	2	184	00
7	तुला	14	चित्रा	2	186	40
		15	स्वाति	4	200	00
		16	विशाखा	3	210	00
8	वृश्चिक	16	विशाखा	1	213	20
		17	अनुराधा	4	226	40
		18	ज्येष्ठा	4	240	00
9	धनु	19	मूल	4	253	20
		20	पूर्वाषाढ़	4	296	40
		21	उत्तराषाढ़	1	270	00

10	मकर	21	उत्तराषाढ़	3	280	00
		22	श्रवण	4	293	20
		23	धनिष्ठा	2	300	00
11	कुम्भ	23	धनिष्ठा	2	306	40
		24	शतभिष	4	320	00
		25	पूर्वा भाद्रपद	3	330	00
12	मीन	25	पूर्वा भाद्रपद	1	333	20
		26	उत्तरा भाद्रपद	4	346	40
		27	रेवती	4	360	00

अभिजीत नामक नक्षत्र उत्तराषाढ़ और श्रवण के बीच माना गया है, किन्तु इसकी मान्यता केवल मुहूर्त हेतु महत्वपूर्ण मानी गई है। अन्य ज्योतिषीय विचार में अभिजित की गणना नहीं की जाती, अतः नक्षत्र 27 ही माने जाते हैं। इसका भोग काल उत्तराषाढ़ नक्षत्र के भोग काल में अन्तिम 15 घटी का और श्रवण नक्षत्र के भोग काल में आरम्भिक 4 घटी का होता है। इस प्रकार यह 19 घटी का होता है, जबकि प्रत्येक नक्षत्र 60-60 घटी के होते हैं। उत्तराषाढ़ 45 घटी का और श्रवण 51 घटी का होता है।

तिथि

समय की एक इकाई तिथि भी है। अंग्रेजी कलैण्डर के अनुसार जिस प्रकार तारीख होती है, उसी प्रकार भारतीय पचांग (कलैण्डर) के अनुसार तिथि होती है। परन्तु तिथि की गणना संसार के सभी कलैण्डरों द्वारा निर्दशित तारीख से अधिक सूक्ष्म होती है।

तिथि की गणना सूर्य और चन्द्र की गति की सापेक्षता से उनके मध्य में आने वाली दूरी के अनुसार की जाती है। प्रतिमाह सूर्य और चन्द्र अपनी गति पर चलते हुए एक बार एक ही अंश पर आ जाते हैं। जब दोनों समान अंश पर होते हैं, उस समय अमावस्या नामक तिथि होती है। उसके बाद चन्द्रमा जिस समय उस अंश से आगे निकल जाता है, और सूर्य पीछे रह जाता है, (क्योंकि चन्द्रमा की गति सूर्य की गति से तेज होती है) तो चन्द्रमा, सूर्य से जब तक बारह अंश की सीमा तक आगे रहता है तब तक अमावस्या के बाद प्रथम तिथि या प्रतिपदा होती है। इसके बाद जब तक चन्द्रमा सूर्य से प्रथम बारह अंश की दूरी को पार करने के बाद 24° की दूरी तक की सीमा में रहता है, द्वितीया तथा 24° से 36° की दूरी तक तृतीया या तीसरी तिथि रहती है। इसी प्रकार जब चन्द्रमा सूर्य से ठीक 180° की दूरी पर पहुँचता है तो पूर्णिमा होती है। 180° की दूरी पर पहुँचने के बाद चन्द्रमा पुनः सूर्य के निकट आने लगता है और पूर्णिमा के बाद की पहली तिथि लग जाती है, अर्थात् पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा। क्रमशः पुनः चन्द्रमा और सूर्य समान अंश पर आ जाते हैं और अमावस्या हो जाती है।

पक्ष

शुक्ल पक्ष—अमावस्या के बाद प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के पन्द्रह दिवस का शुक्ल पक्ष होता है।

कृष्ण पक्ष—पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा से अमावस्या तक के पन्द्रह दिन कृष्ण पक्ष के होते हैं।

मास

शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष मिलाकर एक मास का समय होता है। इसे **चान्द्र मास** कहते हैं। दैनिक कार्यादि करने में इसी को प्रधान माना गया है। चान्द्र मास के अतिरिक्त सौर मास को भी ज्योतिष में महत्व प्राप्त है। सूर्य जितने समय में एक राशि का भोग करता है, अर्थात् एक राशि में रहता है उसे **सौर मास** कहते हैं। इनके नाम भी राशियों के नाम पर ही होते हैं, परन्तु लोक प्रचलन में चान्द्र मासों के नाम ही स्मरण किए जाते हैं। चान्द्र मासों के नाम नक्षत्रों के नाम पर होते हैं।

चान्द्र मास और सौर मास के अतिरिक्त नक्षत्र मास, सावन मास, बार्हस्पत्य मास भी होते हैं, परन्तु धार्मिक कृत्यादि करने में चान्द्रमास ही प्रमुख है।

वर्ष (वत्सर या संवत्सर)

वर्ष भी मासों की तरह ही चान्द्र वर्ष, सौर वर्ष, सावन वर्ष, नक्षत्र वर्ष तथा बार्हस्पत्य वर्ष होते हैं। परन्तु चान्द्र वर्ष या संवत्सर ही प्रमुख रूप से माना गया है। काल गणना में सौर वर्ष और चान्द्र वर्ष का सामञ्जस्य किया जाता है।

चान्द्र वर्ष—चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होकर आगामी चैत्र मास की अमावस्या पर्यन्त बारह चान्द्र मासों को मिलाकर एक चान्द्र वर्ष होता है। चान्द्र वर्ष में 364 दिन होते हैं।

सौर वर्ष—मेष आदि बारह राशियों को सूर्य बारह माह में भोगता है, अतः मेष में प्रवेश करने के दिन (मेष की संक्राति) से मीन राशि में रहने तक का समय सौर वर्ष के रूप में जाना जाता है। इसमें 365 1/4 दिन होते हैं।

सौर वर्ष से चान्द्र वर्ष को सामञ्जस्य **अधिमास** द्वारा किया जाता है। प्रति 32 चान्द्र मास 16 चान्द्र तिथि 4 घटी बाद एक अधिमास होता है।

सावन वर्ष—360 दिन का एक सावन वर्ष होता है। एक सूर्योदय से द्वितीय सूर्योदय के पूर्व तक का एक सावन दिन होता है।

बार्हस्पत्य वर्ष—वृहस्पति द्वारा एक राशि के भोग काल को बार्हस्पत्य वर्ष कहते हैं। बार्हस्पत्य वर्षों में साठ भेद होते हैं। प्रत्येक संवत्सर का विशेष फल होता है।

संवत्सरों के साठ भेद—संवत्सर क्रमशः साठ होते हैं। यह एक चक्र को पूरा करके बार-बार आते रहते हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं—

(1) प्रभव, (2) विभव, (3) शुक्ल, (4) प्रमोद, (5) प्रजापति, (6) अङ्गिरा, (7) श्रीमुख, (8) भाव, (9) युवा, (10) धाता, (11) ईश्वर, (12) बहुधान्य, (13) प्रभावी, (14) विक्रम, (15) वृष, (16) चित्रभानु, (17) सुभान, (18) तारण, (19) पार्थिव, (20) अव्यय, (21) सर्वजित, (22) सर्वधारी, (23) विरोधी, (24) विकृति, (25) खर, (26) नन्दन, (27) विजय, (28) जय, (29) मन्मथ, (30) दुर्मुख, (31) हेमलम्ब, (32) विलम्बी, (33) विकारी, (34) शार्वरी, (35) प्लव, (36) शुभकृत, (37) शोभन, (38) क्रोधी, (39) विश्वावसु, (40) पराभव, (41) प्लवङ्ग, (42) कीलक, (43) सौम्य, (44) साधारण, (45) विरोधकृत, (46) पारिधावी, (47) प्रमादी, (48) आनन्द, (49) राक्षस, (50) नल, (51) पिङ्गल, (52) कालयुक्त, (53) सिद्धार्थी, (54) रौद्र, (55) दुर्मति, (56) दुन्दुभी, (57) रूधिरोद्गारी, (58) रक्ताक्ष, (59) क्रोधन और (60) क्षय।

युग

उपर्युक्त साठ संवत्सरों में पाँच-पाँच संवत्सरों का एक-एक युग होता है। अतः साठ संवत्सरों के बारह युग होते हैं। पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठवाँ, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ, दसवाँ, ग्यारहवाँ और बारहवाँ युग क्रमशः पहले पाँच, दूसरे पाँच, तीसरे पाँच, चौथे पाँच, के क्रम में बारहवें पाँच संवत्सरों की अवधि द्वारा बनता है।

ऋतु

सौर और चन्द्र वर्षों में दो-दो मास की एक-एक ऋतु होती है। चैत्र मास से आरम्भ वाले दो-दो मास की छः चन्द्र ऋतुओं के नाम इस प्रकार हैं—

(1) बसन्त, (2) ग्रीष्म, (3) वर्षा, (4) शरद, (5) हेमन्त, (6) शिशिर।

सौर ऋतुओं के नाम भी यही हैं। सौर ऋतु का आरम्भ मीन या मेष राशि से होता है। सूर्य द्वारा प्रति दो राशियों के भोग द्वारा छः ऋतुएँ एक वर्ष में भोगी जाती हैं।

अयन

अयन दो होते हैं—(1) उत्तरायन तथा (2) दक्षिणायन।

सूर्य छः माह पृथ्वी के दक्षिण गोलार्द्ध के ऊपर होकर चलता है तथा छः माह पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध के ऊपर होकर चलता है। जब सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध के ऊपर होकर जाया करता है तो कहा जाता है कि वह उत्तरायन में है; दक्षिण गोलार्द्ध पर होकर चलने पर उसे कहा जाता है कि वह दक्षिणायन में है।

गोल

गोल दो होते हैं—सौम्य (उत्तर) और याम्य (दक्षिण)। जब तक सूर्य मेषादि प्रथम 6 राशियों में रहते हैं तो सौम्य गोल कहा जाता है। तुलादि अग्रिम 6 राशियों में सूर्य के रहने पर याम्य गोल कहा जाता है।

सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने पर उनकी उत्तरायन यात्रा प्रारम्भ होती है। उत्तरायन में वह मिथुन राशि पर्यन्त रहते हैं। इसी प्रकार जब उनका प्रवेश कर्क राशि में होता है तो वह दक्षिणायन में वास आरम्भ करते हैं। दक्षिणायन में वह धन राशि तक रहते हैं। उत्तरायन को सौम्यायन तथा दक्षिणायन को याम्यायन भी कहते हैं।

सूर्य जब किसी राशि में प्रवेश करते हैं तो उनके इस प्रवेश को सम्बन्धित राशि की संक्राति कहा जाता है। मकर और कर्क संक्राति का धार्मिक कृत्यों में बहुत महत्व है।

योग

योग दो प्रकार के होते हैं—(1) विष्कम्भादि, (2) आनन्दादि।

1. विष्कम्भादि योग—सूर्य के स्पष्ट अंश कला तथा चन्द्रमा के स्पष्ट अंश कला की कलाएँ बनाकर उनके योग में 800 का भाग देने पर भागफल को गत योग समझना चाहिए तथा शेष बची घटियों को गत योगों के बाद क्रमशः जो योग हों, उनकी गत कलाएँ समझकर उसे ही वर्तमान योग मानना चाहिए।

विष्कम्भादि योग 27 होते हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं—

(1) विस्कम्भ, (2) प्रीति, (3) आयुष्मान, (4) सौभाग्य, (5) शोभन, (6) अतिगण्ड, (7), सुकर्मा, (8) धृति, (9) शूल, (10) गण्ड, (11) वृद्धि, (12) ध्रुव, (13) व्याघात, (14) हर्षण, (15) वज्र, (16) सिद्धि, (17) व्यतीपात, (18) वरीयान, (19) परिधि, (20) शिव, (21) सिद्ध, (22) साध्य, (23) शुभ, (24) शुक्ल, (25) ब्रह्मा, (26) एन्द्र और (27) वैधृति।

2. आनन्दादि योग—आनन्दादि योग 28 होते हैं। यह वार और नक्षत्रों के योग से बनते हैं। **रविवार को योग क्रम अश्विनी** नक्षत्र से गिना जाता है। **सोमवार को मृगशिरा से, मंगलवार को आश्लेषा से, बुधवार को हस्त से, गुरुवार को अनुराधा से, शुक्रवार को उत्तराषाढ से, शनिवार को शतभिष** नक्षत्र से गिना जाता है।

यदि **रविवार** का दिन हो और **अश्वनी** नक्षत्र हो तो योग **आनन्द** होगा, परन्तु रविवार का दिन हो, नक्षत्र **भरणी** हो तो चूँकि नक्षत्र दूसरा है, अतः योग भी दूसरा अर्थात् **कालदण्ड** होगा। इसी प्रकार कृतिका हो, दिन **रविवार** हो तो योग भी तीसरे क्रम का होगा क्योंकि नक्षत्र का क्रमांक भी तीसरा है। इसी अनुसार सोमवार को यदि योग जानना हो तो **सोमवार को मृगशिरा** नक्षत्र होने पर पहला योग **आनन्द** समझना चाहिए। यदि उस दिन आर्द्रा नक्षत्र है तो चूँकि आर्द्रा, मृगशिरा से दूसरा नक्षत्र है। इसीलिए आनन्द के बाद दूसरे

क्रमांक का योग कालदण्ड सोमवार का योग होगा। इसी प्रकार मंगलवार, बुधवार, गुरु, शुक्र तथा शनिवार के योगों को जानना चाहिए।

आनन्दादि 28 योगों के नाम इस प्रकार हैं—

(1) आनन्द, (2) कालदण्ड, (3) धूम्र, (4) धाता, (5) सौम्य, (6) ध्वांस, (7) केतु, (8) श्री वत्स, (9) वज्र, (10) मुदगर, (11) छत्र, (12) मित्र, (13) मानस, (14) पद्म, (15) लुम्ब, (16) उत्पात, (17) मृत्यु, (18) काण, (19) सिद्धि, (20) शुभ, (21) अमृत, (22) मुसल, (23) गद, (24) मातङ्ग, (25) रक्ष, (26) चर, (27) सुस्थिर तथा (28) प्रबर्धमान।

करण

एक तिथि में दो करण होते हैं। शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से गत तिथियों तक गिनकर जितनी तिथि गत हुई हों, उस संख्या में दो गुणा करने पर जो गुणनफल प्राप्त हो उसमें से एक कम करके जो संख्या आये, उसमें सात का भाग देना चाहिए। जो भागफल आये उतने ही करण गत हुए समझने चाहिए। उसके बाद का करण वर्तमान करण होता है।

करण ग्यारह होते हैं—

(1) बव, (2) बावल, (3) कौलेय, (4) तैतिल, (5) गर, (6) वणिज, (7) विष्टि, (8) शकुनि, (9) चतुष्पद, (10) नाग, (11) किंस्तुघ्न।

मुहूर्त

दिन और रात में तीस मुहूर्त होते हैं। पन्द्रह दिन में होते हैं तथा पन्द्रह ही रात्रि में होते हैं। प्रत्येक मुहूर्त लगभग दो घटी का होता है।

दिन के मुहूर्तों के नाम—(1) गिरिश, (2) भुजग, (3) मित्र, (4) पित्र्य, (5) वसु, (6) अम्बु, (7) विश्वे, (8) अभिजित, (9) विधाता, (10) इन्दु, (11) इन्द्राग्न, (12) निर्ऋति, (13) वरुण, (14) अर्य्यमा और (15) भग।

रात्रि के मुहूर्तों के नाम—(1) शिव, (2) अजैकपाद, (3) अहिर्बुधन्य, (4) पूषा, (5) दास्र, (6) यम, (7) अग्नि, (8) ब्रह्मा, (9) चन्द्र, (10) अदिति, (11) जीव, (12) अर्क, (13) विष्णु, (14) त्वाष्ट्र तथा (15) मरुत्।

■

दूसरा अध्याय

जन्म कुण्डली परिचय

हर व्यक्ति का जन्म किसी-न-किसी पल में होता है, वह पल किसी-न-किसी घटी का भाग होता है, घटी भी किसी-न-किसी मुहूर्त का भाग होती है। वह पल किसी-न-किसी करण, योग, तिथि, वार, अयन, ऋतु या संवत्सर में होता है। इस पल के समय बारह राशियों में से कोई एक राशि अपने चक्रानुसार पूर्वी क्षितिज पर होती है और नवों ग्रह किसी-न-किसी राशि का भोग कर रहे होते हैं। उस व्यक्ति के जन्म काल पर जो भी स्थिति राशि ग्रह आदि की होती है, जो भी तिथि, वार, आदि उस क्षण होते हैं, उन सबका प्रभाव उसके व्यक्तित्व और कृतृत्व, भविष्य और जीवन के घटनाक्रम को संचालित करता है। वस्तुत: वह काल के विभिन्न आयामों के गुण धर्म से युक्त एक जीव होता है। अत: किसी व्यक्ति के वास्तविक व्यक्तित्व और उसके जीवन के घटनाक्रम को जानने के लिए उसके जन्म काल पर ग्रह, नक्षत्र और राशियों की सही स्थिति का ज्ञान होना चाहिए। इसी आकाशीय चित्र को ज्योतिष में कुण्डली या लग्न कुण्डली कहा जाता है।

जन्म कुण्डली में **बारह भाव** होते हैं। प्रत्येक भाव को विभिन्न नामों से जाना जाता है, जो कि निम्नलिखित प्रकार हैं—

(1) पहला भाव—इस भाव को मुख्यत: **'लग्न'** कहा जाता है। इसे तनु भी कहा जाता है। इसके पर्यायवाची नाम हैं—होरा, मूर्ति, उदर्य, सिर, देह, कल्प, जन्म, आद्य, अङ्ग, विलग्न, आत्मा, शरीर, वपु, केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय, गुप्त, त्रिकोण तथा प्रथम।

(2) दूसरा भाव—इस भाव को **'धन'** कहा जाता है। इसके पर्यायवाची नाम हैं—अर्थ, वित्त, द्रव्य, वाणी, भूक्ति, नयन, स्व, कुटुम्ब, कोश, वाक्, पित्त, नेत्र, पणफर और द्वितीय।

(3) तीसरा भाव—**'भ्रातृ'** नाम से इस भाव को जाना जाता है। इसके पर्यायवाची नाम हैं—पराक्रम, दुश्चिक्य, विक्रम, सहज, सहोदर, वीर्य, धैर्य, कर्ण, सहोत्थ, जल, उपचय, आपोक्लिम और तृतीय।

(4) चौथा भाव—इस भाव का नाम **'सुख'** है। इसको शौर्य, कर्ण, सुख, ग्रह, अम्ब, बन्धु, रसातल, हिबुक, वेश्म, पाताल, हृदय, वाहन, मातृ, सुहृद, मित्र, वृद्धि, माता, विद्या, तुर्य, यान, नीर, गेह, कण्टक, केन्द्र, चतुष्टय तथा चतुर्थ भी कहते हैं।

(5) पाँचवाँ भाव—**'पुत्र'** नाम से इस भाव को जाना जाता है। इसके दूसरे नाम, बुद्धि, प्रभाव, तनुज, आत्मज, मन्त्र, वाणी, विवेक, शक्ति, उदर-प्रवेश, सुत, देवराज, भक्ति, पितृनन्दन, त्रिकोण, पणफर और पंचम भी कहते हैं।

(6) छठा भाव—इसे **'शत्रु'** नाम से पुकारा जाता है। इसको रोग, रिपु, अंश,

मातुल, शस्त्र, भय, द्वेष, क्षत, शत्रु, अरि, वैरी, व्यतन, नष्ट, चोर, विघ्न, त्रिक, आपोक्लिम, उपचय तथा षष्ठम भी कहते हैं।

(7) **सातवाँ भाव**—'**कलत्र**' नाम से इस भाव को जाना जाता है। इसे स्त्री, जामित्र, चामित्र, अंगना, दारा, भार्या, सौभाग्य, काम, गमन, सम्पत, द्यून, द्युन, अस्त, चितोत्थ, मदन, भर्ता, दधि, सूप, केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय तथा सप्तम भी कहते हैं।

(8) **आठवाँ भाव**—'**रन्ध्र**' नाम से इस भाव को जाना जाता है। इसके दूसरे नाम हैं—मृति, मृत्यु, नाश, जीवन, आयु, रण, विनाशन, क्षीर, गुड़, मूत्रकृच्छ, गुह्य, मरण, अन्तक, त्रिक, चतुरस, पणफर और अष्टम।

(9) **नवाँ भाव**—'**धर्म**' नाम से इस भाव की प्रसिद्धि है। इसके दूसरे नाम हैं—भाग्य, लाभ, गुरु, शुभ, तप, पैतृक, मुक्ति, त्रिकोण, आपोक्लिम तथा नवम।

(10) **दसवाँ भाव**—इस भाव को सामान्य रूप से '**कर्म**' नाम से जाना जाता है। इसके अन्य नाम राज्य, व्योम, नभ, आस्पद, व्यापार, मेषुरण, मध्य, मान, ज्ञान, राज, पद, पिता, गगन, आकाश, आज्ञा, केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय, उपचय तथा दशम भी हैं।

(11) **ग्यारहवाँ भाव**—इसको '**लाभ**' नाम से जाना जाता है। इसके अन्य नाम आय, उत्तम, उपान्त्य, भव, फणफर, उपचय और एकादश भी हैं।

(12)**बारहवाँ भाव**—इसे '**व्यय**' कहते हैं। इसको हानि, रिष्फ, प्रान्त्य, अन्तिम, अन्त्य, विनाश, आपोक्लिम, त्रिक लग्न का अन्त्य खण्ड तथा द्वादश भी कहा जाता है।

उपर्युक्त भावों के नामों को देखने से ज्ञात होता है कि जिन-जिन बातों को किसी भाव से जाना जाता है उसके नाम भी वहीं रखे गए हैं। अतः बहुत सरलता से किसी भाव का नाम ही हमें उस भाव से जानने योग्य बातों का ज्ञान करा देता है।

इसके अनन्तर भी हम बारह भावों से जानने योग्य बातों को यहाँ अलग से अंकित कर रहे हैं—

प्रथम भाव—अर्थात् तनुभाव से रूप, वर्ण, चिन्ह, जाति, वयस का प्रमाण, सुख-दुःख, साहस का विचार किया जाता है।

द्वितीय भाव—से सोने-चाँदी आदि धातु, क्रय-विक्रय, रत्न भण्डार इत्यादि सम्पत्ति-संग्रह के बारे में जानना चाहिए।

तृतीय भाव—से सहोदर, नौकर, पराक्रम, अपने ऊपर आश्रित लोगों के बारे में विचार करना चाहिए।

चौथे भाव—से मित्र, मकान, खेती, गाँव के बारे में तथा माता के विषय में जानना चाहिए।

पाँचवें भाव—से बुद्धि, सन्तान, गुप्त, विचार, विद्या, नीति, गर्भ का ज्ञान करना चाहिए।

छठवें भाव—से शत्रु, बुरे कर्म, रोग, मुकदमा, मामा, चिन्ता, संकट आदि के बारे में ज्ञान करना चाहिए।

सातवें भाव—से ग्राम, स्त्री, प्रतिपक्ष, वाणिज्य, विवाह, यात्रा आदि बातों का विचार करना उचित है।

आठवें भाव—से नदी को पार करना, मार्गों की विषमता, आयुर्दाय, विशेष संकट का विचार करना चाहिए।

नवें भाव—से धर्म में प्रवृत्ति, भाग्योदय, सुशीलता, नम्रता, तीर्थयात्रा का विचार करना चाहिए।

दसवें भाव—से व्यापार, मुद्रा, कार्य, राजा से आदर, राज्य सम्बन्धी बातें, पिता से सम्बन्धित बातें तथा अपने कार्यों की सफलता के बारे में विचार करना चाहिए।

ग्यारहवें भाव—से हाथी-घोड़ा,स्वर्ण वस्त्र, छत्र, पालकी, मंगल कार्य, सब प्रकार के लाभों से सम्बन्ध में विचार करना चाहिए।

बारहवें भाव—से हानि, दान, व्यय, दण्ड, बन्धन आदि बातों का विचार करना चाहिए।

प्रत्येक भाव किसी-न-किसी राशि के अधीन होता है। बारह राशियाँ बारह भावों को पूरित करती हैं। प्रथम या लग्न भाव में जो राशि होती है उसके आगे की राशियाँ आगे के भावों का स्वामित्व करती है। उन्हें क्रमशः लग्न के आगे के भावों में अंकित किया जाता है।

जन्म समय में जो राशि पूर्वी क्षितिज पर होती है, उसी को लग्न या पहले भाव में अंकित किया जाता है।

जन्म कुण्डली या जन्मांक चक्र निम्न प्रकार बनाया जाता है—

जन्म कुण्डली -1 (चक्र -2)



(जिस जातक की जन्म कुण्डली दी गई है, उसका जन्म दिनांक 31 जुलाई, 1933, प्रातः दस बजकर चालीस मिनट पर आगरा में हुआ था।)

उत्तर भारत में जन्म चक्र उपर्युक्त प्रकार से बनाया जाता है। यही जन्म चक्र दक्षिण भारत में निम्न प्रकार बनाया जायेगा—

जन्म कुण्डली-2 (चक्र -3)

12	1	2	3
11 राहु			बुध (विक्री) सूर्य 4
शनि (विक्री) 10			गुरु 5 शुक्र क्तु
9	8	चन्द्र 7	लग्न 6 मंगल

इस जन्म कुण्डली के अनुसार राशियों के लिए घर निश्चित रहते हैं। पहली राशि (मेष) का घर सदैव वही रहेगा, जिसमें संख्या 1 लिखी है। इसी प्रकार दूसरी राशि (वृष) का घर भी नियत है, जहाँ संख्या 2 लिखी है। आगे की राशियों के वर भी नियत हैं। जिन-जिन घरों में संख्यायें 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 और 12 लिखी हैं वह तीसरी राशि (मिथुन), चौथी राशि (कर्क), पाँचवीं राशि (सिंह), छठवीं राशि (कन्या), सातवीं राशि (तुला), आठवीं राशि (वृश्चिक), नवीं राशि (धनु), दसवीं राशि (मकर), ग्यारहवीं राशि (कुम्भ) तथा बारहवीं राशि (मीन) के लिए नियत हैं। हमने इन घरों में राशियों की संख्याएँ अंकित कर दी हैं, परन्तु यह समझाने के लिए हैं; वास्तव में कुण्डली में यह लिखी नहीं जाती; राशियों के लिए नियत घर होने के कारण, यह अपने आप ही समझ लिया जाता है कि कौन-सा घर किस राशि का है। जो राशि लग्न की होती है, उस राशि के घर में लग्न अंकित किया जाता है तथा जिस-जिस राशि में तत्कालीन स्थिति में ग्रह संचरण करते होते हैं, उसी-उसी राशि में ग्रह अंकित किये जाते हैं। लग्न को पहला भाव समझकर आगे बाएँ से दाएँ क्रम में द्वितीय, तृतीय आदि बारह भाव समझे जाते हैं।

उत्तर भारत में बनाई जाने वाली जन्म कुण्डली में उपर्युक्त के विपरीत पहला घर सदैव लग्न राशि का होता है। उसके पश्चात् के घरों में लग्न के दाहिनी ओर से बाँयी ओर के क्रम में बारहवें घर तक लग्न राशि के बाद की राशियों के क्रमांक अंकित किये जाते

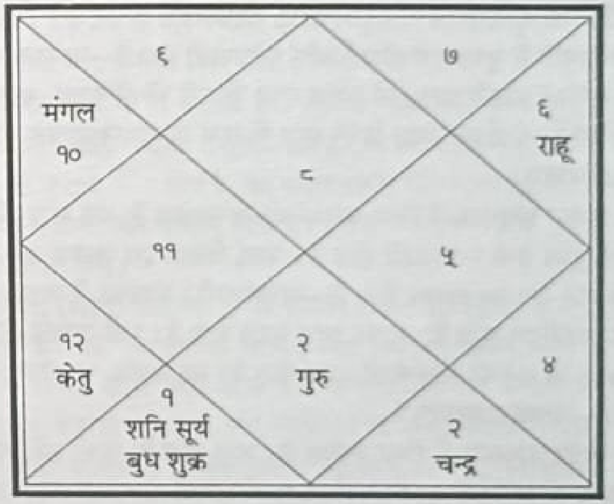
हैं। तत्कालीन स्थिति में जो ग्रह जिस-जिस राशि में होते हैं, उन्हें उस-उस राशि में अंकित कर दिया जाता है। प्रथम, द्वितीय आदि घरों या भावों को स्वयं ही समझ लेना होता है, उनका अंकन नहीं किया जाता है।

पाश्चात्य रीति के अनुसार जन्म कुण्डली एक वृत्त के आकार में बनाई जाती है। उसमें राशियों का स्थान उनके अंशों के अनुसार ही नियत होता है। उसमें जिस राशि में लग्न होती है, उसमें लग्न अंकित रहता है। जिन-जिन राशियों में ग्रह होते हैं, उन-उन राशियों में ग्रह स्थापित कर दिये जाते हैं।

कुण्डली बनाने का कोई भी आधार हो, लेकिन लग्न को ही पहला भाव मानकर क्रमानुसार बारह भाव ही होते हैं और उनसे जो बातें विचारणीय होती हैं, उन्हीं का विचार किया जाता है।

उदाहरणार्थ निम्न कुण्डली और अंकित की जा रही है—

जन्म कुण्डली -3 (चक्र -4)



■

संवत्सरानुसार जन्म फल

साठ प्रभवादि संवत्सरों के नाम पिछले अध्याय में लिखे गए हैं। जन्म काल में कोई-न-कोई संवत्सर विद्यमान होता है। ज्योतिषशास्त्र के ज्ञाता पण्डितों ने संवत्सरानुसार जन्म फल निम्नलिखित प्रकार कहे हैं–

(1) **प्रभव संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपने जाति धर्म का पालन करता है तथा कुलधर्म का भी निर्वाह करता है। वह विद्वान, बहुत बलवान, क्रूर और कृतविद्य होता है–मानसागरी। यह व्यक्ति अनेक वस्तुओं का संग्रह करने वाला, पुत्र-कन्यादि संतान से फलने-फूलने वाला, सुबुद्धि, दीर्घायु और सब भोगों को भोगने वाला होता है–**जातकाभरणम्।**

(2) **विभव संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति स्त्री के सदृश स्वभाव वाला, चंचल होता है। शौर्यप्रवृति से युक्त धनी होता है और परोपकारी होता है–**मानसागरी**। इस व्यक्ति का स्वरूप मन को मोहने वाला, जो भोग्य वस्तु हो उसे भोगने वाला, बलवान और चतुर होता है। अनेक कलाओं का ज्ञाता अपने कुल में राजा के समान सुशील और विद्वान होता है–**जातकाभरणम्।**

(3) **शुक्ल संवत्सर** में जिस जातक का जन्म होता है, वह शुद्ध और शान्त हृदय, शील धर्म से युक्त तथा परोपकारी होता है। पराई स्त्रियाँ इस जातक की पूजा करती हैं, परन्तु इसके पास धन का अभाव होता है–**मानसागरी**। संवत्सर में जातक का जन्म होता है वह सदैव आनन्दित रहता है, उसका हृदय सरल होता है। स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी तथा सब प्रकार के धन का भोग करने वाला होता है। यह जातक भाग्यवान, विद्यावान तथा विनम्र होता है–**जातकाभरणम्।**

(4) **प्रमोद संवत्सर** में जिस व्यक्ति का जन्म होता है, कभी स्त्री के कारण दु:खी और कभी स्त्री की प्राप्ति से सुखी, कभी बन्धु और मित्रों से कलह करने वाला शत्रुओं से भी सद्भाव रखने वाला तथा राजा से सम्मान प्राप्त करने वाला होता है या राज्यमंत्री होता है–**मानसागरी**। वह जातक जो प्रमोद संवत्सर में जन्म प्राप्त करता है वह दाता, पुत्रादि सुख तथा अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त करने वाला होता है; इसका रूप सुन्दर होता है इसकी वाणी मधुर होती है और यह सत्यवक्ता होता है। सब कार्य करने में समर्थ और परोपकारी भी होता है। इसके साथ ही यह व्यक्ति धूर्त और अभिमानी भी होता है–**जातकाभरणम्।**

(5) जिस जातक का **प्रजापति संवत्सर** में जन्म प्राप्त होता है, उसे प्रजा पालन में सुख और संतोष मिलता है। दाता, भोगी, बहुत संतान वाला और विदेशों में विख्यात होता है–मानसागरी। यह जातक गुणवती स्त्री का पति, उसके गुणों का अभिमान रखने वाला,

दयावान, कुलधर्म पालक, सुशील, देवता और ब्राह्मणों की पूजा-सत्कार करने वाला और विनय युक्त होता है–**जातकाभरणम्।**

(6) **अङ्गिरानामक संवत्सर** में जन्म लेने वाला जातक सत्क्रिया और आचार से युक्त, धर्म शास्त्र और आगम जानने वाला, अतिथि और मित्रों का भक्त होता है–**मानसागरी।** यह जातक सुन्दर, सुखी, भाग्यवान, मानी, प्रिय वक्ता, बहुत पुत्र वाला, गुप्त विचार रखने वाला और चिरंजीवी होता है–**जातकाभरणम्।**

(7) **श्री मुख संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह धनवान् देवताओं का भक्त, धातुवाद में पण्डित और पाखण्ड कर्मों में निपुण होता है–**मानसागरी**। यह जातक प्रतापी और शास्त्रों का बहुत बड़ा ज्ञाता होता है। मित्रों के प्रति बहुत प्रीतकर व्यवहार करने वाला, बुद्धिमान, कीर्तिवान और यशस्वी तथा हृदय से सरल होता है–**जातकाभरणम्।**

(8) **भाव संवत्सर** में जिस जातक का जन्म होता है, वह सब कार्यों को करने की इच्छा रखने वाला, मत्स्य-माँस भोजन का प्रेमी होता है–**मानसागरी**। यह जातक उदार और यशस्वी होता है। उसका हृदय सदा आनन्द युक्त होता है। गुणवान और दानी यह जातक बहुत विनीत और सबका प्रिय होता है–**जातकाभरणम्।**

(9) **युव संवत्सर** में जो व्यक्ति पैदा होता है, वह पत्नी के कारण दु:खी, जल से भय मानने वाला और आधि-व्याधि से दु:खी होते हुए भी सदैव प्रसन्न रहता है–**मानसागरी।** इस संवत्सर में जो जातक जन्म लेता है, वह सदैव प्रसन्न रहने वाला, गुणवान, विनीत, शान्त स्वभाव, बुद्धिमान, दानी और दीर्घायु होता है। इसका स्वभाव संतोषी तथा शरीर बलवान होता है–**जातकाभरणम्।**

(10) **धाता (धातृ) संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह धनी होता है। उसका रूप सुन्दर होता है। वह स्वभाव का सज्जन और धर्म का पालन करने वाला होता है। गरीबों के प्रति उसका हृदय उदार होता है–**मानसागरी**। यह जातक सर्वगुण सम्पन्न, गुरुभक्त, शिल्पज्ञ, शास्त्रों का ज्ञाता और सुशील होता है–**जातकाभरणम्।**

(11) **ईश्वर संवत्सर** में जिस जातक का जन्म होता है, वह व्यक्ति धनी, कामी, पशुपालन में चतुर और अर्थ और धर्म से युक्त होता है–**मानसागरी**। यह जातक गुणी और अपने प्रताप से आनन्द प्राप्त करने वाला, अपने कार्य में दक्ष, कलाओं को जानने वाला और सुशील होता है–**जातकाभरणम्।**

(12) **बहुधान्य संवत्सरोत्पन्न** मनुष्य वेद-शास्त्रों का ज्ञाता, कला-संगीत में निपुण, निराभिमानी तथा सुरा सेवन करने में आनन्द प्राप्त करने वाला होता है–**मानसागरी**। यह जातक व्यापार में चतुर होता है। राजाओं से सम्मानित, धनधान्य से युक्त दानी और शास्त्रज्ञ होता है–**जातकाभरणम्।**

(13) **प्रमाथी संवत्सर** में जिस जातक का जन्म होता है, वह परस्त्रियों में रत रहने में सुखी, दूसरे के धन का हरण करने वाला, जुआरी और अन्य प्रकार के व्यसनों से युक्त होता है–

मानसागरी। इस संवत्सर में जन्मा मनुष्य सवारी, ध्वज-छत्र आदि से युक्त होता है। शास्त्रज्ञ, शत्रुओं से जीतने वाला और राजमंत्री होता है—**जातकाभरणम्।**

(14) जिस जातक का **विक्रम संवत्सर** में जन्म होता है, वह व्यसन रहित, प्रतापी, जितेन्द्रिय, वीर और कृतविद्य होता है—**मानसागरी।** इस जातक की प्रवृति उग्र कार्य करने की होती है। शत्रुओं को पराजित करने वाला, धीर, सरल हृदय और पराक्रमी होता है—**जातकाभरणम्।**

(15) **वृष संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह आत्म-प्रशंसक, निन्दनीय आचार वाला, कुसंगी, बहुतों का पालन करने वाला होकर भी मलिन, आलसी और लोभी होता है—**जातकाभरणम्।** यह व्यक्ति स्थूल पेट, स्थूल पैर और छोटे हाथों वाला होता है। अपने कुल के प्रति अभिमान युक्त, धर्म और धन से युक्त सम्पत्तिवान और अपने कुल का पालन करता है—**मानसागरी।**

(16) **चित्रभानु संवत्सर** में जिस जातक का जन्म होता है, वह तेजस्वी होता है, अभिमानी और अपने हित को साधने वाला, स्थिर स्वभाव का, देवताओं का भक्त होता है —**मानसागरी।** इस जातक को पुष्पगन्धादि का आनन्द लेने में सदैव रुचि रहती है। यह कलाओं का ज्ञाता और अपने मनोरथ को साधने वाला होता है—**जातकाभरणम्।**

(17) **सुभानु संवत्सर** में जो जातक जन्म लेता है, वह शुभ कार्यों को करने की सदैव इच्छा रखता है तथा करता है। उससे मित्र और शत्रु दोनों लाभ उठाते हैं और बहुत वस्तुओं का संग्रह करता है—**मानसागरी।** इस जातक का हृदय सरल, केश घुँघराले, रूप सुन्दर और मुख से प्रसन्न, सम्पत्तिवान, विनीत और शत्रुओं को जीतने वाला होता है—**जातकाभरणम्।**

(18) **तारण संवत्सर** में जन्म लेने वाला मनुष्य सबका प्रिय होता है। सब धर्म का जानने वाला होता है—**मानसागरी।** यह मनुष्य शूरवीर, चंचल कलाओं का ज्ञाता, निष्ठुर, निन्द्य कर्म करने वाला और धनहीन होता है—**जातकाभरणम्।**

(19) **पार्थिव संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह बहुत समर्थ होता है, वह शिव और ब्रह्मा के समान कार्य कर सकता है। दूसरों को सुख देता है, कल्याण से युक्त और धर्मात्मा होता है—**मानसागरी।** यह व्यक्ति अपने धर्म-कर्म को करने वाला, सब शास्त्रों में पारङ्गत, कुशल और विलासी होता है—**जातकाभरणम्।**

(20) **व्यय संवत्सर** में जन्म लेने वाला पुरुष, दानी और भोगी होता है। उसे सार्वजनिक कार्यों को करने में बहुत आनन्द आता है। वह सुखी और मित्रों से युक्त होता है —**मानसागरी।** यह व्यक्ति व्यसनी, सब कुछ खर्च करने वाला, भयभीत, ऋणी और चंचल स्वभाव वाला होता है—**जातकाभरणम्।**

(21) **सर्वजित संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति शत्रुजयी और विष्णु भक्त होता है—**मानसागरी।** इस व्यक्ति को राजा से आदर मिलता है। सदैव आनन्दोत्सव मनाने की इच्छा रहती है, पवित्र हृदय और शत्रुजयी होता है—**जातकाभरणम्।**

(22) **सर्वधारी संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, उसे माता-पिता का प्यार प्राप्त होता है। वह गुरु का भक्त होता है, उसका हृदय शान्त और धीर होता है और वह बहुत प्रतापी होता है—**मानसागरी।** इस जातक को बहुत नौकर-चाकरों की सेवा मिलती है, बहुत भोग मिलते हैं, यह मिष्ठान्न प्रिय, धैर्य से युक्त और मर्यादा पालन करने वाला होता है—**जातकाभरणम्।**

(23) **विरोधी संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति मत्स्य-माँसप्रिय, धर्म-बुद्धि, प्रशन्न चित्त और लोक में मान्यता प्राप्त करता है।—**मानसागरी।** यह व्यक्ति व्याख्यानदाता, विदेश में रहने वाला, कुटुम्ब के कारण दुःखी, धूर्त लोगों से मैत्री चाहने वाला नहीं होता है—**जातकाभरणम्।**

(24) **विकृति संवतसर** में जिस व्यक्ति का जन्म होता है, वह चित्रकार, नृत्य का ज्ञाता, संगीत जानने वाला, संशय रहित, दानी, मानी और भोगी होता है—**मानसागरी।** यह व्यक्ति निर्धन, कुरूप, लम्बे शरीर को धारण करने वाला, अभिमानी, सद्बुद्धि से हीन होता है—**जातकाभरणम्।**

(25) **खर संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह हिंसक होता है। लोगों से मैत्री करके धन लेने वाला, कुटम्ब का पालन करने वाला तथा उत्साह से युक्त होता है—**मानसागरी।** यह व्यक्ति कामातुर, धूसर, वर्ण, कठोर वाणी बोलने वाला, दुःखी, निर्लज्ज व दीर्घ शरीरी होता है—**जातकाभरणम्।**

(26) **नन्दन संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति सदैव प्रसन्न रहता है, वह घर का कल्याण चाहता है और राजा से आदर प्राप्त करता है—**मानसागरी।** यह जातक तालाब, कुँआ, बावरी आदि जलाशयों का निर्माण कराता है, अन्न का दान करता है, स्त्री-पुत्रादि सहित सुखी रहता है—**जातकाभरणम्।**

(27) **विजय संवत्सर** में जिस जातक का जन्म होता है, वह सुन्दर देह से युक्त, दीर्घायु, यश और सुख लाभ करने वाला होता है। इसे सब कार्यों में लाभ होता है तथा युद्ध में शत्रुओं को जीतता है—**मानसागरी।** यह मनुष्य रण में बहादुर, सुशील, राजा से आदर पाने वाला, श्रेष्ठ वक्ता, दानी और शत्रुओं को जीतने वाला होता है—**जातकाभरणम्।**

(28) **जय संवत्सर** में जिस जातक का जन्म होता है, वह युद्ध में शत्रु को परास्त करता है, सुन्दर स्त्री का प्रिय तथा शत्रु दोनों को लाभकारी और व्यापार में कुशल होता है—**मानसागरी।** यह व्यक्ति शास्त्रज्ञ, पण्डितों के साथ शास्त्रार्थ करने में चतुर, लोक में मान्य, दाता, शत्रुओं का गर्वहारी, विषयों में आसक्त और विजय चाहने वाला होता है—**जातकाभरणम्।**

(29) **मन्मथ संवत्सर** में जन्म लेने वाला जातक अत्यन्त कामी और विषयासक्त होता है, बुद्धिमान होते हुए भी तृष्णा से युक्त होता है, परम भोगी, धनवान और निष्ठुर होता है—**मानसागरी।** यह जातक आभूषणों का प्रेमी, विलासी, कलाओं का ज्ञाता, गीत-नृत्य प्रेमी और सत्य वक्ता तथा भोगी होता है—**जातकाभरणम्।**

(30) **हेमलम्ब संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह पवित्र होता है। उसका हृदय शान्त और गुणों से सन्तुष्ट होता है। परोपकारी होते हुए भी दुःखी और दुर्मुखी स्त्री का पति होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति क्रूर, उद्धत स्वभाव का निन्द्य बुद्धि, लोभी और टेढ़े हाथ-पैर वाला, पापी, लोगों का विरोधी और दुष्ट आचरण वाला होता है—**जातकाभरणम्**।

(31) **दुर्मुख संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह मणि-मोती और मूल्यवान अन्य धातुओं से युक्त होता हुआ भी कृपण होता है। इसके अनन्तर भी लोक में मान्य होता है—**मानसागरी**। यह जातक घोड़े, हाथी, सुवर्ण, वस्त्र, धन-धान्य सुवर्ण, स्त्री-पुत्रादि से सुखी होता है। यह सब पदार्थों का संग्रही होता है—**जातकाभरणम्**।

(32) **विलम्ब संवत्सर** में उत्पन्न व्यक्ति रोगी, दुःखी, आलसी और बहुकुटुम्बी होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति धूर्त, आलसी, बलहीन, कफ रोगी, भाग्यवादी, लोभी और आलसी होता है—**जातकाभरणम्**।

(33) **विकारि संवत्सर** में जन्म व्यक्ति शोणित विकार से युक्त लाल नेत्र वाला, पित्त प्रकृति, वन विहार प्रिय और निर्धन होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति कलाओं को जानने वाला, दुराग्रह करने वाला, संग्रही, चंचल तथा धूर्त होता है। इसको अधिक बातें करने की आदत तथा मित्रों पर अविश्वास करने वाला होता है—**जातकाभरणम्**।

(34) **शार्वरी संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति वेद शास्त्रों का ज्ञाता, देव ब्राह्मणों को प्यार करने वाला, शुचिता और भक्ति से युक्त होता है। मीठी खाद्य सामग्री को सेवन करने वाला होता है—**मानसागरी**। यह जातक क्रय-विक्रय में चतुर होता है। विलासी और मित्रों के प्रतिकूल रहता है और अनेक विद्याओं में आसक्त होता है—**जातकाभरणम्**।

(35) **प्लव संवत्सर** में उत्पन्न होने वाला जातक निद्राप्रिय, सुख को चाहने वाला, व्यापारी, यशस्वी और लोक में मान्य होता है—**मानसागरी**। यह जातक अत्यन्त कामी, धनवान, सेवक, पुत्रों और स्त्री से संतप्त, गुप्त विचार वाला व चपल स्वभाव का होता है—**जातकाभरणम्**।

(36) **शुभकृत (शुभ) संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह सौभाग्यवान, दक्ष, कीर्तिवान, धर्म और प्रजापालक, निपुण होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति विद्या और विनय से युक्त, पुण्यात्मा, दीर्घजीवी और पुत्रादि सुख से युक्त सम्पत्तिवान होता है—**जातकाभरणम्**।

(37) **शोभन (शोभकृत) संवत्सर** में जो जातक जन्म धारण करता है, वह शुद्ध व शान्त चित्त, शूर और दाता होता है। सदैव शोभायमान हुआ अतिवृद्ध नहीं होता—**मानसागरी**। यह जातक सब विषयों में उन्नत, शुभ गुणों से युत, दयावान, सत्कार्य करने वाला, रण में दर्शनीय स्वरूप वाला, कार्य कुशल व्यक्ति होता है—**जातकाभरणम्**।

(38) **क्रोधी संवत्सर** में जो व्यक्ति पैदा होता है, वह क्रोधी, शूर, विज्ञानी, औषधियों को संग्रह करने वाला तथा दूसरों का निन्दक होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति

क्रूर होता है, इसके नेत्र निर्दयी होते हैं, स्त्री का प्रिय और गर्वीला होता है, यह दूसरों के कार्य में विघ्न डालने वाला होता है—**जातकाभरणम्**।

(39) **विश्वावसु संवत्सर** में जो जातक जन्म लेता है, उसे छत्र, दण्ड, ध्वज, चामर आदि राजचिन्हों से शोभित होने का सौभाग्य प्राप्त होता है और वह राज्य में प्रधान पुरुष होता है—**मानसागरी**। इस जातक के स्त्री-पुत्र सुन्दर होते हैं, यह सदाचारी और उदार होता है, यह मिष्ठान्न प्रिय और सर्वगुण सम्पन्न होता है—**जातकाभरणम्**।

(40) **पराभव संवत्सर** में जो जातक जन्म लेता है, वह भयार्त होता है, शीत से वह डरता है, अधर्मी तथा दूसरों के साथ घात करने वाला होता है—**मानसागरी**। इस जातक के पास धन-धान्य की कमी होती है, यह अत्यन्त कठोर वाणी बोलता है। यह आचारहीन तथा शठ होता है—**जातकाभरणम्**।

(41) **प्लवङ्ग संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह भयानक, तस्करी करने वाला, बहुत जमीन का स्वामी, जन नायक तथा योगाभ्यासी होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति चञ्चल स्वभाव, सत्कार्य में प्रवृत, सदाचार और विचार से हीन, दुर्बल शरीर वाला होता है—**जातकाभरणम्**।

(42) **कीलक संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति चित्रकार, मानी, ब्राह्मणों का प्रिय और माता-पिता का भक्त होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति मध्यम स्वरूप, प्रिय वाणी बोलने वाला, सुन्दर मस्तक वाला होता है—**जातकाभरणम्**।

(43) **सौम्य संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति पवित्र होता है, सुशील, समदृष्टि, प्रतापी, जितेन्द्रिय और अपने भक्तों के लिए अति व्याकुल तथा जनसेवक होता है—**मानसागरी**। यह जातक विद्वान, धनी, देवता और अतिथि का सत्कार करने वाला, पवित्र हृदय वाला, गुणी होता है—**जातकाभरणम्**।

(44) **साधारण संवत्सर** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह मनुष्य व्यवसायी, थोड़े में ही सन्तुष्ट होने वाला, धर्म का पालन करता हुआ अपने कर्त्तव्य में तत्पर और मन्त्रों का ज्ञानी होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति इधर-उधर घूमने वाला, लेखन में कुशल, विवेकी, पवित्र और भोगों से विरत होता है—**जातकाभरणम्**।

(45) **विरोधीकृत संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपने बन्धुओं का विरोधी होता है। क्षण में दुःखी और क्षण में प्रसन्न होता है—**मानसागरी**। इस व्यक्ति को क्रोध बहुत आता है, लोगों से विरोध करने वाला होता है और पिता का अवज्ञाकारी होता है—**जातकाभरणम्**।

(46) **परिधावी संवत्सर** में जो जातक जन्म लेता है, वह अल्प बुद्धि, क्रिया में न्यून, विदेशों में घूमने वाला, देवताओं और तीर्थों का भक्त होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति विद्वान, सुशील, कला कुशल, बुद्धिमान, राजमान्य और प्रतिष्ठित व्यापारी होता है—**जातकाभरणम्**।

(47) **प्रमादि संवत्सर** में जो जातक जन्म लेता है, वह शिवजी का भक्त और पवित्र कर्म करने वाला होता है—**मानसागरी**। यह पुरुष दुष्ट, अभिमानी, अल्पबुद्धि और निन्द्यकर्म करने वाला होता है—**जातकाभरणम्**।

(48) **आनन्द संवत्सर** में उत्पन्न मनुष्य सब प्रकार के आनन्द से युक्त अतिथि का सत्कार करने वाला स्वजन और धन लाभ से पूर्ण होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति कई स्त्रियों से युत, चतुर, कार्य में कुशल, पुत्रों से सुखी, पण्डित, कृतज्ञ, विनम्र तथा दानी होता है—**जातकाभरणम्**।

(49) **राक्षस संवत्सर** में जो जन्म लेता है, वह मत्स्य-माँस-प्रिय, हिंसा-कर्म में प्रवृत, मद्यपायी और व्यर्थ में पाप करता है—**मानसागरी**। यह जातक क्रूर, कुकर्मी, झगड़ालू, धर्म कार्य से विमुख दयाहीन और साहसी होता है—**जातकाभरणम्**।

(50) **नल संवत्सर** में उत्पन्न मनुष्य बहुत पुत्र एवं मित्र वाला, लोभी, कलह प्रिय तथा हानि, शोक व दु:ख से युक्त होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति बुद्धिमान, जल से उत्पन्न वस्तुओं के व्यवसाय से धनी, कृषि कार्य में भी चतुर, थोड़ा धन होने पर भी अनेकों को सुख देता है—**जातकाभरणम्**।

(51) **पिङ्गला संवत्सर** में जन्म लेने वाला जातक सर्वाङ्ग में पित प्रकोप व अनेक प्रकार का रोगी होता है, किन्तु धनी व सवारी युक्त होता है—**मानसागरी**। इस जातक के नेत्र पीले होते हैं, निन्द्य कार्यों को करता है, उद्धत और शठ होने पर भी दानी होता है—**जातकाभरणम्**।

(52) **कालयुक्त संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति कृषि व वाणिज्य में पटु और तेल को संग्रह कर क्रय-विक्रय करता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति व्यर्थ वचन बोलता है। बुद्धिमान नहीं होता, झगड़ालू तथा भाग्यहीन होता है। कृश देह होने पर भी अपने को बली मानता है—**जातकाभरणम्**।

(53) **सिद्धार्थी संवत्सर** में जन्मा व्यक्ति वेद शास्त्रों के तत्व को जानने वाला, शुद्ध हृदय, मीठे स्वभाव का, राजाओं से आदर पाने वाला कवि होता है—**मानसागरी**। इस व्यक्ति का हृदय उदार होता है। यह रण में विजयी, सुन्दर, रूपवान, राजा का मंत्री तथा बहुतों से आदर पाने वाला धनी और समर्थ होता है—**जातकाभरणम्**।

(54) **रुद्र संवत्सर** में जन्म लेने वाला व्यक्ति चोर, ढीठ, पर धन का लोभी और निन्दनीय कर्मो को करता है—**मानसागरी**। इस जातक का रूप भयंकर-सा होता है। यह दूसरों की निन्दा करने वाला और पशु पालने का काम करता है। इसकी अपकीर्ति होती है, इसका हृदय अच्छा नहीं होता और यह अत्यन्त धूर्त कठोर वचन बोलता है—**जातकाभरणम्**।

(55) **दुर्मति संवत्सर** में जन्म धारण करने वाला जातक पाप बुद्धि, पाप आचरणकर्ता और पापियों का संग करने वाला होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति अपनी बात का पालन करने का अभिमानी, मन में प्रसन्नता अनुभव न करने वाला, कामी और दुर्बुद्धि होता है—**जातकाभरणम्**।

(56) **दुन्दुभी संवत्सर** में जिस जातक का जन्म होता है, वह शिल्प, बाजा, मन्त्र, औषधि का ज्ञाता, सर्वगुण सम्पन्न होता है—**मानसागरी**। यह जातक सदैव राज सम्मान प्राप्त करता है। इसके पास हाथी, घोड़े, सुवण का अभाव नहीं होता। यह नृत्य गीत का प्रेमी होता है—**जातकाभरणम्**।

(57) **रुधिरोद्गारी संवत्सर** में जो जन्म लेता है, वह वायु और शोणित विकारजन्य रोग से पीड़ित रहता है। वह झूठी गवाही देने वाला होता है। उसकी कफ बात प्रकृति होती है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति लाल आँख वाला, पीलिया आदि रोग से दुर्बल, क्रोधी, हाथ-पाँव में खराब नखों से युक्त और शस्त्र से आघात पाता है—**जातकाभरणम्**।

(58) **रक्ताक्ष संवत्सर** में जो जन्म लेता है, वह व्यक्ति देश त्यागी होता है। उसके धन का नाश हो जाता है। सब कार्यों में उसे हानि होती है और उसकी स्त्री बिना विवाह के ही उसे प्राप्त हुई रखैल के रूप में रहती है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति सदाचार और धर्म में रत रहता है। बहुत कामी होता है। इसको दूसरों की उन्नति से जलन होती है और इसको सदैव ही रोग घेरे रहते हैं, जिनके कारण इसे दु:ख रहता है—**जातकाभरणम्**।

(59) **क्रोधन संवत्सर** में जो मनुष्य जन्म धारण करता है, वह स्वयं क्रोधी, दूसरों को भी क्रोध उत्पन्न कराने वाला, सिंह समान पराक्रमी परजीवी होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति पराये कार्यों में बिना बात के ही बाधा डालता रहता है। यह तमोगुणी तथा भयंकर होता है। इसकी दूसरों को भ्रम में डालने की प्रवृति होती है—**जातकाभरणम्**।

(60) **क्षय संवत्सर** में जो जातक जन्म लेता है, वह कलहप्रिय होता है। उसे मदिरा और वेश्या से प्रेम होता है। उसे धर्म का विचार नहीं होता—**मानसागरी**। यह जातक अत्यन्त फिजूलखर्ची, संचित धन को नष्ट करने वाला, सेवा कार्य करके जीविका चलाने वाला, कठोर हृदय तथा कार्यों में कम ही मन लगाता है—**जातकाभरणम्**।

अधिक संवत्सर जन्म फल

जिस व्यक्ति का जन्म अधिक संवत्सर में होता है, वह सब प्रकार से सुखी, बुद्धिमान और राज मान्य होता है।

लुप्त संवत्सर जन्म फल

लुप्त संवत्सर में जन्म लेने वाला पुरुष, दरिद्री, क्रोधी, परद्वेषी और कृश देही होता है।

युगानुसार जन्म फल

उपर्युक्त साठ संवत्सरों में जो बारह युग माने गये हैं, उनमें जन्म लेने का फल निम्न-लिखित प्रकार होता है—

(1) **प्रथम युग** (प्रथम पाँच संवत्सरों का पहला युग)—इस युग में जन्म लेने वाला

जातक मदिरा-माँस प्रेमी, पराई स्त्रियों के साथ रमण करने वाला, काव्य रचना में निपुण, ज्ञानी, पण्डित और शिल्पी होता है।

(2) **द्वितीय युग** (छठें संवत्सर से दसवें संवत्सर तक का दूसरा युग)—इस युग में जो जातक जन्म लेता है, वह व्यापार में चतुर होता है, धर्माचरण करने वाला, सत्य बोलने वाला और नीति मार्ग पर चलने वाला होता है। धन का लोभी होने के कारण वह पापात्मा-सा भी लगने लगता है।

(3) **तृतीय युग** (ग्यारहवें संवत्सर से पन्द्रहवें संवत्सर तक के पाँच संवत्सरों का तीसरा युग)—इस युग में जो जातक जन्म लेता है, वह भोगी, दाता, ज्ञानी, तेजस्वी और धनी होता है।

(4) **चतुर्थ युग** (सोलहवें संवत्सर से बीसवें संवत्सर तक के पाँच संवत्सरों का युग)—इस युग में जो जातक जन्म लेता है, वह बगीचे और कृषि क्षेत्र प्राप्त करने का लोभी होता है। औषधियों में रुचि रखता है और धातु कार्यों में धन का नाश करता रहता है।

(5) **पंचम युग** (इक्कीसवें संवत्सर से पच्चीसवें संवत्सरों तक के पाँच संवत्सरों का युग)—इय युग में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह अधिक पुत्रवान, भोगी, धनवान, जितेन्द्रिय और माता का भक्त होता है।

(6) **षष्ठ युग** (छब्बीसवें संवत्सर से तीसवें संवत्सर का छठा युग)—इस युग में जो जातक जन्म लेता है, वह सबका शत्रु होता है, उसकी प्रवृत्ति नीच होती है, वह भैंसों को पालकर जीविका कमाने वाला होता है। इसे पत्थरों से आघात लगता है।

(7) **सप्तम युग** (इकतीसवें संवत्सर से पैंतीसवें संवत्सर तक का सातवाँ युग)—इस युग में जो जातक जन्म लेता है, वह मित्रों वाला होता है, व्यापार में कुटिल बुद्धि, शीघ्रगामी और कामातुर होता है।

(8) **अष्टम युग** (छत्तीसवें संवत्सर से चालीसवें संवत्सर तक का आठवाँ युग)—इस युग में जो जातक जन्म लेता है, वह पापी होता हुआ भी सन्तोषी, रोगी होने के कारण दु:खी और परहिंसक होता है।

(9) **नवम युग** (इक्तालीसवें संवत्सर से पैंतालीसवें संवत्सर तक का नवाँ युग)—इस युग में जो जातक जन्म लेता है, वह पापी, कूप, तड़ाग, देवता, मन्त्र और अतिथियों से प्रेम करना वाला राजा होता है।

(10) **दशम युग** (छियालीसवें संवत्सर से पचासवें संवत्सर तक पाँच संवत्सरों का दसवाँ युग)—इस युग में जो जातक जन्म लेता है, वह मनुष्य मंत्री स्थान प्राप्ति के कारण दु:खी, सुन्दर, स्वरूपवान् और दानी होता है।

(11) **एकादश युग** (इक्यावनवें संवत्सर से पचपनवें संवत्सर तक का ग्यारहवाँ युग)—इस युग में जो जातक जन्म लेता है, वह सुशील, देवता की प्रतिष्ठा करने वाला और रण में वीर होता है।

(12) **द्वादश युग** (छप्पनवें संवत्सर से साठवें संवत्सर तक का बारहवाँ युग)—इस युग में जो जन्म लेता है, वह तेजस्वी, प्रसन्नचित्त, जनों में श्रेष्ठ, कृषि और वाणिज्य कर्म करने वाला होता है।

अयनानुसार जन्म फल

उत्तरायन (सौम्यायन) तथा दक्षिणायन (याम्यायन) में जिन जातकों का जन्म होता है, उनके स्वभावादि निम्नलिखित प्रकार होते हैं—

(1) **सौम्यायन** (उत्तरायन)—जिस जातक का जन्म उत्तरायन में होता है, वह धर्म, अर्थ, काम से युक्त होता है। स्वरूप से सुन्दर और गुणों का धनी होता है।

(2) **याम्यायन** (दक्षिणायन)—जिस जातक का जन्म दक्षिणायन में होता है, उसे झूठ, प्रपञ्च और माया जाल अधिक सुहाता है, स्वभाव से वह अधर्मी और शरीर से रोगी होता है।

ऋतु अनुसार जन्म फल

प्रत्येक जातक का जन्म किसी-न-किसी ऋतु में होता है। अत: जिस-जिस ऋतु में जातक जन्म लेता है, उसके अनुसार ही उसमें गुण, स्वाभावादि का प्रादुर्भाव होता है। उसे निम्नलिखित प्रकार समझना चाहिए—

(1) **शिशिर ऋतु** में जो जातक जन्म लेता है, उस मनुष्य का स्वरूप सुन्दर होता है। शरीर से स्वस्थ होता है। कार्य को करने में समय बहुत लगाता है, वह तुरन्त ही कार्य को कर डालने की इच्छा ही नहीं करता है। वह अति उत्कट, साधु हृदय और कामी होता है।

(2) **बसन्त ऋतु** में जिस जातक का जन्म होता है, वह बहुत उद्योगी, बड़ी-बड़ी इच्छाओं वाला और अपने तेज से सर्वमान्य होता है। यह व्यक्ति बहुत कार्य करता है। यह जातक अनेक देशों में घूमने वाला होता है और सब रसों का ज्ञाता होता है।

(3) **ग्रीष्म ऋतु** में जिस जातक का जन्म होता है, वह मनुष्य बहुत से कार्यों को एक साथ आरम्भ करने में सुख का अनुभव करता है। इस जातक को क्रोध बहुत कम आता है, इसकी क्षुधा प्रखर और काम के प्रति आसक्ति बहुत होती है। लम्बे कद वाला यह व्यक्ति बुद्धिमान होता है, इसके अनन्तर भी इसमें शठता होती है और पवित्रता भी नहीं होती।

(4) **वर्षा ऋतु** में जिस जातक का जन्म होता है, वह गुणी होता है, अनेक प्रकार के भोगों को भोगने वाला, राज्य से मान्य और इन्द्रियों को वशीभूत करके आदर प्राप्त करने वाला चतुर होता है। यह जातक अपने प्रयोजन के प्रति बहुत सचेत रहता है।

(5) **शरद ऋतु** में जिस जातक का जन्म होता है, उसे व्यापार और खेती करने में बहुत आनन्द आता है। वह धनधान्य से युक्त होता है अपने तेज और उत्तम गुणों के कारण लोक में मान्य होता है।

(6) **हेमन्त ऋतु** में जिस जातक का जन्म होता है, वह शरीर से कष्ट उठाने वाला, निस्तेज और साधारण-सी ही बातों से भयभीत होने वाला होता है। इसकी गर्दन मोटी और यह स्वभाव से निष्ठुर और लोभी होता है।

मास जन्मानुसार फल

चैत्र मास—चैत्र मास में जो जातक जन्म प्राप्त करता है, उसे सदा प्रसन्नता रहती है, वह सुन्दर स्वरूप से युक्त, स्त्री में आसक्त रहने वाला, सदा अपने पर अभिमान करने वाला, रोष के दर्प से लाल आँखों से युक्त होता है।

वैशाख मास—वैशाख मास में जो जातक जन्म लेता है, वह मनुष्य भोगों को प्राप्त करता है, उसके नेत्र सुन्दर होते हैं। वह सुन्दर, धनवान और स्त्रियों को सदैव प्रिय लगने वाला होता है। उसे क्रोध जल्दी आता है।

ज्येष्ठ मास—ज्येष्ठ मास में जो जातक जन्म लेता है, उसको परदेश प्रिय होता है, उसका हृदय पवित्र होता है। वह धनवान और लम्बी आयु वाला होता है। उसकी बुद्धि अच्छे कार्यों में लगती है।

आषाढ़ मास—आषाढ़ मास में जिसका जन्म होता है, वह अच्छी सन्तान वाला, पुत्र-पौत्रादि से युक्त, धर्मात्मा होता है। वह धन का नाश होने पर दुःख उठाता है। उसे सुख का अभाव रहता है, सदैव सुख पाने की चेष्टा में दुःखी रहता है, किन्तु वह स्वरूपवान होता है।

श्रावण मास—यह व्यक्ति सुख-दुःख में समभाव रखने वाला, हानि और लाभ में अपनी बुद्धि को स्थिर रखता हुआ समदृष्टि के कारण विचलित नहीं होता। वह शरीर से स्थूल और सुन्दर रूप वाला होता है।

भाद्र मास—भाद्र मास में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह सदैव हर्ष से युक्त उत्फुल्ल रहता है। व्यर्थ की बातें बहुत करता है, पुत्रवान होकर सुखी रहता है। इसकी वाणी सुख देने वाली कोमल होती है और वह शीलवान होता है।

आश्विन मास—इस महीने में जो व्यक्ति जन्म प्राप्त करता है, उसका रूप सुन्दर और सुख से युक्त होता है। वह कवि होता है और उसकी भावनाएँ पवित्र होती हैं; उसके गुण अच्छे होते हैं, किन्तु वह स्त्रियों के प्रति कामासक्त रहता है।

कार्तिक मास—कार्तिक मास में जन्म धारण करने वाला व्यक्ति स्वभाव से ही कामी होता है। यह निर्बुद्धि और दुष्ट होता है, किसी के दुःख-सुख से कोई सरोकार न होकर यह अपने ही स्वार्थ में लिप्त रहता है। व्यापार में धन पैदा करके यह जातक धनवान होता है।

मार्गशीर्ष मास—वह व्यक्ति इस माह में जन्म लेता है, प्रिय वक्ता होता है। उसका मन धार्मिक कार्यों को करने में स्वयं ही प्रवृत रहता है। परोपकार करने को वह सदा तत्पर रहता है। उसके बहुत मित्र होते हैं और वह पराक्रमी होता है।

पौष मास—जिस व्यक्ति का जन्म पौष मास में होता है, वह बहुत वीर होता है, उसका प्रताप बहुत दूर तक फैलता है। देवता और पितरों में उसका विश्वास नहीं होता। वह कर्म करने में तत्पर होकर ऐश्वर्य प्राप्त करता है।

माघ मास—जिस जातक का जन्म माघ मास में होता है, वह बुद्धिमान होता है, धनवान तथा वीर होता है। वह कठोर वाणी बोलता है। स्त्रियों में विशेष रुचि रखने वाला कामी होता है, स्वभाव से ही वह युद्ध में बहुत धैर्य रखने वाला होता है।

फाल्गुन मास—जो जातक फाल्गुन मास में जन्म लेता है, उसका वर्ण गौर होता है। परोपकार करने में अपनी बुद्धि रखता हुआ धन, विद्या और सुख से युक्त प्रतापी होता है। विदेश भ्रमण करने में वह सुख प्राप्त करता है।

अधिक मास—जो व्यक्ति अधिक मास में जन्म प्राप्त करता है, वह विषयों के प्रति अनासक्त होता है। उसका चरित्र सुन्दर होता है, तीर्थाटन करने में उसकी रुचि होती है, शरीर से स्वस्थ तथा सबका हित चाहने वाला, सभी का प्रिय होता है।

क्षय मास—जिस व्यक्ति का जन्म क्षय मास में होता है, वह विद्या, बुद्धि, धनधान्य से हीन होता है। वह सुखी भी कम ही रहता है तथा उसे व्याधियाँ घेरे रहती हैं।

पक्ष जन्मानुसार फल

शुक्ल पक्ष—जिस जातक का जन्म शुक्ल पक्ष में होता है, वह पूर्ण चन्द्र के समान शोभायमान, धनवान, उद्योगी होता है। उसे अनेक शास्त्रों का ज्ञान होता है। कार्य करने में कौशल वाला वह जातक बुद्धिमान होता है।

कृष्ण पक्ष—कृष्ण पक्ष में जन्म धारण करने वाला जातक निष्ठुर होता है। इसके वचन कष्ट देने वाले होते हैं, स्त्रियों के प्रति द्वेष भाव रखने वाला यह जातक बुद्धिहीन होता है। यह व्यक्ति पराश्रित रहकर जीता है और इसका परिवार बड़ा होता है।

जन्म तिथि अनुसार जन्म फल

प्रतिपदा—प्रतिपदा में जन्म पाने वाला जातक दुर्जनों के साथ रहने में आनन्द प्राप्त करता है और अपने कुल को कलंकित करते हुए व्यसनों में लिप्त रहता है।

द्वितीया—जिस व्यक्ति का जन्म द्वितीया में होता है, वह सत्यता का व्यवहार करने वाला नहीं होता, वह सोच से रहित तथा किसी के स्नेह को विशेष महत्व नहीं देता। परायी स्त्रियों में इस जातक का मन रमा रहता है।

तृतीया—जो जातक इस तिथि को जन्म लेता है, वह दूसरों से द्वेष रखने वाला होता है। वह किसी कार्य को नहीं करना चाहता तथा विफल होता है। इस जातक के पास धन का अभाव रहता है।

चतुर्थी—इस तिथि को जन्म लेने वाला व्यक्ति भोगी, दाता, मित्रों का हितैषी और

उनसे प्रेम करने वाला, विभिन्न प्रकार के ज्ञान और सम्पत्ति से धनी होता है। इसकी सन्तान अच्छी होती है।

पंचमी—पंचमी में जिस जातक का जन्म होता है, वह मनुष्य व्यवहार कुशल, कानून का ज्ञाता, दूसरों के गुणों को गान करने वाला होता है। यह माता-पिता का भक्त, दानी, भोगी तथा बहुत कम प्रेम भाव रखने वाला होता है।

षष्ठी—इस तिथि में जिस जातक का जन्म होता है, वह देश-विदेश में घूमने वाला, व्यर्थ ही झगड़ा मोल लेने वाला तथा पेट के रोग से पीड़ित रहता है।

सप्तमी—सप्तमी में जन्म लेने वाला मनुष्य थोड़ी वस्तुओं के प्राप्त करने में ही सन्तुष्ट, तेजस्वी होता है। यह सौभाग्यवान विशेष गुणों से युक्त, सन्तान तथा धन से सम्पन्न होता है।

अष्टमी—वह व्यक्ति जो अष्टमी में जन्म लेता है, वह धर्मात्मा होता है। सत्य वचन बोलने वाला, योगी, दयावान, गुणी और सब कार्यों में कुशल होता है।

नवमी—नवमी में जन्म लेने वाला जातक देवों का भक्त, पुत्रवान, धनी स्त्री में आसक्त और शास्त्राभ्यासी होता है।

दशमी—दशमी में जिस जातक का जन्म होता है, वह धर्म और अधर्म का ज्ञाता होता है। देशभक्त, यज्ञ कराने वाला तेजस्वी और सुखों का भोग करने वाला होता है।

एकादशी—एकादशी में जो जातक जन्म लेता है, वह थोड़े में ही सन्तुष्ट हो जाता है। राजा से मान्य होता है, पवित्र होता है, धनवान, पुत्रवान और बुद्धिमान होता है।

द्वादशी—इस तिथि में जिस जातक का जन्म होता है, उसकी बुद्धि अस्थिर होती है, उसका शरीर कृश होता है, मन चंचल होता है और उसको परदेश में भ्रमण करना अच्छा लगता है।

त्रियोदशी—त्रियोदशी में जिस जातक का जन्म होता है, वह व्यक्ति महासिद्ध पुरुष होता है, उसके समान पण्डित कम ही होते हैं, वह शास्त्रों का महान ज्ञानी और निरन्तर उनका पाठ करने वाला होता है। वह इन्द्रियों को अपने वशीभूत रखता हुआ दूसरों के उपकार में निमग्न रहता है।

चतुर्दशी—इस तिथि में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह धनवान होता है। धर्म का आचरण करने वाला और वचन का पालन करने में सदैव अग्रणी रहता है। यह राजमान्य और यशस्वी होता है।

पूर्णिमा—पूर्णिमा को जिस जातक का जन्म होता है, वह सम्पत्तिशाली, बुद्धिमान, और विभिन्न प्रकार के भोजन करने की इच्छा रखने वाला होता है। वह सदैव उद्योगरत रहता है और दूसरों की स्त्रियों में आसक्ति रखने वाला होता है।

अमावस्या—वह जातक जो इस तिथि में जन्म लेता है, वह दीर्घ सूत्री होता है, दूसरों से वह सदैव द्वेष रखता है, कुटिल, मूर्ख होता है। स्वभाव से निडर और पराक्रम करने वाला, गुप्त विचार रखने वाला तथा गूढ़ ज्ञान में चतुर होता है।

तिथिक्षय या तिथिमल—जिस जातक का जन्म तिथिक्षय में होता है या तिथिमल में होता है, वह कुटिल और पराई निन्दा करने में आनन्द अनुभव करने वाला होता है। गुणों से भी हीन दरिद्र होता है।

क्षयतिथि—जिस तिथि में सूर्योदय नहीं होता, वह वह क्षयतिथि होती है।

मलतिथि—जिस तिथि में दो सूर्योदय होते हैं, वह मलतिथि कहलाती है।

नन्दादि तिथि अनुसार जन्म फल

नन्दा—किसी व्यक्ति का जन्म नन्दा (1. 6. 11) तिथियों में से किसी भी तिथि में हो तो वह जातक ज्ञानी, पण्डित और देवताओं का भक्त, ज्ञानवान तथा अपने परिवारी लोगों से स्नेह रखने वाला होता है।

भद्रा—जिस जातक का जन्म भद्रा (2. 7. 12) तिथियों में से किसी भी तिथि को होता है, वह बन्धुओं में मान्य, राजा के आश्रित धनवान, संसार चक्र और बन्धन से डरने वाला, परोपकार में चित्त लगाने वाला होता है।

जया—जिस जातक का जन्म जया (3. 8. 13) तिथियों में से किसी तिथि को होता है, वह राजमान्य होता है। पुत्र-पौत्रादि से उसका घर भरा होता है। वह वीर, शान्त, दीर्घायु का भोग करने वाला और उच्च इच्छाओं वाला होता है।

रिक्ता—जिस जातक का जन्म रिक्ता (4. 9. 14) तिथियों में से किसी तिथि को होता है, वह जातक तर्क करने वाला, प्रमादी, गुरु की निन्दा करने वाला तथा शास्त्रों का अभ्यास करने वाला और घमण्ड को मर्दन करने वाला और कामी होता है।

पूर्णा—जिस जातक का जन्म पूर्णा (5. 10. 15) तिथियों में से किसी तिथि को होता है, उसे धन-धान्य का अभाव नहीं रहता, वह वेद और शास्त्रों का ज्ञाता होता है, सत्य वाणी बोलता है, चित्त का शुद्ध और अनेक विषयों का जानने वाला होता है।

रवि आदि वारानुसार जन्म फल

रविवार—जिस व्यक्ति का जन्म रविवार को होता है। उसकी प्रकृति पित्त प्रधान होती है, वह बहुत चतुर, तेजस्वी और युद्धप्रिय होता है। उसका उत्साह अदम्य होता है। दान करने रहने में उसे कभी कष्ट नहीं होता है। इस जातक को पहले मास में 22वें, 13वें तथा छठे मास में कष्ट होता है। उसके बाद इसकी आयु 60 वर्ष होती है।

सोमवार—सोमवार के दिन जन्म लेने वाला जातक बुद्धिमान होता है, प्रिय वाणी बोलता है, शान्त स्वभाव से सबका प्रिय होता है। राजा के आश्रित रहते हुए सुखी होता है। सुख-दु:ख में विचलित न होकर सम रहता है। धन का इसके पास अभाव नहीं होता। इस जातक को ग्यारहवें मास में कष्ट होता है। 16वाँ और 27वाँ वर्ष भी पीड़ादायक होता है। इसकी आयु 84 वर्ष की होती है।

मंगलवार—जिस व्यक्ति का जन्म मंगलवार को होता है, उसकी बुद्धि कुटिल होती है। उसकी जीविका का मुख्य साधन पृथ्वी या पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुओं से होता है। इसका जी युद्ध में बहुत प्रसन्न होता है। यह महाबली, सेनापति या जन-पालक होता है। इस जातक को 22वें तथा दूसरे वर्ष में कष्ट होता है। यह सदैव रोगी-सा रहता है तथा 84 वर्ष तक जीता है।

बुधवार—जिसका जन्म बुधवार को होता है, वह लेखन कार्य से जीविका चलाने वाला, वाणी का मधुर और प्रिय बोलने वाला, पण्डित, बुद्धिमान, सौन्दर्य और सम्पत्ति से युक्त होता है। यह जातक 8वें मास और 8वें वर्ष में कष्ट पाता है। इसकी आयु 64 वर्ष होती है।

गुरुवार—जिस व्यक्ति का जन्म गुरुवार को होता है, वह धनवान होता है। उसकी बुद्धि सुन्दर, विवेक युक्त और सूक्ष्मदर्शी होती है। वह व्यक्ति लोक में मान्य, राजा द्वारा मान्य राजमंत्री होता है। इस जातक के 7वें मास में कष्ट होता है। 13वें और 16वें वर्ष में भी कष्ट होता है। इसकी आयु 84 वर्ष होती है।

शुक्रवार—शुक्रवार को जन्म लेने वाला व्यक्ति चंचल चित्त, देवों का निन्दक, धर्मोपार्जन और क्रीड़ाकलाप में प्रेम रखने वाला, बुद्धिमान, स्वरूपवान और वक्ता होता है। इस जातक को कभी रोग-भय नहीं रहता। इसकी आयु 60 वर्ष होती है।

शनिवार—वह व्यक्ति जो शनिवार में जन्म धारण करता है, वह स्थिर चित्त और अपने वचन से न फिरने वाला होता है, क्रूर स्वभाव का परन्तु पराक्रमी होता है। उसकी प्रकृति दुष्ट होती है, उसके नख सुन्दर नहीं होते, दृष्टि नम्र होती है, उसके केश अधिक होते हैं तथा वृद्धा स्त्री से उसे प्रेम होता है। इस जातक को पहले माह में तथा 13वें वर्ष में कष्ट होता है। इसके बाद इसकी आयु 100 वर्ष होती है।

दिवा-रात्रि अनुसार जन्म फल

जिस व्यक्ति का जन्म दिन में होता है, उसे अनेक पुत्र प्राप्त होते हैं, मित्र भी उसके अधिक होते हैं। विभिन्न प्रकार के भोगों को भोगने वाला कामातुर होता है। इसके पास वस्त्रादि का अभाव नहीं होता। यह बुद्धिमान और सुन्दर स्वरूप वाला होता है।

जिस जातक का जन्म रात्रि में होता है, वह कम बोलने वाला, कामी तथा मलिन रूप धारण करने वाला कुटिल हृदय होता है। इसको क्षय रोग की पीड़ा होती है तथा यह गुप्त रूप से पाप कर्मों में लिप्त रहता है।

नक्षत्रानुसार जन्म फल

(1) **अश्वनी नक्षत्र** में जन्म लेने वाला व्यक्ति विनीत होता है। सेवा कार्य द्वारा अभ्युदय को प्राप्त होता है। सत्य के मार्ग पर चलता हुआ समस्त सम्पत्तियों को पा लेता है। स्त्री-पुत्रादि के सुख से सम्पन्न और अन्य सुखों से भी युक्त होता है।

(2) **भरणी नक्षत्र** में जिस जातक का जन्म होता है, वह अपकीर्ति का भागी होता है, उसे अपवाद से दुःखी होना पड़ता है। विनोदी स्वभाव का यह व्यक्ति तरह-तरह की क्रीड़ा करता हुआ अपना समय व्यतीत करता है, परन्तु जल से भयभीत होता है। यह जातक उत्तम विचारों से युक्त, खलों के लिए खल और दृढ़-प्रतिज्ञ होता है।

(3) **कृतिका नक्षत्र** में जो जातक जन्म लेता है, वह व्यक्ति क्षुधा का अधिक अनुभव करता है, कई प्रकार से दुःखी और पाप कर्मों में प्रवृत्त होने में संकोच नहीं करता। यह सत्य तथा धन से रहित और अकर्त्तव्य कर्मों को करने में सुख अनुभव करने वाला होता है।

(4) **रोहिणी नक्षत्र** में जिस जातक का जन्म होता है, वह धर्म-कर्म में कुशल होता है। अपनी जीविका को यह जातक कृषि से चलाता है। इसका शरीर और स्वभाव सुन्दर होता है। यह कृतज्ञ, मेधावी और धनवान होता है। अत्यन्त वाक्पटु होने के कारण सम्मान प्राप्त करके यह जातक सुखी रहता है।

(5) **मृगशिरा नक्षत्र** में जन्म लेने वाला व्यक्ति चपल और चतुर होता है। इस व्यक्ति को कठिन-से-कठिन समय में भी धैर्य बँधा रहता है; इसके कार्य बहुत दुरूह होते हैं, यह अपने अंहकार, स्वार्थ और दूसरों से द्वेष रखने के स्वभाव से दृप्त रहता है। यह राजप्रिय और युद्ध प्रेमी होता है।

(6) **आर्द्रा नक्षत्र** में जन्म लेने वाला व्यक्ति, सूखे शरीर वाला होता है। इसको क्षुधा बहुत सताती है, स्त्री और बन्धु-बान्धवों का प्रिय होता है। इसको क्रोध बहुत आता है तथा इसमें दया और उदारता का अभाव होता है।

(7) **पुनर्वसु नक्षत्र** में जन्म लेने वाला मनुष्य सदैव मित्रों से घिरा रहता है। शास्त्रों का अध्ययन करता हुआ आभूषणादिक से परिपूर्ण रहता है। यह जातक दानी और उदार होता है। इसके पास भूमि तथा धन-धान्य की कमी नहीं होती।

(8) **पुण्य नक्षत्र** में जो जातक जन्म लेता है, वह स्वस्थ शरीर, धर्म को जानने वाला पण्डित होता है, वह माता-पिता का भक्त और नम्र होता है। यह जातक लोक में मान्य होकर धन-धान्य, वाहनादि से युक्त होता है।

(9) **अश्लेषा नक्षत्र** में जन्म ग्रहण करने वाला जातक व्यर्थ ही देश-परदेश घूमने वाला और अपने धन को नष्ट करने वाला होता है। यह व्यक्ति साधु प्रकृति का नहीं होता, लोग इससे कष्ट पाते हैं। यह व्यक्ति विलासी और स्त्रियों में आसक्ति रखता हुआ स्वार्थी और प्रवञ्चक भी होता है।

(10) **मघा नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक पिता का भक्त और तीव्र स्वभाव का होता है। यह जातक सद्धर्मशील, अच्छे कार्यों को करने वाला, बुद्धिमान और विद्यावान होता है। इसको धन-धान्य का अभाव नहीं होता है।

(11) **पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक शूरवीर होता है, अनेक लोगों की जीविका चलाने वाला और चतुर होता है, दानी और साहसी होने के कारण यह

व्यक्ति लोगों का हृदय जीत लेता है, परन्तु इस जातक का आकर्षण स्त्रियों के प्रति बहुत होता है। इसे सरलता से मूर्ख नहीं बनाया जा सकता, यदि कोई उसे ऐसा समझता है, तो यह उसके लिए अत्यन्त कठोर और धूर्त होता है।

(12) **उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र** में जो जातक जन्म लेता है, वह कीर्तिवान और लोकप्रिय होता है। उदार, दाता और शीलवान होने के कारण इसकी सर्वत्र प्रशंसा होती है, इसका स्वभाव अत्यन्त कोमल और धीर होता है। यह धन-धान्य से पूर्ण राज्य में मान्य होता है।

(13) **हस्त नक्षत्र** में जो जातक जन्म लेता है, वह उच्च आकांक्षाओं वाला, ऊँची बातें करने की इच्छाओं से युक्त, देवता और ब्राह्मणों का भक्त होता है। इसको किसी तरह की सम्पत्ति का अभाव नहीं होता, किन्तु परस्त्रीगमन, सुरा तथा अन्य भोगों का प्रेमी और अपने बन्धु-बान्धवों से दूर रहने वाला होता है।

(14) **चित्रा नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक स्त्री-पुत्रादि व सन्तान से युक्त होता है। यह व्यक्ति अपने प्रताप द्वारा शत्रुओं को सन्ताप देने वाला होता है। नीतिशास्त्र का इसे ज्ञान होता है, स्वरूपवान तथा विभिन्न प्रकार के वस्त्रों से अपने को सजाने वाला और बुद्धिमान तथा सबको प्रसन्न करने वाला होता है।

(15) **स्वाति नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक कामदेव के समान सुन्दर होता है। इस जातक से अनेक स्त्रियाँ प्रेम रखती हैं और यह प्रसन्न भाव से भोग-विलास का आनन्द प्राप्त करने वाला, राजा से धन तथा मान-सम्मान प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है।

(16) **विशाखा नक्षत्र** में जिस जातक का जन्म होता है, वह देव पूजन करने तथा यज्ञादि कार्यों में रत रहने वाला, धार्मिक आस्था वाला व्यक्ति धातु क्रिया में निपुण, कभी उग्र और कभी सौम्य होता है। वह वेश्याओं से भी प्रेम रखने वाला, स्वभाव से कठोर तथा लोभी होता है। अभिमान भी इसे अत्यन्त होता है।

(17) **अनुराधा नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक अपने पुरुषार्थ से ऊँचा उठने के लिए विदेश जाकर जीविका प्राप्त करता है। यह बहुत कान्तिवान, यशस्वी, सदैव हर्षयुक्त रहता हुआ शत्रुनाशक और अनेक कलाओं का जानकार होता है।

(18) **ज्येष्ठा नक्षत्र** में जिस जातक का जन्म होता है, वह मनुष्य उत्तम कान्ति से युक्त, यशस्वी, प्रभुता-सम्पन्न धनी और प्रतिष्ठावान होता है। इसमें नेतृत्व के गुण होते हैं और यह लोक में मान्य होता है। यह वाणी का मधुर और अपनी वक्तृता से सबको मोहने वाला होता है।

(19) **मूल नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक कुल का नाश करने वाला होता है, परन्तु ऐसा तभी होता है, जब वह विपरीत अवयव में जन्म लेता है। यदि वह शुभ अवयव में जन्म लेता है तो वह धन वाहन से युक्त, लोक में मान्य, बलवान और स्थिर चित्त वाला होता है। यह जातक दीर्घ आयु वाला कुलपोषक होता है। अपने प्रताप के सूर्य में जब यह जातक चमकता है, तो इसके लिए हिंसा या अहिंसा समान होती है।

(20) **पूर्वाषाढ़ नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक शरणागत वत्सल होता है। वह दूसरों का उपकार करने वाला, भाग्यवान और लोकप्रिय होता है। यह जातक बहुत बुद्धिमान और सम्पत्तिवान होता है। यह जातक, भोगी, सुशील और प्रिय वाणी बोलने वाला होता है।

(21) **उत्तराषाढ़ नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक अधिक मित्रों से युक्त, स्थूल शरीर, विजय प्राप्त करने वाला और सुखी होता है। इस जातक का मन अच्छे कार्यों में लगता है। यह प्रभुत्वशाली, स्त्री और सन्तान से सुखी होता है।

(22) **अभिजित नक्षत्र** में जो जातक जन्म लेता है, वह सुन्दर स्वरूप, साधु पुरुषों की संगति में सुखी रहने वाला, विनम्र और अपनी कीर्ति से सर्वत्र चर्चित रहकर लोक में मान्य होता है। यह ब्राह्मण, देवता का भक्त, स्पष्ट वक्ता और अपने कुल में श्रेष्ठ होता है।

(23) **श्रवण नक्षत्र** में जिस जातक का जन्म होता है, वह जातक शास्त्रों में अपनी रुचि रखने वाला उनका अध्ययनकर्त्ता होता है, इसके पुत्र और मित्र अधिक होते हैं। यह अच्छे लोगों का हितैषी और उनका भक्त होता है और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके जगत में विख्यात होता है।

टिप्पणी—उत्तराषाढ़ नक्षत्र का चतुर्थ चरण और श्रवण नक्षत्र की प्रथम चार घटी का अभिजित नामक नक्षत्र होता है। इस नक्षत्र की गणना सत्ताइस नक्षत्रों में नहीं होती है। यह उत्तराषाढ़ और श्रवण नक्षत्रों में संविष्ट रहता है।

(24) **घनिष्ठा नक्षत्र** में जिस जातक का जन्म होता है, वह अपने श्रेष्ठ आचरण से सबको प्रसन्न करता है, व्यवहार में कुशल होता है, धनी और बलवान होता है, शील से युक्त विनम्र होता है। यह जातक बन्धुओं में मान्य, संगीत प्रेमी, बन्धु-बान्धवों में मान्य और रत्नादिक धन-सम्पत्ति से युक्त सैकड़ों व्यक्तियों का पालनकर्त्ता होता है।

(25) **शतभिष नक्षत्र** में जो जातक जन्म लेता है, वह कृपण होता है, धन के प्रति उसे बहुत लगाव होता है। वह भोगी, विलासी स्त्रियों के प्रति आकर्षित और धनवान होता है। विदेश में रहकर धनार्जन करके सुखी रहता है। यह अत्यन्त साहसी और शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है।

(26) **पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक बहुत निद्रा वाला होता है। यह कुशल वक्ता और सुखी होता है। इसकी सन्तान अच्छी और होनहार होती है। यह सब कलाओं में निपुण, शत्रुओं का नाशक होता है। इसको अपना समय व्यर्थ ही नष्ट करने की प्रवृति होती है।

(27) **उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र** में यदि किसी जातक का जन्म हो तो वह अपने कुल में श्रेष्ठ होता है। इसका शरीर मध्यम यष्टि वाला होता है। यह गौर वर्ण, धर्मात्मा और बलवान होता है तथा आकार को देखते हुए अधिक शक्तिशाली होता है। यह सत्कर्म करने वाला तथा कीर्तिशाली होता है।

(28) **रेवती नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक स्वभाव का भी सुन्दर और शरीर का

व्यक्ति लोगों का हृदय जीत लेता है, परन्तु इस जातक का आकर्षण स्त्रियों के प्रति बहुत होता है। इसे सरलता से मूर्ख नहीं बनाया जा सकता, यदि कोई उसे ऐसा समझता है, तो यह उसके लिए अत्यन्त कठोर और धूर्त होता है।

(12) **उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र** में जो जातक जन्म लेता है, वह कीर्तिवान और लोकप्रिय होता है। उदार, दाता और शीलवान होने के कारण इसकी सर्वत्र प्रशंसा होती है, इसका स्वभाव अत्यन्त कोमल और धीर होता है। यह धन-धान्य से पूर्ण राज्य में मान्य होता है।

(13) **हस्त नक्षत्र** में जो जातक जन्म लेता है, वह उच्च आकांक्षाओं वाला, ऊँची बातें करने की इच्छाओं से युक्त, देवता और ब्राह्मणों का भक्त होता है। इसको किसी तरह की सम्पत्ति का अभाव नहीं होता, किन्तु परस्त्रीगमन, सुरा तथा अन्य भोगों का प्रेमी और अपने बन्धु-बान्धवों से दूर रहने वाला होता है।

(14) **चित्रा नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक स्त्री-पुत्रादि व सन्तान से युक्त होता है। यह व्यक्ति अपने प्रताप द्वारा शत्रुओं को सन्ताप देने वाला होता है। नीतिशास्त्र का इसे ज्ञान होता है, स्वरूपवान तथा विभिन्न प्रकार के वस्त्रों से अपने को सजाने वाला और बुद्धिमान तथा सबको प्रसन्न करने वाला होता है।

(15) **स्वाति नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक कामदेव के समान सुन्दर होता है। इस जातक से अनेक स्त्रियाँ प्रेम रखती हैं और यह प्रसन्न भाव से भोग-विलास का आनन्द प्राप्त करने वाला, राजा से धन तथा मान-सम्मान प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है।

(16) **विशाखा नक्षत्र** में जिस जातक का जन्म होता है, वह देव पूजन करने तथा यज्ञादि कार्यों में रत रहने वाला, धार्मिक आस्था वाला व्यक्ति धातु क्रिया में निपुण, कभी उग्र और कभी सौम्य होता है। वह वेश्याओं से भी प्रेम रखने वाला, स्वभाव से कठोर तथा लोभी होता है। अभिमान भी इसे अत्यन्त होता है।

(17) **अनुराधा नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक अपने पुरुषार्थ से ऊँचा उठने के लिए विदेश जाकर जीविका प्राप्त करता है। यह बहुत कान्तिवान, यशस्वी, सदैव हर्षयुक्त रहता हुआ शत्रुनाशक और अनेक कलाओं का जानकार होता है।

(18) **ज्येष्ठा नक्षत्र** में जिस जातक का जन्म होता है, वह मनुष्य उत्तम कान्ति से युक्त, यशस्वी, प्रभुता-सम्पन्न धनी और प्रतिष्ठावान होता है। इसमें नेतृत्व के गुण होते हैं और यह लोक में मान्य होता है। यह वाणी का मधुर और अपनी वक्तृता से सबको मोहने वाला होता है।

(19) **मूल नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक कुल का नाश करने वाला होता है, परन्तु ऐसा तभी होता है, जब वह विपरीत अवयव में जन्म लेता है। यदि वह शुभ अवयव में जन्म लेता है तो वह धन वाहन से युक्त, लोक में मान्य, बलवान और स्थिर चित्त वाला होता है। यह जातक दीर्घ आयु वाला कुलपोषक होता है। अपने प्रताप के सूर्य में जब यह जातक चमकता है, तो इसके लिए हिंसा या अहिंसा समान होती है।

(20) **पूर्वाषाढ़ नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक शरणागत वत्सल होता है। वह दूसरों का उपकार करने वाला, भाग्यवान और लोकप्रिय होता है। यह जातक बहुत बुद्धिमान और सम्पत्तिवान होता है। यह जातक, भोगी, सुशील और प्रिय वाणी बोलने वाला होता है।

(21) **उत्तराषाढ़ नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक अधिक मित्रों से युक्त, स्थूल शरीर, विजय प्राप्त करने वाला और सुखी होता है। इस जातक का मन अच्छे कार्यों में लगता है। यह प्रभुत्वशाली, स्त्री और सन्तान से सुखी होता है।

(22) **अभिजित नक्षत्र** में जो जातक जन्म लेता है, वह सुन्दर स्वरूप, साधु पुरुषों की संगति में सुखी रहने वाला, विनम्र और अपनी कीर्ति से सर्वत्र चर्चित रहकर लोक में मान्य होता है। यह ब्राह्मण, देवता का भक्त, स्पष्ट वक्ता और अपने कुल में श्रेष्ठ होता है।

(23) **श्रवण नक्षत्र** में जिस जातक का जन्म होता है, वह जातक शास्त्रों में अपनी रुचि रखने वाला उनका अध्ययनकर्त्ता होता है, इसके पुत्र और मित्र अधिक होते हैं। यह अच्छे लोगों का हितैषी और उनका भक्त होता है और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके जगत में विख्यात होता है।

टिप्पणी—उत्तराषाढ़ नक्षत्र का चतुर्थ चरण और श्रवण नक्षत्र की प्रथम चार घटी का अभिजित नामक नक्षत्र होता है। इस नक्षत्र की गणना सत्ताइस नक्षत्रों में नहीं होती है। यह उत्तराषाढ़ और श्रवण नक्षत्रों में संविष्ट रहता है।

(24) **घनिष्ठा नक्षत्र** में जिस जातक का जन्म होता है, वह अपने श्रेष्ठ आचरण से सबको प्रसन्न करता है, व्यवहार में कुशल होता है, धनी और बलवान होता है, शील से युक्त विनम्र होता है। यह जातक बन्धुओं में मान्य, संगीत प्रेमी, बन्धु-बान्धवों में मान्य और रत्नादिक धन-सम्पत्ति से युक्त सैकड़ों व्यक्तियों का पालनकर्त्ता होता है।

(25) **शतभिष नक्षत्र** में जो जातक जन्म लेता है, वह कृपण होता है, धन के प्रति उसे बहुत लगाव होता है। वह भोगी, विलासी स्त्रियों के प्रति आकर्षित और धनवान होता है। विदेश में रहकर धनार्जन करके सुखी रहता है। यह अत्यन्त साहसी और शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है।

(26) **पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक बहुत निद्रा वाला होता है। यह कुशल वक्ता और सुखी होता है। इसकी सन्तान अच्छी और होनहार होती है। यह सब कलाओं में निपुण, शत्रुओं का नाशक होता है। इसको अपना समय व्यर्थ ही नष्ट करने की प्रवृति होती है।

(27) **उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र** में यदि किसी जातक का जन्म हो तो वह अपने कुल में श्रेष्ठ होता है। इसका शरीर मध्यम यष्टि वाला होता है। यह गौर वर्ण, धर्मात्मा और बलवान होता है तथा आकार को देखते हुए अधिक शक्तिशाली होता है। यह सत्कर्म करने वाला तथा कीर्तिशाली होता है।

(28) **रेवती नक्षत्र** में जन्म लेने वाला जातक स्वभाव का भी सुन्दर और शरीर का

भी दर्शनीय होता है। यह कुशल वक्ता और तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है। यह अच्छे-से-अच्छे कार्यों को करने का इच्छुक और सामर्थवान होता है। यह जातक जितेन्द्रिय और महामतिवान होता है। इसके पास धन का अभाव नहीं होता है।

विष्कम्भादियोगदि में जन्म फल

(1) **विष्कम्भ योग** में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर रूप, भाग्यवान तथा तरह-तरह के अलंकारों से युक्त होता है। यह धन, पुत्रादि तथा मित्रों से सुखी होता है। यह व्यक्ति सब प्रकार के कार्यों में स्वतन्त्र रहने वाला और अपने शारीरिक सौन्दर्य के प्रति बहुत जागरूक और उसे साज सँवारकर रखने वाला होता है।

(2) **प्रीतियोग** में जन्म लेने वाला जातक स्त्रियों का प्रिय, तत्वज्ञाता, महाउत्साही और अपने कार्य को पूरा कर डालने की लगन से युत होता है। यह जातक परोपकारी, दूसरों के आनन्द में स्वयं भी आनन्द प्राप्त करने वाला और धर्मात्मा होता है।

(3) **आयुष्मान योग** में जन्म लेने वाला जातक अर्थोपार्जन के लिए तत्पर रहता हुआ साहसपूर्वक अपने कार्य करता है। अनेक साधनों और रम्य बाग-बगीचों में घूमना पसन्द करता है और लम्बी आयु का भोग करता है।

(4) **सौभाग्य योग** में जन्म लेने वाला जातक ज्ञानवान और रूपवान होता है। सत्य आचरण करने वाला यह जातक विवेक युक्त, बलवान, धनवान तथा सौभाग्यवान होने पर भी गर्व और अंहकार से अछूता नहीं रहता।

(5) **शोभन योग** में जिस जातक का जन्म होता है, वह कुशल, सुन्दर और प्रतिष्ठा, मान-सम्मान के गौरव को प्राप्त करने वाला होता है। इसकी बुद्धि अच्छे कार्यों में प्रवृत रहती है और लोक-मर्यादानुसार धर्म का पालन करता है।

(6) **अतिगण्ड योग** में जो जातक जन्म लेता है, वह अंहकारी होता है। उसे गले की पीड़ा से दुःख प्राप्त होता है। इस जातक को क्रोध बहुत आता है तथा यह धूर्त भी होता है। इसको कलह और पाखण्ड प्रिय होता है और यह व्यर्थ की बातें बहुत करता है।

(7) **सुकर्मा योग** में जन्म लेने वाला जातक सदैव प्रसन्न रहता है, कलाओं में निपुण और मान्य होता है, अपने कार्यों को बहुत उत्साह और साहसपूर्वक निर्वाह करता है। यह व्यक्ति परोपकारी और अच्छे कार्यों द्वारा जीवनयापन करता है।

(8) **धृति योग** में जो जातक का जन्म होता है, वह ज्ञानी होता है, धनी होता है तथा अपने धन को अच्छे कार्यों में व्यय करता रहकर आनंदित रहता है। यह जातक सभा में उत्तम स्थान प्राप्त करने वाला तथा लोक-व्यवहार के अनुकूल आचरण करने वाला धैर्यवान होता है।

(9) **शूल योग** में जन्म लेने वाला जातक दरिद्र होता है। रोग में पीड़ा पाता हुआ कष्ट उठाता है, सत्कर्म करने से दूर रहता है। इसमें विनम्रता का अभाव होता है और मूर्खतापूर्ण कार्यों को करके लोक में मान नहीं पाता।

(10) **गण्ड योग** में जो जातक जन्म लेता है, वह धूर्त होता है। यह व्यक्ति मित्रों के कार्यों में असहयोग करने वाला, कलहप्रिय तथा द्वेषभाव रखने वाला होता है, स्वभाव का कठोर और बहुत क्रोधी होता है।

(11) **वृद्धि योग** में जिस जातक का जन्म होता है, वह संग्रह में रुचि रखने वाला, चतुर, व्यापार से धन-लाभ करने वाला भाग्यवान होता है। इसका भाग्य बहुत अच्छा और धन-सम्पत्ति दाता होता है।

(12) **ध्रुव योग** में जो जातक जन्म लेता है, उसके घर में सदैव लक्ष्मी का वास होता है, उसके ऊपर सरस्वती की कृपा होने से वाणी संयत और मधुर होती है और इस जातक का यश लोक में फैलता है।

(13) **व्याघात योग** में जो जातक जन्म लेता है, वह व्यक्ति क्षुद्र और दूर दृष्टि से रहित क्रूर होता है। यह जातक कृपाविहीन और असत्य व्यवहार करने वाला, नित्य निन्दा करते रहकर भी तृषित रहने वाला, लोक में अप्रतिष्ठित रहता है।

(14) **हर्षण योग** में जन्म लेने वाला जातक सुगन्धित शरीर का स्वामी होता है। इसे देखकर सबका मन प्रसन्न होता है। यह शास्त्रों का ज्ञाता और अध्ययन करते रहने वाला होता है, यह गौरवर्ण रक्तिम होता है। इसको वस्त्रालंकारों से अत्यन्त प्रेम होता है।

(15) **वज्र योग** में जो जातक जन्म लेता है, वह अच्छी बुद्धि वाला और अपने मित्र, बन्धु-बान्धवों के साथ प्रसन्न रहकर सुखी होता है। बलवान और सत्य आचरण से इस जातक का सब जगह सम्मान होता है। यह जातक रत्नों का पारखी और अमूल्य आभूषण धारण करने वाला होता है।

(16) **सिद्ध योग** में जो जातक जन्म लेता है, वह बहुत कुशल, उदारचित्त और सुशील होता है। वह शास्त्रों के अनुकूल चलने वाला और तत्वज्ञानी होता है। इस जातक का स्वभाव सुन्दर और आचरण भी बहुत अच्छा होता है।

(17) **व्यतीपात योग** में जो जातक जन्म लेता है, वह अपने माता-पिता की आज्ञा और उनकी अभिमति के अनुसार चलने वाला होता है। इसको गुप्त रोग की पीड़ा होती है। यह दूसरे के कार्यों में सहयोग देने से दूर रहता है और निर्बुद्धि की तरह व्यवहार करने से कठोर मालूम होता है।

(18) **वरीयान योग** में जो जातक जन्म लेता है, वह प्राप्त भोगों को भोगते हुए सुखी रहने वाला, नम्रता से व्यवहार करने वाला, धन का व्यय सोच-समझकर करने वाला होता है। यह जातक अच्छे कर्मों में प्रवृत रहकर सुखी और सम्मानित होता है।

(19) **परिध योगोत्पन्न** व्यक्ति असत्य व्यवहार करता है तथा असत्य साक्ष्य देकर दूसरों को हानि पहुँचाता है। धरोहरों को रखने वाला चतुर होता है। यह जातक क्षमा रहित, तेज और अपने कार्यों को किसी भी प्रकार से पूर्ण करने वाला होता है। यह संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता हुआ लोगों के लिए बहुत कठिन होता है।

(20) **शिव योग** में जन्म लेने वाला जातक मन्त्र शास्त्र का ज्ञाता होता है। यह

जातक जितेन्द्रिय और शरीर का सुन्दर और बलवान होता है। यह योग क्रिया करने वाला, धनवान और सुखी होता है। इस पर भगवान शंकर की कृपा होती है।

(21) सिद्ध योग में जन्म लेने वाला जातक जितेन्द्रिय होता है। इसका भाव और व्यवहार सत्य होता है। इसकी वाणी सत्य होती है। यह गौरवर्ण और सुन्दर व्यक्ति होता है या सभी कार्यों में कुशल और अनेक कार्यों को करने में चतुर होता है।

(22) साधन योग में जो जातक जन्म लेता है, वह नम्र, चतुर और हँसमुख होता है। वह अत्यन्त कार्य-कुशल और शत्रुओं को पराजित करने वाला होता है। यह जातक मंत्रों के प्रभाव से सर्व संसाधन युक्त होता है। धनी और लोक में मान्य होता है।

(23) शुभ योग में जन्म लेने वाला जातक सत्कार्यों को करने वाला चतुर बुद्धिमान होता है। इसके लक्षण शुभ होते हैं और यह अच्छे वचन बोलकर स्वयं भी सुखी होता है, दूसरों को भी सुख देता है। यह जातक सभी को अच्छी सलाह और उपदेश देता है।

(24) शुक्ल योग में जन्म लेने वाला जातक अपनी इन्द्रियों को वश में रखने वाला, सत्य वाणी बोलने वाला, बहुत ओज से युक्त शक्तिमान तथा वाद-विवाद तथा युद्ध में विजय प्राप्त करने वाला, सदैव आदर प्राप्त करता है। इसको श्वेत वस्त्रों का धारण करना पसन्द होता है।

(25) ब्रह्म योग में जो जातक जन्म लेता है। वह विद्याभ्यास का अत्यन्त प्रेमी, सत् आचरण करने वाला और शान्त स्वभाव का व्यक्ति होता है। यह व्यक्ति उदार और दानी होता है। अच्छे कर्म करता हुआ यह व्यक्ति लोक में सम्मान पाता है।

(26) एन्द्र योग में जन्म लेने वाला जातक शक्तिशाली, तेजस्वी होता है। इसके पास धन का अभाव नहीं होता है। यह श्री युक्त, अपने कुल में श्रेष्ठ तथा राजा के सम सम्मानित होता है। इसको कफ रोग की पीड़ा होती है।

(27) वैधृति योग में जन्म लेने वाला जातक चंचल होता है। इसको कुटिल कर्म सुहाते हैं और यह दुष्टों की मित्रता में आनन्द प्राप्त करता है। दूसरों की निन्दा तथा चुगली करने की इसकी प्रवृत्ति होती है। इस जातक को शास्त्रों का ज्ञान नहीं होता और यह उनको मानता है। जो मन में आता है उस कार्य को शास्त्रानुकूल समझता है। इसका हृदय मलिन और भयभीत रहता है।

करण जन्मानुसार फल

(1) बव करण में जन्म होने से मनुष्य कामी होता है। दयालु और शक्तिशाली भी होता है। इसकी बुद्धि तीव्र और सहज ही नवीन विचार वाली होती है। यह जातक अपने कार्यों को सहज ही कर डालने वाला, भाग्यशाली और तरह-तरह की सम्पत्तियों का स्वामी होता है।

(2) बालव करण में जो जातक जन्म लेता है, वह वीर, बहादुर, विलासी और कवि होता है। इसको दान आदि कर्मों को करने में संतोष मिलता है और इसको अनेक कलाओं का ज्ञान होता है।

(3) कौलव करण में जिस जातक का जन्म होता है, वह कामी होता है, प्रगल्भ होता है, अवसर को बिना देखे ही बातें करता है और सबके बीच में बोलता है। कोई व्यक्ति इसे समझाए तो भी अपनी त्रुटि को नहीं मानता। इसके कार्य-कलाप, विचारादि स्वच्छन्द होते हैं। इसके मित्र बहुत होते हैं तथा यह उत्तम कुल में पैदा होता है।

(4) तैतिल करण में जिस जातक का जन्म होता है, वह मनुष्य सुन्दर तथा सुकुमार होता है। उसकी वाणी, उसका वाग्विलास सुन्दर होता है, कलाओं में निपुण और कुशल वक्ता, सुशील, निर्मल बुद्धि और विशेष रूप से चंचल होता है।

(5) गर करण में जिस जातक का जन्म होता है, वह परोपकारी होता है। उसे हर जगह सम्मान प्राप्त होता है, विवेकी और बुद्धिमान हर कार्य को चतुराई से करने वाला होता है। इससे शत्रु डरते हैं, उन्हें पराजित कर देता है। इसका चित्त धैर्ययुक्त और उदार होता है।

(6) वणिज करण में जो जातक जन्म लेता है, वह कलाओं का ज्ञाता, हँसमुख, बुद्धिमान और पण्डित होता है। वह व्यक्ति व्यापार से लाभ प्राप्त करता है। लोक में बहुत सम्मान भी प्राप्त करता है।

(7) विष्टि करण में जिस जातक का जन्म होता है, वह स्वरूपवान, चंचल, चपल, बलशाली और शत्रुओं के आगे कभी न झुकने वाला होता है। इसकी बुद्धि सन्मार्ग की तरफ कम और कुमार्ग की ओर अधिक रहती है तथा इसको नींद बहुत आती है।

(8) शकुनि करण में जो जातक जन्म लेता है, उसकी बहुत ही सुन्दर बुद्धि होती है, वह मन्त्र शास्त्र में निपुण होता है, हर कार्य में समदृष्टि रखने वाला और सदैव सावधानी से रहने वाला होता है। इसके मित्रों की संख्या अधिक होती है, भाग्यवान और शकुन शास्त्र का ज्ञाता होता है।

(9) चतुष्पद करण में जो जातक जन्म लेता है, वह मनुष्य सदाचार से विमुख होता है। उसके पास हर वस्तु का अभाव रहता है और वह क्षीण शरीर होता है। वह व्यक्ति चौपायों के साथ से सुख अनुभव करता है, उनसे ही धन की प्राप्ति करता है, परन्तु वह संग्रह नहीं करता।

(10) नाग करण में जो जातक जन्म लेता है, उसका स्वभाव हीन होता है, वह दु:शील और सदैव विपरीत विचार वाला होता है। उसकी शक्ति और बल बुरे कार्यों के लिए होती है। वह सत्कर्म करने से दूर रहता है और दुर्बुद्धि से कुकर्मों में मन लगाकर कुल के लिए भी कष्टदायक होता है।

(11) किंस्तुघ्न करण में जन्म लेने से जातक को समबुद्धि प्राप्त होती है। धर्म-अधर्म, मित्र-अमित्र को भी वह समभाव से देखता है। वह शक्ति से रहित होते हुए भी काम से पीड़ित रहता है।

(12) गण्डान्त करण में जन्म लेने वाला व्यक्ति माता-पिता और भाई का नाशक होता है। यह व्यक्ति नक्षत्र-गण्डान्त में जन्म लेने पर पिता का, तिथि-गण्डान्त में जन्म लेने

पर माता का और लग्न-गण्डान्त में जन्म लेने पर भाई को नष्ट करता है। तीनों गण्डान्त कुल का ही नाशक होता है।

गण जन्मानुसार फल

(1) **देव गण** में जन्म लेने वाला जातक वाणी विलास करने वाला, सुन्दर हृदय सरल, गुणी, दूसरे गुणी जनों का आदर करने वाला और धनवान होता है।

(2) **मनुष्य गण** में जिस जातक की जन्म स्थिति होती है, वह देव, ब्राह्मणों भक्त, परन्तु अपने गुणों के कारण अभिमानी, अपने धन, बल और कलाओं का प्रदर्श करने वाला और उनकी प्रशंसा का भूखा होता है। इस जातक द्वारा अनेकों का पालन हो है। यह कान्तिवान, ज्ञानी और पण्डित होता है। सहज में ही दयार्द्र होकर दूसरों के दुःख को भी दूर करता है।

(3) **राक्षस गण** में जन्म लेने वाला व्यक्ति अल्प ज्ञानी होता है, इसका चित कठोर सहज ही न पसीजने वाला और क्रोध करने वाला होता है। इसके पास शील और विनम्र नहीं होती, इसकी प्रकृति भी हीन होती है, तथापि यह धैर्य से काम करता है, दूसरों विरोध में सदैव तत्पर रहता हुआ अपने बल का प्रयोग झगड़ा करने में अधिक करता है।

गण ज्ञान—(1) अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्र और स्वाती नामक नक्षत्रों में जन्म लेने वाले व्यक्ति को **देव गण** में जन्म लिया हुआ क जाता है।

(2) पूर्वा, फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, पूर्वा भाद्रपद, उ भाद्रपद, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा नामक नक्षत्र मनुष्य गण हैं। इनमें जन्म लेने व व्यक्ति को **मनुष्य गण** में जन्म लिया हुआ कहा जाता है।

(3) कृतिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, घनिष्ठा और मू यह नौ नक्षत्र राक्षस गण हैं, इनमें जन्म लेने वाले व्यक्ति को **राक्षस गण** में जन्म लेने वा माना जाता है।

योनि अनुसार जन्म फल

योनि ज्ञान—अश्विनी और शतभिष **अश्व योनि** नक्षत्र है, रेवती और भर गजयोनि के नक्षत्र है, पुष्य और कृतिका **छाग योनि** के, रोहिणी, मृगशिरा, **सर्प योनि** आर्द्रा और मूल **कूकर योनि** के, मघा और पूर्वा फाल्गुनी **मूषक योनि** के, पुनर्वसु आश्लेषा मार्जार योनि के, उत्तरा भाद्रपद और उत्तरा फाल्गुनी **गौ योनि** के, स्वाती हस्त महिष योनि के, ज्येष्ठा और अनुराधा **मृग योनि** के, चित्रा और विशाखा **व्याघ्र यो**नि के, पूर्वाषाढ़ और श्रवण **वानर योनि** वाले, घनिष्ठा-पूर्वा भाद्रपद **सिंह योनि** उत्तराषाढ़ और अभिजित **नकुल योनि** वाले नक्षत्र हैं। जिस-जिस नक्षत्र में जो जन्म लेता है, वह उसी नक्षत्र योनि में जन्म लेने वाला माना जाता है। प्रत्येक योनि में जन्म लेने वाला व्यक्ति के गुण धर्म निम्नलिखित प्रकार के होते हैं—

(1) **अश्व योनि** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह मनुष्य स्वतन्त्र, सद्गुणी, वीर और प्रतापी होता है। उसका स्वर गम्भीर और प्रभावी होता है। यह अपने मालिक का भक्त होता है।

(2) **गज योनि** में जो जातक जन्म लेता है, वह राजा द्वारा मान्य और प्रिय होता है, बलवान और भोगी होता है। परम उत्साही और सम्मानित होता है।

(3) **छाग योनि** (बछड़ा गाय) में जिस जातक का जन्म होता है, वह स्त्रियों का प्रिय होता है, सदैव उत्साह से युक्त और बोलने में चतुर तथा आयु का अधिक भोग करने वाला नहीं होता है।

(4) **सर्प योनि** में जिस जातक का जन्म होता है, वह महाक्रोधी होता है, महाक्रूर और उपकार करने से सदा विमुख रहने वाला होता है, न किसी का उपकार मानता है, चंचल और जीभ का लोलुप होता है।

(5) **श्व (कुक्कर) योनि** से जो जातक जन्म लेता है, वह उद्यमी और उत्साही होता है, वह वीर और अपने बन्धुओं से झगड़ा करने वाला होता है। अपने माता-पिता का भक्त होता है।

(6) **मार्जार योनि** में जिस जातक का जन्म होता है, वह वीर होता है। निडर और छद्म रूप से शौर्य दिखाकर शत्रु पर विजय पाने वाला होता है। अपने कार्य में समर्थ और मिष्ठान्न खाने वाला तथा स्वभाव का दुष्ट होता है।

(7) **छाग (मेष) योनि** में जन्म लेने वाला जातक उत्साही, वीर और योद्धा होता है। अपने पराक्रम से ऐश्वर्यवान और परोपकार करने वाला होता है।

(8) **मूषक योनि** में जो जातक जन्म लेता है, वह मनुष्य धर्मात्मा होता है, सदाचारी और अच्छे गुणों से युक्त अपने कुटुम्बीजनों का प्रिय और पोषक होता है।

(9) **सिंह योनि** में जो जातक जन्म लेता है, वह मनुष्य धर्मात्मा होता है, सदाचारी और अच्छे गुणों से युत, अपने कुटुम्बीजनों का प्रिय और पोषक होता है।

(10) **महिष योनि** में जो जातक जन्म लेता है, वह शत्रुओं को पराजित करने में सक्षम, योद्धा होता है। इसको सन्तान अधिक होती है, कामी होता है, परन्तु बुद्धि का प्रखर नहीं होता। इसको वात व्याधि बहुत सताती है।

(11) **व्याघ्र योनि** में जिस जातक का जन्म होता है, वह स्वतन्त्र, धनोपार्जन में तत्पर, दीक्षित, कार्यदक्ष और अपनी प्रशंसा अपने आप करने वाला होता है।

(12) **मृग योनि** में जन्म लेने वाला जातक स्वतन्त्र प्रकृति का होता है। इसका चित्त शान्त होता है और व्यवहार करने में बहुत अच्छा होता है। सत्य और मीठी वाणी बोलता है, बन्धुओं का प्रिय होता है। धर्मात्मा होता है, लड़ाई-झगड़ा पसन्द नहीं करता है।

(13) **वानर योनि** में जो जातक जन्म लेता है, वह चंचल स्वभाव का होता है। उसे

मिष्ठान्न अच्छा लगता है, इसे धन का लोभ होता है, झगड़ा करने में प्रवृत हो उठता है, का और वीर होता है। इसको सन्तान भी अधिक होती है।

(14) नकुल योनि में जन्म धारण करने वाला व्यक्ति दूसरों के काम में आने वा अपने कार्यों को कुशलतापूर्वक करने वाला, धनवान, पंडित और माता-पिता का भ होता है।

जन्म लग्न फल

(1) **मेष लग्न** में जिस व्यक्ति का जन्म होता है, उसका स्वभाव तीक्ष्ण होता है, व स्वाभिमानी, धनवान और शुभ कर्म करने वाला होता है। इसके अनन्तर भी वह क्रोध प विजय प्राप्त नहीं कर पाता और न रागद्वेष रहित होता है, वह अपने ही लोगों से द्वेषशी होता है, अन्य लोगों से प्रेम करता है। उसके मन में उत्साह और पराक्रम से युक्त उल्ला होता है। यह गौर वर्ण, काम प्रवृत्ति वाला, क्रोधी, सुन्दर बुद्धि से युत, स्त्री तथा सेवकों आधीन होता है। इस जातक को प्रथम माह में कष्ट, एक वर्ष की आयु में मरणतुल्य कष्ट होता है। तेरहवें वर्ष में जल में डूबने का डर होता है, अठारहवीं साल में आघात का भ होता है, 50 वें वर्ष में चोरों और लोहघात से भारी कष्ट होता है तथा 64वें वर्ष की आयु रोग का भय होता है। यह जातक 75 वर्ष, 2 माह, 15 घटी और 15 पल का आयु भो करता है। इतनी लम्बी आयु भी तब प्राप्त करता है, जब चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि होती है। यह जातक कार्तिक मास, चतुर्थी तिथि, मंगलवार में भरणी नक्षत्र के काल में शरीर त्यागता है—**मानसागरी।**

(2) **वृष लग्न** में जो व्यक्ति जन्म लेता है, वह ब्राह्मण और गुरुजनों का भक्त होता है। उसकी वाणी अच्छी होती है, वह विद्वान और गुणी होता है। धनी होने पर भी लोभी होता है। साहसी योद्धा होने के कारण सबको प्रिय होता है। यह जातक मानसिक रोगी, अपने लोगों से अपमानित, इष्ट मित्रों के वियोग को प्राप्त करने वाला, कलही, दुःखी, शस्त्र से आघात पाने वाला तथा धन की हानि से कष्ट पाता है। वृष राशि में जन्म लिए हुए इस जातक को 3/6/8/33/46/52/63 वर्ष की आयु में क्रमशः अग्नि, लोहा, साँड़, सर्प, रोग, देवता के कोप और घात से भय होता है। इन आपत्तियों से बच जाने पर जातक की आयु 85 वर्ष, 6 माह, 7 दिन की होती है। माघ मास में शुक्ल पक्ष 9 शुक्रवार को रोहिणी नक्षत्र में अर्द्धरात्रि को इस जातक का शरीरान्त होता है—**मानसागरी।**

(3) **मिथुन लग्न** में जिस जातक जन्म होता है, वह अपने लोगों का प्रिय होता है, धनी और दाता तथा परोपकारी होता है, कार्यों को करने में विलम्ब करता है, बहुत समय तक सोचता रहता है, परन्तु शत्रुओं को जीतने में सफल हो जाता है। वह कामी और भोगी होता है। यह जातक गौर वर्ण, स्त्री में आसक्त, राजा से पीड़ित होता है। इसके सुन्दर वाणी, सुवेश और नम्रता, प्रसन्नभाव और दौत्य कर्म, भूषण होते हैं। गीत रचना में भी यह निपुण होता है। यह जातक छठे मास में कष्ट पाता है, छः वर्ष की अवस्था में भी यह निपुण होता

है। इसको दस वर्ष की आयु में नेत्र पीड़ा होती है, ग्यारहवीं और अठारहवीं वर्ष की आयु में आघात से जीवन समाप्त होने का भय होता है। 24वीं, 53वीं और 63वीं वर्ष की आयु में मरण तुल्य कष्ट होता है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह से दृष्ट होता है तो इस जातक की आयु 85 वर्ष की होती है। इसका शरीरान्त पौष मास में कृष्ण पक्ष की अष्टमी, बुधवार को हस्त नक्षत्र प्रथम पहर में होता है।

(4) **कर्क लग्नोत्पन्न** जातक धर्माचरण करने वाला, भोगों को भोगने से सुखी, सबको प्रिय और मान्य होता है। मधुर अन्न पान का प्रेमी होता है। सुन्दर स्वरूप से युक्त धनवान होता है। यह जातक, गौर वर्ण, मित्र प्रकृति, दानी, जल विहार करने में आनन्द लेने वाला क्षमाशील, धर्मात्मा और सेवकों का प्रिय होता है। यह व्यक्ति जन्म से ग्यारहवें दिन में मृत्युभय को प्राप्त होता है। 9वें माह में इसे कष्ट होता है, पहले वर्ष में रोग तथा सातवें वर्ष की आयु में इसे जल से भय होता है, नवें वर्ष की आयु में शरीर रोग होता है, 12वें वर्ष में जलाघात हो सकता है, 16वें वर्ष में किसी अंग में रोग होता है। 20वें वर्ष में लोहघात, 27 तथा 35वें वर्ष में अल्पायु योग होता है, 45वें वर्ष में देवता का कोप होता है, 55वें तथा 61वें वर्ष में अल्प मृत्यु योग होता है या राजदण्ड, कठिन रोग, अग्नि, सर्प, जल, बैल, बाघ, आदि से आघात होता है। चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो इस जातक की आयु 70 वर्ष, 5 माह, 3 दिन की होती है। फाल्गुन शुक्ला अष्टमी को गोधूलि के समय पर इस जातक का देहान्त होता है।

(5) **सिंह लग्न** में जो जातक जन्म धारण करता है, वह सुन्दर शरीर, पतली कमर वाला, शत्रुओं को त्रास देने वाला भोगी होता है, इसको पुत्र कम होते हैं, कभी पीठ दिखाने की इच्छा नहीं करता, सदैव सदाचार से युक्त सत्य की रक्षा करने वाला होता है। यह जातक पाण्डु वर्ण, पित्तवात प्रकृति, तीक्ष्ण स्वभाव, रसिक, शूर और भ्रमणशील होता है। सबसे आगे आकर बोलने वाला और उदार होता है। इस जातक को आठवें माह की आयु में चोट से आघात का भय रहता है, पहले वर्ष में कष्ट होता है, दसवें व पन्द्रहवें साल में रोग होता है, 24वें तथा 25वें वर्ष में देव दोष लगता है, या सन्निपात से कष्ट होता है, 51वें तथा 61वें वर्ष में आघात होता है। शुभग्रह से दृष्ट चन्द्रमा के होने पर यह जातक किसी भी अल्प मृत्यु योग का अतिक्रमण कर जाता है और 65 वर्ष की आयु प्राप्त करता है। श्रावण मास शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि, ज्योष्ठा नक्षत्र, रविवार के प्रथम पहर में इस जातक का शरीरान्त होता है।

(6) **कन्या लग्न** में जन्म लेने वाला व्यक्ति शास्त्रों में प्रवीण और उनका अध्ययन करने वाला होता है। सौभाग्यवान तथा अनेक गुण सम्पन्न होता है; सरूपवान तथा सुरतप्रिय होता है। यह जातक सुशीला स्त्री के समान स्वभाव वाला, धनी स्त्री के वश में रहकर भीरू भाव युक्त तथा काम से पीड़ित होता है। इस जातक को तीन मास, तीन वर्ष में रोग भय होता है। पहले वर्ष तथा तेरहवें वर्ष में नेत्र पीड़ा, जल भय होता है, 26वें वर्ष में अंग रोग, 33वें वर्ष में लोहघात से दुःख पहुँचता है। 43 वर्ष की आयु में इसे कोई दूसरा रोग होता है। इन

सब संयोगों पर जातक की मृत्यु सम्भव है। यदि चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तो जातक की आयु 84 वर्ष की होती है। इसका देह त्याग भाद्र शुक्ल 9, बुध, मूल नक्षत्र में गोधूलि काल में होती है।

(7) **तुला लग्न** में जन्म लेने वाला जातक बुद्धिमान, सुकर्म से जीविका चलाने वाला, ज्ञानवान, कलाओं को जानने वाला, धनी और लोक में मान्य होता है। यह जातक कफप्रकृति, सत्यशील परस्त्री में आसक्त, राज्य में सम्मान पाने वाला और देव पूजक होता है। इस जातक को चौथे व सोलहवें मास की आयु में कष्ट होता है। चौथे व सोलहवें वर्ष में इसे जलाघात हो सकता है। 21 वर्ष व 33 वर्ष की आयु में जल से भय होता है, 51वें वर्ष में देव दोष लगता है। अंग वृद्धि 41वें वर्ष में हो जाती है। 61वें वर्ष में लघु मृत्यु योग होता है, यदि चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो जातक 85 वर्ष की आयु प्राप्त करता है। इसका स्वर्गवास वैशाख शुक्ल पक्ष की तेरहवीं तिथि शुक्रवार, चित्रा नक्षत्र में मध्याह्न के समय होता है।

(8) **वृश्चिक लग्न** में जन्म लेने वाला व्यक्ति पराक्रमवान होता है। वह कुल में श्रेष्ठ, विवेक से कार्य करने वाला तथा परिवार का पोषण करता है। उसके पास धन का अभाव नहीं होता तथा वह बहुत ज्ञानी होता है। यह जातक क्रोधी तथा वृद्धों-सा गम्भीर, राज्य में मान्य, गुणवान, शास्त्रों में रुचि रखने वाला तथा शत्रुजयी होता है। इस जातक को दूसरे माह में कष्ट होता है। सात वर्ष की आयु में रोग होता है, आठवें वर्ष में जलाघात, 13वें वर्ष में वृक्षाघात होता है, 32वें तथा 35वें वर्ष में रोग और लौहघात सम्भव है। 45वें वर्ष में अंगरोग होता है, 63वें वर्ष में अल्प मृत्यु योग होता है, यदि चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि होती है तो यह जातक 75 वर्ष, 2 माह, 7 दिन जीवित रहता है। इसका ज्येष्ठ कृष्णा 11 को मंगलवार तथा रेवती नक्षत्र में शरीरान्त होता है।

(9) **धनु लग्न** में जन्म लेने वाला जातक नीतिज्ञ होता है। वह स्वयं भी नीति के अनुसार चलने वाला, धनी और बुद्धिमान होता है। स्वजनों तथा परिजनों में पूज्य और मान्य होता है। कुल में श्रेष्ठ होता है तथा वह पुत्र-पौत्रादि से युक्त होता है। यह जातक राजा का प्रिय, कार्यों में कुशल, ब्राह्मण और देवताओं का भक्त, घोड़े की सवारी करने वाला तथा सुन्दर जाँघ वाला वीर होता है। धनु राशि में जातक को पाँचवें माह में कष्ट, तीसरे, छठे वर्ष में कष्ट तथा उसे रोगभय होता है। 16वें वर्ष में जलाघात सम्भव है, 24, 36, 47, 57 व 67वें वर्ष में सर्प, जलभय से अल्प मृत्यु होती है। चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने पर यह जातक 85 वर्ष में जीवन त्यागता है। आषाढ़ शुक्ल एक, गुरुवार, पुष्य नक्षत्र, गोधूलि के समय में जातक की मृत्यु हाती है।

(10) **मकर लग्न** में जो जातक जन्म लेता है, वह उच्च कर्म करने से विरत रहता है, इसको सन्तान अधिक होती है, यह लोभी और आलसी होता है। इसको अधिक व्यय करने से ही सुख मिलता है, परन्तु अपने कार्यों को बिगड़ने न देकर उन्हें पूरा करता है। यह जातक जल प्रिय, बहुत तीव्र स्वभाव का भीरु, धूर्तता के कार्य करने वाला, लम्बे शरीर

का, लोगों को प्रवंचित करके अपना कार्य साधने वाला होता है। यह जातक पहले और तीसरे माह तथा 3, 7, 10, 32, 33, 43 और 51वें वर्ष में कष्ट उठाता है। चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने पर 81 वर्ष की आयु प्राप्त करता है। 61 वर्ष की उम्र में देव दोष से अल्प मृत्यु की सम्भावना रहती है। कार्तिक शुक्ल 5 शुक्रवार को श्रवण नक्षत्र में देह त्याग करता है।

(11) **कुम्भ लग्न** में जन्म लेने वाला जातक स्थिर बुद्धि का होता है, मैत्री करके निभाने वाला, कोमल शरीरी, सुखी होता है। इस जातक को पराई स्त्री से प्रेम होता है। यह जातक स्थिर स्वभाव का, जलक्रीड़ा प्रिय, छोटे शरीर का, स्त्रियों से प्यार करने वाला शिष्ट होता है। इस जातक को जन्म के सातवें दिन, 18वें तथा 32वें वर्ष की आयु में कष्ट होता है। यदि चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो वह 61 वर्ष की आयु का भोग करता है। माघ शुक्ल 2 वृहस्पतिवार, उत्तराभाद्र नक्षत्र में इस जातक को असार संसार से मुक्ति मिलती है।

(12) **मीन लग्न** में जन्म लेने वाला जातक रत्नादिक स्वर्ण, धन से युक्त होता है। इसकी कामनाएँ थोड़ी होती हैं, इसका शरीर दुबला-पतला होता है तथा यह अधिक सोच-विचार करके ही कार्य को करता है। यह जातक भी जल प्रिय, विनम्र, स्त्रियों से कम केलि में आसक्त, विद्वान, ज्ञानी, सहसा क्रोध करने वाला कीर्तिवान होता है। इस जातक को 18 वर्ष तथा 33 वर्ष की आयु में कष्ट होता है। यह व्यक्ति चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने पर 61 वर्ष की आयु प्राप्त करता है। इसका देहावसान माघ शुक्ल 12 गुरुवार, पुनर्वस नक्षत्र में प्रातः समय होता है।

■

चन्द्र कुण्डली विचार

देहो लग्नं वर्गषटकोडुकानि प्राणश्चन्द्रो धातवोऽन्ये ग्रहेन्द्रा :।
प्राणे नष्टे देहधात्वङ्गनाशो यस्मात्तस्माच्चन्द्रवीर्य प्रधानम्।।

लग्न, षटवर्ग और नक्षत्र यह देह हैं और चन्द्रमा प्राण है। प्राण नष्ट होने से देह नष्ट हो जाता है, अतएव चन्द्र बल ही शुभाशुभ फल कथन में प्रधान होता है।

चन्द्रः सर्वत्र बीजाभो लग्नञ्च कुसुमप्रभम्।
फलेन सहशोंऽशश्च भावः स्वादुरसः स्मृतः।।

चन्द्रमा बीज रूप होता है, लग्न को पुष्प-प्रभास्वरूप समझना चाहिए, अंश फल रूप होते हैं, तथा भाव स्वादिष्ट रस होते हैं।

चन्द्मा हो प्राण या बीच रूप होता है, अतः चन्द्रमा की स्थिति को ही बहुत महत्व दिया जाता है। जातक की राशि भी (जन्मराशि) वही मानी जाती है, जिसमें जन्म समय पर चन्द्र होता है। गोचर फल विचार का मूल ही चन्द्रमा माना जाता है, अतः चन्द्र लग्न (जिस राशि में चन्द्रमा हो) का भी महत्व लग्न से कम नहीं होता। कुण्डली के शुभाशुभ पर विचार करते समय हमें चन्द्र राशिफल की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

चन्द्र राशिफल विचार

(1) यदि किसी जातक का जन्म **मेष राशि** में हो तो उसके नेत्र सदा चंचल रहते हैं, वह धन और धर्म को अपने पुरुषार्थ से अर्जित करता है। वह नित्य रोगी रहता है, उसकी जंघाएँ मोटी और पुष्ट होती हैं। पराये उपकार को कोई महत्व न देकर वह निष्पाप रहता है और राज्य में मान्य होता है। कामिनियों के मन को जीतने वाला और सदा आनन्दोपभोग करता हुआ दूसरों का उपकार करता है और दान देता है। यह व्यक्ति बहुत साहस भरे कार्यों को करके भी विनम्र रहता है। इसको जल से भय होता है।

(2) यदि किसी जातक का जन्म **वृष राशि** में होता है, वह व्यक्ति आनन्दोपभोग करने वाला, पवित्र कार्यों को करते हुए दूसरों को उपकृत करता हुआ दानादि धर्म से युक्त होता है। वह अपने पुण्य कार्यों से अपने को पवित्र रखता है। वह महासत्व धारण करने वाला, बुद्धिमान, धनी, विलासी और अपने तेज से लोक में आदर पाने वाला होता है।

(3) जिस जातक का जन्म **मिथुन राशि** में होता है, वह अपनी मीठी वाणी से संसार को मोह लेता है। वह अपनी कमनीय आँखों से स्त्रियों को मोहित करने में समर्थ होता है तथा वह सुन्दरियों के साथ रमण सुख प्राप्त करता है, वह गन्धर्व विद्या में निपुण और कीर्ति प्राप्त करने वाला महा भाग्यवान तथा धनी होता है। इसे काख रोग से पीड़ा रहती है।

(4) जिस जातक का जन्म **कर्क राशि** में होता है, वह कार्य-कुशल, धनी, वीर तथा पराक्रमवान, धर्म का आचरण करने वाला होता है। अपने गुरु को स्नेह करने वाला, महान बुद्धिशाली होता है। इसके अंग पतले होते हैं, विदेश यात्राओं का आनन्द लेने वाला, विदेशों में गमन करता रहता है। इसकी मित्रता अच्छे लोगों से रहती है और इसको अपने घर में विशेष आसक्ति नहीं रहती। इसके मित्र अच्छे होते हैं। अपने अहम् पर आघात लगने पर यह क्रोध करता है तथा कुटिलतापूर्वक शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ होता है।

(5) जो जातक **सिंह राशि** में जन्म लेता है, वह उदार और क्षमाशील होता है। अपने कार्यों को सुन्दर रूप से करने वाला, मद्य-माँस सेवन में रुचि रखने वाला तथा देश-देशान्तरों में भ्रमण करते हुए सुन्दर मित्रों को प्राप्त करता है। इसको सत्याचरण के विरुद्ध कोई भी कार्य होते देखने पर बहुत क्रोध आता है। यह माता-पिता का भक्त और नम्र होता है। इसको बड़े मान्य लोगों की तरह व्यसनों से भी युक्त होता है तथा लोक में विख्यात होता है। इसको शीत से भय रहता है।

(6) जो जातक **कन्या राशि** में जन्म लेता है, वह विलासी होता है। धर्म का पालन करने वाला, साधु लोगों का भक्त, सुन्दर, स्वरूपवान तथा दाता होता है। यह समर्थ होता है, इसको काव्य करने तथा काव्यों का पाठ करने, नाट्यादि करने में रुचि होती है। यह जातक वेद शास्त्रों में पारंगत तथा सर्वलोक में मान्य और आदर प्राप्त करने वाला होता है। सब लोगों का हितैषी और उनका प्रिय होता है। यह जातक स्त्रियों का प्रिय होते हुए भी स्त्री के कारण ही दुःखी भी रहता है। यह विदेशों में रहना बहुत पसन्द करता है। इसकी आयु लम्बी होती है और इसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

(7) जिस जातक का जन्म **तुला राशि** में होता है, वह चंचल नेत्रों से युक्त सदैव प्रसन्न रहने वाला, दयालु और अपने कोमल वचनों से सबको प्रसन्न करने वाला होता है। इसके पास धन स्थिर नहीं रहता, परन्तु व्यापार में चतुर होता है, मित्रों से इस जातक को बहुत प्रेम होता है। देवता और ब्राह्मणों की पूजा करने वाला, परदेश में वास करके मिली प्रतिष्ठा के कारण बन्धुजनों का आदर और प्रेम भी प्राप्त करता है। इस जातक को रोष भी असमय और अकारण ही कभी-कभी बहुत हो उठता है। वह अपने आप में दुःखी भी हो जाता है।

(8) जिस जातक का जन्म **वृश्चिक राशि** में होता है, वह बाल्यावस्था से ही विदेश वासी होता है। आत्मा से बहुत कठोर और शत्रुओं में भय पैदा करने वाला होता है। इसके नेत्र पीले वर्ण के, दूसरों की स्त्रियों में अनुरक्त, अपने लोगों के काम में कठिनाई से ही आने वाला, उद्योगी, साहसपूर्ण कार्यों को करके लक्ष्मी प्राप्त करके धनी होता है। इस जातक की बुद्धि माता के प्रति भी दुष्ट होती है। यह धूर्त और चोर भी होता है।

(9) जिस जातक का जन्म **धनु राशि** में होता है, वह वीर होता है। उसमें सत्याचार और सुबुद्धि होती है। सात्विक विचारों वाला यह व्यक्ति लोक में प्रिय होता है। यह जातक शिल्प विज्ञान का पंडित होता है, धनवान तथा सुन्दर स्त्री का पति होता है। यह अपने

मान-सम्मान की रक्षा के लिए सदैव सचेष्ट रहने वाला होता है। इसकी वाणी प्रिय, मृदु और प्रभाव बहुत ऊँचा होता है। इसका शरीर स्थूल और दर्शनीय होता है।

(10) जिस जातक का जन्म **मकर राशि** में होता है, वह कुलहीन होता है तथा कुलहीन स्त्रियों के ही वश में रहता हुआ दूसरों की निन्दा करने में सुख अनुभव करता है। अपना मान-सम्मान इसी में वह समझता है। यह माता का भक्त, पुत्रवान, धनी तथा परोपकार करने वाला दाता होता है, इस जातक को अनेक मृत्यु सेवा करते हैं। इसके बन्धु-बांधव बहुत होते हैं। इसके प्रभाव में रहने वाले अनेक लोग इसे सुख देते हैं। यह दयालु और सभी का प्रिय होता है।

(11) जिस जातक का जन्म **कुम्भ राशि** में होता है, वह अधिक आरामपसन्द, एक ही स्थान पर पड़ा रहकर ही काम करने वाला होता है। इस जातक का हृदय विशाल होता है। इसको अनेक प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होता है। दूसरों से प्राप्त उपकार को बहुत करके मानने वाला कृतज्ञ होता है। इसकी दृष्टि सुन्दर, मूर्ति सौम्य होती है और उद्योग से यह धन और विद्या से उपार्जित करके ज्ञान और आदर प्राप्त करता है। यह भय रहित पुण्यात्मा होता है। इसका उदर सुन्दर होता है।

(12) जो जातक **मीन राशि** में जन्म लेता है, उसकी चेष्टाएँ गम्भीर होती हैं। वह सोच-समझकर धर्मोचित कार्यों को करता है। यह जातक बोलने में चतुर और ज्ञानी होता है। यह अपने गुणों से सब स्थानों में पूज्य होता है। इसे अपने कुल में भी सम्मान प्राप्त रहता है, और यह देवताओं का भक्त, शीघ्रगामी, संगीत जानने वाला, नाट्यादि कलाओं में प्रवीण होता है। धन के प्रति इसका मोह होने से यह कृपण भी होता है और इसको कभी-कभी क्रोध भी बहुत आता है।

चन्द्र कुण्डली भाव-फल

चन्द्रमा से बारह भावों में रवि का फल

(1) जिस जातक के जन्म काल में **चन्द्रमा के साथ सूर्य** होता है। वह झगड़ालू स्वभाव का होता है। वह परदेश में वास करके सुख भोग करता है।

(2) जिस जातक के जन्म काल में चन्द्रमा से **दूसरे भाव में सूर्य** होता है। वह व्यक्ति राज्य में मान्य, बहुत नौकरों-चाकरों से युक्त, धनाढ्य और यशस्वी होता है।

(3) जिस जातक के जन्म काल में **चन्द्रमा से तीसरे भाव में सूर्य** होता है। वह पवित्र हृदय, राजा के समान ऐश्वर्यवान और स्वर्ण का स्वामी होता है।

(4) जिस जातक के जन्म काल में चन्द्रमा से **चौथे स्थान पर रवि** होता है। वह माता का विनाशक होता है या माता से द्वेष रखने वाला उससे विपरीत होता है।

(5) जिस जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा से पाँचवें स्थान में सूर्य** होता है। उसके कन्या नहीं होती, पुत्र कई होते हैं।

(6) जिस जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा से छठे भाव में सूर्य हो** वह शत्रुओं को पराजित कर देता है, वीर होता है तथा क्षत्रियोचित कर्म करके लोक में यशस्वी होता है।

(7) यदि जन्म समय में सूर्य **चन्द्रमा से सातवें स्थान में हो** तो जातक की स्त्री सुशीला, सुगुणा होती है। वह स्वयं भी सुशील और राज मान्य होता है।

(8) यदि **सूर्य की स्थिति जन्म समय में चन्द्रमा से आठवें भाव** में हो तो वह मनुष्य सदैव क्लेश करने वाला तथा रोगी रहता है।

(9) यदि जन्म काल में **चन्द्रमा से सूर्य नवें स्थान** में हो तो जब जातक धर्माचरण करने वाला, सत्य वक्ता और अपने बन्धु-बान्धवों के द्वारा क्लेश को प्राप्त होता है।

(10) यदि जन्म काल में **चन्द्रमा से सूर्य दसवें भाव** में हो तो उस मनुष्य के द्वार पर धनी व्यापारियों का जमाव रहता है। वह स्वयं भी धनीमानी होता है।

(11) जन्म काल में जब **सूर्य चन्द्रमा से ग्यारहवें स्थान** पर होता है तो जातक राज्य में गौरव प्राप्त करने वाला, धनी, अनेक विषयों का ज्ञाता, लोक में विख्यात तथा कुल में श्रेष्ठ होता है।

(12) जिस जातक के जन्म काल में **चन्द्रमा से सूर्य बारहवें भाव** में होता है, वह आँख के दु:ख से पीड़ित या एक आँख रहित या दृष्टि से हीन होता है।

चन्द्रमा से बारह भावों में मंगल का फल

(1) यदि जन्म समय **चन्द्रमा के साथ मंगल** हो तो वह व्यक्ति रक्त सम्बन्धी रोगों से पीड़ित होता है और उसके नेत्र लाल होते हैं।

(2) यदि जन्म समय चन्द्रमा से **दूसरे भाव में मंगल** हो तो वह जातक अपने पुत्र के भूमिपति होने के कारण सुखी होता है। वह स्वयं कृषि में रुचि रखता है, तथा खेती करके धनोपार्जन करता है।

(3) जिस जातक के जन्म समय चन्द्रमा से **तीसरे स्थान में मंगल** होता है, वह कई भाइयों से युक्त और विनम्र, सुशील तथा सुखी होता है।

(4) जिस जातक के जन्म काल में चन्द्रमा से **चौथे भाव में मंगल** होता है, वह व्यक्ति सुख से हीन होता है, उसको दरिद्रता नहीं त्यागती तथा उसके जीवनकाल में ही उसकी स्त्री की मृत्यु सम्भव होती है।

(5) जिस जातक के जन्म काल में चन्द्रमा से **पाँचवें भाव में मंगल** होता है, वह व्यक्ति पुत्र न होने से कष्ट पाता है। पुत्र का योग प्रायः नहीं होता।

(6) जिस जातक के जन्म काल में चन्द्रमा से **छठे स्थान में मंगल** होता है, वह रक्त रोग में पीड़ा प्राप्त करता है तथा अधर्म से दूर रहकर सुखी होता है।

(7) जिस जातक के जन्म काल में चन्द्रमा से सातवें स्थान में मंगल होता है, वह व्यक्ति दु:शीला स्त्री का पति बनता है। वह स्त्री कठोर वचन बोलने वाली अप्रिय कार्य करती है।

(8) जिस जातक का जन्म काल में मंगल चन्द्रमा से आठवें स्थान में होता है, वह जीव घाती, पशु-पक्षियों का वध करने वाला, पापकर्म में रत, शीलहीन तथा सत्याचरण से दूर रहता है।

(9) जिस जातक के जन्म काल में चन्द्मा से नवे स्थान में मंगल होता है, वह सम्पत्तिशाली तथा वृद्धावस्था में पुत्र के द्वारा सुख प्राप्त करता है।

(10) जिस जातक के जन्म समय में चन्द्रमा से मंगल दसवें भाव में होता है, वह धनी होता है। अपने प्रताप से वह लोक में मान्य तथा हाथी, घोड़ा आदि वाहनों से युक्त होता है।

(11) जिस जातक के जन्म समय में चन्द्रमा से मंगल ग्यारहवें भाव में होता है, वह राज्य मान्य व्यक्ति होता है। वह उच्च पदासीन होता है तथा उसके यश का सर्वत्र विस्तार होता है।

(12)जिस जातक के जन्म समय में चन्द्रमा से मंगल बारहवें भाव में होता है, वह माता से विरक्त रहता है तथा अन्य लोगों से भी विद्वेष रखने के कारण सबको कष्ट देता है।

चन्द्रमा से बारह भावों में बुध का फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म काल में बुध चन्द्रमा के साथ ही होता है तो वह स्वरूपवान तथा धनवान होता है। विशेष रूप से व्यर्थ ही अति वाचाल, निर्बुद्धि तथा अपने कुटुम्बीजनों में प्रिय होता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में बुध का स्थान चन्द्रमा से दूसरे भाव में हो तो वह जातक धन-धान्य से पूर्ण होता है। वह जन्म से ही अपने गृह में निवास करने वाला तथा बन्धु-बान्धवों की ओर से सुखी होता है। उसे शीत रोग से मृत्यु भय होता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में चन्द्रमा से बुध तीसरे भाव में हो तो वह जातक धन-सम्पत्ति से युक्त होता है। राज्य में मान्य और राज्य से लाभ प्राप्त करने वाला तथा धनी और महाजनों के साथ से सुख पाता है।

(4) यदि जन्म काल में चन्द्रमा से चौथे भाव में बुध हो तो वह जातक सुख प्राप्त करने वाला, मातृकुल (ननसाल) से लाभान्वित होता है और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करके सबको सुख देता है।

(5) यदि जन्म काल में चन्द्रमा पाँचवे भाव में बुध हो तो वह व्यक्ति बुद्धिमान, सौम्य और विनम्र होता है। इसको शास्त्रों का ज्ञान होता है। कामी होने के कारण इस व्यक्ति को उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रहता है तथा यह कठोर वचन बोलकर कभी-कभी संतृप्त होता है।

(6) यदि जन्म काल में चन्द्रमा से छठे भाव में बुध होता है तो वह जातक को कृपण बनाता है। उसमें भीरुता और भय का संचार करता है तथा विवाद से डरता है। इसके नेत्र लम्बे और इसके शरीर पर रोमावाली घनी होती है।

(7) यदि जन्म काल में चन्द्रमा से सातवें भाव में बुध होता है तो वह जातक को स्त्री के वशीभूत करके, सदैव उसी के अनुकूल रखता है। उसके पास धन होता है, परन्तु बिना स्त्री की इच्छा के वह व्यय नहीं करता। वह कृपण भी होता है। उसकी आयु लम्बी होती है।

(8) यदि जन्म समय में चन्द्रमा से आठवें भाव में बुध होता है तो वह जातक को शीत प्रकृति का बनाता है। प्रकृति से उसे सौम्यता और विनम्रता देता है। उसे राज्य में ख्याति देकर राजमान्य बनाता है। उससे शत्रु भयभीत रहते हैं।

(9) यदि जन्म समय में चन्द्रमा से नवें भाव में बुध हो तो वह जातक को अपने धर्म का विरोधी, दूसरे के धर्म को मान्यता देने वाला और अनेक लोगों से विद्वेष रखने वाला बनाता है।

(10) यदि जन्म काल में किसी जातक के चन्द्रमा से बुध दसवें भाव में होता है तो उस मनुष्य को राज योग होता है, वह राज्य मान्य व्यक्ति होता है या उच्च अधिकारी होता है।

(11) यदि जन्म समय में जातक के चन्द्रमा से बुध ग्यारहवें स्थान में होता है तो वह उसके लिए पूरी तरह से लाभप्रद होता है। उस मनुष्य का भाग्योदय पत्नी प्राप्त कर लेने के बाद होता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म काल में चन्द्रमा से बुध बारहवें भाव में होता है तो वह मनुष्य धन का लोभी, परन्तु सौम्य होता है। उसे धन को आवश्यक कार्यों में भी व्यय करना अच्छा नहीं लगता। वह भी अपने शत्रुओं से पराजित होता है तथा उसके पुत्रों को भी विजय प्राप्त नहीं होती।

चन्द्रमा से बारह भावों में गुरु का फल

(1) यदि जन्म काल में चन्द्रमा के साथ ही गुरु हो तो वह जातक को लम्बी आयु देने वाला होता है, उसे रोग रहित करता है, वह वीर और सदा ही धन से परिपूर्ण होता है।

(2) यदि जन्म काल में चन्द्रमा से दूसरे भाव में गुरु हो तो वह राजाओं में सम्मान प्राप्त करता है, उनके बीच में जातक को प्रतिष्ठा व मान्यता प्रदान कराता है, उसकी आयु को लम्बी बनाता है। जातक धर्मात्मा, उग्र और महाप्रतापी होता है।

(3) यदि जन्म काल में चन्द्रमा से तीसरे भाव में गुरु हो तो यह जातक के लिए बहुत सुखकारी होता है। यह जातक को स्त्रियों का प्रिय बनाता है तथा पिता की सम्पत्ति की भी वृद्धि कराता है।

(4) यदि जन्म काल में चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में गुरु की स्थिति हो तो वह

जातक को सुख रहित बनाती है। इसको माता के पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है। यह जातक को दूसरों के कार्य कराने में प्रवृत कराता है।

(5)यदि जन्म काल में **चन्द्रमा से पाँचवें भाव में गुरु की स्थिति होती है** तो इसके कारण जातक को दिव्य दृष्टि से युक्त करती है। वह तेजस्वी और प्रतापी होता है। उसको अधिक पुत्र प्राप्त होते हैं। यह जातक बहुत उग्र भी होता है तथा महाधनी होने से अहंकार युक्त भी होता है।

(6) यदि जन्म काल में **चन्द्रमा से छठवें भाव में गुरु की स्थिति होती है** तो वह जातक को उदासीन तथा गृहहीन बना देती है। वह इसके कारण दीर्घायु प्राप्त करता है, साथ ही वह धन से रहित भिक्षाटन से जीविका चलाने वाला होता है।

(7) यदि जन्म काल में **चन्द्रमा से सातवें भाव में गुरु होता है**, तो जिस जातक की कुण्डली में ऐसा होता है, उस जातक की आयु लम्बी होती है, वह धन का अपव्यय नहीं करता, उसका शरीर स्थूल होता है। उसे पाण्डु रोग से पीड़ा प्राप्त होती है। वह स्त्रियों की ओर से पुंसत्व के अभाव में उदासीन होता है। घर में लोग उसी की आज्ञा मानते हैं।

(8) यदि जन्म काल में **चन्द्रमा से आठवें भाव में गुरु हो** तो जिस जातक की कुण्डली में ऐसा होता है, वह जातक शरीर से रोगी रहने के कारण सुखी नहीं रहता। उसका पिता अच्छा होने पर भी उसे क्लेश प्राप्त होता है तथा उसे सदैव सुखहीन रहना होता है।

(9) यदि जन्म काल में **चन्द्रमा से गुरु नवें भाव** में होता है तो वह जातक को धर्मात्मा और धनवान बनाता है। वह सुमार्ग पर चलने वाला, देवताओं की पूजा करने वाला तथा गुरुजनों का श्रद्धापूर्वक आदर करने वाला होता है।

(10) यदि जन्म काल में **चन्द्रमा से गुरु दशवें भाव** में हो तो वह जातक को स्त्री-पुत्रादि की ओर से उदासीन बनाता है। जातक का मन गृहस्थी से हट जाता है और वह विरक्त होकर तपस्या करने में प्रवृत होता है।

(11) यदि जन्म काल में किसी जातक के **चन्द्रमा से गुरु ग्यारहवें भाव** में होता है तो वह जातक उत्तम सवारी करने वाला, राज्य में मान्य और उत्तम सुखों को भोगने वाला होता है।

(12) यदि जन्म काल में किसी जातक के **चन्द्रमा से गुरु बारहवें भाव** में होता है तो वह जातक अपने कुटुम्बीजनों से विरोध रखने वाला होकर शत्रुओं को सुखी करता है।

चन्द्रमा से बारह भावों में शुक्र का फल

(1) यदि जन्म काल में जिस जातक के **चन्द्रमा के साथ ही शुक्र** होता है तो वह जातक को सुख देता है। परन्तु उसका मरण सन्निपात, किसी के द्वारा मारा जाकर या जल के कारण होता है।

(2) जिस जातक के जन्म काल में **चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में शुक्र** होता है, वह जातक बहुत धनवान होता है। उसको बहुत ज्ञान होता है और वह तेजस्वी, प्रतापी राजा के समान होता है। उसे बड़े जनों के बीच बहुत आदर प्राप्त होता है।

(3) जिस जातक के जन्म समय पर **चन्द्रमा से शुक्र तीसरे घर** में होता है, वह जातक धनवान होता है, उसके पास मलेच्छ जातियों से सर्वदा धन का आगमन होता रहता है। अपनी बुद्धि से वह सबको अपना बना लेता है।

(4) जिस जातक के जन्म समय पर **चन्द्रमा से शुक्र चौथे घर** में होता है, वह जातक कफ प्रकृति का होता है। उसकी देह दुर्बल होती है, तथापि वह क्षमतावान होता है। उसको वृद्धावस्था में धनवान होने का सुख प्राप्त होता है।

(5) जिस जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा से शुक्र पाँचवें स्थान** में होता है, वह जातक अधिक कन्याएँ सन्तान रूप में प्राप्त करता है। उसके पास धन का तो अभाव नहीं होता, लेकिन वह अपयश के होने से सदैव पीड़ित रहता है।

(6) जिस जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा से शुक्र छठवें भाव** में होता है, वह अपने धन को निन्दनीय कार्यों में व्यय करता है। वह भयंकर कार्यों को करने में मन लगाए रखता है, परन्तु शत्रुओं से जय प्राप्त नहीं करता है।

(7) जिस जातक के जन्म काल में **चन्द्रमा से शुक्र सातवें घर** में होता है, वह मनुष्य लोक में मान्य और कीर्ति प्राप्त करने वाला होता है। वह शत्रुओं को पराजित करने वाला योद्धा, दानी, भोगी और विपुल धन का स्वामी होता है।

(8) जिस जातक के जन्म काल में **चन्द्रमा से शुक्र आठवें घर** में होता है, वह व्यक्ति पुरुषार्थ से हीन होता है। उसके मन में प्रत्येक क्षण शंकायें घर किये रहती हैं और वह निरादर सहित जीवन धारण करता रहता है।

(9) जिस जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा से शुक्र नवें घर** में होता है, उसको कई भाई और बहिनें होती हैं। उसके शुभ चाहने वाले अनेक मित्र होते हैं तथा वह सुखी होता है।

(10) जिस जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा से शुक्र की स्थिति दसवें भाव** में होती है, उसकी आयु लम्बी होती है तथा उसे माता-पिता का सुख प्राप्त होता है और वह धनी होता है।

(11) जिस जातक के जन्म काल में **चन्द्रमा से शुक्र की स्थिति ग्यारहवें स्थान** में होती है, उसको शत्रुओं से भय नहीं होता है। उसे रोग, क्लेश भी नहीं सताते। वह दीर्घायु होता है तथा उसके पास धन का अभाव नहीं होता है।

(12) जिस जातक के जन्म काल में **चन्द्रमा से शुक्र बारहवें भाव** में होता है, वह व्यक्ति पराई स्त्रियों में वासना रखने वाला, दु:शील आचरण में आनन्द लेने वाला तथा ज्ञानहीन होता है।

चन्द्रमा से बारह भावों में शनि का फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा और शनि साथ-साथ** हों तो वह जातक रोगी, निर्धन तथा बन्धुओं से भी रहित होता है।

(2) यदि किसी व्यक्ति के जन्म समय में **चन्द्रमा से शनि दूसरे स्थान में** होता है तो वह व्यक्ति माता के लिए भारी होता है। उसका बचपन कष्टमय तथा वह बकरी के दूध पर पलता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा से शनि तीसरे स्थान में** होता है, वह जातक अधिक कन्याओं को सन्तान रूप में प्राप्त करता है, इसके अतिरिक्त वह जीवित भी नहीं रहती।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा से चौथे स्थान में शनि** हो तो वह महापुरुषार्थ करने वाला और शत्रुओं को अपने प्रताप और वेग से पराजित करने वाला होता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म सयम में **चन्द्रमा से पाँचवें भाव में शनि** होता है तो उसकी स्त्री श्यामल वर्ण वाली होते हुए भी सुहासिनी और प्रियवादिनी होती है। वह उसके प्रति बहुत अनुरक्त होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय पर उसकी कुण्डली में **चन्द्रमा से शनि छठवें घर** में होता है तो वह जातक सदैव क्लेश पाता है, कष्ट से युत रहता है और उसकी आयु भी अधिक नहीं होती है।

(7) यदि जन्म समय में किसी जातक की कुण्डली में **चन्द्रमा से शनि सातवें भाव** में होता है तो वह व्यक्ति धर्माचरण करने वाला तथा कई स्त्रियों को प्रिय होता है। उसके पास जो धन होता है, उसको वह मुक्तहस्त से दान करता है।

(8) यदि जन्म काल में किसी जातक को **चन्द्रमा से शनि आठवें घर** में होता है तो वह पिता के लिए कष्टकारी होता है। उसके पास धन का अभाव नहीं होता तथा वह बहुत दान देकर सुख पाता है।

(9) यदि जन्म काल में **चन्द्रमा से शनि नवें भाव** में होता है तो वह जातक को कष्ट ही देता है। उसके धर्म की हानि होती है तथा उसके धर्माचरण को भी यश प्राप्त नहीं होता है।

(10) यदि जन्म समय में **चन्द्रमा से शनि दसवें भाव** में होता है तो ऐसा शनि जातक को राजा के तुल्य धनवान बनाता है, साथ ही वह अपने धन का संग्रह करता हुआ अत्यन्त कृपण होता है।

(11) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **चन्द्रमा से शनि ग्यारहवें भाव** में होता है तो वह व्यक्ति अनेकों पशुओं का स्वामी होता है, उसकी आयु लम्बी होती है और वह सदैव सुखी रहता है।

(12) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **चन्द्रमा से शनि की स्थिति बारहवें भाव** में होती है तो वह जातक को धनहीन बना देती है। वह पूरी तरह निर्धन होने से भीख माँगकर खाने वाला होता है तथा उसके कर्म अच्छे नहीं होते हैं।

चन्द्रमा से बारह भावों में राहु केतु का फल

(1) **चन्द्रमा से प्रथम, दशम या नवम स्थान** में जब किसी जातक की कुण्डली में राहु होता है तो वह जातक को बाल्यकाल में तथा यौवनाकाल में सुखी बनाता है, वृद्धावस्था में वह धन प्रदान करता है।

(2) यदि राहु **चन्द्रमा से तीसरे, छठवें या ग्यारहवें** भावों में होते हैं तो वह जातक को राज्य से लाभ कराते हैं, राजा के समान सौभाग्य देते हैं तथा धन-धान्य से पूर्ण रखते हैं।

(3) यदि राहु **चन्द्रमा से चौथे या सातवें स्थान** पर हों तो वह जिस जातक की कुण्डली में ऐसा होता है, उसके माता-पिता को और पत्नी को भी कष्ट देता है।

(4) यदि राहु की स्थिति किसी जातक की कुण्डली में **चन्द्रमा से दूसरे, आठवें या बारह भाव** में होती है तो वह जातक को धन से युक्त बनाते हुए भी, उसे सुखी नहीं बना पाती। जातक धनी मानी होते हुए भी क्लेश में रहता है। उसके सान्निध्य में सुजनों का वास होता है तो भी वह जातक को उसके कष्ट में सहायक नहीं हो पाते।

(5) जिस जातक के जन्म काल में **चन्द्रमा से राहु पाँचवें भाव** में होते हैं। वह जातक पग-पग पर कष्ट उठाता है, उसके जीवन में आपत्तियाँ आती रहती हैं और उसकी आयु के समाप्त होने का भय जल के कारण होता है।

■

भावस्थ ग्रह-विचार

नवग्रह प्रसिद्ध हैं ही। इनके बारे में पहले लिखा जा चुका है। राशियाँ बारह होती हैं। उनके बारे में भी उल्लेख किया जा चुका है। जब जातक जन्म लेता है तो जन्म समय जो लग्न होती है, वह किसी-न-किसी राशि में होती है और उस सयम अपनी गतिवश ग्रह भी किसी-न-किसी राशि में ही होते हैं। इन राशियों के अपने गुण और प्रभाव होतें हैं, इनके स्वामी भी राहु और केतु नामक ग्रहों को छोड़कर अन्य सात ग्रह होते हैं, यह भी पहले बताया जा चुका है। यह ग्रह जब किसी-न-किसी राशि मे होंगे तो वह राशि लग्नानुसार बारह भावों में से किसी-न-किसी भाव का ही प्रतिनिधित्व भी करेगी। उस राशि या उस भाव में जो भी ग्रह होगा, उसका उसके राशि व भाव सम्बन्ध के अनुसार ही जातक के जीवन पर प्रभाव पड़ेगा, जो कि ज्योतिष की मुख्य आधारशिला है। स्थूल रूप में लग्नगत राशि के अनुसार अन्य भावों में राशियों की व ग्रहों की स्थिति का चित्र ही जातक के भूत, भविष्य और वर्तमान का चित्र होता है, इसी को जन्म कुण्डली कहा जाता है। ग्रहों के किस-किस राशि या भाव में होने से, एक भाव के स्वामी का अन्य भाव में होने से क्या फल होता है, इसको जाने-समझे बिना फलादेश के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। अत: इसे समझना और जानना अत्यन्त आवश्यक है।

सूर्य सब ग्रहों का राजा है। अत: सूर्य की तनु आदि बारह भावों में उपस्थिति का क्या फल होता है, पहले इसी का उल्लेख किया जा रहा है।

सूर्य का फल

(1) जिस जातक के **जन्म लग्न में सूर्य होता है,** वह ऊँचे कद का व्यक्ति होता है, उसको स्त्री, पुत्र तथा बन्धु-बान्धवों से सुख नहीं मिलता। उसको वातपित्त रोग सताते हैं। इसके पास कभी धन बहुत होता है, कभी धन का अभाव रहता है। इसे पर्यटन प्रिय होता है। प्राय: इसे विदेश में व्यापार करने पर हानि होती है। इसको सन्तान कम होती है। जन्म से ही इसे सुख प्राप्त रहता है, आँखों का रोगी होने पर भी इसकी आँखें सुहावनी होती हैं। सब कामों में यशस्वी, साहसी होता है। इसे ऊँची जगह प्राप्त होती है। **मानसागरीकार का कथन है कि जातक बाल अवस्था में रोगी होता है। इसको आँखों के विकार होते हैं। यह नीच लोगों की नौकरी करता है। यह एक स्थान पर घर नहीं बसा पाता और हमेशा भटकता रहता है। इसे पुत्र-पौत्रों का सुख कम होता है।**

(2) सूर्य यदि जन्म समय में दूसरे भाव में हो तो वह भाग्यवान होता है, इसे गाय-भैंस आदि चतुष्पदों का सुख रहता है। इसका धन सुकर्मों में व्यय होता है। इसकी

कलह अपने परिवार में स्त्री के कारण होती है। धन लाभ हेतु जातक के अनेक कार्य निष्फल होते हैं। इस जातक का अपने बन्धु-बान्धवों से कलह रहता है, शुभ कार्यों में धन का व्यय करने वाला यह जातक धनी होने से दम्भी होता है। इसके कार्य स्थाई रूप नहीं ग्रहण कर पाते हैं। **मानसागरीकार का कथन है कि द्वितीय भाव का सूर्य जातक को सन्तान और स्त्री से रहित कर देता है। इसका शरीर पतला-दुबला और दीन होता है, इसके नेत्र लाल होते हैं और केश अच्छे नहीं होते। यह ताँबे और लोहे के व्यवसाय से धनी बनता है।**

(3) सूर्य यदि जन्म काल में **तीसरे भाव** में हो तो जातक बड़ा प्रतापी और पराक्रम करने वाला होता है। इसको सगे भाइयों से कष्ट प्राप्त होता है। परदेश भ्रमण करता है और तीर्थ-यात्रा का प्रेमी होता है। यह राज्य से सुख पाता है तथा यह शत्रुओं को सर्वदा पराजित करता है। यह जातक सूर्य के तीसरे स्थान में होने के कारण अपने भाइयों का नाश करने वाला होता है। इसे अपने प्रियजनों से हित होता है, वह उनका भला चाहता है। इसको स्त्री व पुत्रों का सुख मिलता है। यह धनवान, धैर्यवान और दूसरे लोगों की उन्नति देखकर कभी नहीं जलता। वह धनी और अपने प्रताप को फैलाने के लिए धन का मोह नहीं करता। इसके प्रति स्त्रियों का बहुत प्रबल आकर्षण होता है। **मानसागरीकार का कथन है कि सूर्य के तीसरे भाव में होने से भाइयों के सुख से हीन होता है । यह अपने मित्रों का हित चाहने वाला होता है, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, धनी और धर्म से सम्पन्न होता है। यह बहुत उदार और क्षमाशील होता है । इसको स्त्रियों का सान्निध्य और प्रेम बहुत होता है।**

(4) जिस जातक के जन्म काल में **सूर्य चौथे भाव** में स्थित हो, उसे अतिमहत्वपूर्ण शोभा युक्त अधिकार का पद प्राप्त होता है। भाई-बन्धुओं से उसका मतभेद रहता है, परदेश में रहकर जीविकोपार्जन करता है। शत्रुओं द्वारा इस जातक का मान भंग होता है और यह अशान्त रहता है। इस जातक को राजकुल से धन और मान प्राप्त होता है। भाइयों से कलह रहती है, दुर्जनों से कष्ट मिलता है तथा शत्रुओं से पराजय मिलती है। यह मनुष्य मूर्ख तथा दुर्बल होता है, इसे सुख नहीं मिलता। **यह मनुष्य सब प्रकार के मनुष्यों से मेल रखता है, इसका हृदय कोमल होता है, गीत वाद्य में यह जातक चतुर, रण में विजय प्राप्त करने वाला, धन, स्त्री से सुखी तथा राजमान्य होता है (मानसागरी)।**

(5) जिस जातक के जन्म काल में **सूर्य पाँचवें भाव** में होता है, उसे अपने पहले पुत्र से कष्ट मिलता है। इसकी बुद्धि बहुत पैनी होती है। यह व्यक्ति मंत्र शास्त्र का ज्ञाता होता है। इस मनुष्य की बुद्धि छल की ओर से भी इसे प्रवृत कराकर दूसरों को ठगने का जाल फैलाने में भी तेज होती है। इसे इसमें आनन्द आता है। इसके पास धन बहुत होता है। यह जातक प्रमादी और लापरवाह, बेफिकरा होता है। यह हृदय की पीड़ा से मृत्यु प्राप्त होता है। इस जातक के ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु की सम्भावना रहती है। यह जातक शुभ कर्म नहीं करता, अन्त में यह संतानहीन व धनहीन होकर इधर-उधर भटकता है। **यह जातक**

बाल्यावस्था में दु:खी, युवावस्था में धनी, रोग से युक्त, एक पुत्र वाला, दूसरे के घर में निवास करने वाला, चंचल, नीचकर्म में तत्पर तथा हृदय का बुरा होता है (मानसागरी)।

(6) जिस जातक के **छठे भाव में सूर्य** होता है, वह शत्रुओं के लिए बहुत प्रबल होता है। वह अपने विपत्ति ग्रस्त मित्र को बचाने के लिए धन भी व्यय करता है। यह जातक अपने मामादि (मातृकुल वासियों) के लिए भारी होता है। इसे चौपायों द्वारा हानि प्राप्त होती है। परदेश में जाते समय दुष्टों द्वारा ठगा या लूटा जाता है। यह जातक विख्यात, सुखी और धनी होता है। यह धन को अति व्यय करने वाला, मातृकुल के लिए विपत्ति कारक तथा पशुओं से हानि होती है। इसका धन व्यर्थ ही नष्ट होता जाता है। **यह जातक योगी, सुबुद्धिवान, अपने लोगों का पोषण करके सुखी, ज्ञानियों में श्रेष्ठ, कृश शरीरी, उत्तम रूप, विलासी, शत्रुजयी, सत्कर्मों से लोक में पूज्य होता है (मानसागरी)।**

(7) जिस जातक के जन्म समय में **सूर्य सातवें भाव** में होता है, वह व्यक्ति स्त्री से या स्त्री के हेतु क्लेश पाता है। उसको शारीरिक पीड़ा तथा राजा और शत्रुओं से सदैव भय रहता है। इस जातक के लिए स्त्री ही सर्वस्व होती है। इसको शत्रु बाधा बहुत क्लेश देती है। यह जातक राजा से विरोध रखता है और राजा द्वारा दण्डित भी होता है। यह शरीर से दर्शनीय नहीं होता है। इसको स्त्री का कष्ट होता है तथा यह स्त्री के अभाव में बहुत दु:खी होता है। **यह जातक स्त्री के साथ विलास करने वाला, दूसरे सुखों से हीन, चंचल, शरीर, पापी, कपिल वर्ण नेत्र पिंगल, वर्णी केशों से युक्त, कुरूप होता है** (मानसागरी)।

(8) जिस जातक के जन्म समय में **आठवें भाव में सूर्य** होता है, वह व्यवहार से धूर्त और चालाक होता है। यह विदेशी स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है, अभक्ष्य वस्तुओं का सेवन करता है। इसका धन भी चोरी चला जाता है। इस जातक के शरीर की कान्ति बहुत सुन्दर होती है। यह अकर्मण्य और भाग्यवादी हो जाता है। इस जातक की धूर्ताएँ धन पिपाशु, रूपाजीवा स्त्रियाँ ठगती हैं। इसके धन-यौवन का नाश करती हैं। परेदशवासी, स्त्रियों में रत तथा लोगों से लड़ने-झगड़ने की आदत से खुद ही परेशान नहीं होता। **यह जातक चंचल, त्यागी, विद्वान का सत्कार व सम्मान करने वाला, सदैव रोग से पीड़ित, बहुत बात करने वाला, शील रहित, भाग्य से हीन, परदेश वास करने वाला, नीच की सेवा करता है (मानसागरी)।**

(9) जिस व्यक्ति के जन्म समय में **सूर्य नवम् स्थान** में होता है, वह दुष्ट प्रकृति का होता है। वह व्यक्ति शुभ कार्य भी दम्भ या दूसरों को भुलावें में डालने के लिए करता है। यह सदा अशान्त और चिन्ता से युक्त रहता है। यह अपने सगे भाइयों के प्रति भी सद् व्यवहार नहीं करता और यह उनके प्रति भी संतृप्त रहता है। यह जातक परदेश में रहने से सदैव उद्विग्न रहता है, सामान्यत: व्यक्ति अपने बाहरी आचरण के कारण लोक में आदर प्राप्त कर लेता है, किन्तु इसकी अपने सहोदर भाइयों से द्वेष भावना रहती है। **यह जातक**

सत्य वक्ता, सुन्दर केशवाला, अपने परिजनों का हित चाहने वाला, देव-ब्राह्मणों का भक्त, बाल्यावस्था में रोगी, युवावस्था में स्थित धनवान, दीर्घायु और स्वरूपवान होता है (मानसागरी)।

(10) जिस व्यक्ति का जन्म समय में **सूर्य दसवें भाव** में होता है, वह अपने उद्योग-उद्यम से राजा के समान प्रतिष्ठा, धन लक्ष्मी प्राप्त करता है। उसके सभी कार्य सफल होते हैं। इसकी माता को कई प्रकार के रोग होते हैं, जिनके कारण इसे कष्ट होता है। इसको अपने मित्र, स्त्री आदि प्रियजनों से वियोग सहन करना होता है। यह अपने चित्त में दु:खी होता है। इस जातक के जन्म समय में माता-पिता को अधिक कष्ट होता है। इसकी कार्य सिद्धि परिश्रम से होती है। इसके ऊपर राजा कृपा तथा इसे अतुल कीर्ति का लाभ होता है। इसको स्त्री-पुत्रादि से सुख नहीं मिलता। **इस जातक को पिता का सुख प्राप्त होता है। इसे धन प्राप्त होता है। इसका आचरण शुद्ध, यह ऐश्वर्यवान राजा के समान होता है (मानसागरी)।**

(11) जिस जातक के जन्म काल में **सूर्य ग्यारहवें भाव** में होता है, इसे राज्य के धन की प्राप्ति होती है। यह अधिकारी है, राज्य में इसके अधिकारी होने की मान्यता होती है। इसके प्रताप से इसके शत्रुओं के हृदय में संताप रहता है और वह दिन-रात दु:खी रहते हैं। इसको सन्तान हेतु या सन्तान के दु:ख प्राप्त होता है। यह मनुष्य गतिशास्त्र का ज्ञाता होता है, धनाढ्य तथा शुभकर्म करने वाला जनता में नेता तथा लोगों में मान्य मुख्य व्यक्ति होता है। **इस जातक को विद्या से प्रेम होता है। इसकी रुचि शुभ कार्यों में होती है यह कीर्तिमान और धन से परिपूर्ण होता है । इसे राज्य से नित्य ही धन प्राप्ति होती रहती है (मानसागरी)।**

(12) जिस जातक के जन्म समय में **सूर्य बारहवें भाव** में होता है, वह व्यक्ति नेत्र पीड़ा से दु:खी रहता है। शत्रुओं के साथ इसका विवाद होने पर इसकी विजय होती है। प्राप्ति की ओर से इसे स्थिरता प्राप्त होती है। यात्रा में इस व्यक्ति को हानि होती है। इसके शरीर में व्यथा होती है। इसको कुल परम्परागत धर्म के अनुसार चलने में बन्धन लगता है और यह स्वच्छन्द चलता है। इसे राजा तथा चोरों से भय रहता है। **यह जातक मूर्ख होता है। इधर-उधर भटककर कष्ट उठाता है। वह कामुक परस्त्री गामी होता है। यह दुष्ट हृदय होता है, पक्षियों का आहार करने वाला दुर्बल देह होता है। यह साधारण लोगों से द्वेष रखता है (मानसागरी)।**

चन्द्र का फल

(1) जिस मनुष्य के जन्म काल में चन्द्रमा लग्न में होता है, वह मूर्ख, मूक, उन्मत्त और विफल हृदय होता है। वह अनुचित कार्यों को करने में कोई संकोच नहीं करता, दूसरों का दास और दुबले-पतले शरीर का होता है। **यही चन्द्रमा यदि बलवान हो तो जातक सुखी, दीर्घायु, ऐश्वर्य से युक्त धनवान होता है। इसको पुत्रों की भी कमी नहीं होती (मानसागरी)।**

चन्द्रमा की स्थिति विशेष– चन्द्रमा की दो अवस्थाएँ होती हैं– क्षीण और पूर्ण।

(1) शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की सप्तमी तक चन्द्रमा पूर्ण होता है।

(2) कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक चन्द्रमा क्षीण होता है। क्षीण चन्द्रमा पाप ग्रह के रूप में माना जाता है, किन्तु पूर्ण चन्द्रमा शुभ ग्रह माना जाता है।

चन्द्रमा को सामान्यतः शुभ ग्रह मानते हैं, परन्तु सर्वकाल में ऐसा नहीं होता है। चन्द्रमा जब पूर्ण हो तभी उसका फल शुभ होता है, अन्यथा अशुभ होता है। परन्तु शुभ और अशुभ चन्द्रमा के बीच की भी एक मध्यम स्थिति होती है, जिसके अनुसार चन्द्रमा को बलवान माना जाता है–(1) शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा दशमी तक चन्द्रमा मध्य बली होता है, (2) दशमी के बाद दस दिनों तक चन्द्रमा अति बलवान होता है, (3) इसके बाद के अन्तिम दस दिन का चन्द्रमा बलहीन हो जाता है, और पूरी तरह अशुभ फल देता है। ज्योतिर्विदों की यही मान्यता है, अतः जब लग्न **का चन्द्रमा बलहीन हो तो उसका फल अशुभ होता है**, मध्यबली हो तो सम होता है, न शुभ फल देता है, न अशुभ, परन्तु बलवान होने पर शुभ फल देता है।

(2) चन्द्रमा यदि किसी जातक के जन्म समय में **दूसरे स्थान** में हो तो वह व्यक्ति धन-धान्य से पूर्ण होता है। वह स्त्रियों के साथ विलास करता है, शरीर से अत्यन्त सुखी होता है। इसे अपने कुटुम्ब से मोह कम होता है। इस जातक को धन की वृद्धि होती है, सुन्दर स्त्रियों को देखकर मन में सहज ही प्रेम का उदय होता है। इसके घर में लक्ष्मी का वास होता है। **यह जातक बहुत बड़े परिवार वाला होता है। उसके घर बहुत धन-ऐश्वर्य होता है। वह दानी, बुद्धिमान, चंचल, मुखी, यशस्वी, सहनशील और कमल की भाँति कीर्तिमान होता है (मानसागरी)।**

(3) जिस जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा तीसरे भाव** में होता है, वह अपने पराक्रम द्वारा धन का लाभ करता है। वह सुन्दरी रमणियों द्वारा आकर्षित किये जाने पर भी उनमें अनासक्त होता है, धर्मात्मा होता है और यह अत्यन्त कीर्तिमान होता है। इसको भाइयों से सुख मिलता है और यह अन्य प्रकार से भी सुखी होता है। यह जातक भाई-बन्धुओं को आश्रय देने वाला होता है। यह मनुष्य शूर, सदा प्रसन्न रहने वाला और विद्यावान, गुणी, अन्न-वस्त्र का संग्रह करने वाला होता है। **यह व्यक्ति काव्य व्यसन, शास्त्रादि का जानने वाला और धन से परिपूर्ण होता है (मानसागरी)।**

(4) जिस जातक के जन्म समय पर **चन्द्रमा चौथे भाव** में होता है, इसे बाल अवस्था में उत्तम सुख प्राप्त नहीं होता है। यह बन्धु-बान्धवों से सुख प्राप्त करता है। यह मनुष्य बलवान, प्रतापी तथा राजा का कोष सम्हालने वाला होता है। इसे बाल्यावस्था के बाद यौवन काल में स्त्री सुख, पुत्र सुख तथा अलंकार का पूरा-पूरा सुख मिलता है। **यह जातक स्त्रियों का प्रिय, माँस-मछली का सेवन करने वाला, धन से परिपूर्ण होता है तथा यह उत्तम सवारियों से युत सुन्दर भवन में निवास करता है (मानसागरी)।**

(5) जिस जातक के जन्म काल में **पाँचवें भाव में चन्द्रमा** होता है, वह अवश्य ही

उत्तम सन्तान से युक्त होता है। इसकी बुद्धि निर्मल होती है तथा यह रत्न और भूमि को प्राप्त करने वाला, व्यापार में उद्यम करते हुए निरन्तर धन लाभ करता है। इसे कई प्रकार से धन लाभ होता है। इस जातक को अलंकारों से युक्त स्त्री-पुत्रादि का सुख प्राप्त होता है। यह मनुष्य उत्तम विद्या से युक्त पण्डित होता है। इसे राजकुल में सम्मान प्राप्त होता है। इसे ब्याज से भी धन लाभ होता है। **इस जातक के बहुत पुत्र और इसकी स्त्री पति वंशवर्तिनी और सती होती है। इसको अत्यन्त सुख प्राप्त होता है (मानसागरी)।**

(6) जन्म लग्न से जिस जातक के जन्म काल में **छठे भाव में चन्द्रमा** होता है, वह प्रबल शत्रुओं को भी अपने प्रताप से जीत लेता है। इस व्यक्ति का मन माता की ओर से सौहार्द्र रहित होता है। इस जातक के अनेक शत्रु होते हैं। इसकी जठराग्नि मंद रहती है तथा इसका शरीर कोमल होता है। लोभी भी बहुत होता है, तो भी इसके पास धन अधिक नहीं रहता है। इसकी आयु भी अल्प होती है। **इस जातक का भाग्य दबा हुआ होता है और यह सुखहीन तथा रोगी होता है। इसको शत्रुओं से भय रहता है। इसको सब प्रकार के सुख प्राप्त होने के योग भी होते हैं (मानसागरी)।**

(7) जिस मनुष्य के जन्म समय में **चन्द्रमा सप्तम स्थान** में होता है, वह स्त्री से लाभान्वित होता है। इसे स्त्रियों के प्रति आकर्षण तथा भोगेच्छा बहुत होती है। इसकी वाणी में मधुरता और स्त्रियों को मोह लेने की पटुता बहुत होती है और इसकी बुद्धि बहुत तीव्र होती है। यह मनुष्य दयालु और भ्रमणशील होता है। इन स्त्रियों में अनुराग विशेष के कारण उनकी अधीनता में इसे आनन्द आता है। इसको शस्त्रघात से पीड़ा होती है। इसको राजप्रसाद जैसा मकान प्राप्त होता है।

(8) जिस मनुष्य के जन्म काल में **चन्द्रमा अष्टम भाव** में होता है, वह उद्विग्न, चिन्ता युक्त, रोगी, दुर्बल शरीर वाला होता है। इसको राजा और चोरों से भय होता है। यह मनुष्य स्थिर बुद्धि नहीं होता है। यह निर्धन होता है और इसकी आयु थोड़ी होती है। यह जातक युद्ध के लिए, उत्सुक दानी, विनोदशील और विद्वान होता है। इस भाव का चन्द्रमा मनुष्य को श्वास कण आदि नाना विधि दुःख कारक होता है और यह सदा दुःखी रहता है। यदि कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और शुक्ल पक्ष में रात्रि को जन्म हो तो अष्टम भाव का चन्द्रमा माता के समान मनुष्य की रक्षा करता है। स्त्री के कारण इसे बन्धुओं का त्याग करना होता है। आयु के 44वें वर्ष में सम्पत्ति का नाश होता है।

(9) जिस जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा नवम् भाव** में होता है, वह भाग्यशाली होता है। इसकी स्तुति तथा विरुदावली का गान भाट लोग करते हैं, इसकी कीर्ति चारों तरफ फैलती है। यह साहसी होता है तथा शारीरिक रूप से निरोग होता है। इस जातक को धन का लाभ तथा कीर्ति लाभ बहुत होता है। यह मनुष्य धार्मिक और पुत्रवान होता है। यह जातक धर्मात्मा, धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने और सुनने वाला तथा तीर्थयात्राओं का करने वाला होता है।

(10) जिस जातक के जन्म समय में **चन्द्रमा दसवें भाव** में होता है, वह धर्मात्मा

होता है। इसको राज्य सुख प्राप्त होता है। धनी मानी लोग इसका आदर-सम्मान करते हैं। इसको बाल्यावस्था में अल्प सुख प्राप्त होता है, परन्तु यौवनावस्था में इसे बहुत सुख मिलता है। इस मनुष्य का अपने बड़े पुत्र से अच्छा सम्बन्ध नहीं रहता। इस जातक को रमणियों से अत्यन्त सुख मिलता है। यह मनुष्य सर्वत्र विजय पाता है, जिस काम को हाथ में लेता है, उसमें इसे पूरी तरह सफलता प्राप्त होती है। यह श्वसुर गृह से धन प्राप्त करने वाला होता है।

(11) जिस मनुष्य के **ग्यारहवें भाव में** जन्म समय चन्द्रमा होता है, वह राज्य में मान्य होता है। उसे प्रतिष्ठा, अधिकार तथा मूल्यवान वस्त्रालंकार प्राप्त होते हैं। इसके पास उत्तम स्त्रियाँ होती हैं। इसको कन्या सन्तान अधिक होती हैं, इसके उद्यम निष्फल हो जाते हैं। इसको नाना प्रकार से व्यापार से लाभ होता है। यह व्यक्ति मित्रों से घिरा रहता है। इनके पास धनाभाव नहीं रहता है। इसके पास उच्चकोटि के वाहन होते हैं। यह जातक स्त्री, पुत्र मित्रों से युक्त होता है। इसे रत्न तथा बहुमूल्य धातुओं की प्राप्ति होती है।

(12) यदि जन्म समय किसी का **चन्द्रमा बारहवें** स्थान में होता है तो वह व्यक्ति शत्रुओं से भयभीत, नेत्रादि विकारों से युक्त होता है। इसका धन मंगल कार्यों से व्यय होता है, यह कभी बुरे कामों में अपना धन खर्च नहीं करता है। स्त्रियों से तथा मामा-चाचा आदि से इसे विशेष प्रेम नहीं होता है। अपनी पत्नी से भी इसे कम प्रेम होता है। इस जातक को पाप कार्यों में अपनी बुद्धि लड़ाने में विशेष रुचि रहती है। इसको भूख बहुत होती है। यह शराब पीने से रोगी होता है। मित्रों से इसका व्यवहार अच्छा नहीं रहता।

मंगल का फल

(1) यदि किसी जातक के **जन्म लग्न में मंगल** हो तो वह सिर और नेत्र पीड़ा से दुःख उठाता है। उसको मानसिक संताप होता है। उसके स्त्री तथा प्रिय बन्धुओं की मृत्यु होती है। उसके फल विपाक में विघ्न पड़ते हैं और उसके मनोरथ विफल हो जाते हैं। इस जातक के ऊपर लोहास्त्र के वार होते हैं, किन्तु यह सिंह के समान पराक्रमी होता है। यह जातक कुरूप, रोगी तथा बन्धुहीन, मिथ्या भाषी और परस्त्री गामी होता है। यह अत्यन्त बुद्धि विभ्रम से दुःखी होता है। इसके शरीर में घाव होते हैं। यह किसी एक स्थान पर स्थायी रूप से नहीं रहता है। यदि लग्न में मंगल हो तो जातक क्रूर होता है, साहसी, मूढ़ और अल्पायु होता है। यह जातक बाल्यावस्था में उदर रोगी तथा दाँतों के रोग से युक्त होता है। मैले वस्त्र धारण करने वाला, सुखहीन और पाप कर्मा होता है।

(2) जिस जातक के जन्म समय में **दूसरे घर में मंगल** हो तो जातक के कुटुम्ब को नष्ट करता है, उसको धनी नहीं होने देता है। उसे अपने परिवार तथा धन का सुख नहीं मिलता। यह जातक कुत्सित अन्न का भोग करता है। इस जातक को वाद-विवाद में, खेती में और प्रवास हेतु सन्नद्ध रहने में द्वितीय स्थान का मंगल कारण होता है। यह जातक निर्धन, नीच लोगों के साथ रहने वाला और मूर्ख होता है। यह जातक धातुओं का व्यापारी,

परदेश वासी, दूसरों से धन लेने वाला, जुआरी, सहिष्णु, खेती करने वाला, उद्यमी और दुबला-पतला होता है। यह सदा सुखी रहता है।

(3) जिस जातक के जन्म समय में **मंगल तीसरे भाव** में हो तो वह अपने साहस और पूरे भुजबल से बलवान होता है। वह अपने यहाँ अपने उद्यम और अपव्यवसाय से लक्ष्मी का वास कराता है। वह भाई के लिए कष्ट कारक होता है। धार्मिक प्रकृति का होने के कारण वह अपने यहाँ यज्ञ, अनुष्ठान कराता है। यह जातक राजा की कृपा का पात्र होता है। यह उदार और पराक्रमी होता है। यह जातक सुन्दर, धनवान, ऐश्वर्यमान होता है; छोटे भाई के लिए भारी होता है। यह जातक शत्रुओं के लिए कष्टदायी, छोटे भाई को नष्ट करने वाला, वेश्याओं तथा पराई स्त्रियों में रत रहकर विलास सुख प्राप्त करता है। यह अपने धैर्य और पराक्रम से लोक में सम्मान पाता है।

(4) जिस जातक के जन्म समय में **मंगल चौथे भाव** में होता है, उसे राजा से वस्त्र, भूमि, मान-सम्मान मिलता है। उसे अपने मित्रों, बन्धु-बान्धवों आदि से सुख प्राप्त नहीं होता, शत्रुओं से भय रहता है। उसे वाहन से दुःख मिलता है, उसे रोग घेरे रहते हैं, उसका शरीर निर्बल होता है तथा उसमें सहन शक्ति नहीं होती। यह जातक देश-परदेश में मारा-मारा फिरता है, इसे कहीं पर भी स्थिरता और चित्त शान्ति नहीं मिलती, इसका भारी पतन होता है। यह दूसरों के धन और स्त्रियों के प्रति लुभित रहता है।

(5) जिस जातक के जन्म समय में **मंगल पाँचवें भाव** में होता है, वह पाप-कर्म बुद्धि से पीड़ित, क्षुधा से पीड़ित और अपनी अंतरात्मा में संतृप्त ही रहता है। यह जातक की संतान को नष्ट करता है, गर्भ स्थित संतान का नाश करता है। यह जातक सुखहीन, धनहीन, पुत्रहीन, चंचल मति, खल, विकल और नीच होता है। इसे वात और कफ से व्याकुलता रहती है, इसको स्त्री, पुत्र और मित्र का सुख नहीं मिलता है। यह जातक क्रूर, घुमक्कड़, अपना धर्म त्याग कर दूसरे के धर्म को स्वीकार करने वाला, भोगी और धनी होता है। इस जातक को दरिद्रता और कुवासना घेरे रहती है। यह ज्ञानी पूरी तरह यर्थाथवादी, सांसारिक सुख को ही सर्वोपरि मानने वाला तथा बुद्धि का तीक्ष्ण होता है। इसकी प्रवृत्ति गायन विद्या की ओर होती है।

(6) जिस जातक के जन्म समय में **मंगल छठे भाव** में हो तो वह बहुत पराक्रमी और शक्तिशाली होता है। साहस और उत्साह से भरा हुआ यह जातक शत्रुओं का नाश कर डालता है। यह जातक मनीषी तथा विचार बुद्धि से सम्पन्न ज्ञानी होता है। यह जातक मातृकुल के लिए हितकर नहीं होता। इस जातक की भूख तेज होती है, इसको क्रोध बहुत होता है। यह स्त्रियों की ओर विशेष रूप से आकृष्ट और कामुक होता है। इसकी मित्रता अच्छे व्यक्तियों से होती है। इसका शरीर स्वस्थ और सुन्दर होता है। इसके पास धन बहुत होता है, यदि धन नष्ट भी हो जाय तो पुनः आ जाता है। यह जातक धन धान्य से युक्त, शत्रुओं को संताप देने वाला, स्त्रियों को प्रसन्न करने वाला, शरीर से पुष्ट तथा शुभ अन्तःकरण का होता है। यह जातक हठी, अपने मन की करने वाला, हदचित्त तथा पशु धन से लाभ प्राप्त करता है।

(7) जिस जातक के जन्म समय **मंगल सातवें भाव** में हो तो वह शत्रुओं से भयभीत तथा उनसे बार-बार कष्ट पाता है। यह अपनी स्त्री का सुख नहीं प्राप्त कर सकता। यह जातक भाग्यवान नहीं होता, परदेश में वास करता हुआ दुष्ट बुद्धि होता है। यह जातक परस्त्री में रत रहता है। इसको व्यर्थ की चिन्ता होती है, शत्रु समूह से इसे बराबर पीड़ा प्राप्त होती है। स्त्री के कारण इसे दु:ख प्राप्त होते रहते हैं। यह जातक रक्त के रोगों से युक्त, क्रोधी, नीचवृत्ति लोगों का नौकर, ठगाने वाला तथा निर्गुण होता है। यह जातक नीच स्त्रियों से अपनी काम वासना शान्त करता है। इस जातक को 17वें वर्ष में अग्भिय होता है। अपनी संतति के जीवित न रहने से भी दु:खी होता है। यह विदेश वासी व शरीर से दु:खी होता है, शराबी और झगड़ालू होता है। चोरी और व्यभिचार, कुमार्गगामी, स्त्री-पुरुषों का साथ करने वाला होता है।

(8) जिस जातक के जन्म समय में **मंगल आठवें भाव** में होता है, वह जातक मित्रों द्वारा प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त होते रहने पर भी वही मित्र उससे शत्रुतापूर्ण व्यवहार करते हैं। कार्यों के अनुकूल उद्योग करने पर भी यह जातक सफल मनोरथ नहीं होता और विघ्न-बाधाओं से युत होता है। जातक के भाई-बन्धु भी स्नेहपूर्ण रहते-रहते सहसा शत्रु हो जाते हैं। यह जातक रोग से आक्रान्त होता है। इस जातक को संग्रहणी तथा खून के रोग होते हैं। इनके विचार अच्छे नहीं होते तथा यह निन्दनीय होता है। इसकी आयु कम होती है। इसको प्रवृत्ति बुरे कार्यों की तरफ होती है, विचार-बुद्धि नहीं होती और यह सज्जनों का निन्दक होता है। इस जातक की पानी में डूबकर मरने की सम्भावना होती है। इसको बुरे कार्यों द्वारा धन की भी प्राप्ति होती है।

(9) जिस जातक के जन्म समय में **नौवें भाव में मंगल** होता है, वह कुशाग्र बुद्धि और ज्ञानी होता है। यह मनुष्य तेजस्वी होता है, यह अपने प्रारब्ध से प्राप्त धन से भाग्यवान होता है। यह अपनी पत्नी के बड़े भाई तथा स्वयं के बड़े भाई के लिए शुभ नहीं होता। यह जातक बहुत अधिक श्रम करने से पूरा-पूरा लाभ प्राप्त नहीं कर पाता। इसका परिश्रम निष्फल होता है। यह जातक, राजकुल मान्य होता है, सबसे वन्दनीय, परस्त्रीगामी, भाग्यवान, ग्रामादि जमीनों से सुख पाने वाला होता है। इसके हाथ, आँखें तथा अन्य अंग रक्त वर्ण होते हैं। यह शीलवान और विद्यानुरागी होता है।

(10) जिस जातक के जन्म समय में **मंगल दसवें भाग** में होता है, वह अत्यन्त भाग्यवान और समस्त मंगल कार्यों को करने वाला होता है। अपने पराक्रम से लोक में कीर्ति प्राप्त करने वाला और राज्य में मान्य होता है। इसे भूमि, नृत्य और ग्रामादि राज्य से प्राप्त होते हैं। इसे निरन्तर सब कामों में सफलता प्राप्त होती है। यह जातक अपने पराक्रम से प्रतापी तथा सिंह के समान वीर होता है। यह जातक संयमी, कुल का उद्धार करने वाला, स्त्रियों को सदैव प्रिय, जमीन तथा जमीन से प्रादुर्भूत वस्तुओं से जीविकोपार्जन करने वाला, ब्राह्मण, वृद्धों का भक्त होता है। यह व्यक्ति श्रेष्ठ पुत्रों से युत सुखी, वीर तथा अभिमानी होता है। यह ऐश्वर्य में राजा के समान, परोपकारी, सन्तुष्ट, साहसी, सुन्दर और भूषण मणि आदि विविध रत्नों का स्वामी होता है।

(11) जिस जातक के जन्म समय में **मंगल ग्यारहवें भाव** में होता है, वह व्यक्ति संतान की ओर से दु:खी होता है। शत्रुओं को भी पीड़ा देता है। यह व्यक्ति बहुत धनी होता है। पशुधन के व्यापार में मालामाल होता है। यह जातक संग्राम में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। यह जातक ताँबा, मूँगा, सुन्दर लाल वस्त्र, वाहन, मान सबसे युक्त होता है। यह जातक जरी, रेशमी, मखमली, जर्कसी वस्त्रों से युक्त, साहबी से सम्मानित, अनेक प्रकार के वाहन रखने वाला, शत्रुओं से रहित, स्त्रियों से क्रीड़ा करने वाला होता है। यह जातक देव भक्त होता है, चंचल और क्रोधी भी होता है। पुण्य कर्मों में चित्त को लगाने वाला तथा त्रिशूल धन को प्राप्त करता है।

(12) जिस जातक के जन्म समय में **मंगल बारहवें भाव** में होता है, वह व्यक्ति अपने द्रव्य का नाश आप कर लेता है। उसे चोरी आदि से झूठा अपवाद लगता है। शत्रुओं के लिए परम प्रतापी तथा उन्हें पराजित करने वाला होता है। उसे परतन्त्रता होकर दु:ख मिलता है। इस जातक की तत्काल धन हानि होती है, इस पर झूठे कलंक लगते हैं, इसके शत्रु इसके बारे में झूठे कलंक फैलाते हैं, इसको चोरों से, शत्रुओं से, शस्त्रघात से भय रहता है। इस जातक को दूसरों का धन अपहरण करने की इच्छा रहती है। इसकी आँखें चंचल, बुद्धि चपल, यह हँसमुख, दृढ़ शरीर, सुखी तथा पराई स्त्रियों का प्रेमी होता है। यह जातक अपने कुटुम्बियों को दु:ख देने वाला होता है। कष्ट देने वाला, अत्याचार करके सुखी तथा क्रोधी होता है। यह जातक पत्नी का घातक, चुगलखोर, अपमानित और कारावास भोगने वाला होता है। इसके नेत्रों को रोग होता है। मित्रों को कष्ट देने वाला तथा दुर्बुद्धि होता है। यह बुरे कर्मों में अपने धन का व्यय करता है। यह नास्तिक, निष्ठुर, शठ तथा बकवादी होता है। विदेशों में घूमता रहता है।

बुध का फल

(1) जिस जातक के जन्म समय में **लग्न में बुध** होता है, वह शरीर से सुन्दर, उसकी आँखें विशाल, वाणी मधुर, रंग देवों के समान साँवला-सा, त्वचा मृदु, सुदृढ़, रजोगुणी प्रकृति का होता है। यह बहुत ही स्पष्टवादी, हृष्ट-पुष्ट देहवाला, वातपित कफ की मिश्रित से युक्त होता है। यह जातक विद्या बुद्धि वाला होता है। यह जातक सुन्दर, निपुण, शान्त, मेधावी, मधुर भावी और विद्वान होता है। इसके हृदय में दया बहुत होती है। इसे मध्य अवस्था में स्त्री सुख प्राप्त होता है। शरीर में वात जन्म पीड़ा होती है, फोड़े-फुन्सी आदि रोगों से दु:ख होता है, इसे पेट के रोग होते हैं और भूख कम होती है। यह व्यक्ति सर्वशस्त्रों में विद्वान, काव्यकर्त्ता, साहित्य प्रेमी और मधुर वाणी बोलने वाला, व्यवहार कुशल होता है। इस मनुष्य के सब अगेष्टों का नाश लग्न स्थित बुध कर देता है यह लोग वाचन और लेखन द्वारा अपनी जीविका चलाते हैं।

(2) जिस जातक के जन्म समय में **बुध दूसरे भाव** में हो तो वह मनुष्य बुद्धिमान तथा धनी होता है। यह अपने ही भुजबल से प्रतापी होता है। पण्डित समाज में सदैव आदर

प्राप्त करता है। यह व्यक्ति मूर्ख जैसे होते हुए भी प्रखरमति होता है। यह समाजों में वृहस्पति के समान शोभा पाता है। यह प्रतापी, संगीत को जानने वाला और भ्रमर के समान भोगी होता है। यह बहुत उदार धनवान होता है। यह जातक शुभकर्मों, राज्य मान्य, गुणी, सदाचारी और अपनी बुद्धि से धनार्जन करने वाला होता है। यह जातक कुशल, सौख्य, पवित्रता, धन सुख से युक्त होता है। यह सत्कर्म करने वाला सभी को अपना मित्र मानता है। यह अपनी बुद्धि से लोगों में मान्य तथा काव्य का रचयिता होता है। यह भोजन में मिष्ठान्न प्रेमी होता है। इस जातक का धन नष्ट हो जाने पर भी इसे पुनः प्राप्त हो जाता है। स्वभाव से नम्र, नौकर-चाकरों का सुख भोगने वाला होता है।

(3) जिस मनुष्य के जन्म लग्न में **बुध तीसरे भाव** में होता है, उसकी मित्रता वणिक लोगों से होती है और वह व्यापार करके ही लाभ प्राप्त करता है। यह जातक अत्यन्त चतुर होता है, कुशलतापूर्वक यह दुर्वश लोंगों को भी अपने वश में कर लेता है और उनसे अपना कार्य साधन करने में समर्थ होता है। यह व्यक्ति नम्र स्वभाव का होता है। इस जातक की आसक्ति अत्यन्त तीव्र रूप से या तो विषयों में होती है, या यह विषयों से पूर्ण विरक्त होता है। यह अपने भाई-बन्धुओं का आश्रय होता है और अपने बन्धुवर्ग के साथ मिलकर इस संसार के आनन्दोपभोग में प्रसन्न रहता है। यह जातक अच्छे शरीर का, बन्धुओं का प्रिय, धार्मिक, यशस्वी तथा देव और गुरुओं का आदर करने वाला होता है। कभी बुध की इस स्थान में ऐसी स्थिति भी होती है कि जातक मूर्ख बुद्धि, बहुत साहसी तथा अशुभ विचारों में डूबा रहता है। यह अधिक श्रम करते हुए भी दैन्य युक्त होता है, तथा इसकी आयु मध्यम होती है। यह अविचारित कार्य करता है, इसलिए अपने लोग इसे त्याग देते हैं। इसको पाँच भाई और चार-पाँच या अधिक बहिनें होती हैं।

(4) जिस जातक के जन्म समय में **बुध चौथे भाव** में होता है, वह उत्तम मित्रों से विभूषित रहता है। वह नेता और राज्य में मान्य अधिकारी होता है। इसे पैतृक धन प्राप्त नहीं होता है। इसके परिवार के लोग इसका विशेष आदर करते हैं। यह अपने बाहुबल से अर्थोपार्जन करता है। जातक धनी, वाहनों से युक्त, संगीत में प्रवीण, प्रवासी और बुद्धिमान होता है। यह गणित शास्त्र का जानने वाला और चाटुकारिता की वाणी बोलने में प्रवीण होता है। इससे प्रायः सभी प्रसन्न रहते हैं। इसके कई स्त्रियाँ होती हैं। इसको पुत्र सुख भरपूर होता है तथा धन-धान्य पूर्ण होने से आलसी होता है। अन्य मत से विशेष स्थिति ऐसी होती है, जब चौथे भाव का बुध जातक को क्रोधी बनाता है, एकान्तप्रिय तथा लोगों का अनिष्ट चाहने वाला भी बनाता है।

(5) जिस जातक के जन्म समय में **पंचम भाव में बुध** होता है, वह कई कन्याओं का पिता होता है। इसे अपनी आरम्भिक युवावस्था में पुत्र की प्राप्ति नहीं होती है। अपने परिश्रम तथा अपनी ही मेहनत से धर्नाजन करता है। यह मन्त्रादि सिद्धियों में निमग्न रहकर मारण-उच्चारण आदि कर्मों में लिप्त रहता है। इसकी स्त्री का प्रथम गर्भ नष्ट हो जाता है। धनोपार्जन में यह चतुर बुद्धि होता है। इसका साथ दुष्टों का होता है। यह जातक वाद-विवाद

करने में चतुर बुद्धि होता है। यह चरित्र का उच्च तथा मायावी होता है। यह सुन्दर, रूपवान, देवगुरु, ब्राह्मणों का भक्त होता है। इस जातक के मामा की मृत्यु होती है, पिता को तकलीफ होती है, माँ को सुख मिलता है, इसके शारीरिक कष्ट होते हैं। इसकी प्रवृत्ति सट्टा व द्यूत की ओर भी बहुत होती है।

(6) जिस जातक के जन्म काल में **बुध की स्थिति छठे भाव** में होती है, वह लोगों के साथ विरोध करता है। शत्रुओं को पूरी तरह प्रतिरोध देता है, संन्यासियों का भक्त होता है, उनके साथ रहने से इसे सुख मिलता है। यह जातक मुख्य रूप से बन्धु-बान्धवों के साथ सुख नहीं अनुभव करता। इसके पेट में वायु विकार होता है। यह तार्किक, शत्रुवान, गुणी और निष्ठुर-आलसी होता है। यह जातक अपनों का विरोधी, ईर्ष्यालु, कामुक, किन्तु विद्वान होता है। यह जातक राजा का विरोधी होता है, इसके संन्यासी होने का योग भी बनता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। भृगुसूत्रानुसार यह दामिक, बहुवृत तथा लेखक होता है। इसकी शिक्षा में विघ्न होता है।

(7) जिस जातक के जन्म काल में **बुध की स्थिति सातवें स्थान** में होती है, वह स्त्री सुख प्राप्त करता है, परन्तु रति सुख का पूर्ण आनन्द लेने में निर्बल ही रहता है। यह बहुत सम्पत्तिवान होता है तथा इसका स्वरूप भी सुन्दर और इसकी शोभा बहुत अच्छी होती है, इसकी स्त्री भी अत्यन्त रूपवती, सुन्दरी और मृगनयनी होती है। इस जातक को बहुत पुत्र होते हैं। इसका विवाह धनी कुल में होता है और इसको बहुत दहेज प्राप्त होता है। अन्य मतानुसार जातक उत्तम स्वभाव, ऐश्वर्य से युक्त, रूपवान, विद्वान, कामशास्त्र का ज्ञाता और नारी मान्य होता है। इसकी स्त्री विदुषी, सुन्दरी, साधारण घराने की झगड़ालू और धनवती होती है। यह स्वयं भी प्रतिष्ठित पुरुष होता है। इस जातक की माता को इससे सुख मिलता है। यह उत्तम सवारियों पर आरूढ़ हुआ करता है। यह अपनी स्त्री के वशीभूत उसके अनुकूल चलता है। यह अभक्ष्य भोजन को भी करने में अरुचि नहीं रखता है।

(8) जिस जातक के जन्म समय में **बुध आठवें भाव** में होता है, वह दीर्घजीवी होता है। वह स्वदेश तथा परेदश में सम्मान पाता है और प्रसिद्ध होता है। वह राज्य से बहुत धन प्राप्त करता है तथा व्यापार से भी इसे विपुल धन की प्राप्ति होती है। स्त्रियों के साथ हास-विलास के सुख से आनन्दित रहता है। इसकी मति दुष्टता युक्त भी होती है, यह घमण्ड से युक्त और दूसरों के कार्य को अल्प समझने वाला होता है। अन्य के कार्य को नष्ट करने की इच्छा से भी युत होता है। अन्य मतानुसार यह जातक दण्ड नेता होता है, इसे दण्ड देने का राज्याधिकार प्राप्त होता है। अतः न्यायाधीश होता है। यह विख्यात, कुलपालक तथा श्रेष्ठ व्यक्ति होता है। यह सत्य बोलने वाला, अतिथियों का आदर करने वाला होता है। इसे राज कृपा से वैभव प्राप्त होता है। यह अपने लोगों से विरोध करता है, दूसरों को सुख देता है। **भृगुमतानुसार** इसे सात पुत्र होते हैं। यह जातक दैवज्ञ भी हो सकता है, इसकी पत्नी रहस्यों को गुप्त रखने वाली होती है। पति के साथ आनन्द से रहती है। इसकी मृत्यु अच्छे तीर्थस्थान में सुखपूर्वक होती है।

(9) जिस जातक के जन्म समय में **बुध नवे भाव** में होता है, वह धर्मात्मा होता है, उत्तम विद्वान, यज्ञ करने वाला, सज्जनों का साथी, अपने कुल की पताका फहराने वाला, दुर्जनों को सन्तान देने वाला, राजा के समान प्रतापी और पूरी तरह धनवान होता है। यह जातक कुएँ, बगीचे आदि बनवाने वाला, सत्यवादी, जितेन्द्रिय और पितृभक्त होता है। यह सेवकों से युक्त, धनी, अच्छे पुत्रों वाला, पुण्यकर्त्ता होता है। **भृगु सूत्र** के अनुसार इसको सन्तति अधिक होती है। यह वेद शास्त्रों का ज्ञाता पण्डित होता है। संगीत पढ़ाता है। यह गुण के प्रति विद्वेष रखने वाला हो सकता है, परन्तु ऐसा प्राय: बुध की स्थिति विशेष में ही होता है।

(10) जिस जातक के जन्म समय में **बुध दशम भाव** में होता है, वह पैतृक सम्पत्ति का सुख भोगने वाला होता है। यह राजकीय अधिकार से साधिकार होने के कारण मान्य और पूजनीय व्यक्ति होता है। यह मितभाषी और व्यर्थ की बकवास करने वाला नहीं होता। इसके पास अमित धन वैभव होता है। यह जातक बुद्धि से श्रेष्ठ, धैर्यवान, धार्मिक तथा सात्विक आचार-विचार वाला, नाना भूषण-भूषित होता है। इसके पास सुन्दर-सुन्दर वाहन होते हैं और अपने ही पुरुषार्थ से जगत में सम्मानित होता है। इस व्यक्ति को कविता करने से, शिल्पकला से, लेखन से, व्यापार से, वकीलों से, सहायता से और साहस से धन प्राप्त होता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक पवित्र कार्यों को करने वाला, गम्भीर, अतुल कीर्ति वाला होता है।

(11) जिस जातक के जन्म समय में **बुध ग्यारहवें भाव** में होता है, वह अत्यन्त द्रव्य लाभ करता है। यह जातक स्त्रियों को प्रिय, अतिगुणी, बुद्धिमान अपने लोगों का प्रिय होता है। इसे भूख कम होती है। यह आनन्दी, विद्वान, धनी, सुशील, भोगी, नित्य लाभ करने वाला होता है। यह जातक निरोगी, सदा सुखी लोगों से सद्व्यवहार करने वाला और कीर्तिवान होता है। यह व्यक्ति दीर्घायु, धनाढ्य, सुखी, सत्याचार करने वाला होकर नौकर चाकरों से सुख पाता है। यह जातक वेदशास्त्र में श्रद्धालु, अपने कुल का पूरी तरह से हितैषी, धनाढ्य, स्त्री बल्लभ, सुन्दर श्यामवर्ण और मोहक नेत्रों वाला होता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक कल्याणमय जीवन व्यतीत करता है। शिष्ट कार्य, लेखनादि से धन पाता है तथा इसको 19 वर्ष की आयु में सन्तति व धन की प्राप्ति होती है। इसको बुध की स्थिति विशेष होने से अच्छे या विपरीत मार्गों से धन प्राप्त होता है।

(12) जिस जातक के जन्म समय में **बुध बारहवें भाव में** होता है, वह व्यक्ति सद् कार्यों में व्यय करने वाला होता है। वह सुन्दर-सुन्दर कार्यों को करता है। यह यज्ञादि करता है, ब्राह्मणों को दान देता है। दीन-दुखियों की सहायता करता है। यह व्यक्ति शत्रुओं को पराजित करता है। अन्य मतानुसार यह व्यक्ति निर्दयी होता है, इसे आत्मीयजन त्याग देते हैं, यह अपने स्वतन्त्र अपयवसाय करता है। यह अपना पक्ष प्रस्तुत करने में अत्यन्त चतुर होता है और धूर्तता से भी कार्य सिद्ध कर लेता है। यह अच्छे लोगों के साथ को पसन्द नहीं करता, अपने बन्धु-बान्धवों का वैरी होता है, धनी होता है, परन्तु बुद्धि रहित होता है। यह जातक अपने वचन को पालने वाला, वक्ता, पण्डित, दीन और क्रूर होता है। इसको कभी

अपमानित भी होना पड़ता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक ज्ञानी और विद्वान होता है। धनवान होते हुए भी कृपण और लोभी न होकर उदारता से दान करने वाला होता है। इसे राजा से भय होता है, इसका चित्त चंचल होता है। यह अपने लोगों में अग्रणी होता है।

गुरु का फल

(1) जिस जातक के समय में **लग्न भाव में गुरु** होता है, वह गुणों से मान्य होता है। इस जातक का वेश और वस्त्राभूषण सुन्दर और दर्शनीय होता है। यह देवताओं के समान सुन्दर होता है। वह विविध प्रकार के भोगों में धन खर्च करता है। यह जातक राज मान्य, विद्वान, अत्यन्त उदार, स्त्री-पुत्रादि से सुखी होता है। यह सुन्दर, स्वस्थ शरीरी, वली और दीर्घायु होता है। यह जातक कवि, गायक, सुन्दर, पवित्र दानी, घृत के पकवान तथा मिष्ठान्न भोगी होता है। इस जातक के शरीर में वात और श्लेष्मा के रोग होते हैं। बचपन में सुख मिलता है। यह वाहनों से युक्त, भोगी, धैर्यवान, बुद्धिमान, प्रभावी, प्रसिद्ध कुलोत्पन्न, कीर्तिवान होता है। इसकी पत्नी सुन्दर व साध्वी होती है। **भुगुसूत्रानुसार** यह जातक व्याकरण शास्त्र व साहित्य का मर्मज्ञ होता है, चारों वेद का ज्ञाता होता है। इसके पुत्र कई होते हैं, यह दीर्घायु तथा ज्ञानी होता है। विशेष स्थिति में गुरु के होने पर यह जातक सुफलों से रहित भी रह सकता है।

(2) जिस जातक के जन्म समय में **गुरु दूसरे भाव** में होता है, उसकी बुद्धि और उसकी स्वाभाविक रुचि काव्यशास्त्र की ओर होती है। यह व्यक्ति राज्याधिकार से दण्ड नायकत्व प्राप्त करने वाला होता है। यह व्यक्ति वाचाल भी होता है, बोलने में सबसे आगे होता है। यह जातक अपनी स्त्री को विशेष प्रसन्न नहीं रख पाता। यह विषयोपभोग में उतना सक्षम नहीं होता कि यह स्त्री को प्रसन्न रख सके। यह धनार्जन करने में बहुत परिश्रम करता है, परन्तु नित्य इतना धन नहीं प्राप्त कर पाता कि यह आराम से जीवन बिता सकता हो। इसकी वाणी सुन्दर और मधुर होती है। यह मितभाषी होता है। यह व्यक्ति भाई-बन्धुओं वाला, शरीर से कांतिमान तथा धनवान होता है। इसके पास पशुधन की भी कमी नहीं होती। इस व्यक्ति को उत्तम भोजन प्राप्त होता है। यह प्रसन्न रहने वाला होता है, इसकी पत्नी सुन्दर होती है, यह मान-प्रतिष्ठा को ही धन मानता है और यह मोतियों का व्यापार करता है और उससे धनवान होता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह व्यक्ति धनी, बुद्धिमान, कुशल वक्ता होता है। बहुत बली भी होता है। विपरीत स्थिति में इसकी यह स्थिति विपरीत फल भी देती है।

(3) जिस जातक के जन्म समय में **गुरु तीसरे स्थान** में होता है, वह बहुत क्षुद्र हृदय का होता है। उसे सगे भाइयों तथा मित्रों का सुख मिलता है, परन्तु यह उनका उपकार नहीं मानता। उसके प्रति यह विपरीत भाव रखता है। यह विश्वसनीय नहीं होता। राजा से धन पाकर भी सुखोपभोग नहीं कर पाता। यह कृपण, अनुदार तथा लोभी होता है। यह जातक, लोक में अपमानित, सहोदरजित और स्त्री से पराजित तथा पापी होता है। यह

सज्जन नहीं होता, उदासीन, कृश, भूखा और आलसी होता है। यह धनवान होकर भी धनहीन जैसा होता है, क्योंकि कंजूस होता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक लोभी होता है। यह चतुर होता है, संकल्प करके जिस काम में लगता है, वह पूरा करता है। बन्धु नाशकारी होता है। यह जातक गुरु की विपरीत स्थिति होने से नुकसान भी उठाता है।

(4) जिस जातक के जन्म काल में **गुरु चौथे स्थान** में होता है, वह बहुत भाग्यवान होता है। उसके द्वार पर उत्तम वाहन खड़े रहते हैं। इसके घर में यज्ञादि धार्मिक कृत्य हुआ करते हैं। यह धनवान होता है तथा यह दानी भी होता है। इसके शत्रु भी इसकी प्रशंसा करते और सेवा करते हैं। यह सुखी, सुन्दर, राजमान्य, शत्रु विजेता, कुल में मुख्य और गुरुजनों का भक्त होता है। यह जातक वाक्पटु और मधुर वाणी से सम्मान पाने वाला होता है। भृगुसूत्रानुसार यह जातक सुखी होता है, यह भूमिपति और बुद्धिमान, अच्छे हृदय वाला तथा तीव्र बुद्धि से युक्त होता है।

(5)जिस जातक के जन्म समय में **गुरु पाँचवे स्थान** में होता है, वह बुद्धिमान होता है, यह विलासी और आनन्दमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है। यह जातक बहुत उत्तम वक्ता, कुशल व्याख्यानदाता होता है। यह कुशल, तार्किक, अहापोत, तर्क-वितर्क करने वाला होता है। यह उच्चकोटि का ग्रन्थकार होता है। धन से यह उतना समृद्ध नहीं होता जितना यह दिखाई देता है। इसे सन्तान सुख देर से होता है। यह योगादि अभ्यास में बहुत समय देता है, यह मित्रों से पूज्य, अनेक शास्त्रों का ज्ञाता तथा धनाढ्य होता है। यह धार्मिक, पंडित, सुखी, शुद्ध चित्त, दयालु और विनम्र होता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक सुन्दर वस्त्राभूषण धारण करता है, चतुर होता है, महान कार्य करने वाला होता है, समझदार होता है। इसकी भाषण शक्ति बहुत अच्छी होती है। इसके कई पुत्र होते हैं। यह राज्य में सेनापति होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म काल में **गुरु छठवें स्थान** में हो तो वह जातक रोगी रहता है। शत्रुओं को नष्ट करने वाला, अपने बल से अभिमानी, शत्रुओं से कभी भी न डरने वाला और चौपायों का स्वामी होता है। इसकी माता सदैव रोगिणी रहती है। माता के भाई आदि भी सुख से नहीं रहते। इसकी स्त्री सुन्दर और इसे रति सुख देने वाली होती है। यह जातक हिंसक, आलसी, यशस्वी, शत्रुहन्ता तथा संसारी सुखों से विमुख रहने वाला विरक्त होता है। यह जारण मारण मन्त्रों का कुशल होता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक शत्रुओं का नाशक, अपनी जाति तथा कुल की उन्नति करने वाला होता है। इसकी आयु लम्बी होती है, यह पुत्र के पुत्रों का मुख देखता है।

(7) जिस जातक के जन्म काल में **गुरु सप्तम भाव** में होता है, वह जातक शीघ्र परम उच्च स्थान पर अधिष्ठित होता है। इसे राज्य से पूरा धन, सम्मान प्राप्त होता है। यह विवेकशील और तार्किक होता है। इसको स्त्रियों से रति सुख पाने में कोई कमी नहीं रहती। स्त्रियाँ इसके पीछे और यह स्त्रियों के बीच में रहता है। यह जातक गुणों में पिता की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ होता है। यह चित्रकर्मा, विचित्र कार्य करने वाला, उदार दाता होता

है। इसके मित्र अच्छे होते हैं। यह पिता और गुरुजनों से विशेष प्रेम नहीं मानता है। इसकी पत्नी गुणवती और पुत्रवती होती है। इस जातक के किसी उच्च कुलीन जाति की स्त्री से भी अनुचित सम्बन्ध होते हैं। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक बहुत लाभ प्राप्त करता है। इसे चिन्ताएँ बहुत होती हैं। यह विद्वान होता है तथा इसकी स्त्री पति परायण होती है। यह जातक स्त्री के द्वारा बहुत धन प्राप्त करता है तथा सुखी होता है। इस जातक को अपने जीवन के 34वें वर्ष में बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

(8) जिस जातक के जन्म काल में **अष्टम स्थान में गुरु** होता है, वह जातक अपने पिता के घर में बहुत समय तक नहीं रहता है। वह एक घर में भी बहुत काल तक नहीं टिकता है। वह व्यक्ति सदैव रोग से आक्रांत रहता है। यह जातक कुलाचार तथा कुल परम्परागत परिपाटी को स्वीकार कर उसी पर चलने वाला होता है। अन्य मत से नीच और कुल मर्यादा के विरुद्ध कार्य करने वाला होता है। यह मनुष्य विवेकहीन, नौकर, मलिन शरीरी, विनम्रता से हीन तथा उद्योगहीन, सदैव आलसी होता है। यह कृपण, शोकाकुल, शत्रुओं से घिरा हुआ, बुरे कार्यों को करने वाला कुरूप होता है। यह जातक स्वजनों में नौकरी करता है। यह हीन तथा नीच वर्ग की स्त्री का भोग करने वाला होता है। यह उत्तम तीर्थों का सेवन करता है, इसका मन चंचल होता है। यह धन, स्त्री से हीन होकर योग मार्ग को अपना लेता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक अल्पायु और नीच कर्म करने वाला होता है। यह व्यक्ति पुरुषार्थी अवश्य होता है। **पाराशर** मत के अनुसार यह जातक को बन्धन योग में डालता है। इसे कारावास भोगना पड़ता है।

(9) जिस जातक के जन्म समय में **गुरु नवम स्थान** में होता है, उसका मकान कई मंजिल का ऊँचा और रंग-बिरंगा चित्रित होता है। इस जातक पर राजा की बहुत कृपा होती है। इसके भाई-बन्धु आदि सुजन इसके प्रति विनम्र और आदर युक्त व्यवहार करते हैं। यह यज्ञकर्त्ता और तपस्वी की तरह होता है। यह जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ, राजा के समान धनी और स्त्रियों का प्रिय होता है। इस जातक के पास सब प्रकार की सम्पत्ति बढ़ती है और इसका ऐश्वर्य राजा के समान होता है। इस जातक को तीर्थों से बहुत प्रेम होता है, यह अनेक बार तीर्थयात्राएँ करता है। इस जातक को आजीवन सुख प्राप्त होता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक धार्मिक, तपस्वी, साधु स्वभाव और धनी होता है। 35वें वर्ष में ब्रह्म धार्मिक अनुष्ठान करता है। इसके पिता की आयु लम्बी होती है। यह बहुतों को पालने वाला सर्वत्र आदर पाता है।

(10) जिस जातक के जन्म समय में **वृहस्पति दसवें स्थान** में होता है, वह प्रतापी होता है। उसकी कीर्ति पिता-पितामह से भी ऊँची होती है। उसके पुत्र सपूत नहीं होते। वह इससे दु:खी होता है। उसके घर में अन्यागतों की कोई गिनती नहीं होती। नौकरों को भी उसके सान्निध्य में सभी कुछ प्राप्त होता है, परन्तु सन्तान सुख बहुत कम होता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक शुभ कर्म करने वाला, उज्ज्वल यश से विभूषित, बहुतों का पूज्यनीय और उत्तम आचरण करने वाला होता है।

(11) जिस जातक के जन्म समय में **गुरु ग्यारहवें स्थान** में होता है, उसे संसार प्रत्येक वैभव प्राप्त होता है। सोना, चाँदी, आभूषण और धन-धान्य का उसके यहाँ निर प्रवाह रहता है। यहे जातक बहुत ज्ञानी होता है तथा उसकी सभा में धनवान और ब्राह्मण स्तुति करते हैं। उसके शत्रु उससे विमुख होकर पराजित हो जाते हैं। उसके अ बन्धु-बान्धव-हितैषी सभी प्रसन्न होते हैं। यह जातक लम्बी आयु को भोगने वाला है। इसको ज्ञान सहज रूप से ही बहुत होता है, इसके पास शिक्षा अधिक हो या न इसको पुत्र कम होते हैं। इसके द्वार पर उत्तम वाहन खड़े रहते हैं और बड़े-बड़े लोग इस सानिध्य के लिए लालायित रहते हैं। राज्य द्वारा यह सम्मानित और मान्य होता है। कुल की वृद्धि करने वाला यह जातक निर्भय और दीर्घायु होता है। **भृगुसूत्रानुसार** जातक राजा, यज्ञ, वाहन (हाथी, मोटर आदि), भूमि और ज्ञान का स्वामी होता है। इस स्त्री, पुत्र, मित्रों आदि सभी जनों से स्नेह और सुख मिलता है। इसको 32वें वर्ष में लाभ होता है।

(12) जिस जातक के जन्म समय में **गुरु बारहवें स्थान** में होता है, वह व्यक्ति अपने द्रव्य को बहुत अहं के साथ अच्छे कार्यों में व्यय करता है। अपने यश और च तरफ अपने परिजनों में अपनी शान के लिए यह जातक दानादि कर्म करके उन्हें विस्मि करता रहता है। इस जातक को एक ओर अहं का सद्व्यय करते देखा जाता है तो दू ओर यह अन्य लोगों के धन का अपहरण भी चतुराई से करता है। वह उन्हें अपने बन्धन बाँधे रखता है। गुरुजनों और बन्धुजनों को यह जातक अपने उपकार के एहसान से दबा रहता है और उनको अपने द्वारा किए गए उपकार की बार-बार याद दिलाता रहता है। जातक आलसी और लोगों के साथ द्वेष करने वाला होता है। इसका धन चोर लोगों द्वा भोगा जाता है। स्वयं भी यह व्यसनी होता है, व्यसनी लोगों द्वारा ही उसके धन की हानि होती है। यह चार्वाक मतानुयायी, चपल, भ्रमणशील तथा दुष्ट होता है। यह गुप्त रोग से पी पीड़ा पाता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक विपुल धन प्राप्त करता है। इसके अपने लोगों झगड़े होते हैं। इसे दुःख और क्षयरोग होता है। इसे राजा से भय तथा प्रवास होता है। इसक अवैध सम्बन्ध किसी ब्राह्मण स्त्री से होते हैं। इसको पुत्र संतति कम होती है।

शुक्र का फल

(1) जिस मनुष्य के जन्म समय में **शुक्र लग्न (प्रथम भाव)** में हो, उसका रू सुन्दर होता है। वह उत्तम पुरुषों का संग करता है। इसके द्वारा प्रबल शत्रुओं की पराजय होती है और यह सुन्दरी, मृगनयनी स्त्रियों से रतिसुख प्राप्त करता रहता है। व्यक्ति सुखी, दीर्घायु, भीरू और युवतियों के लिए आकर्षक होता है। यह व्यक्ति धनवा और राजप्रिय होता है। यह जातक कामी, सुन्दर, अच्छे स्त्री-पुत्रों से युक्त तथा विद्वान हो है। यह जातक के तीन सौ अन्य ग्रह दोषों को नष्ट करता है। यह जातक बहुत बोल वाला, शिल्पकला में निपुण, सुशील, नम्र, गायन में प्रवीण, काव्यशास्त्र में रस आनन्द

वाला होता है। इसे कुत्तों, सींग वाले पशुओं से कष्ट तथा भय होता है। यह व्यक्ति स्थिर स्वभाव का होता है। लग्न का शुक्र 12वें वर्ष में मस्तक पर कोई चिन्ह प्रकट करता है। यह चक्षुनाशक भी हो सकता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक गणितज्ञ, दीर्घायु, स्त्रीप्रिय, वस्त्र-अलंकारों को धारण करने वाला, धनी और विद्वान होता है।

(2) जिस जातक के जन्म समय में **शुक्र द्वितीय भाव** में होता है, वह मधुर वचन बोलने वाला, बुद्धि का कुशाग्र और धार्मिक भावों से पूर्ण होता है। वह उत्तम विविध रंगों के स्वच्छ वस्त्र पहनता है। वह सुन्दरता का पुजारी और अपने चारों तरफ सभी कुछ सुन्दर-ही-सुन्दर ही देखना पसन्द करता है। यह विद्या द्वारा व स्त्री के द्वारा धन प्राप्त करता है। यह मधुर वचन बोलने वाला, सभा में आदर प्राप्त करता है। नृपों से सम्मानित, यशस्वी तथा कृतज्ञ होता है। वह पराये धन से अपने को धनी मानता है। इसका चित्त स्त्रियों में लगा रहता है। यह चाँदी और सीसा के व्यापार में धनी होता है। इसे अपने गुणों से यश प्राप्त होता है। शरीर से दुर्बल, प्रिय वक्ता और बहुतों को पालने वाला होता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक, धर्मशील, धनी, कुटुम्ब वाला, विनयी तथा सुन्दर वस्तुओं को देखने में परितृप्त होने वाला, दयालु, परोपकारी तथा उत्तम लाभों को पाने वाला, प्रिय और सुन्दर स्त्रियों का अभिलाषी होता है, उनके साथ विहार करके सुखी होता है।

(3) जिस जातक के जन्म समय में **शुक्र तृतीय भाव** में होता है, वह स्त्रियों के प्रति अनुरक्त नहीं रहता है। यह बन्धु-बान्धवों से प्रेम करता है और अपने परिजनों से सुख पाकर सन्तुष्ट रहता है। यह जातक हृदय से दयालु, किसी को अपने प्रहार से दुःखी नहीं कर सकता, उच्च पद प्राप्त करके भी यह दूसरों को अपने अधिकार से पीड़ित नहीं होने देता। दानी होने का विचार तो करता है, परन्तु दान देते-देते पीछे हट जाता है। **यह जातक भ्रमर जैसे फूलों के चक्कर काटता रहता है, उसी प्रकार स्त्रियों के चारों ओर मँडराता रहता है। यह उनके मायामोह में अपने आपको पूरी तरह बाँध लेने के कारण अपने अन्य सब कार्यों की हानि करता है (यह भी एक महान ज्योतिषिज्ञ का** मत है।) यह जातक सहोदर बन्धुओं से घिरा रहता है। उत्साह से परिपूर्ण, अपने लोगों को बन्धन से मुक्त करने वाला और मानवीय होता है। इसकी बहिनें कई होती हैं, आँखों के रोग से पीड़ित होता है। यह धनी और मधुर भाषी होता है। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक बहुत लोभी, सम्पति का आप-ही-आप उपभोग करने वाला होता है। इसके भाइयों की उन्नति होती है। इसके मन के संकल्प सफल होते हैं।**

(4) जिस जातक के जन्म समय में **शुक्र चतुर्थ भाव** में होता है, वह महान् और पूज्यनीय होता है। इसको जन्म समय से ही मातृ सुख बहुत होता है। इसको गाय, हाथी, घोड़े (आधुनिक समय में अन्य उत्तम वाहन) का सुख बहुत होता है। इस जातक को बन्धु सुख, मित्र सुख, अन्न, वस्त्र तथ गृह सुख प्राप्त होता है। इसे सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। यह जातक घर में ही अधिक रहने वाला विक्षिप्त स्वभाव का सा होता है। यह कई प्रकार के उपभोग पाने वाला होता है। राज्य में सम्मान प्राप्त करने वाला

दीर्घायु, पराक्रमी तथा उत्तम स्त्री परिवार से युक्त होता है। स्त्री के आश्रय से इसे
सुख प्राप्त रहता है। यह जातक बहुत स्त्री-पुत्रों से युक्त होता है। इसका घर देवताओं
ग्रहों से भी अधिक सुन्दर होता है। आनन्दी तथा विलासी होता है। **भृगुसूत्रानुसार
जातक शोभाशाली, क्षमावान और बुद्धिमान होता है। इसको माता और भाइयों
बहुत सुख प्राप्त रहता है। इसको तीसवें वर्ष घोड़े और वाहन मिलते हैं और इ
पास गोधन भी बहुत होता है।**

(5) जिस जातक के जन्म समय में **शुक्र पाँचवें भाव** में होता है, उसे शीघ्र ही
प्राप्ति होती है। धन भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। इसे मन्त्र सिद्धि होती है, यह काव्य
तथा मिष्ठान्न भोजी होता है। यह जातक सुखी, पुत्रवान, मित्रों से युक्त, विलास
अतीव धन सम्पन्न, सब तरह की वस्तुओं से भरा पूरा राजमंत्री या न्यायाधीश होता है।
जातक को कन्याओं की अपेक्षा पुत्र अधिक होते हैं। यह धनी, सौन्दर्य सम्पन्न, काव्य
कलाओं से सर्वथा युक्त होता है। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक कवि, मंत्री तथा सेना
होता है। माता की सेवा करने वाला, स्त्री-पुत्रों से युक्त सुखी होता है। इसको का
करने की शक्ति होती है। राज्य से सम्मान प्राप्त करने वाला होता है, लेकिन रूप
सम्मानित राज्य में भी मान्य होता है।**

(6) जिस जातक के जन्म काल में **शुक्र छठवें स्थान** में होता है, वह व्य
शत्रुओं से त्रस्त रहता है। उसके शत्रु कभी समाप्त नहीं होते हैं। इस जातक का व्यय ब
होता है, इसकी आय कम होती है। यह जातक बहुत उद्योग करता है, परन्तु उसका फ
कम ही प्राप्त होता है। इस जातक का जीवन कण्टकों से पूरी तरह भरा रहता है। इस
गुरुजन भी सन्तुष्ट नहीं रहते हैं और उनकी ओर से भी इसे कष्ट होता है। यह जात
अपनी हीनावस्था के कारण दु:खी और क्षुद्र होता है। यह जातक डरपोक होता है। स्त्रि
का भी अप्रिय होता है, धनेप्सु और दुर्बल होता है। **भृगुसूत्रानुसार छठे स्थान में शुक्र
आश्रित जातक जाति की वृद्धि करने वाला, संतान से युक्त, शत्रुओं का नाश कर
वाला, पुत्र-पौत्रों से पूर्ण होता है। यह जातक अपने धन को अनुचित रूप से ख
करता है, यह कपटी और रोगी होता है।**

(7) जिस जातक के जन्म समय में **शुक्र सातवें स्थान** में होता है, वह स्त्रियों
सुख से सुखी होता है। यह जातक उत्तम पुत्र प्राप्त करने वाला और लोक में पूज्य होता है
यह जातक विलासी होता है और इसको आराम पसन्द होता है। विशेष उद्यम से
घबड़ाता है। इसे परदेश में रहकर सुख प्राप्त होता है। यह अपनी उद्यमहीनता और का
करने में परिश्रम न करने की कमी को अपनी व्यवहार कुशलता से पूरा करता है अ
इसके चातुर्य से सभी प्रभावित होते रहते हैं। स्त्रियाँ भी इसके प्रति आसक्त होती हैं। इस
वात जन्य पीड़ा से कमर का दर्द होता है। (सम्भवत: अधिक भोग-विलास की प्रवृति
के कारण भी ऐसा होता है।) यह एक श्रेष्ठ कलाकार भी होता है। इससे श्रेष्ठ रसिक ल
बहुत प्रभावित रहते हैं। यह जातक लड़ाई-झगड़े से दूर शान्ति का पुजारी होता है। इस

जीवन में वेश्याएँ भी आती हैं और उनसे भी लाभान्वित होता हैं। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक बहुत कामुक, पराई स्त्रियों में रत और आसक्त होता है। वाहनों को रखने वाला ऐश्वर्य युक्त होता है। अपनी स्त्री से द्वेष रखता है। इसे सलाह देने वाले अच्छे लोग होते हैं। अच्छी स्त्रियाँ भी होती हैं, जिनका समूह इसे सुख देता है और इसे तृप्त करता है। स्त्रियों के या किसी स्त्री के सम्बन्ध के कारण इसकी उन्नति होती है। यह गायन, नाटक आदि मनोरंजन के साधनों में मन को लगाता है।**

(8) यदि जातक के जन्म सयम में **शुक्र आठवें स्थान** में होता है तो वह व्यक्ति गाय, भैंस, बकरी आदि चतुष्पदों से सुख प्राप्त करता है। यह व्यक्ति व्यर्थ का विवाद करने वाला होता है और यह ऊटपटांग बातें करता है। यह क्षुद्र और सुख पाने के लिए लालायित रहता है। इसे सर्वसुख बहुत लम्बे जीवन काल तक मिलते हैं। इसको धन और विजय बहुत कष्टसाध्य होते हैं। यह व्यक्ति ऋणी होता है। इसको धन का लाभ कष्ट से होता है। इसको धन की वृद्धि भी कष्ट से होती है और इसको ऋण से भी छुटकारा कष्टपूर्वक होता ही होता है। **वैद्यनाथ नायक ज्योर्तिविद् के अनुसार इस जातक की आयु लम्बी होती है, इसे सर्व प्रकार के सुख प्राप्त रहते हैं, यह अति बली और धनी होता है। कल्याण वर्मा का भी यही मत है।** यह जातक पिता का ऋण चुकाता है, कुल की उन्नति करता है। इसकी मृत्यु किसी तीर्थ क्षेत्र में होती है। (गर्ग)। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक सुखी, मध्यायु, रोगी और असन्तुष्ट होता है। इसके चौथे वर्ष में माता पर संकट आता है और इसकी पत्नी इसका हित चाहने वाली होता है।**

(9) जिस जातक के जन्म समय में **नवें भाव में शुक्र** होता है, वह व्यक्ति बहुत से लोगों को ऋण देकर उससे प्राप्त सूद के धन से निरन्तर अपने धन की वृद्धि करता रहता है। यह जातक तपस्वी व पवित्रात्मा होता है। यह व्यक्ति पवित्र कार्यों के लिए अपना धन व्यय करता है। यह गरीबों के दु:ख को सदैव दूर करने की चेष्टा करते हुए अपना धन उन्हें देता रहता है। इस जातक का शरीर दृढ़ और पुष्ट होता है। स्त्री सुख से युक्त, मित्रों से सुख पाने वाला, गुरु की सेवा में निरत, देव और अतिथियों का सेवक होता है। इसे सभी तरह के भौतिक सुख प्राप्त होते रहते हैं। यह जातक स्त्री, पुत्र, विद्या, धन से युक्त होता है। इस जातक को पिता का धन प्राप्त होता है। इस सम्पत्ति का व्यय वह तीर्थयात्रा, उत्सव, देव गुरु पूजन आदि में करता है। इसके अनन्तर भी वह अपने भुजबल, अपने उद्योग और परिश्रम से उन्नति करने वाला होता है। यह जातक राज्य की कृपा से अपने कुल की उन्नति करता है। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक धार्मिक, तपस्वी, जपादिक कार्य करने वाला होता है। यह स्त्री-पुत्रों से युक्त दीर्घायु होता है। इसका पिता भी दीर्घायु होता है। यह जातक विचित्र-विचित्र आभूषणों का इच्छुक और शौकीन होता है। इसके चरणों में शुभ सामुद्रिक लक्षण होते हैं, उसे अनेक प्रकार के भोग, उपभोग प्राप्त होते हैं। यह जातक कभी दरिद्रता से ग्रस्त नहीं होता है।**

(10) जिस जातक के जन्म समय में **दसवें भाव में शुक्र** होता है, वह वंश वृद्धि

करने वाले वीर्य को अवरुद्ध करता है, अर्थात् इस जातक के वंश की वृद्धि नहीं होने
और जातक सन्तान के लिए दु:खी रहता है। इस जातक के कार्य इसके ही भ्रम के
बिगड़ जाते हैं। यह जातक ब्राह्मण वृति से अर्थात् भिक्षा, दानादि पाकर अपने को
बनने के लिए सतत: प्रयत्नशील रहता है। इस कार्य में इसे अन्ध ढोंगी व्यक्तियों का
प्राप्त होता है। जीवनाथ के अनुसार यह जातक देवता और ब्राह्मणों का आदर नहीं
न उन्हें पूज्य मानता है। इसके धन का नाश कई प्रकार की विपत्तियों के कारण होता
मंत्रेश्वर कहते हैं कि दशम भाव शुक्र जातक को यशस्वी, मित्रों से युक्त, व्यवसाय
सफल और प्रभावशाली बनाता है। मानसागरी के अनुसार यह जातक स्वयं बधिर होता
या इसका भाई बधिर होता है। इसके कई भाई होते हैं। यह भोगी तथा योद्धा के वेश में
पर सुन्दर और जंगल में भी राजाओं जैसे भोग-विलास वाला होता है। **भृगुसूत्रानुसार**
जातक बहुत प्रतापी होता है। यह अपने संकल्पों को पूरा करने की शक्ति
वाला होता है। वह शुभकर्मों को करने वाला तथा अच्छे-अच्छे वाहनों से युक्त
है। इसके पास मणि रत्नों का अभाव नहीं होता है। यह यज्ञकर्त्ता तथा अपने
को चारों ओर फैलाने में सफल होता है।

(11) जिस जातक के जन्म समय में **ग्यारहवें भाव में शुक्र** होता है, वह धनी
है। यह सुन्दर-सुन्दर गुणों से युक्त, अच्छे स्वभाव का देदीप्यमान, कीर्ति युक्त, सत्य भाषण
करने वाला, सर्वविधि भोगी, ऐश्वर्यवान, राजा के तुल्य होता है। यह जातक अत्यन्त
सुशील, अपने रूप में देदीप्यमान, वचन चातुर्य से सभा में आदर प्राप्त करने वाला और
शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला कीर्ति से युक्त होता है। **वैद्यनाथ** कहते हैं कि यह
जातक सुखी, परस्त्री लोलुप, प्रवासी और धनवान होता है। इस जातक को कविता, नाटक,
संगीत कलाओं से धन लाभ होता है। **कल्याण वर्मा** का कहना है कि यह जातक दास और
सेवकों से युक्त रहता है। इसे विपुल लाभ होता है। यह शोक रहित तथा वेश्याओं के साथ
से सुख प्राप्त होता है। इसे सोने-चाँदी के व्यापार से लाभ होता है। इसको शहर में स्थावर
कार्यों को करने से भी धन लाभ होता है। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक विद्वान, विपुल**
धनी, भूमि लाभवान, दयावान और अपने शरीर की क्रान्ति से देदीप्यमान होता है।
इसे अनेक प्रकार के वाहन प्राप्त होते हैं। इसको लोक में प्रशंसित कार्यों को करने से
धन लाभ प्राप्त होता है।

(12) जिस जातक के जन्म समय में **शुक्र बारहवें भाव** में होता है, वह दिन-प्रतिदिन
विशेष खर्च करता है। उसकी प्रवृत्ति सदैव काम-क्रीड़ा व रति-विलास की ओर बनी
रहती है। इसके मित्र अनेक होते हैं, परन्तु उनसे इसका सद्भाव स्थिर नहीं होता। वह लोग
इसके प्रति कृतघ्न होकर इसके शत्रु हो जाते हैं। इसके गुणों की कमी होती है और इसका
स्वभाव वाद-विवाद व कलहकारी होता है। **गर्ग** के अनुसार यह जातक श्रद्धाहीन, दयाहीन,
रोगी तथा स्थूल शरीरी होता है। **मन्त्रेश्वर** के अनुसार जातक को रति सुख प्राप्त होता है
और यह वैभव युक्त व तेजस्वी होता है। **मानसागरी** के अनुसार यह जातक बचपन में

रोगी, उसके बाद निरोग हो जाने पर कपटाचरण करने वाला दुर्बल, मलिन और कृपण होता है। **जागेश्वर** के अनुसार यह जातक झूठा, निर्दय, स्थूलकाय, संसारी, कामुक, पापी और दुराचारी होता है। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक बहुत दरिद्री और विलासी होता है।**

शनि का फल

(1) जिस व्यक्ति के जन्म समय में **शनि लग्न** में होता है, वह धन से भरपूर होता है। इस जातक की धन के लिए भारी तृष्णा रहती है। इस जातक का चित्त अशान्त और असन्तोष से भरा रहता है। यह व्यक्ति झगड़ा व विवाद में बहुत रुचि रखता है, यह विषादी और अप्रसन्न रहता है। यह स्थूल दृष्टि होता है, सूक्ष्म विचार करने की इसकी शक्ति नहीं होती। इसके शत्रु इससे कभी पार नहीं पा सकते। दूसरों का उत्कर्ष देखकर इसके चित्त में जलन पैदा होती है और यह स्वयं दुखित होता है। इस जातक का मन कामासक्त और मलिन होता है। यह रोगों से पीड़ित और आलसी होता है। यह व्यक्ति अंग-भंग भी हो सकता है। **काशीनाथ** के अनुसार यह जातक सदैव रोगी, देखने में अच्छा, कंजूस, दुष्टाचारवान पापमति और शठ होता है। **मानसागरी** के अनुसार यह मनुष्य मन्दमति, काम पीड़ित, अधम केशहीन और दुर्बल शरीर होता है। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक दृष्टि से ही शत्रु का नाश करने वाला होता है। यह धनी, लोभी, मोटा, वातपित्त प्रकृति का होता है।**

(2) जिस जातक के जन्म समय में **शनि दूसरे स्थान** में होता है, वह व्यक्ति सुख लाभ की इच्छा से कुटुम्ब को छोड़कर स्वदेश में ही दूर-दूर स्थानों में शहरों व नगरों में या परदेश में चला जाता है। यह जातक वहाँ पर सभी प्रकार की वस्तुओं और विषयों का उपभोग करता है। वहाँ उसे उत्तम वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। यह वाणी का कटु होता है। अप्रिय वचन ही इसके मुखारबिन्दु की शोभा बढ़ाते हैं। यह अपने मित्रों से अकारण ही अप्रासंगिक, अनुचित और असह्य कर्णकटु शब्द बोलता है। यह जातक कृतघ्न होता है, स्वार्थ के लिए शस्त्र तक उठाने में संकोच नहीं करता। यह निपट स्वार्थी होता है। **वाराहमिहिर** कहते हैं कि यह जातक बहुत धनवान परन्तु राजकोष से निर्धन होता है। **जयदेव** के अनुसार यह जातक जब तक अपने देश में रहता है निर्धन रहता है, इसके बाद देश छोड़कर परदेश जाकर बस जाने पर सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। **कल्याण वर्मा** के अनुसार यह जातक न्यायशील होता है, आयु के उत्तरार्द्ध में यह देश छोड़कर परदेश में चला जाता है। वहाँ इसे सभी सुख प्राप्त होते हैं। **मानसागरी** के अनुसार दूसरे भाव का शनि जातक को मधुर भाषी और धनवान बनाता है। इसकी दृष्टि चंचल होती है और यह संग्रही तथा चौर्यकर्म परायण होता है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक सदैव तंग रहने वाला, बुरी दशा से युक्त, क्रोधी, निर्धन और परदेश वासी होता है।

(3) जिस जातक के जन्म समय में **शनि तीसरे भाव** में होता है, वह अपने भाई-बन्धुओं की ओर से अशान्त तथा निरन्तर पराक्रम से अपना कार्य करते रहने पर भी

प्राप्त न कर पाने से भी बहुत अस्थिर रहता है। इसके कार्यों में क… पेक्षित फल प्राप्त न कर पाने से भी बहुत अस्थिर रहता है। इसके कार्यों में का… विघ्न आते हैं। इसे कालान्तर में धन व ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है, परन्तु इस कार्य… बहुत समय लगता है। यह बहुत कम बोलने वाला होता है, परन्तु यह धीरे-धीरे… अपने मन की किसी से न कहकर बहुत तृष्णा युक्त होता है। यह जातक चाहे जितना… प्राप्त करे, लेकिन सदैव असन्तुष्ट ही रहता है और यह आदर देने वालों से अधिक-से-अधि… आदर पाने के लिए उनसे अप्रसन्न रहता है। **कल्याण वर्मा** के अनुसार यह जातक… वर्ण होता है, इसका शरीर गन्दा रहता है, किन्तु यह शूर और उदार होता है, इसकी… कृशाग्र होती है। **मानसागरी** के अनुसार यह अपने भाइयों का मारक होता है। इसके… ही इसे सुख, स्त्री-पुत्रादिक की अनुकूलता प्राप्त होती है और यह राजा के सम्मान… भोगी होता है। **काशीनाथ** के अनुसार तीसरे स्थान का शनि जातक को प्रसन्नचित्त,… शत्रुनाशक, लोक में आदरणीय, धनी और शूरवीर बनाता है। **हरिवंश** के अनुसार… जातक का शनि तीसरे भाव में होता है, वह जातक को राज्य से सुख प्राप्त कराता… उसकी कीर्ति को चारों दिशाओं में फैला देता है। इसकी शरीर कांति निर्मल होती है… यह सैकड़ों मनुष्यों को अपना आश्रय देता है। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक भाइयों… हितकारी नहीं होता है, उन्हें हानि पहुँचाता है। इसका चित्त दुःखी रहता है।… दुराचारी होता है।**

(4) यदि किसी जातक का जन्म समय में **शनि चौथे भाव** में हो तो वह पिता… धन तथा पैतृक घर भी प्राप्त नहीं कर पाता है। उसे भाई-बन्धुओं और बिरादरी से व्यर्थ… कलंक प्राप्त होता है। यह अपने माता-पिता के लिए सन्ताप का कारण होता है और… वातजन्य रोग होते हैं। **मंत्रेश्वर** के अनुसार चौथे स्थान का शनि जातक को गृहहीन और… मानहीन बनाता है। मातृहीन भी करता है। यह सुख को नष्ट करने वाला और दुःखी करने… वाला होता है। **मानसागरी** के अनुसार चतुर्थ स्थान का शनि जातक को रोगी और… नाशक बनाता है। जातक अपना गाँव छोड़कर दूसरे गाँव में जाता है, वहाँ भी दुःखी होता… है। **वैद्यनाथ** के अनुसार चौथे भाव का शनि जातक को दुराचारी और कपटी बनाता है… जागेश्वर कहते हैं कि यह जातक अपने भाई-बन्धुओं और बिरादरी से बैर करने लगता… है। पैतृक सम्पति से वंचित हो जाता है। इसे वातजन्य रोग होते हैं और यह माता-पिता को… संतृप्त करता है, स्वयं भी संतृप्त रहता है। **भृगुसूत्र के अनुसार चौथे स्थान का शनि… जातक की माता की मृत्यु कराके उसे विमाता प्रदान करता है। यह सुखहीन और… धनहीन होता है। इसे पैतृक सम्पति से वंचित रहना पड़ता है।**

(5) यदि किसी जातक का जन्म समय में **शनि पाँचवें भाव** में होता है तो वह पु… का सुख प्राप्त नहीं कर पाता है। उसको निर्मल बुद्धि भी प्राप्त नही होती, वह सम्पत्ति… भी हीन होता है। उसका मित्रों के साथ कलह होता है। उसके पेट में रोग होते हैं और… जातक नास्तिक तथा देवताओं की पूजा से विमुख होता है। **वैद्यनाथ** के अनुसार यह जातक… मत्त होता है। चिरायु किन्तु सुख से हीन होता है। यह शत्रुओं का विजेता और धर्मात्मा हो…

है। कल्याण वर्मा के अनुसार इस जातक को पुत्र और मित्रों का सुख नहीं मिलता है। यह बुद्धिहीन और हृदयहीन होता है। यह उन्मादी और दरिद्र होता है। **काशीनाथ** कहते हैं कि जातक को पुत्र-सुख, कीर्ति-सुख और धन-सुख नहीं होता। यह विरूप होता है। **भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक पुत्रहीन, अतीव दरिद्र, दुराचारी और दत्तक पुत्र होता है।**

(6) यदि जन्म समय में किसी जातक के **शनि छठे भाव** में हो तो वह जातक को शत्रु से, राजा से या चोर से भयभीत नहीं होने देता है। यह जातक महाबली होता है। इससे इसके शत्रु भयभीत भी रहते हैं। यह जातक कभी कुकर्म नहीं करता है। यह अपराध वृत्ति से न तो धन प्राप्त करता है, न अपराध प्रकृति से किसी को सताता है, अपितु यह न्याय वृत्ति से जीवन निर्वाह करता है। यह निडर होता है और शत्रुओं को संताप देने वाला होता है, इसे पराजित करना खेल नहीं होता। इसे चौपायों (भैंस आदि) से लाभ होता है। यह साहित्यानुरागी और काव्यकर्ता भी होता है। इसके प्रताप से इसके शत्रु जलते हैं। **हरिवंश** के अनुसार यह जातक शरीर से पुष्ट और नीरोगी होता है। यह वीर्यशाली और पुंसत्व युक्त होता है। यह भोगों, भूषणों तथा वाहनों से संयुक्त, सुशिक्षित, धनी और सुखी होता है। इस पर राज्य की कृपा होती है, इसे स्त्री-पुत्रों से सुख मिलता है। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक धन-धान्य से समृद्ध होता है, इसके शत्रु कम होते हैं। इसके स्वजातीय लोग कम होते हैं।**

(7) जिस जातक के जन्म समय में **शनि सातवें स्थान** में होता है, वह स्त्री भोग, हितकारी मित्र और धन का सुख एक लम्बे समय तक नहीं पा सकता है। उत्साहहीन रहता है और इसी कारण दुःखी रहता है। उसका मन अपने में ही हीनता अनुभव करता है। इसका जी लोभ से आक्रांत रहता है। **जीवनाथ** कहते हैं कि इस जातक की स्त्री रोगों से पीड़ित रहती है। वह निर्बल और धन से हीन होता है। शरीर अत्यन्त कृश, रोगों के आधिक्य से दुःखी और सदैव चिन्ताओं से चंचल होता है। **मानसागरीकार** का कथन है कि जातक को प्रथम विवाह से प्राप्त स्त्री का सुख नहीं मिलता, उसकी मृत्यु हो जाती है। उसकी दूसरी पत्नी प्रेम हीना होती है। **मन्त्रेश्वर** का कथन है कि जातक कुत्सिक स्त्री में आसक्त रहता हुआ निर्मल व दुःखी होता है। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक शरीर से दोषयुक्त होता है। इसकी पत्नी कृश होती है और जातक वेश्याओं में अनुराग रखने वाला उनके साथ रमण करता है।**

(8) जिस जातक के जन्म समय में **शनि आठवें स्थान** में होता है, वह व्यक्ति दुष्ट प्रकृति के लोगों की संगति में सुख पाता है। इसे अपने लोगों का वियोग होता है। इस व्यक्ति का धन भी नष्ट होता है और जातक रोगी होता है। यह व्यक्ति दूसरों के दोष देखने व निकालने वाला होता है, इसका चित्त उदार नहीं होता, यह क्षुद्र हृदय और संकुचित होता है। इसे धूर्तराज वंचकचूड़ामणि कहा गया है। **जीवनाथ** के अनुसार यह जातक धन का सुख प्राप्त नहीं करता, इसके धन का नाश हो जाता है। इसकी बुद्धि चालाकी से भरी कुटिल होती है। **वाराहमिहिर** के अनुसार इसके पुत्र अल्प संख्या में होते हैं और आँखें क्षीण होती हैं। **जयदेव** के अनुसार यह जातक शूरवीर, दुर्बल देहवाला, रोगी, आलसी और

नेत्रहीन होता है। इसे सन्तोष और सुख नहीं होता। **वैद्यनाथ** के अनुसार यह जातक शूरवीर, बहुत क्रोधी, निर्बल और निर्धन होता है। **मानसागरी** के अनुसार यह जातक परदेश में रहकर भी दुःखी रहता है। चोरी करने के अपराध में दण्डित होता है और नीच के हाथों इसकी मृत्यु होती है। **भृगुसूत्रानुसार** यह जातक 75 साल की उम्र प्राप्त करता है। यह दरिद्री नौकरी वाला शूद्रा से सम्पर्क रखने वाला होता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि नवें भाव** में होता है तो वह जातक विषय-वासना से विमुख और विरक्त होता है। उसे मित्र वर्गों से दुःख होता है। इसके मित्र भी शत्रुवत् व्यवहार करते हैं। यह व्यक्ति तीर्थयात्रा के लिए सदैव यत्नशील रहता है। यह धनी होता है और इसके द्वार पर दान प्राप्त करने वालों की भीड़ लगी रहती है। यह सरल चित्त, निर्मल और लोक में मान्य होता है। यह योगाभ्यास की ओर भी उन्मुख होता है। वृद्धावस्था में प्रायः पूरी तरह ही विरक्त हो जाता है। **वाराहमिहिर** के अनुसार यह जातक पुत्रवान, धनवान और सुखी होता है। **जयदेव** के अनुसार यह जातक पुत्र धन सुख से युक्त होता है। इसके शरीर में कहीं कुछ विकार होने से यह निर्बल शरीर भी होता है। इसकी बुद्धि और मन गूढ़ होते हैं। **काशीनाथ** के अनुसार यह धर्महीन, किन्तु विचारशील, शत्रुवशर्ती, क्रूर और सदैव परस्त्रीगामी होता है। **पाराशर** के अनुसार इसको भाग्य की हानि होती है तथा उसके मित्रों को कारावास होता है। **मानसागरी** के अनुसार यह व्यक्ति दम्भी, धर्महीन, मदांध, रोगी, पिता को भी ठगने वाला और पत्नी के वशीभूत होता है, किन्तु वीर्य की इसमें कमी होती है। **भृगुसूत्रानुसार यह जातक अधिकार प्राप्त होता है और पुरानी इमारतों का जीर्णोद्धार करने वाला होता है। जनता के हित के लिए तालाब, मंदिर आदि बनवाता है।**

(10) जिस जातक के जन्म काल में **शनि दसवें भाव** में होता है, वह जीविका का सुख धीरे-धीरे प्राप्त करता है। यह मनुष्य युद्ध में विजयी होता है। यह उन्मुक्त की तरह अपने अधिकारों का प्रयोग करता है और बिना प्रयोजन के ही दुष्ट कर्म करता रहता है। बाल्यावस्था में ही इसके माता-पिता का देहान्त हो जाता है। जीविका के लिए बाहुबल का ही आश्रय लेता है। इस जातक को राज्य से अधिकार प्राप्त होता है और इसका सब तरह से कल्याण होता है, इसे दुष्टों का दमन करने को दमनाधिकार भी प्राप्त होता है। **वाराहमिहिर** के अनुसार यह जातक शूरवीर और सुखी, **वशिष्ठ** के अनुसार यह जातक दुराचारी, दुर्बुद्धि और दुष्ट पुत्रों से युक्त होता है। **पाराशर** के मत से यह जातक धनी, सुखी और विजेता होता है। **गर्ग** के मतानुसार यह नगर, गाँव, जन-समूह का नेता होता है। यह बुद्धिमान और मंत्री होता है। **आगेश्वर** के अनुसार यह जातक पिता के लिए भी और माता के लिए भी मारक और घातक होता है। इस जातक को वाहन सुख, शरीर सुख और मित्र सुख भी नहीं मिलता है। **भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक 25वें वर्ष में गंगा स्नान करता है। लोभी और पित्त प्रकृति होता है, 36वें वर्ष के बाद भाग्योदय होता है। यह जातक लोक सेवा करने वाला, राज के लिए योग्य और निपुण होता है।**

(11) जिस जातक के जन्म समय में **ग्यारहवें स्थान में शनि** होता है, वह जातक सदैव धनवान, दीर्घायु, सूर स्थिर बुद्धि वाला होता है। इसे कोई स्थायी रोग नहीं होता। इसकी सन्तान को कष्ट होता है या नष्ट होती है। यह पूर्ण राग-द्वेष से युक्त और तरह-तरह के कार्यों को करके धन का संचय करता है। यह सैकड़ों मनुष्यों के प्रपंचों से भी अधिक प्रपंच बुद्धि होता है। यह शत्रुओं को जीतने वाला और दीर्घायु होता है। **वाराहमिहिर** के अनुसार जिसके एकादश में शनि होता है, वह धनी होता है। **पाराशर** के अनुसार भी वह धनी होता है तथा उसे अच्छे मित्रों की संगति प्राप्त होती है। **गर्ग** के अनुसार इसकी सम्पत्ति स्थिर रहती है। यह शूर शिल्प का ज्ञानी, सुखी और लोभ से हीन होता है। इसकी पहली संतान मृत होती है। **वैद्यनाथ** कहते हैं कि यह जातक नाना प्रकार के भोग प्राप्त करता है। इसे राज्य कृपा से प्रभूत धन की प्राप्ति होती है। इसके घर पर दास व हाथियों के झुण्ड रहते हैं। यह खेती से धनी और समृद्ध हो जाता है। **हरिवंश** के अनुसार इस जातक को राजा से सम्मान प्राप्त होता है, धन लाभ भी होता है, पण्डितों से विद्या लाभ होता है। **भृगुसूत्रकार का कथन है कि यह जातक बहुत धनी होता है, इसके कार्यों में विघ्न पड़ते हैं। इसे राज्य से भूमि तथा मान मिलता है।**

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **बारहवें भाव में शनि** हो तो वह जातक को डरपोक बनाता है। वह निर्लज्ज और भेद दृष्टि होता है। यह व्यक्ति परदेश में प्रसन्न रहता है, घर पर खुश नहीं रहता है। **जीवनाथ** के अनुसार यह जातक शुभ कार्यों में कठोर बुद्धि होता है। यह शत्रुहन्ता व कुबेर के समान प्रसन्न होता है। **महेश** के अनुसार यह जातक निर्दयी, निर्धन, व्यय से दुखित, सदैव आलसी, नीच वृत्ति लोगों की संगति करने वाला अंगहीन और सुखहीन होता है। **वाराहमिहिर** के अनुसार यह जातक पतित होता है। **मानसागरीकार** का कहना है कि यह मनुष्य जनसमूह का नेता, रोगी, हीनांग, दुःखी, दुर्बल, क्रूर और पक्षियों को मारने वाला होता है और इसकी जाँघ में घाव होता है। **काशीनाथ** के अनुसार यह जातक बुरे कार्यों में धन खर्च करता है। यह कृतघ्न, निर्धन, चंचल, मलिन और अपने बन्धु-बान्धवों से बैर रखता है। **जयदेव** के अनुसार यह जातक दयाहीन, धनहीन और स्वकर्महीन, सुखहीन और अंगहीन होता है। **जागेश्वर** के अनुसार यह मनुष्य आलसी, नीचों का सेवक, सुख से रहित और अपव्यय करने वाला होता है। **भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक पतित और अंगहीन होता है, इसको आँखों का कष्ट होने की सम्भावना होती है। इसका धन अच्छे कार्यों में व्यय नहीं होता है।**

राहु का फल

(1) जिस जातक के जन्य समय में **लग्नस्थ राहु** होता है, वह शत्रुजयी होता है, वह दूसरों के प्रताप से प्रभाव ग्रहण करके मान्य होता है। यह जातक बहुत स्त्रियों का उपभोग करने पर भी उनसे तृप्त नहीं होता। यह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में शक्तिशाली होता है। व्यावहारिक कार्यों में यह जातक बहुत निपुण होता है, अपने संकल्प पूरा करने में

कुछ भी नहीं रखता और अपने वचन का पालन करता है। शत्रु रहित रहकर अपने कार्यों को करने में तत्पर रहता है। महेश के अनुसार यह जातक दुष्ट बुद्धि वाला और भाई-बन्धुओं का ठगने वाला होता है। इसके सिर में पीड़ा होती है। यह कामी, रोगी और वाद-विवाद में विजय पाने वाला होता है। मानसागरी के अनुसार यह जातक कुल का अपकारी, व्यर्थ बोलने वाला और सदा साहस से कर्म करने में समर्थ, पाप कर्म में रुचि रखने वाला और दूसरे के उपकार को वृथा मानने वाला होता है। दुण्ढिराज के अनुसार लग्न भाव का राहु दुष्ट बुद्धि और बुरे स्वभाव को देने वाला होता है। यह अपने ही लोगों को ठगने वाला होता है। यह शीर्ष पीड़ा युक्त कामी रोगी और वाद-विवाद में विजयी होता है। भृगुसूत्र के अनुसार लग्न का राहु जातक को मृत सन्तान देता है। यह मनुष्य अपने वचन का पालन करने वाला, अनेक स्त्रियों में आसक्त, अति कामुक तथा सुन्दर वेश धारण करने वाला होता है।

(2) जिस जातक के जन्म लग्न में द्वितीय भाव में राहु होता है, उस व्यक्ति का कुटुम्ब नष्ट होता है। यह मनुष्य झूठ बोलने वाला, असत्य व्यवहारी तथा शस्त्र से भयभीत होता है। अपने बन्धु-बांधवों का नाश देखने के दुर्भाग्य को प्राप्त करता है तथा यह दुष्टों के वश में पड़कर दु:खी होता है। महेश के अनुसार यह यह जातक अप्रिय भाषणकर्ता व बातूनी होता है। यह धन का नाश देखता है तथा निर्धन होता है। यह इधर-उधर घुमक्कड़ भी होता है। वैद्यनाथ के अनुसार इस जातक के कार्यों में बहुत विरोध होता है, इसके रास्ते में बहुत बाधाएँ आती हैं, जिन्हें पार करने में इसे एड़ी-चोटी का जोर लगाना होता है। मानसागरी के अनुसार यह जातक चोरी करने वाला अभिमानी और अतीव दु:खी होता है। मत्स्य-माँस के व्यापार से धनवान तथा नीच जनों के घर में रहने वाला होता है। भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक रोगी, निर्धन तथा पुत्र की मृत्यु से दु:खी होता है।

(3) जिस जातक के जन्म समय में तीसरे स्थान में राहु होता है, वह अति बलवान होता है। समग्र विश्व को यह सगे भाई की तरह मानता है। यह किसी भी व्यक्ति से भेदभाव नहीं करता। इसका अंतकरण शुद्ध और सरल होता है। इसका सहज ही भाग्योदय होता है, इसे परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं होती। जीवनाथ कहते हैं कि यह जातक सिंह के समान पराक्रमी होता है, न तो यह कठिन संग्राम में पीछे हटता है, न परोपकार करने में। यह सबसे मैत्री व समभाव रखता है। महेश दैवज्ञ के अनुसार यह जातक शत्रुओं के ऐश्वर्य का नाश कर देता है। संसार में कीर्तिमान होता है। यह विलास का सुख प्राप्त करने को सदैव चेष्टाशील रहता है, इसके भाइयों की मृत्यु होती है। इसका पशु धन भी नष्ट होता है। वैद्यनाथ का कहना है कि यह जातक को अभिमानी, पराक्रमी व धनवान बनाता है। मानसागरीकार का कथन है कि यह जातक तृतीयस्थ राहु के कारण अपने भाई को नष्ट हुआ देखने का दुर्भाग्य देखता है। इसको हाथी, घोड़े, नौकर आदि प्राप्त होते हैं। भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक पराक्रमी, साहसी व उद्यमी, भाग्य और श्री व ऐश्वर्य से सम्पन्न, राज्य द्वारा सम्मानित होता है। यह शत्रुओं का नाश करता है और परदेश में रहकर उन्नति करता है।

(4) जिस जातक के जन्म समय में राहु चौथे भाव में होता है, वह अपनी माता को रोगिणी देखकर दु:खी होता है। यह मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त और अकारण भी दु:खी रहता है, इसे मित्र या पुत्र का सुख प्राप्त नहीं होता। यह मनुष्य घुमक्कड़ होता है। वशिष्ठ के अनुसार यह जातक उद्दण्ड और उद्धत होता है। इसके भाई, मित्र आदि नहीं होते। जागेश्वर के अनुसार इसकी माता को वात रोग होता है या उसकी मृत्यु लकड़ी या पत्थर के आघात से होती है। मानसागरीकार का कथन है कि यह जातक धन और बन्धुओं से रहित होता है। गाँव के लोगों से अलग कहीं बाहर अकेले में रहने वाला, नीच का साथी, चुगलखोर, पापी, एक पुत्र वाला तथा कृशांगिनी का पति होता है। अज्ञात कथन है कि यह जातक सौतेली माँ वाला तथा दो विवाह भी करता है। प्रवास बहुत होता है। इसके जीवन में विविध चमत्कार होते हैं। भृगुसूत्र के अनुसार इस मनुष्य के पास बहुत अलंकार होते हैं। इसके दो स्त्रियाँ होती हैं। इसके नौकर भी होते हैं और यह स्वयं भी नौकरी करता है। इसके जीवन में माता कष्ट पाती है।

(5) जिस जातक के जन्म समय में राहु पाँचवें भाव में होता है, वह पुत्र लाभ करता है। इसकी स्त्री पेट के रोग से पीड़ित होती है। इसको चिन्ता व सन्ताप अधिक होते हैं। सामान्यत: इस जातक का भाग्य प्रखर नहीं होता है। इस जातक के भाई, मित्र होते हैं। इसके उदर में शूल रोग होता है। इसके आनन्द और विलास में रुकावटें आती हैं। यह मनुष्य डरपोक, दयालु और निर्धन होता है। गर्ग दैवज्ञ के अनुसार यह पुत्रहीन व मलीन होता है। हरिवंश के अनुसार इस जातक को पुत्र सुख नहीं मिलता है। यह नीचों की संगति में रहता है। यह गंदा रहता है। इस जातक की मान-हानि होती है। पुंजराज के अनुसार इस जातक की बुद्धि तीक्ष्ण होती है, इसकी संतान की मृत्यु कृमि, वायु, पत्थर, लकड़ी, पानी व पर्वत सम्बन्धी किसी वस्तु से होती है। भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक पुत्र सुख प्राप्त नहीं कर पाता। इसको सर्प का शाप होता है, जिससे पुत्र को नष्ट होना होता है। इसे वात रोग होता है। इसे राजकोप के कारण दण्ड होता है। इसका निवास किसी अच्छे गाँव में नहीं होता है।

(6) जिस जातक के जन्म समय में राहु छठवें भाव में होता है, वह शूर, सुन्दर, मतिमान् राजा जैसा मान्य और विद्वान होता है। इस जातक से शत्रु पराजित होते हैं। यह जातक परस्त्रीगामी होता है। इसे धन की प्राप्ति होती है। कमर पीड़ा होती है। यह मलेच्छों की संगति करता है तथा यह महान बली होता है। मानसागरी के अनुसार यह राहु जातक के शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है। जागेश्वर के अनुसार यह जातक मामा या चाचा का सुख प्राप्त नहीं करता है। यह महान बलशाली व पराक्रमी होता है। भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक धैर्यवान व अतिसुखी होता है। राजा की कृपा, नैरोग्य, धन-स्त्री-पुत्र सुख तथा शत्रुओं का नाश इसी घर के राहु द्वारा जातक को प्राप्त होते हैं।

(7) जिस जातक के जन्म काल में राहु सातवें स्थान में होता है, वह उसकी स्त्री को सदैव रोगिणी रखता है। यह जलती हुई अग्नि पर चढ़े कढ़ाव में रखे हुए द्रव्य की तरह

जलती है। इसको बन्धु-बान्धवों का वियोग होता है। यदि इस जातक की स्त्री रोगिणी नहीं होती, तो यह कलह करने वाली, प्रचण्डरूपा और कोप करने वाली होती है। यह जातक के मनोनुकूल नहीं रहती। **वैद्यनाथ** कहते हैं कि यह जातक गर्विष्ठ, बहुव्याभिचारी और रोगी होता है। भृगुसूत्रानुसार यह जातक दो स्त्रियों को रखने वाला तथा कटि के नीचे के भाग में वात रोगी होता है। अन्य मत है कि इस भाव का राहु जातक की स्त्री को नष्ट करता है, उसे प्रदर रोग देता है, व्यभिचारिणी स्त्री से सम्बन्ध स्थापित करता है। भाग्योदय पाप कर्मों से कराता है।

(8) जिस जातक के जन्म काल के **आठवें भाव में राहु** होता है, वह जातक बहु परिश्रमी होता है। इसके पेट में वायु शूल होता है। इसे इसके कुटुम्बी त्याग देते हैं। इसको पैतृक धन व सम्पत्ति नहीं मिलती है। इसका भाग्योदय एक बार होता है, परन्तु हानि बार-बार होती है। जीवनाथ के अनुसार इस जातक को सज्जन लोग अकारण ही छोड़ देते हैं। इसे कभी धन का नाश होता है, कभी राजा से धन लाभ होता है। **महेश दैवज्ञ** कहते हैं कि राहु इस जातक के अनिष्टों को नाश करता है। इसे गुप्त रोग होते हैं। **गर्ग** के अनुसार यह जातक दुष्ट होता है। चोरी के इल्जाम से इसकी मृत्यु होती है। चोरी करने और पाप कर्म से बहुत दुःख उठाता है। **मानसागरीकार** का मत है कि यह मनुष्य, रोगी, पापी, ढीठ, चोर, कृश, कातर, मायावी, किन्तु धनाढ्य होता है। **भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक अति रोगी होता है। यह मनुष्य खर्चीला रोगी, भाईयों से लड़ने-झगड़ने वाला, प्रवासी तथा सुखहीन होता है।**

(9) वह जातक जिसके जन्म लग्न में **नवम स्थान में राहु** होता है, विद्वान होता है। यह अपने गुणों से सर्वत्र सम्मान पाता है तथा पूजित होता है। यह सभ्य और सहृदय, देवताओं में श्रद्धा रखने वाला और तीर्थों का सेवन करने वाला धार्मिक स्वभाव का होता है। कभी किसी के उपकार को न भूलने वाला बहुत कृतज्ञ होता है। अपने धन का दान करके सुखी होने वाला, प्रारम्भ करके अपने कार्यों को पूरा करने वाला, दृढ़ चित्त व निर्मल कीर्ति युक्त होता है। **महेश दैवज्ञ** का मत इसके विपरीत है, उनके अनुसार यह मनुष्य धर्म भ्रष्ट और धनहीन होता है। इसे सुख नहीं मिलता। यह भ्रमणशील होता है। यह दरिद्री होता है, बन्धु सुख इसके भाग्य में नहीं होता। इसके शरीर में पीड़ा होती है। **मानसागरी** के अनुसार यह जातक चाण्डाल जैसे नीच कार्यों को करने वाला और अशुभ होता है। इसे अपने शत्रुओं से भय होता है, यह चुगलखोर और गन्दे वस्त्र धारण करने वाला होता है। इसे आमोद-प्रमोद में कोई उत्साह नहीं होता। **भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक पुत्रहीन, धर्महीन, नौकरी करने वाला होता है। इसके सम्बन्ध शूद्रा स्त्री से होते हैं।**

(10) जिस जातक के जन्म समय में **राहु दसवें भाव** में होता है, वह नशीले पदार्थों का सेवन करने वाला और दुष्ट कार्यों को करने में सन्तुष्ट होता है। यह जातक सर्वदा म्लेच्छों की संगति में रहकर बहुत सुखी होता है। यह घमण्डी और अपने को सर्वत्र प्रकाशित करता रहता है। यह उत्तमोत्तम रूपगर्विता स्त्रियों के साथ संभोग करके उनके रूप गर्व को खण्डित करता है। यह विधवा तथा पुंश्चली स्त्रियों के साथ भी रति सुख प्राप्त करता है और दुर्जन इसके साथी होते हैं। **खानखाना** के अनुसार यह मनुष्य महाबली, परोपकारी, शत्रुहीन, धनी और चिन्ता मुक्त व्यक्ति होता है। **वैद्यनाथ** के अनुसार यह मनुष्य चोरी करने में चतुर होता है, शीलहीन और युद्ध या लड़ाई-झगड़े के लिए आतुर होता है। **गर्ग आचार्य** के अनुसार यह जातक लोक में मान्य, गाँव समूह या नगर का अधिकारी, मंत्री या सेनापति होता है। यह शूर, बुद्धिमान और धनवान होता है। **वशिष्ठ** के अनुसार यह जातक पापी विचार का होता है। **मंत्रेश्वर** का कहना है कि यह मनुष्य विख्यात होता है। इसको पुत्र व सन्तान थोड़ी होती है। यह दूसरों के काम करने वाला, अच्छे काम को करने वाला और निडर तथा तेजस्वी होता है। **भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक बुरे ग्राम में रहता है, इसका सम्बन्ध विधवा स्त्री से होता है। इसे काव्य में रुचि होती है, इसकी सेवा में दासियाँ होती हैं। इसको अपने लोगों से और इष्ट मित्रों से द्वेष होता है।**

(11) जिस जातक के जन्म काल में **ग्यारहवें भाव में राहु** होता है, वह सर्वदा म्लेच्छों से धन प्राप्त करने वाला होता है। इसके बहुत नौकर होते हैं। इसको कभी अपने ही देश में किसी बात का या वस्तु का अभाव नहीं होता। यह अपने ही स्थान में सुख से रहता है और लोगों में मान्य होता है। यह दुरभिसन्धि युक्त धूर्तों का मित्र होता है। इसके पास ठगी का धन भी आता है। इसे पुत्र सुख भी प्राप्त होता है। **महेश दैवज्ञ** के अनुसार इस जातक को विपुल धन का लाभ होता है। राज्य से मान तथा सुख प्राप्त होता है। इसकी विजय होती है और इसके मनोरथ पूरे होते हैं। **वशिष्ठ** कहते हैं कि यह जातक विलासी, कवि, धनवान और भोगी होता है। **मानसागरी** के अनुसार यह जातक इन्द्रियों का दमन काने वाला, सांवले रंग का सुन्दर, मितभाषी, विदेश में रहने वाला, शास्त्रों का ज्ञाता, चपल और निर्ल्लज होता है। **भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक पुत्र, धन-धान्य से समृद्ध होता है। निरोग, ऐश्वर्यवान, स्त्री सुख से युक्त, नीच जाति के लोगों से लाभ प्राप्त करने वाला होता है।**

(12) जिस जातक के जन्म समय में **बारहवें स्थान में राहु** होता है, वह दीन होता है, उसकी बगल में शूल होता है। इसको इसके उद्योग का फल नहीं मिलता, अतः अपने कार्यों में सफल नहीं होता। यह दुष्टों का मित्र और सज्जनों का शत्रु होता है। **महेश दैवज्ञ** के अनुसार यह जातक नेत्र रोगी होता है। इसके पैर में घाव होते हैं। यह प्रपंच करने वाला तथा बुरे लोगों से प्रीत करने वाला होता है। **गर्गाचार्य** के अनुसार यह जातक बुरे कार्यों में धन खर्च करने वाला, पापी विचारों का, छल-कपट करने वाला और कुल को कलंकित करने वाला होता है। **मानसागरी** के अनुसार यह जातक धर्म और धन से हीन होता है। बहुत दुःखी, स्त्री से दूर रहने वाला, विदेश में वास करने वाला, सुख रहित, बुरे नख और मलिन वस्त्र वाला होता है। **भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक पुत्र सन्तान कम प्राप्त करता है। इसका आचरण पापमय होता है, इसके धन का खर्च व्यर्थ ही होता है, राज्य से पीड़ा प्राप्त होती है, स्त्री को कष्ट होता है, साथ ही शत्रु का भी नाश होता है।**

केतु का फल

राहु और केतु सदैव एक-दूसरे से 180° पर आमने-सामने होते हैं। यदि राहु प्रथ स्थान में होता है तो केतु सातवें स्थान में होता है, और राहु दूसरे में होता है तो केतु आठ स्थान में होता है। इस प्रकार राहु के सामने छः राशियों के अनन्तर केतु होते हैं। अ स्वाभाविक है कि राहु जब प्रथम भाव में होंगे तो उनके जो फल होते हैं, वहीं केतु के सात स्थान में होने पर होने चाहिए। राहु के प्रथम स्थान के फलों के विपरीत केतु के सात स्थान के फलों का होना सम्भव नहीं है। भावगत फलों पर जब विचार करना होगा होता है तो इन दोनों के फलों में यह तारतम्य स्वाभाविक रूप से होना चाहिए। फिर अनेक दैवज्ञ इनके फलों को इस तारतम्य में न कहकर उनके अलग-अगल फल निर्दे करते हैं, जो कि अस्वाभाविक हैं। यदि राहु और केतु के नक्षत्रगत फलों पर विचार कर हो या नवांश गत फलों का विचार करना हो या अन्य बलों के अनुसार विचार करना हो दोनों ग्रहों के बलों का मिश्रित फल देखना उचित होगा, किन्तु भावगत फलों के विचार राहु और केतु के फलों का सीधा सम्बन्ध है। प्रथम स्थान के राहु का सम्बन्ध सातवें स्था के केतु से, दूसरे स्थान के राहु का आठवें स्थान के केतु से होता है, इसी प्रकार आगे के घ का होता है। अतः ऊपर अंकित दिए गए राहु के फलों के अनुसार ही केतु के भावग समझने चाहिए।

उल्लिखित भावगत ग्रहों के फल देखने से मालूम होता है कि एक ही भावगत ग्रह क कथन में विभिन्न आचार्यों का कहीं-कहीं मतभेद है। यह मतभेद सूक्ष्म नहीं है, वास्तव म भावगत ग्रहों के फल ग्रह और भाव के प्रति-सम्बन्ध की आन्तरिक प्रकृति के इंगित कर है। दोनों के प्रति-सम्बन्ध की अन्तर्निहित प्रकृति क्या है, इसी बात को जानने की चेष् दैवज्ञ को करनी चाहिए, तब फल कथन होना चाहिए। जो फल भावगत ग्रहों के दिये ग हैं, उनकी अन्तर्निहित प्रकृति के अनुसार ही शुभ या अशुभ फल होता है। कम, अधिक य मध्यम, यह उस ग्रह के दूसरे ग्रहों के प्रति सम्बन्ध पर आधारित है। यही बात तब भी ध्यान में रखनी चाहिए कि जब एक ही जन्म चक्र में विभिन्न ग्रहों के विभिन्न भावों में स्थित हो पर उनके भावगत फलों में विभिन्नता देखी जाय, क्योंकि जहाँ एक ग्रह एक भाव अनुकूल या शुभ फल देने वाला अंकित है, वहीं दूसरे ग्रह को, जो अन्य भाव में है, अशु फल देने वाला बताया गया है। ऐसी दशा में भी ग्रह स्थिति के प्रकृतिजन्य फलों को ध्य में रखते हुए ही दैवज्ञ को ग्रह के बल तथा उसकी अन्य बातों का प्रभाव तथा लग्नेश क उस भाव से सम्बन्ध देखकर जो अन्तर्निहित प्रकृति जानी जाय, या प्रतिभासित होती ह उसी के अनुसार फलादेश करना चाहिए। सब ग्रहों की स्थिति का विभिन्न भावों तुलनात्मक प्रभाव ग्रहण करने की चेष्टा करनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया जायेगा फल कथन त्रुटिपूर्ण होगा। इसे आगे उदाहरण देकर स्पष्ट करने की चेष्टा की जायेगी।

वस्तुतः कौन-सा ग्रह किस भाव में होने से क्या फल देता है। **इसका अर्थ है कि**

कितने-कितने अंश की दूरी पर स्थित ग्रह लग्न को किस-किस रूप में प्रभावित करके, कैसे फलदायक होते हैं। वस्तुतः लग्न राशि पर प्रत्येक ग्रह का प्रभाव रहता है, चाहे वह उससे कितने ही अंश की दूरी पर हो। उसी के प्रभाव को दैवज्ञों ने अपने अध्ययन से भावगत ग्रहों के प्रभाव रूप में चित्रित किया है। यह प्रभाव एक स्वतन्त्र प्रभाव होता है। लग्न पर प्रत्येक ग्रह की उससे दूरी के अनुसार ही विभिन्न प्रतिक्रिया होती है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व, रंग-रूप, चरित्र तथा कर्म को अनेक तरह से गढ़ती है। चूँकि लग्न से दूरी के प्रभाव के आधार पर इन ग्रहों की प्रतिक्रिया का अध्ययन होता है, अतः इनका प्रतिसम्बन्ध सीधा लग्न अर्थात् मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से होता है। अतः तनुभाव से जो-जो बातें अध्ययन करनी चाहिए, उन पर अन्य भावगत ग्रहों के बल संदर्भ में विचार करने पर दैवज्ञों द्वारा प्रतिपादित मत वैभिन्य में कौन-सा मत ग्राह्य होगा, यह निर्णय लेना कठिन नहीं होगा। उन पर विशेष रूप से विचार करना चाहिए।

■

द्वादश भावों में भावेशानुसार फल

जन्म कुण्डली में बारह भाव होते हैं, जिनके द्वारा जातक के व्यक्तित्व को बा भागों में बाँटा जाता है। इन बारह भावों को बारह राशियाँ पूरित करती हैं, जिन अधिपतियों के रूप में कुण्डली में सात ग्रह (सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र औ शनि) भी किसी-न-किसी भाव में स्थित होते हैं। अतः प्रत्येक ग्रह कुण्डली के बा भावों में से किसी-न-किसी भाव का स्वामी होता है, जिस भाव में उस ग्रह की राशि हो है, वह उसी भाव का स्वामी माना जाता है। दूसरे शब्दों में, वह जिस भाव की राशि क स्वामी होता है, उसी भाव का ईश होने के कारण उस भाव का भावेश कहा जाता जैसे—प्रथम भाव या लग्न का स्वामी **लग्नेश** होता है, दूसरे भाव या धन भाव का स्वा धनेश या 'द्वितीयेश' होता है। तीसरे भाव का स्वामी **सहजेश** या **'तृतीयेश'** कहलाता है चौथे भाव का स्वामी **सुखेश** या 'चतुर्थेश' कहलाता है। पाँचवें भाव का स्वामी **सुतेश** 'पञ्चमेश' कहलाता है। छठे भाव का स्वामी **रिपु-ईश** या 'षष्ठेश' कहलाता है। सात भाव का स्वामी **दारेश** या 'सप्तमेश' कहलाता है। आठवें भाव का स्वामी **रंध्रेश** 'अष्टमेश' कहलाता है। नवम भाव का स्वामी **धर्मेश** या **भाग्येश** या **'नवमेश'** कहलाता है दशम भाव का स्वामी **कर्मेश** या 'दशमेश' कहलाता है। ग्यारहवें भाव का स्वामी **आयेश** या 'एकादशेश' कहलाता है। बारहवें भाव का स्वामी **व्ययेश** या **'द्वादशेश'** कहा जाता है

कभी-कभी किसी भाव का स्वामी उसी भाव में स्थिति होता है, कभी-कभी ऐस नहीं होता है। अधिकतर भावेश, अपने भाव के अतिरिक्त अन्य भाव अर्थात् घर में ह स्थित होते हैं। ऐसी स्थिति में कहा जाता है कि अमुक भाव का स्वामी अमुक भाव में स्थि है, अतः किसी ग्रह के किसी स्थान विशेष में अर्थात् अपनी ही राशि के अतिरिक्त दूस राशि में रहने के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। किसी जातक की कुण्डली में को राशि किसी भाव में होती है, कोई किसी भाव में होती है, यह उस जातक की लग्न राशि क अनुसार होता है। अतः विभिन्न कुण्डलियों में एक ही राशि का स्वामी, विभिन्न भावों क स्वामी होता है।

अब हम भावेशों के अनुसार उनके फलों का निरूपण करेंगे—

लग्नादि द्वादश भाव स्थित लग्नेश के फल

(1) जिस जातक की जन्म कुण्डली में **लग्नेश** (लग्न राशि का स्वामी-प्रथम भाव का स्वामी) यदि अपनी ही राशि क्षेत्र अर्थात् लग्न में ही स्थित हो तो वह जातक रोग से रहित, लम्बी आयु से युक्त, बलवान, प्रभावी, धनवान, राजा के समान या बहुत भूमि का अधिपति होता है। इसको दो पत्नी होती हैं।

(2) जिस जातक के जन्म समय में **लग्नेश द्वितीय भाव** में हो तो वह धनी, दीर्घजीवी, स्थूल शरीर, बड़ा बलवान, राजा, भूमिपति और धर्मात्मा होता है। इसको कई स्त्रियाँ होती हैं।

(3) जिस जातक के जन्म समय में **लग्नेश तृतीय भाव** में होता है, वह उत्तम मित्रों से युक्त, बन्धु-बान्धवों के साथ से प्रसन्न, धर्माचरण में रत, वीर और दाता, सिंह के समान पराक्रमी, सम्पति से युक्त, दो पत्नियों का सुख पाने वाला बुद्धिमान और सुखी होता है।

(4) जिस जातक के जन्म समय में **लग्नेश चतुर्थ भाव** में होता है, उसे माता-पिता का पूरा सुख प्राप्त होता है, उसके अनेक भाई-बन्धु होते हैं, उसके गुण और रूप लोगों को अपना बना लेते हैं तथा वह कामी होता है। इसे राज्य से सुख, धन, तथा पिता से भी धन और सुख की प्राप्ति होती है।

(5) जिस जातक के जन्म समय में **लग्नेश पाँचवें भाव** में होता है, वह सन्तान से पूरा सुख प्राप्त नहीं करता है। यह क्रोध करने वाला, तेजस्वी, राज्य में अपना प्रभाव रखता है। अच्छे कर्मों को करता हुआ लोक में कीर्ति लाभ करता है।

(6) जिस जातक के जन्म समय में **लग्नेश छठे भाव** में होता है, वह रोग से मुक्त, जमीन का स्वामी, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अपने सद्कर्मों के लिए विख्यात होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह शरीर का सुख मनोनुकूल प्राप्त नहीं कर पाता।

(7) जिस जातक के जन्म समय में **लग्नेश सातवें भाव** में होता है, वह तेजस्वी होता है, उसे शोक के कारण दुःख भी होता है। उसकी स्त्री सुन्दर और तेजस्विनी होती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह फल तभी होते हैं, जब लग्नेश शुभ ग्रह हो, पाप ग्रह होने पर स्त्री हीन रहता है।

(8) जिस जातक के जन्म काल में **लग्नेश आठवें भाव** में होता है, वह कृपण धन संग्रह करने वाला और दीर्घायु होता है। पाप ग्रह होने पर जातक क्रूर होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सिद्ध विद्या को जानने वाला अत्यन्त क्रोधी, चोर, जुआरी, पराई स्त्रियों में आसक्त होता है।

(9) जिस जातक के जन्म काल में **लग्नेश नवें भाव में** होता है, वह अधिक बन्धु भाइयों से युक्त, पुण्यवान, सद्मित्र, बुद्धिमान, सुशील, विख्यात और तेजस्वी होता है। इसको स्त्री, पुत्र तथा धन का पूरा-पूरा सुख होता है।

(10) जिस जातक के जन्म समय में **लग्नेश दशम भाव** में होता है, वह गुरु, माता-पिता का भक्त, उनसे पूरी तरह से सुख प्राप्त करने वाला, राजदरबार में प्रसिद्ध ज्ञानवान पण्डित और सुशील होता है। यह अपने भुजबल से धनोपार्जन करने वाला होता है।

(11) जिस जातक के जन्म समय में **लग्नेश ग्यारहवें भाव** में होता है, वह सुख

युक्त, चिरजीवी, पुत्रों से युक्त, तेजस्वी, विख्यात और विद्वान होता है। इसको अनेक मि का सुख प्राप्त होता है और इसमें गुणों का अभाव नहीं होता। सुशील और विनम्र होता है

(12) जिस जातक के जन्म समय में **लग्नेश बारहवें भाव** में होता है, वह जा दूसरों से द्वेष करने वाला, नीच कर्मों के करने से भी नहीं हिचकने वाला, परदेश में वास क वाला तथा बन्धुओं का मान करने वाला होता है। यह व्यर्थ खर्च करने वाला, क्रोधी होता है

तन्वादि द्वादश भाव स्थित द्वितीयेश (धनेश) के फल

(1) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश प्रथम भाव** में हो तो वह कृ होता है। उसका मन व्यवसाय-व्यापार में लगता है, उसी से सफल होता है। वह धन सत्कर्म करने वाला, धनी लोगों में वह मान्य होता है और उसे बहुत सुख भोग प्राप्त होते **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक पुत्रवान, धनवान होता है, अपने कुटुम्बीजनों को दुःख में डालता है, कामी और निष्ठुर होता है, यह दूसरों के कार्यों को करता है।

(2) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश द्वितीयेश दूसरे भाव** में होता है तो वह व्यवसाय द्वारा धन की प्राप्ति करता है, सत्याचरण से हटकर चलने वाला हो है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने आपको महान मानने वाला, दो या अधि पत्नियों से युक्त, परन्तु सन्तानहीन होता है।

(3) यदि जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश तीसरे भाव** में होता है तो वह राज्य विरोध रखने वाला तथा बन्धुओं से कोई भेद न मानने वाला होता है। **जातकाभरण** अनुसार यह जातक पराक्रमी, बुद्धिमान, गुणवान, कामी और लोभी होता है। यह देवनिन्द भी होता है।

(4) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश चौथे भाव** में होता है तो व पिता से धन प्राप्त करने वाला होता है। सत्यवादी, दयालु तथा दीर्घायु होता है। धनेश य पापाक्रांत हो तो मृत्यु दायक होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सब सम्पत्तियों युक्त होता है। अपने बलानुसार यह जातक को राजा तक बना देता है।

(5) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश पाँचवे भाव** में होता है तो व पुत्रों से सुख प्राप्त करता है, कठिन कार्यों को करने में उत्साही और प्रसिद्ध होता है, धन व संग्रह करने में लगा रहने वाला कृपण और दुःखी भी होता है। **जातकाभरण** के अनुस धनेश जब पाँचवे स्थान में होता है तो वह जातक को धनी और पुत्रों से युक्त बनाता है।

(6) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश छठे भाव** में होता है तो व शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। इसके पास धन का विपुल भण्डार होता है इसको भूमि भी बहुत होती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक शत्रुओं से धन का ला करता है, धनेश के पापग्रह होने पर शत्रुओं द्वारा धन नाश होता है। इसकी आँखें विकल होती हैं।

(7) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश सातवें भाव** में होता है तो व

सुशीला स्त्री का पति होता है, जिसको पति सुख देने की विलास कला आती है तथा यह सौभाग्यवती होती है, धन का संग्रह करके कुल में आनन्द देती है। पाप ग्रह होने पर यह स्त्री को बन्ध्या बनाता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक परस्त्रीगामी होता है और यह लोगों को औषधि देने वाला वैद्य होता है। धनेश के हीन स्थिति में होने पर इस जातक की स्त्री व्यभिचार करती है।

(8) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश आठवें भाव** में होता है तो वह कार्य करने में असफल होता है, आत्मघात करने वाला और दूसरे के धन का अपहरण करने वाला होता है। इसे भोग-विलास में रुचि होती है और यह कामी होता है। भाग्य पर इसे अटूट विश्वास होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक बड़ा भूमिपति तथा बहुत धनवान होता है। इसे अपनी स्त्री का सुख बहुत कम मिलता है तथा भाई का सुख नहीं प्राप्त होता है।

(9) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश नवम भाव** में होता है तो वह जातक दानी और वचन पालन करने वाला होता है, वह धनेश के हीन होने पर दरिद्र और भीख माँगने वाला याचक तथा अनेक विडम्बनाओं से घिरा होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक धनवान उद्योगी पण्डित होता है। बाल्यावस्था में स्वस्थ नहीं रह पाता। युवावस्था में सुखी और तीर्थयात्राओं को करता है।

(10) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश दशम भाव** में होता है तो वह राजमान्य, राज्य से धन पाने वाला होता है। यह माता-पिता का भक्त होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक कामी, धनी, ज्ञानी पण्डित होता है, इसके कई स्त्रियाँ होती हैं। यह धन से युक्त तथा सन्तान सुख से हीन होता है।

(11) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **धनेश ग्यारहवें भाव** में होता है तो वह जातक ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, इसी शास्त्र से धनी बनता है। यह विख्यात होता है तथा अनेक लोगों को पालता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सदैव लाभ करने वाला उद्योगी, मानी और लोक में विख्यात होता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म कुण्डली में **धनेश बारहवें भाव** में होता है तो जातक कृपण और निर्धन होता है। एक स्थिति के अनुसार यह समान लाभ-हानि प्राप्त करने वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक साहसी, धनहीन, दूसरों के भाग्य से जीने वाला, ज्येष्ठ सन्तान से सुखहीन होता है।

द्वादश भावस्थ तृतीयेश के फल

(1) यदि जन्म समय में किसी जातक की कुण्डली में **तृतीयेश लग्न** में होता है तो वह जातक बकवादी, व्यर्थ की बातें करने वाला, लम्पट और अपने ही लोगों से भेद करने वाला, सेवा भावी, अच्छे मित्रों से रहित तथा कूटकर्म करने वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने भुजबल से धन उपार्जन करता है। कुशल सेवक, साहसी,

परन्तु विद्याहीन होता है। यह जातक बुद्धि का श्रेष्ठ होता है तथा अपने पराक्रम से विख्यात होता है।

(2) यदि जन्म समय में किसी जातक की कुण्डली में **तृतीयेश दूसरे भाव** में होता है तो वह जातक भिक्षुक, निर्धन, अल्पायु और बन्धु विरोधी होता है। इसका जीवन कष्टमय होता है। विशेष शुभ स्थिति में जब सहजेश होता है तो यह जातक को धनवान बनाता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक स्थूल शरीर का निर्बल, विक्रम से हीन, पराई स्त्री तथा धन का लोभी होता है। यह थोड़े कार्यों को आरम्भ करने वाला और सोच-समझकर उन्हें पूरा करने वाला होता है। यह बुद्धिमान होता है।

(3) यदि जन्म काल में किसी जातक की जन्म कुण्डली तीसरे भाव के स्वामी को **तीसरे भाव** में दर्शाती है तो वह जातक बलवान, अच्छे मित्रों से युक्त, बन्धु-बान्धवों वाला होता है। इस मनुष्य को राजा से धन पाने वाला होता है। यह देवता और गुरु का भक्त होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सहोदरों का सुख प्राप्त करता है, धनवान और पुत्रवान होता है, हर्ष से विभोर रहता हुआ उत्तम सुखों को भोग करता है।

(4) यदि जन्म समय में किसी जातक की जन्म कुण्डली में तृतीय भाव का स्वामी **चतुर्थ भाव** में होता है तो यह जातक पिता, बन्धु, सहोदरों का सुख पाने वाला, माता से बैर धारण करने वाला, परन्तु पिता के धन का भोगी होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सुखी, धनवान तथा बुद्धिमान होता है। इसकी स्त्री दुष्टा होती है।

(5) यदि जन्म काल में कोई जातक अपनी कुण्डली में तीसरे स्थान के स्वामी को **पाँचवें भाव** में प्राप्त करता है तो वह मनुष्य बेटे, भतीजों, बान्धवों और बन्धुओं से पालित होता है। यह दीर्घायु और परोपकारी होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक पुत्रवान तथा गुणवान होता है। यदि ग्रह सदोष होता है तो इसकी स्त्री क्रूर स्वभाव वाली होती है।

(6) जिस जातक के जन्म समय में **तृतीयेश छठवें भाव में** होता है, वह व्यक्ति बन्धुओं का विरोधी होता है। उसकी आँखों को रोग होता है। वह भूमि उपार्जन करता है और वह कभी-कभी रोग से पीड़ित होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह भाई का शत्रु तथा मामा से भी शत्रुता रखता है। वह धनवान होता है और भाभी की ओर आकृष्ट होता है।

(7) जिस जातक के जन्म समय में **तृतीयेश सातवें भाव** में होता है तो वह व्यक्ति अपनी पत्नी सुशीला व अपनी अनुगामिनी होने से सुखी होता है, परन्तु तृतीयेष यदि दोष युक्त होता है तो उसकी पत्नी उसके छोटे भाई से सम्बन्ध रखती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक राजा का सेवक होता है, बाल्यावस्था में दुःखी रहने वाला, बाद में सुखी होता है।

(8) जिस जातक के जन्म काल में **तृतीयेश आठवें भाव** में होता है, वह व्यक्ति सहजेश के सदोष होने पर अंगहीन होता है, उसको अल्पायु योग भी होता है, इसको भाई नहीं होते। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक चोर, सेवा कार्य से जीविका प्राप्त करने वाला होता है। इसकी मृत्यु राजदरबार में सम्भव होती है।

(9) जिस जातक के जन्म काल में **तृतीयेश नवम भाव** में होता है, वह व्यक्ति यदि तृतीयेश सदोष हो तो बन्धुओं से रहित होता है और तृतीयेप निर्दोष होता है तो जातक पण्डित, ज्ञानी, सहोदरों से युक्त व पुण्यवान होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक पिता के सुख से हीन, स्त्री द्वारा भाग्योदय प्राप्त करने वाला तथा पुत्रादि के सुख से युक्त होता है।

(10) जिस जातक के जन्म काल में **तृतीयेश दशम स्थान** में होता है, वह व्यक्ति राजमान्य, माता-पिता, बन्धुओं का भक्त और अच्छी बुद्धि से युक्त होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सब तरह के सुख से युक्त होता है, अपने पराक्रम से धन का अर्जन करता है। यह जातक दुष्ट स्त्री का साथ करता है तथा उसका भरण-पोषण करता है।

(11) जिस जातक के जन्म काल में **तृतीयेश ग्यारहवें भाव** में होता है, वह व्यक्ति उत्तम बन्धुओं से युक्त होता है, राजा का कृपा करने वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक व्यापार में सदैव लाभ प्राप्त करता है। विद्याहीन होने पर भी तीव्र बुद्धि तथा साहस से कार्यों को करने वाला और दूसरों के कार्यों को करने में सुख अनुभव करता है।

(12) जिस जातक के जन्म समय में **तृतीयेश बारहवें भाव** में होता है, वह अपने मित्रों को हानि पहुँचाता है, बन्धुओं को कष्ट देता है, उनसे सदैव दूर रहने में ही सुख अनुभव करता है तथा विदेश में रहकर शान्ति पाता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अच्छे कार्यों में धन का व्यय नहीं करता है। इसका पिता कठोर स्वभाव का निर्दयी व्यक्ति होता है। इसका भाग्योदय स्त्री के द्वारा होता है।

द्वादश भावस्थ चतुर्थेश के फल

(1) **चतुर्थेश जब लग्न** में होता है तो जातक और उसके पिता में परस्पर प्रेम होता है, जातक पितृकुल में श्रेष्ठ व्यक्ति होता है। यह अपने पिता के नाम को भी जगत में विख्यात करता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह व्यक्ति अनेक विद्याओं तथा गुणों से युक्त, भूमि, सवारी और माता से सुखी रहता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चतुर्थेश द्वितीय स्थान** में होता है तो वह जातक भावेश के निर्दोष होने पर पिता का भक्त होता है, अन्यथा उसे अपने पिता से द्वेष होता है। पिता का भक्त होने से उसके उपार्जित धन का सुखोपभोग उसका पिता करता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक भोगी होता है, सब धनों से युक्त होता है, कुटुम्ब से भरा पूरा, मानी, साहसी और विभिन्न प्रकार की माया करने में चतुर होता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म काल में **चतुर्थेश तृतीय भाव** में हो तो वह व्यक्ति माता-पिता से भेद रखता है। यह जातक पिता से कलह करता है और बन्धुओं से भी द्वेष रखता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह व्यक्ति पराक्रमी, नौकर चाकरों से युक्त, उदार, नीरोग, गुणवान दाता अपने ही पुरुषार्थ से धनोपार्जन करने वाला होता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म काल में **चतुर्थेश चौथे भाव** में ही होता है तो वह व्यक्ति विख्यात होता है तो वह अपने पिता को राज्य से सम्मान प्राप्त कराने में वही हेतु होता

है और वह स्वयं धर्मात्मा तथा सुखी होता है। **जातकाभरण के अनुसार यह** जात[क] राजमंत्री, सब प्रकार की धन-सम्पत्ति वाला, चतुर, सुशील, मानी-ज्ञानी, स्त्री का प्रि[य] और सुखी होता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म काल में **चतुर्थेश पाँचवें स्थान** में होता है तो व[ह] व्यक्ति पिता के धन का भोक्ता होता है, उसको सदुपयोग में लाता है तथा यह अ[पने] कार्यकलापों में सद्व्यवहारी और सन्तान को स्नेहपूर्वक पालन करने वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सुखी, सबका प्रिय, विष्णु का भक्त, गुणवान, मा[नी] और अपनी भुजाओं से धनोपार्जन करने वाला होता है।

(6) यदि जन्म कुण्डली में **चतुर्थेश छठे भाव** में होता है तो वह जातक माता [के] धन का नाश करने वाला, पिता का छिन्द्रान्वेशी और धन संचय करने वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक माता का सुख प्राप्त नहीं कर पाता, यह क्रोधी, चो[र] और व्यभिचारी होता है। इसका हृदय स्वेच्छाचारी और दुष्ट भावनाओं वाला होता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चतुर्थेश सातवें** स्थान में होता है तो व[ह] व्यक्ति अपनी पत्नी के कारण दुःखी होता है। पत्नी कुलीना होते हुए भी अपनी इच्छानुसा[र] चलने वाली स्वार्थवश श्वसुर को दुःख देती है, कष्ट देती है। **जातकाभरण** के अनुसा[र] यह जातक अनेक विद्याओं का ज्ञाता होता है, पैतृक धन को त्याग करने वाला होता है। सभाओं में यह नहीं बोल पाता।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चतुर्थेश आठवें स्थान** में होता है तो वह व्यक्ति क्रूर, रोगी, दरिद्र और दुष्कर्म को करने वाला होता है। यह दुःखी होक[र] मरने तक को उद्यत हो जाता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक, गृह-सवारी के सुख से रहित, पिता की ओर से भी कोई सुख न प्राप्त करने वाला तथा नपुंसक के समान होता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चतुर्थेश नवम स्थान** में हो तो यह व्यक्ति पिता से पृथक् रहने वाला होता है। इसे सब विद्याओं का ज्ञान होता है। यह पिता के धर्म को पालने वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सब जनों का प्रिय, देवभक्त, गुणी, मानी और सब सुखों को भोगने वाला होता है।

(10) जन्म समय जिस जातक की कुण्डली में **चतुर्थेश दसवें भाव** में हो, व[ह] परोपकारी होता है उसकी माता, पिता द्वारा थोड़े या अधिक समय के लिए त्याग दी जात[ी] है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक राज्य के मान्य, रसायन शास्त्र को जानने वाल[ा] अत्यन्त हृष्टपुष्ट, सुखभोगी और जितेन्द्रिय होता है।

(11) जन्म समय में जिस जातक की कुण्डली में **सुखेख (चतुर्थेश) एकादश भाव** में होता है, वह जातक धर्मात्मा, परिजन पालक, पिता का भक्त, दीर्घायु और रोगही[न] होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक गुप्त रोग से दुःख उठाने वाला, हृदय औ[र] कर्मों से भी उदार, गुणवान, दाता और परोपकारी होता है।

(12) जिस जातक की जन्म कुण्डली में **चतुर्थेश द्वादश भाव** में होता है, वह व्यक्ति अपने पिता के परोक्ष में (जब या तो पिता की मृत्यु हो चुकी होती है, या वह परदेश में रह रहा होता है, जन्म लेता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक घर सवारी आदि के सुख से हीन होता है। यह दुर्व्यसनों में रत और आलसी होता है।

द्वादश भावस्थ पञ्चमेश के फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **पंचमेश लग्न** में होता है तो वह जातक लोक में ख्याति प्राप्त करने वाला, शास्त्रज्ञ, वेदवेत्ता और सुकर्म करने वाला होता है। इसको पुत्र कम होते हैं। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक विद्वान, सन्तान सुख से युक्त, कृपण, कुटिल हृदय और पराये धन का हरण करने वाला होता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में उसका **पंचमेश दूसरे भाव** में हो तो वह जातक संगीतादिकलाओं को जानने वाला, कष्ट से भोजन प्राप्त करने वाला होता है। साधारणतः जातक सुखी होता है, इसे संतान से धन की प्राप्ति व सुख होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक पुत्र-पौत्रादि से भरा-पूरा होता है, यह धनी और अपने परिवार का प्रेमी, उसे पालने वाला, सम्मान से विभूषित, स्त्रियों का प्रिय तथा कीर्तिमान होता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म काल में **पंचमेश तीसरे भाव** में स्थित हो तो यह जातक मधुर भाषी, लोक में विख्यात होता है। यह जातक अपने पिता के परिवार का पालन-पोषण करता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने सहोदर भाई-बहिनों का प्रिय होता है, किन्तु इसका स्वभाव चुगलखोरी का होता है। धन को यह अधिक प्यार करता है तथा सदैव अपने स्वार्थ में लिप्त रहता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म काल में **पंचमेश चौथे भाव** में होता है तो यह जातक अपने पिता के कार्य को करने वाला, पिता द्वारा पाला जाता है, माता का भी भक्त होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक स्त्री, पुत्र तथा माता की ओर से सुखी, बुद्धिमान, राज्य में कोई अधिकारी या राजा का आदरणीय गुरु होता है।

(5) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **पंचमेश पाँचवें स्थान** में ही हो तो यह जातक बुद्धिमान, ज्ञानी, पुत्रवान और प्रसिद्ध जनों में श्रेष्ठ होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक पुत्रवान होता है। यदि पंचमेश सदोष होता है तो पुत्र के हेतु दुःखी भी होता है। यह जातक अपने गुणों में मित्रों आदि का प्रिय होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **पंचमेष छठवें भाव** में हो तो इस जातक के शत्रुओं की संख्या बहुत होती है। इसका मान भंग होता है तथा रोग से शरीर दुःखी रहता है और निर्धन होने से संतापित होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने पुत्र से दुःखी होता है या तो इसका पुत्र इससे शत्रुता रखता है या यह उसके द्वारा मृत्यु प्राप्त करता है। इसके पुत्र न होने पर यह दत्तक या क्रीत पुत्र प्राप्त करता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **पंचमेश सातवें भाव** में हो तो यह व्यक्ति

देवगुरु का भक्त होता है। इसकी स्त्री प्रिय वादिनी होती है। **जातकाभरण** के अनुसार जातक सर्वत्र सम्मान प्राप्त करता है, सभी धर्मों में समभाव रखकर प्रेम करता है। पुत्र-पौत्रादि के सुख से युक्त, परोपकारी स्वभाव का होता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **पंचमेश को आठवें भाव** में पाता है, वह स्त्री रहित होता है, यदि स्त्री जीवित रहे तो वह क्रोध करने वाली अंग-भंग होती। इसके भाई और पुत्र भी अंगहीन क्रोधी होते हैं। **जातकाभरण** के अनुसार इस जातक अपने पुत्र से सुख नहीं मिलता या कम मिलता है। इसे कास-श्वांस रोग से पीड़ा होती यह क्रोधी और सुखहीन होता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **पंचमेश नवें भाव** में स्थित हों तो बुद्धिमान, विद्या को प्राप्त करने वाला, काव्य की रचना करने वाला, राज्य में मान्य, सु शरीर व नाटक रसिक होता है। **जातकाभरण** के अनुसार इस जातक का पुत्र राजा राजा के समान होता है। यह स्वयं ग्रन्थ रचना करने वाला, कुल मुख्य, लोक में सम्मा होता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय पर **पंचमेश दसवें भाव** में स्थित हो वह जातक राजमान्य राजकर्मचारी, अच्छे कर्म करने वाला श्रेष्ठ और माता को सुख वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक राजा या राजा के समान होता है इसका यश चारों तरफ फैलता है तथा यह अनेक प्रकार के सुखों का उपभोग करता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **पंचमेश एकादश भाव** में होता है यह जातक को बहुत लाभ कराने वाला, वीर, पराक्रमी, सत्य का व्यवहार कराने वाला संगीत आदि कलाओं को जानने वाला बनाता है तथा राजा द्वारा सम्मान प्रदान कराता है **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक विद्यावान, लोकप्रिय, ग्रन्थकार, अनेक कार्यों चतुर, पुत्रवान और धनवान होता है।

(12) यदि जन्म समय में किसी जातक के **पंचमेश बारहवें भाव** में होते हैं तो व जातक को पुत्रहीन बनाते हैं। यदि पुत्र हो भी, तो वह सन्ताप दाता और परदेश में निवा करने वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसर यह जातक सन्तान सुख से हीन, दत्तक क्रीत पुत्र का रखने वाला होता है।

द्वादश स्थान स्थित षष्ठेष के फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म काल में **षष्ठेश प्रथम भाव** में हो तो वह जातक बलवान और रोग मुक्त होता है। अपने परिवारीजनों को इससे कष्ट होता है, परन्तु इसके पक्ष में बहुत लोग होते हैं। यह शत्रुओं को संताप देने वाला होता है। धनार्जन में तथा बोल में स्वच्छन्द होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक, रोगी, यशस्वी, अपनी बुद्धि से अपना ही अहित करने वाला, धनी, ज्ञानी, साहस से युक्त और धनी होता है।

(2) जिस जातक के जन्म समय में **षष्ठेष द्वितीय भाव** में होता है, वह दुष्ट स्वभाव का धन संग्रह करने में चतुर और अपनी बातों से सम्मान पाने वाला, उत्तम स्थान में निवास करता है। इसको शारीरिक रोग से पीड़ा होती है तथा यह मित्रों से रहित होता है। इसे सब ओर लोग जानते हैं। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक कुल में श्रेष्ठ होता है, साहसी, परदेश में दुःखी रहने वाला, अच्छी वाणी बोलने वाला तथा अपने कर्म में व्यस्त रहता है।

(3) जिस जातक के जन्म समय में **षष्ठेश तीसरे भाव** में हो तो वह लोगों को कष्ट पहुँचाता है, उसके आचरण नीचता युक्त होते हैं और वह लड़ाई-झगड़े से दुःख पाता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह व्यक्ति क्रोधी होता है, पराक्रमहीन तथा भयभीत तथा सेवकों से भी अवमान्य होता है। इसका इसके भाई के साथ शत्रुवत् व्यवहार होता है।

(4) जिस जातक के जन्म समय में **षष्ठेश चौथे भाव** में होता है तो उसकी अपने पिता से शत्रुता होती है। वह भी रोगी होती है तथा उसका पिता भी स्वस्थ नहीं होता। इसके पास लक्ष्मी का वास चिरकाल तक रहता है तथा यह सुन्दर पुत्र प्राप्त करता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक माता का सुख प्राप्त नहीं करता, बड़े-बड़े कार्य करने की इच्छा वाला, यह चंचल हृदय, लोगों से द्वेष भाव रखने वाला, अत्यन्त धनी होता है।

(5) जिस जातक के जन्म समय में **षष्ठेश पाँचवें भाव** में होता है, उसको अपने पुत्र के कारण मृत्यु प्राप्त होती है तथा पुत्र ही उससे शत्रु जैसा व्यवहार करता है। यह निर्धन, खल स्वभाव का और कपट आचरण करने वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह व्यक्ति पुत्र और मित्रों से शत्रुता प्राप्त करता है, अपने आप में सुखी होता है, स्वार्थ में संलग्न होता है तथा दयान्वित भी होता है। इसका धन ह्रास होता है।

(6) जिस जातक के जन्म समय में **छठे भाव का स्वामी** अपने ही घर में हो तो वह निरोग होता है, उसकी शत्रुता लोगों से बिना किसी कारण के होती है, अर्थात् लोग उसे अपना हितैषी न मानकर किसी अज्ञात प्रेरणा से ही उसे बुरा समझकर शत्रु मानते हैं। यह जातक कभी खिन्न नहीं होता, सुखी रहता है, धन का संचय कृपण भाव से करता है, परन्तु ऐसा हो नहीं पाता। अनुपयुक्त स्थान में भी रहने पर संतोषी भाव धारण करता है, किसी को बुरा भला नहीं कहता। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने स्वजनों से शत्रुता या उदासीनता रखता है, अन्य लोगों के प्रति इसका लगाव होता है, धन-सम्पत्ति का सुख मध्यम होता है।

(7) जिस जातक के जन्म काल में **षष्ठेश सातवें भाव** में जा पड़ता है तो वह स्त्री से दुःख प्राप्त करता है। उससे उसे सन्तान सुख नहीं प्राप्त होता है, उसके गर्भ नष्ट होते हैं या वह बन्ध्या होती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक स्त्री सुख से वंचित होता है। यह मानी साहसी, धनी और गुणी होता है।

(8) जिस जातक के जन्म काल में **षष्ठेश आठवें भाव** में होता है तो वह मारक

होता है। यदि मारक न हो तो वह इस जातक की बुद्धि का हरण करने वाला या ज्योतिहीन कर देता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक ज्ञानी लोगों से द्वेष मानने वाला, अन्य के धन व स्त्री की इच्छा करने वाला और अपवित्र आचरण करने वाला होता है। इसे रो घेरे रहते हैं।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **षष्ठेश नवें भाव** में हो तो वह जातक शास्त्र विहित कार्यों को करने से वंचित करता है। यह जातक मनमानी करने वाला, अंग और बन्धु विरोधी होता है। इस जातक को दरिद्रता घेरे रहती है तथा यह जातक याच बनकर जीवन निर्वाह करता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक लकड़ी और पत्थ का व्यवसायी होता है। यह लाभ-हानि में कभी दुःखी होता है, कभी सुख भी पाता है क्योंकि यह कभी लाभ पा लेता है तो कभी इसे हानि होती है। इसका धन नहीं बढ़ता।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **षष्ठेश दशम भाव** में होता है तो व जातक अपनी माता से असद् व्यवहार करने वाला दुष्ट स्वभाव का होता है। इसे अप सन्तान से प्रेम होता है, धर्म का भी पालन करता है तथा धन भी प्राप्त करता है। जातकाभरण के अनुसार यह जातक अपने कुल का नाम करने वाला श्रेष्ठ होता है, पि से इसे कोई श्रद्धा या भक्ति नहीं होती, यह कुशलतापूर्वक बोलने वाला तथा विदेश में ला प्राप्त करता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म काल में **षष्ठेश ग्यारहवें भाव** में होता है तो व व्यक्ति शत्रु और चोरों को नष्ट करने में सक्षम होता है, उसको चौपायों से लाभ होता है इसके अनन्तर को इसको शत्रु से खतरा होता है और यह शत्रु के हाथ भरण पा सकता है **जातकाभरण** के अनुसार यह शत्रुओं से धन प्राप्त करता है। यह गुणी, साहस औ पराक्रम से युत वीर होता है। इसको पुत्र का सुख कदाचित् ही होता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म काल में **षष्ठेश बारहवें भाव** में होता हो तो व जातक पशुओं से हानि प्राप्त करता है, उसके धन को चौपाये नष्ट कर देते हैं। उसे दौड़धू अर्थात् आवागमन, यात्राओं द्वारा धन का लाभ होता है। इसे प्रारब्ध पर ही मूल रूप भरोसा होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने धन को बुरे व्यसनों में व्य कर डालता है, यह विद्वानों का सम्मान नहीं करके, उनसे द्वेष करता है और इसे जीव हिंस जैसे कर्मों में आनन्द आता है।

द्वादश भाव स्थित सप्तमेश के फल

(1) यदि **सप्तम भाव का स्वामी** किसी जातक के जन्म समय में **प्रथम स्थान** में स्थित हो तो वह जातक अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला, अपनी भार्या में भी आसक्त भोग-विलास में अपने चित्त को संलग्न किये रहने वाला होता है। शरीर से स्वस्थ औ सुन्दर होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक हृदय का निर्मल नहीं होता, इसकी छद्म दृष्टि पराई स्त्रियों की ओर रहती है, ऊपर से यह गम्भीर मालूम पड़ता है, पर

इसका मन चंचल होता है। यह अपनी विद्वता की आड़ में सबको अपनी वास्तविकता का पता नहीं लगने देता।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सप्तमेश दूसरे स्थान** में होता है तो वह जातक अपनी स्त्री से दुःखी रहता है। यह स्त्री पुत्रेच्छा से पीड़ित रहती है। यह अधिक समय तक स्त्री सुख से वंचित भी रहता है, तथापि इसे स्त्री द्वारा धन प्राप्त होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह व्यक्ति कई स्त्रियों से युक्त होता है। यह स्त्री के द्वारा धन लाभ करता है या स्त्री के कारण इसको लाभ होता है या इसके भाग्योदय के मूल में स्त्री होती है। यह अपने कार्यों को तुरन्त नहीं करता, दीर्घ समय तक सोचते रहकर भी करे-करे या क्या करे, ऐसी द्विविधा में रहता है।

(3) यदि जन्म समय में किसी जातक के **सप्तमेश तीसरे स्थान** में होते हैं तो वह आत्मभिमानी तथा बली होता है। वह अपने बन्धु-बान्धवों से प्रेम रखता है। उसकी स्त्री सुन्दर होती है, उसका स्वभाव सुन्दर और मधुर होते हुए स्वच्छन्द होता है। वह जातक के मित्रों या देवर के प्रति आकर्षित होती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक पुत्र या सन्तान के दुःख से पीड़ित होता है। इसको सन्तान मृत होती है। बहुत प्रयन्त करने पर इसको ईश्वर एक पुत्र जीवित रहने देता है।

(4) यदि जन्म समय में किसी जातक के **सप्तमेश चौथे स्थान** में हो तो वह चञ्चल होता है। उसे अपने पिता के शत्रुओं के प्रति आदर भाव होता है। उसका पिता भी कटु बोलने वाला होता है। जातक की स्त्री अपने पिता के घर पलती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक स्त्री के वशीभूत रहता है। इसकी वाणी सुन्दर और सत्य होती है। यह बुद्धिमान होता है, धर्म का आचरण करता है तथा दन्त रोगी होता है।

(5) यदि जन्म समय में किसी जातक का **सप्तमेश पाँचवें भाव** में होता है तो वह व्यक्ति लम्बी आयु का भोग करता है। इसके कई पुत्र होते हैं। सबसे प्रीत करने वाला, अपनी पत्नी से प्रेम करता है। सुशील, निर्मल स्वभाव वाला, तेजस्वी होता है। इसकी बुद्धि में दुष्टता भी रहती है। इसकी स्त्री का पालन इसके पुत्र करते हैं। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सर्वगुण सम्पन्न होता है। यह सदैव आनन्दमय जीवन व्यतीय करता है और सब तरह से धन से युक्त होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सप्तमेश छठे स्थान** में होता है तो वह व्यक्ति स्त्री से विरोध रखता है, उसकी स्त्री भी रोगिणी होती है, स्त्री संग से रहित, यह अन्य स्त्रियों का प्रेमी होता है। इसको मरण का योग भी षष्ठेश सप्तमेश के दुःसम्बन्ध से होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक स्त्री के रोगिणी होने से दुःखी होता है या स्त्री से मतभेद तथा द्वेष या शत्रुता होने से कष्ट पाता है। यह स्वयं क्रोधी और सुखहीन होता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सप्तमेश सातवें भाव** में ही होता है तो वह जातक दीघार्यु, स्त्री का प्रेमी, सुशील और प्रभावशाली होता है। इसको लोक में सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त रहती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक स्त्री सुख का पूरा-पूरा

लाभ उठाता है। यह अत्यन्त धीर तथा अपने कार्यों को समझदारी से पूर्ण करने वाला, मि के व्यापार कार्य में दक्ष, बुद्धिमान होता है। इसको वात रोग की पीड़ा होती है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सप्तमेश आठवें स्थान** में होता है तो जातक वेश्यागामी और पराई स्त्रियों का सेवन करने वाला होता है। इसका विवाह या होता नहीं है, या होता है तो इसे पत्नी का सुख प्राप्त नहीं होता। यह चिन्ताओं से घिरा रह दु:खी होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक स्त्री के सुख से हीन होता है। स्त्री या तो रोगिणी होने से इसे कष्ट देती है या कुशीला होने से इसके मन में जलाती है। यह स्त्री स्वच्छन्द भाव की अपने मन की करने वाली होती है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म काल में **सप्तमेश नवम स्थान** में होता है तो जातक प्रभावशाली, लोक मान्य, सुशील होता है। उसकी स्त्री भी सुन्दर, साध्वी सुशीला होती है। यह ग्रह जातक के पुंसत्व को सदोष होने पर हानि पहुँचाता है। यह जा नीति शास्त्र में ज्ञानी होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक कई स्त्रियों का करता है, इसके प्रति स्त्रियाँ अनायास ही आकृष्ट हो जाती हैं। यह कई कार्यों को एक आरम्भ करता है और स्त्रियों में स्वयं भी बहुत आसक्त रहता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्मकाल में **सप्तमेश दसवें भाव** में होता है तो जातक राज्य में किसी-न-किसी कारण दोषी ठहराया जाता है, कपट करके अपने को बनाता है। यह शत्रुओं से की ओर से चिन्तित और दु:खी होता है। **जातकाभरण** अनुसार यह जातक अपनी पत्नी के सुन्दरी और साध्वी होने से सुख पाता है। इसके सुन्दर, धर्म के आधार पर इसे चलाते हैं तथा इसको धन-पुत्रादि का सुख रहता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म काल में **सप्तमेश ग्यारहवें स्थान** में हो तो पतिव्रता स्त्री का पति होता है। सुन्दरी, विनम्र और सुशीला स्त्री उसे लम्बे समय तक देती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक स्त्री के द्वारा धन लाभ करने वाला, और पुत्रियों से थोड़ा सुख प्राप्त करने वाला होता है। इसके कन्या अधिक होती हैं, जि कारण यह अत्यधिक चिन्तित होता है।

(12) जिस जातक के जन्म समय में **सप्तमेश बारहवें भाव** में होता है, वह घर में बन्धु-बान्धवों के कार्यों में निमग्न रहने वाला होता है। उसकी स्त्री उससे अ नवीना व चंचल होती है, वह उससे प्रेम न करके अन्यों को चाहती है। **जातकाभरण** अनुसार यह जातक दरिद्र और कृपण होता है। इसकी स्त्री अधिक व्यय करती है। जातक वस्त्र के व्यापार से लाभ उठाता है।

द्वादश भाव स्थित अष्टमेश के फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय **अष्टमेश लग्न** में होता है तो वह जीवन में अनेकानेक विघ्न बाधाओं में दु:खी होता है। इसे दीर्घ समय तक रोग से रहना होता है। यह व्यर्थ के विवाद में तत्पर रहता है। राजा के वचन से लाभ प्राप्त

है। **जातकाभरण** का कथन है कि यह जातक शरीर के सुख से हीन होता है, इसे रोगों के भोग से दु:खी रहना होता है, यह देवताओं और ब्राह्मण की निन्दा करने वाला होता है। इसके शरीर पर व्रण होते हैं, जिनकी पीड़ा से यह विफल रहता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **अष्टमेश द्वितीय भाव** में होता है तो वह अपने जीवन में अधिक लम्बी आयु का भोग नहीं करता। उसके शत्रु बहुत होते हैं और यह जातक चोर होता है। इस जातक का मरण राज्य के द्वारा होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक न बाहुबल का धनी होता है, न इसके पास धन ही होता है। यह अल्प धन से अपना समय व्यतीत करने वाला तथा जो धन नष्ट हो जाता है, उसे पुनः नहीं पा सकता।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **अष्टमेष तृतीय भाव** में होता है तो वह बन्धु-विरोधी होता है, मित्रों के प्रति द्वेष भाव रखने वाला, बुरी वाणी बोलकर सबको कष्ट देता है। व्यंग्य वचन बोलकर सबकी हँसी उड़ाता है, चंचल और भाई से रहित होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक भाइयों का सुख प्राप्त नहीं करता। इसको कोई सेवक नहीं होता तथा यह अत्यन्त बलहीन और आलसी होता है। यह आलस्य के कारण अपने कार्यों को बिगाड़ लेता है।

(4) जिस जातक के जन्म समय में **अष्टमेष चौथे स्थान** में होता है तो यह पिता के धन का अपहरण कर लेता है, पिता से शत्रुता रखता है और इस कलह के कारण पिता को भारी दु:ख होता है, वह रोगी होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक माता का सुख प्राप्त नहीं कर सकता। यह व्यक्ति या तो माता को खो चुका होता है, या अल्प आयु में ही उसके बिना रह जाता है। यह ग्रह, भूमि तथा वाहन के बिना रहता हुआ अपने मित्रों का भी द्रोही होता है।

(5) जिस जातक के जन्म समय में **अष्टमेश पाँचवे स्थान** में होता है तो जातक को पुत्र का कष्ट होता है। इसका पुत्र रोगी और व्याधि युक्त होता है, इसके मृत्यु के भी अवसर होते हैं और यदि जीवित रहता है तो इसके कार्य धूर्तता से युक्त होते हैं। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक आयु का लम्बा भोग करने वाला होता है। इस जातक को अपने शारीरिक श्रम के अतिरिक्त बुद्धि से कुछ भी लेना नहीं होता, यह निर्बुद्धि, कम सन्तान वाला तथा धन से युक्त होता है।

(6) जिस जातक के जन्म समय में **अष्टमेष छठवें भाव** में होता है, वह राजा का विरोधी, रोगी और क्रोधी होता है। भयभीत, कायर और कष्ट से युक्त होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक शत्रुओं से पराजित नहीं होता, यह अपने शत्रुओं को नीचा दिखाने में समर्थ होता है। इसका शरीर रोग युक्त होता है। इसे बाल्यावस्था में सर्प तथा जल से भय होता है।

(7) जिस जातक के जन्म समय में **अष्टमेश सातवें भाव** में होता है, वह जातक उदर का रोगी, दुश्चरित्र स्त्री का पति, स्वभाव से भी दुष्ट और स्त्री का द्वेषी होता है।

किसी-किसी दशा में तो इसकी मृत्यु या तो स्त्री के कारण होती है या स्त्री द्वारा ही ... है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपनी बुद्धि से ही अपने व्यापार में हानि ... करता है और इसको दो पत्नियों का सुख-दु:ख प्राप्त होता है। इसके पास धन ... अभाव होता है।

(8) जिस जातक के जन्म समय में **अष्टमेश आठवें भाव में** होता है, वह ... उद्योगी होता है, उसका शरीर स्वस्थ और सुन्दर होता है, उसे कोई रोग नहीं होता है। ... ऐसे घर में जन्म लेता है, जो धूर्त होते हैं तथा यह स्वयं भी धूर्त होता है। **जातकाभरण** ... अनुसार यह जातक लम्बी आयु का भोग करता है, यह सर्वदा दूसरों की निन्दा करने ... होता है तथा इसकी लोक निन्दा करने वाला होता है तथा इसकी भी लोग निन्दा करते ... इसे किसी की परवाह नहीं होती। अपने कार्यों में चतुर होता है।

(9)जिस जातक के जन्म समय में **अष्टमेश नवम भाव** में होता है, वह ... किसी का साथ नहीं करता, अकेला रहना ही पसन्द करता है, यह जीव घाती और ... होता है। इसका बन्धु-बान्धवों से द्रोह होता है, यह किसी से प्रेम नहीं करता है। शत्रु ... इसकी चर्चा होती है तथा यह व्यंग्य वचन बोलने वाला दुर्वक्ता होता है। **जातकाभरण** ... अनुसार यह जातक पुत्र से सुख प्राप्त करता है, धर्म का द्रोही और नास्तिक होते हुए ... विचरता है और निन्दित होता है। इसकी स्त्री दुष्टा होती है तथा यह दूसरों का धन ... करता है।

(10) जिस जातक के जन्म समय में **अष्टमेश दसवें भाव** में होता है, वह सब ... निन्दा करने वाला होता है, उसे आलस्य घेरे रहता है और वह राज्य का सेवक होकर नि... कर्म से विशेष सम्मानित नहीं होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक पिता का ... नहीं प्राप्त कर पाता। यह दूसरों की बुराई-भलाई करके ही अपनी बड़ाई मानता है। इस... कर्म दुष्टतापूर्ण होते हैं, अत: कर्महीन कहलाता है।

(11) जिस जातक के जन्म समय में **अष्टमेश ग्यारहवें भाव** में होता है, ... बालक अवस्था में दु:ख पाता है। उसके बाद यह सुख प्राप्त करता है। इसकी आयु या ... दीर्घ होती है, या अल्पायु में ही इसका स्वर्गवास हो जाता है। **जातकाभरण** के अनुसार ... जातक बाल्यावस्था में दु:खी होता है, उसके अनन्तर इसे सुख प्राप्त होने के योग होते ... इसकी आयु मध्यम या उससे अधिक भी हो सकती है। भावावेश के सदोष होने से अ... होती है।

(12) जिस जातक के जन्म समय में **अष्टमेश बारहवें भाव में** होता है, यह ... का कठोर और दुर्मुख होता है। यह चोर कर्म करने वाला, झूठ और निर्दय होता है। ... जातक स्वेच्छाचारी होता है। मृत्यु के बाद इसका माँस कौआ, गिद्ध, कुत्ते आदि खाते ... **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक उचित और लोक मार्ग से निर्धारित कार्यों को ... करता है, यह सदैव अनुचित कार्यों को करने में अपनी बड़ाई समझता है। इसकी आयु ... होती है और यह अनेक अनिष्ट कर्मों को करता रहता है तथा अनिष्टों से कष्ट पाता ...

...सके व्यय सद्कार्यों नहीं होते हैं। वस्तुत: यह सद् या असद्कार्यों के भेदभाव को न ...मझता है, न मानता है।

द्वादश भाव स्थित नवमेश के फल

(1) जिस जातक के जन्म समय में **नवमेश लग्न** में होता है, वह देवताओं और गुरु ...का पूजन करने वाला, बहुत वीर होता है। धन का कोई मितव्यययता का सिद्धान्त अपना- ...र संग्रह करता है, यह राज्य में किसी सेवा में नियुक्त होता है तथा आहार के प्रति यह कम ...ो मोह रखता है। अपनी बुद्धि से यह बहुत मान्य होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह ...जातक भाग्यवान होता है। इस व्यक्ति को राज्य में मान्यता प्राप्त होती है, यह सुशील और सुन्दर, लोक में मान्य और पूज्य होता है। यह विद्यावान और धन से युक्त होता है।

(2) जिस जातक के जन्म समय में **नवमेश द्वितीय भाव** में होता है तो यह अपने धार्मिक व्यवहार के कारण विख्यात होता है। यह सुशील और वात्सल्य से पूर्ण होता है, अच्छे-अच्छे कार्यों को करने वाला और सबको अपना प्यार देने वाला होता है। यह पुण्यवान होता है, परन्तु पशुओं से पीड़ा प्राप्त करके दु:खी होता है, इसके मुख में रोग होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक पण्डित, लोक में मान्य और आदर पाने वाला प्रिय, धन की विपुलता से सम्पन्न, कामी तथा स्त्री-पुत्रादि के सुख से सुखी होता है।

(3) जिस जातक के जन्म काल में **नवमेश तृतीय भाव** में होता है, वह सुन्दर स्त्री का स्वामी होता है, इसको बन्धु-बान्धवों से प्यार होता है, यह स्त्री और अपने पारिवारिक भाई-बन्धुओं की रक्षा करने में सक्षम होता है तथा यह अपने ही लोगों के साथ जीवन व्यतीत करता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक भाई का सुख प्राप्त करके आनन्दित होता है। इसके पास अपने भाग्य और उद्यम से धन का प्रवाह उत्तम होता है, इसके गुण इसे आदर दिलवाते हैं। यह सुन्दर और सुशील होता है।

(4) जिस जातक के जन्म काल में **नवमेश चतुर्थ भाव** में होता है, वह जातक पिता का भक्त होता है। पिता और उनके मित्रों का कार्य करने में आनन्द अनुभव करता है, इसके कार्य व्यवहार सुन्दर होते हैं और यह विख्यात तथा बुद्धिमान पुण्यात्मा होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने गृह में रहकर सुखी होता है, इसके पास उत्तम वाहन भी होते हैं। इसके पास विपुल सम्पत्ति होती है तथा यह माता का भक्त होता है।

(5) जिस जातक के जन्म काल में **नवमेश पाँचवें भाव** में होता है, वह पुण्य कर्मों को करने वाला, देवताओं और गुरु का भक्त होता है, वह अपने पुत्रों के साथ सुख प्राप्त करता है और देवताओं तथा गुरु का आदर करने वाला भक्त होता है। स्वस्थ तथा सुन्दर यह जातक अनेकों का मन मोह लेता है। **जातकभरण** के अनुसार यह जातक अपने पुत्र का सुख प्राप्त करने का भाग्य लेकर आता है। यह गुरु का भक्त होता है, अपने धैर्य से यह कठिनाइयों का पार करता है तथा धर्मात्मा और पण्डित होता है।

(6) यदि जन्म समय में किसी जातक का **नवमेश छठे भाव** में होता है
शत्रुओं के सामने झुक जाता है, धर्माचार के प्रति उदासीन रहता है और कार्यों को
रूप से करने की योग्यता नहीं रखता है। यह दर्शन शास्त्र की निन्दा करने वाला मनो
होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक मामा आदि ननसाल के लोगों के
प्राप्त नहीं करता है तथा यह भाग्य का भी पूर्ण सुख प्राप्त नहीं करता, अर्थात् इसका
दबा हुआ होता है, इसे शत्रुओं से कष्ट होता है।

(7) यदि जन्म समय में किसी जातक का **नवमेश सातवें भाव** में होता है
अपनी स्त्री की ओर से सुखी होता है। यह स्त्री सती और सुशील होती है,
व्यवहार करती है, सुन्दरी शील सम्पति से युक्त और पुण्य कर्मों को करके जा
भाग्य वृद्धि करती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक स्त्री की सहायता के
फलों को प्राप्त करता है, इसे सुख प्राप्त होता है, अपने गुणों से यश प्राप्ति तथा
श्रेष्ठ व्यक्ति होता है।

(8) यदि जन्म समय में किसी जातक का **नवमेश आठवें भाव** में होता है
दुष्ट विचारों का होता है, उसको ग्रह और बन्धुओं से रहित जीवन व्यतीत करना
और अच्छे कर्मों को न करके यह अपने जीवन की सफलता दुष्कर्मों को करके ही
है। जातकाभरण के अनुसार यह जातक भाग्य का हीन होता है। इसे कष्ट उठाने
इसको छोटे भाई होते हैं, परन्तु अपनी बुद्धि से ही यह उनसे सुख पा लेता है, परन्तु
का सुख प्राप्त नहीं होता। यह सद्कार्यों को करके भी उल्टा ही फल पाता है।

(9) यदि किसी जातक का जन्म समय में **नवमेश नवम भाव** में होता है तो
बन्धु-बान्धवों से प्रेम रखने वाला, दानी, देवगुरु का भक्त और स्त्री तथा अपने परि
जनों का पोषक होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक परम भाग्यशाली हो
इसके गुणों का लोग अभिनन्दन करते हैं और यह शरीर से स्वस्थ सुन्दर होता है।
सहोदर बहुत सुख देते हैं।

(10) जन्म समय में यदि किसी जातक का **नवमेश दशम भाव** में हो तो
जातक राजकर्मचारी और वीर होता है। यह माता-पिता का भक्त और धर्माचार से
व्यतीत करने वाला पुण्यवान व्यक्ति होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक
के सुखों को भोगता है, यह स्वयं राजा होता है या राजा के समान ऊँचा व्यक्ति होता है
सेनापति या राजमन्त्री होकर लोक में मान्य होता है तथा अपने गुणों से सर्वत्र आदर
करता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **नवमेश ग्याहरवें भाव** में हो तो
जातक लम्बी उम्र का आनन्द भोगता है, यह धर्मात्मा तथा धनवान होता है, यह लोक
मान्य और सबको प्यार करने वाला होता है। इसके पुत्र सुन्दर व यशस्वी होते हैं और
अपने पुण्य कार्यों से विख्यात होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक दिनों-
उन्नति करता है तथा इसे निरन्तर लाभ के योग प्राप्त होकर लाभ होता है। यह गुरुजनों

भक्त होता है, गुणों से विभूषित सर्वत्र आदर प्राप्त करता है और पुण्य कार्यों को करके लोक
में यश लाभ प्राप्त करता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **नवमेश द्वादश भाव** में हो तो वह
व्यक्ति दूर देश में रहकर सम्मान प्राप्त करता है। यह सुन्दर होता है और अपनी विद्या और
बुद्धिमता से उच्च स्थान प्राप्त करता है। समयानुसार यह चतुरता से अपने कार्यों को सिद्ध
करने की क्षमता रखता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक भाग्य से हीन होता है।
यह अपने कार्यों को निष्फल होता देखकर दुःखी होता है। इसका व्यय शुभकार्यों में होता है
तथा अतिथियों की अधिकता से धनहीन होता है।

द्वादश भावस्थ दशमेश के फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दशमेश लग्न** में होता है तो वह व्यक्ति
माता से स्नेह कम रखता है और उसके प्रति उसकी श्रद्धा भी नहीं होती, परन्तु पिता का
भक्त होता है। इस जातक के पिता की मृत्यु के बाद इसकी माँ अन्य पुरुष के साथ रहती
है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक विद्वान होता है, यह अपनी कीर्ति से प्रतिष्ठित
होता है तथा इसके पास धन का अभाव नहीं होता है। भाग्य से इसके पास सब कुछ होता
है। यह कवि होता है। इसका धन दिनों-दिन बढ़ता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दशमेश द्वितीय भाव** में होता है तो यह
व्यक्ति माता द्वारा पालन-पोषण प्राप्त करने पर भी माता के प्रति द्वेषभाव रखता है। यह
अत्यन्त लोभी होता है, भोजन स्वल्प करता है और सुकर्मों का ज्ञान रखकर भी उनको नहीं
करता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने गुणों से चारों ओर आदर पाने वाला,
लोक में सर्वत्र मान्य तथा राज्य में भी अपनी प्रतिष्ठा रखता है। इसको अपने पिता से भी
सुख प्राप्त होता है। इसका स्वरूप परोपकारी होता है और यह दान देकर तृप्त होता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दशमेश तृतीय भाव** में होता है तो वह
व्यक्ति माता, पिता तथा अन्य सभी अपने ही लोगों (बन्धु-बान्धवों) का विरोधी होता है।
सेवा कार्य करके जीविका चलाता है। इसका पालन-पोषण साम्य द्वारा होता है। **जातकाभरण**
के अनुसार यह जातक अपने भाई से सुख प्राप्त करता है तथा अपने पराक्रम से सर्वत्र
सम्मान प्राप्त करता है। इसके गुणों का मान सब करते हैं। यह कुशल वक्ता और सत्य का
सम्मान करने वाला होता है।

(4) यदि जन्म समय में किसी जातक के **दशमेश चतुर्थ भाव** में होता है तो वह
सुखी और सदाचारी होता है। राज्य में सम्मान मिलता है तथा वह माता-पिता का भक्त तथा
गुरुजनों का सत्कार-सम्मान करके स्वयं भी सबसे प्रशंसित होता है। **जातकाभरण** के
अनुसार यह जातक सुखी होता है। माता के प्रति इसकी श्रद्धा और भक्ति होती है। यह
सवारी तथा गृह का स्वामी होकर प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। इसके पास धन तथा गुणों का
अभाव नहीं होता है।

(5) यदि जन्म समय में किसी जातक का दशमेश **पाँचवें भाव** में हो तो
कर्म करके भी विडम्बना से घिरा रहता है, इसे राजा से धन लाभ होता है तथा यह
गीत, वाद्य-संगीत में अपना मन लगाता है और स्त्रियों के प्रति भी यह आकर्षित र
जातकाभरण के अनुसार यह जातक अनेक विद्याओं को जानने वाला होता है। इस
विद्याएँ फलदायक होती हैं और यह सर्वथा आनन्दय युक्त, धनवान तथा पुत्रवान हो

(6) यदि जन्म समय में किसी जातक का **दशमेश छठे भाव** में होता है
शत्रुओं से डरने वाला कायर होता है। इस व्यक्ति को कलह और झगड़ा करने में
आता है। यह कृपण और किसी पर दया करने से रहित होता है। इसके कोई रोग न
है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक पिता के सुख को प्राप्त नहीं कर पाता। य
चतुर होता है, परन्तु चतुराई से भी यह धनी नहीं होता है, इसको शत्रुओं से भय रहता है
यह उनसे दु:ख पाता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दशमेश सातवें भाव** में होता
इसकी स्त्री को अच्छे पुत्र होते हैं, यह अच्छे स्वरूप वाली सुन्दर होती है और सब लो
साथ मिल-जुलकर चलती है। यह सदैव शुभ कार्यों को करने वाली और अपने प
सेवा में तत्पर रहती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपनी स्त्री से सुखी हो
इसकी पत्नी भी इसी की तरह मनस्वी होती है और इसको इसके हर काम में सुख दे
यह गुणवान वक्ता तथा सत्य और धर्म का पालन न करने वाला होता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दशमेश आठवें भाव** में होता है त
स्वार्थी होता है, इसका व्यवहार दुष्ट होता है, इसका चरित्र असत्यवादिता से जुड़ा रह
इसके मन में बहुत उत्साह और वीरता भी होती है। यह माता को कष्ट देता है। इ
स्वर्गवास अल्प समय में हो जाता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक कर्महीन
है, इसकी आयु लम्बी होती है तथा यह दूसरों की निन्दा करने में ही अपने को गुणी
बुद्धिमान मानता है। इसका लोक में आदर नहीं होता।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दशमेश नवम स्थान** में होता है त
जातक शुभ शील गुणों से युक्त, अच्छे बन्धुओं वाला और सहृदय मित्रों से युक्त हो
इसकी माता पुण्यवती और सुकर्म करने वाली, सत्य वचन व व्यवहार से सबको प्र
करने वाली होती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक स्वयं ही वैभवशाली होता
यह राज्य में बड़ा सामन्त, अधिकारी, मन्त्री या सेनापति आदि होकर राजा जैसा ही प्र
पाने वाला होता है। यह धन, पुत्र, स्त्री सभी से सुखी होता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दशमेश दशम स्थान** में होता है तो
माता को परम सुख देने वाला होता है। माता भी इसे सुख देती है। यह बोलने में
बुद्धिमानी का प्रर्दशन करता है तथा अपनी प्रिय वाणी से सबको मोहता है। **जातकाभ**
के अनुसार यह जातक सब कार्यों में प्रवीण होता है। यह पूर्ण रूप से सुखी और अपने पराक्र
अपनी प्रतिष्ठा कराने वाला होता है। यह सत्य वक्ता और गुरुजनों का भक्त होता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दशमेश एकादश स्थान** में होता है तो यह बहुत मानी होता है। यह अपने उद्यम से अर्थ-लाभ करता है, इसके पास धन का अभाव नहीं रहता है। इसकी रक्षा इसकी माता करती है तथा सदैव सुख भोग करती है। इसकी आयु दीर्घ व हर प्रकार से यह सुखी होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक धन और पुत्र से युक्त होता है इसे आनन्द और सुख का अभाव नहीं होता। अपने गुणों से यह अपने कुल को भी प्रतिष्ठा प्रदान कराता है तथा सत्य बोलने से लोक में महान होता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दशमेश बारहवें भाव** में होता है तो उसे बाल्यावस्था में माता द्वारा अलग कर दिया जाता है। यह जातक अपने पुरुषार्थ और अपने ही उद्यम से बहुत धन और मान-सम्मान प्राप्त करता है। यह सत्कर्म करके सुखी होता है। इसे राज्य से सम्मान व सुख प्राप्त होता है। इसको विदेश में भी लाभ होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक राज्य सभा में व्यय करने वाला, बहुत चतुर होते हुए भी इसको चिन्ताएँ घेरे रहती हैं तथा यह शत्रुओं से कष्ट पाता है।

द्वादश भाव स्थित एकादशेश के फल

(1) यदि किसी जातक के **जन्म लग्न में एकादश भाव का स्वामी** स्थित हो तो वह जातक दीर्घ जीवन से युक्त नहीं होता है। यह जातक वीर, दानी, लोगों का प्रिय, सुन्दर होता है। इसको तृष्णा-दोष से मरने का योग होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सात्विक, धनी और सबको समान दृष्टि से स्नेह करता है या आदर देता है। यह कवि, वक्ता तथा लोक में मान्यता प्राप्त करके प्रसिद्ध होता है। इसको लाभ की स्थिति निरन्तर बनी रहती है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म लग्न से **दूसरे भाव में एकादश** हो तो वह स्वल्पाहार करने वाला, जो सुख प्राप्त है, उसी को भोगकर सन्तुष्ट होने वाला होता है। यह जातक एकादशेश की विपरीत स्थिति होने पर रोगी हो सकता है, परन्तु अनुकूल होने पर यह धनवान होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सब तरह की सम्पत्ति से युक्त होता है। इसके भोग-विलास में कभी कमी नहीं होती। यह अपने सब कार्यों को सिद्ध करने वाला होता है। इसको दान करने व परोपकार से सुख मिलता है। इसके भाव धार्मिक होते हैं।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **आयेश तृतीय भाव** में हो तो वह स्त्री और बन्धु-बान्धवों का पालन करने वाला, उत्तम बन्धुओं का सुख प्राप्त करता है और स्वस्थ तथा सुन्दर होता है। यह शत्रुओं को परास्त करता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने कार्यों में पूरी तरह दक्ष होता है, धनवान और अपने भाई की तरफ से सुखी होता है। यह शूल रोग से पीड़ित तथा व्याधिग्रस्त होने से आर्थिक हानि भी उठाता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **आयेश चतुर्थ भाव** में हो तो वह व्यक्ति दीर्घायु होता है, पिता भक्त होता है। एक समय में एक ही कार्य में संलग्न रहने वाला, अपने

धर्माचरण का अनुगामी और लाभ प्राप्त करने वाला होता है। जातकाभरण के अनुसार जातक मातृकुल से धन प्राप्त करता है। इसकी प्रवृत्ति धार्मिक होती है तथा यह तीर्थयात्रा का आनन्द लेता है। इसके पास गृह तथा भूमि होती है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **आयेश पंचम स्थान** में हो तो वह व्यक्ति अपने पिता के तुल्य रूप-गुणों से सम्पन्न होता है। पिता से इस जातक का प्रेम होता है तो यह थोड़ी आयु को स्वर्गलोक चला जाता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अ पुत्रों के सुख से सुखी होता है। वह विद्वान और सुशील होता है। इस जातक की स्वयं प्रवृत्ति भी सुन्दर और धार्मिक होती है।

(6) यदि किसी जातक की जन्म समय में **आयेश छठे स्थान** में होता है तो व दीर्घ रोगी होता है, शत्रुओं से युक्त होता है तथा इसकी मृत्यु परदेश में किसी चोर द्वारा हो सकती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक रोगी होता है। इसकी बुद्धि सात्वि नहीं होती, यह कुटिल विचारों से पूर्ण रहता है। अपने देश से दूर रहकर जीविका प्रा करता है तथा शत्रुओं से दु:खी रहता है।

(7) यदि किसी जातक की जन्म स्थिति में कुण्डली के **सातवें भाव में आयेश** तो वह तेजस्वी, सुशील, सम्पत्तिवान और उच्चाधिकारी होता है। इसकी आयु लम्बी औ यह एक ही पत्नी से अनुराग करने वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जात अपनी ससुराल से लाभान्वित होता है, इसे वहाँ से धन प्राप्त होता है। यह उदार, गुणवा तथा स्त्री के वशीभूत होता है। यह कामी और वासनानुरागी होता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में कुण्डली के **आठवें भाव में आये** होता है तो वह रोगी और कम उम्र प्राप्त करता है। यह जातक अपने ऊपर एक भार- अनुभव करता है तथा जीता हुआ भी यह अपने आपको मृतक के समान समझता है **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है इसकी आयु लम्बी होती है और यह दु:खी रहता है। इस व्यक्ति के सामने ही इसकी पत की मृत्यु होती है और यह कष्ट पाता है।

(9) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **आयेश नवम स्थान** में होता है तो व सुकृत करने वाला होता है। यह कीर्तिवान, लोक में ख्याति पाने वाला और अनेक शास्त्रों ज्ञाता होता है। यह धर्मात्मा, देव और गुरु का भक्त होता है। **जातकाभरण** के अनुसार य जातक भाग्य के सुन्दर-सुन्दर फूलों से अपनी झोली भरता रहता है, यह अपनी वाणी से सब मोह लेता है, राज्य में आदर प्राप्त करता है तथा यह धन से और ऐश्वर्य से सम्पन्न होता है।

(10) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **आयेश दशम स्थान** में होता है वह माता का भक्त होता है, अच्छे-अच्छे कार्यों को करने वाला होकर भी पिता से द्वेष रख वाला होता है। इसकी आयु लम्बी होती है और यह धनवान होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक राजा से सदैव सम्मानित होता है, अपने गुणों से चारों ओर विख्यात हो है, अपने धर्म में दृढ़ और सत्य का पालन करने वाला, बुद्धिमान तथा जितेन्द्रिय होता है।

(11) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **आयेश आय स्थान (एकादश भाव)** में होता है तो वह दीर्घायु होता है। यह पुत्र-पौत्रों से युक्त बड़े परिवार का स्वामी होता है। यह सुन्दर कर्म करके लोक में यशस्वी होता है, लोक में प्रधान सुन्दर और विख्यात होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सभी कर्मों में लाभ प्राप्त करता है। इसे हर तरह से सुख प्राप्त होता है। यह अपने पाण्डित्य से पूजित और अपनी सुख वृद्धि करने वाला होता है। इसकी वाणी सुन्दर और शरीर भी दर्शनीय होता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **आयेश व्यय (बारहवें) स्थान** में होता है तो वह सुख भोगता है। यह स्थिर होता है तो वह सुख भोगता है। यह स्थिर चित्त, मानी, दानी और यशस्वी होता है। इसे रोग होने की भी सम्भावना होती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक म्लेच्छों का साथ देता है, इसका व्यय सद्कार्यों में होता है। इसकी स्त्रियों में बहुत अनुरक्ति होती है और यह उन पर भी धन व्यय करता है। अनेक यत्नों द्वारा धन प्राप्त करता है।

द्वादश भावस्थ द्वादशेश के फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **बारहवें भाव का स्वामी व्ययेश लग्न** में हो तो वह जातक विदेश में रहता है। सुन्दर वाणी से युक्त वक्ता, मनस्वी, सुन्दर व स्वस्थ होता है। नीच लोगों के साथ रहने से दोषी ठहराया जाता है। यह जातक या तो आजन्म अविवाहित रहता है या नपुंसक होने के कारण विवाहित स्त्री का भी भोग नहीं कर पाता। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक धन-विद्या से हीन होता है। इसे व्यर्थ ही व्यय करने की बुरी आदत होती है। यह दुर्बल तथा कफ रोगी होता है।

(2) यदि किसी जातक का **व्ययेश दूसरे भाव** में स्थित हो तो वह जातक कटुवचन बोलने वाला, कृपण और अपने धन को बहुत सम्हालकर रखने पर भी चोर से भय-संकुल रहता है। राजकोप की भी सम्भावना होती है। इसे अग्नि के भय से मृत्यु होती है। जातकाभरण के अनुसार यह जातक सब कार्यों में बेतादाद खर्च करने वाला होता है। यह धर्म में मन लगाने वाला, धार्मिक कार्यों में रत, प्रिय वाणी बोलने वाला, गुणी तथा हर प्रकार से सुखी होता है। इसे परिवार सुख, परिवारीजनों पर व्यय करने पर निरन्तर दु:ख प्राप्त होता है।

(3) यदि जन्म समय में किसी जातक के **बारहवें भाव का स्वामी तीसरे स्थान** में हो तो वह जातक बन्धुहीन होता है, इसके पास धन की भी कमी नहीं होती, इसके सहोदर कम होते हैं और यह कुटुम्बियों से दूर रहता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने ही शरीर का पोषण करने वाला होता है। इसे अपने भाइयों या बन्धु-बान्धवों का सुख प्राप्त नहीं होता है। इसे अन्य लोगों से द्वेष होता है।

(4) यदि जन्म समय में जातक के **बारहवें भाव का स्वामी चौथे स्थान** में हो तो वह जातक कृपण, रोगी, सुकर्मा तथा पुत्र के द्वारा मरण प्राप्त करने वाला होता है। यह

जातक सदा सुखी रहने वाला होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपनी माता का सुख प्राप्त नहीं कर सकता है। यह भाग्य का बली नहीं होता, इसके घर में उन्नति नहीं होती तथा दिन-दिन धन-सम्पत्ति, गृह-सवारी आदि क्षय होते हैं।

(5) यदि जन्म समय में किसी जातक के **बारहवें भाव का स्वामी पंचम भाव** में होता है तो वह जातक सन्तान युक्त कठिनाई से ही होता है, पिता के धन को भोगने वाला सामर्थ्य से हीन होता है। **जातकाभरण** के अनुसार इस जातक को सन्तान कष्ट होता है। इसे विद्या भी प्राप्त नहीं होती है। यह जातक मूढ़ स्वभाव का होता है, अधिकतर इसका व्यय सन्तान के ऊपर होता है तथा यह तीर्थयात्राएँ भी करता है।

(6) यदि जन्म समय में किसी जातक के **बारहवें भाव का स्वामी छठे स्थान** में होता है तो वह कृपण, आँखों का रोगी या नेत्रहीन भी हो सकता है, अन्यथा यह जातक बालारिष्ट प्राप्त करता है, अर्थात् इसकी जीवन लीला बाल अवस्था में ही समाप्त हो जाती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने ही स्वजनों का शत्रु होता है, क्रोधी और पापी होता है। यह अपने आप ही अपने कार्यों को बिगाड़ लेने वाला दुःखी होता है। इसके सम्बन्ध परस्त्रियों से होते हैं।

(7) यदि जन्म समय में किसी जातक की कुण्डली में **व्ययेश सातवें स्थान** में होता है तो यह जातक दुष्ट वचन बोलने वाला दुश्चरित्र होता है। इसके वचन चतुराई से भरे होते हैं और यह गूढ़ कार्यों को करता है। इसकी मृत्यु अपनी स्त्री के द्वारा या वेश्या द्वारा होती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक विषय भोगों पर अत्यधिक व्यय करता है, परन्तु इसे स्त्रियों से या अपनी पत्नी से सुख कम ही प्राप्त होता है। यह बल तथा विद्या से भी हीन होता है।

(8) जिस जातक के जन्म समय में **व्ययेश आठवें स्थान** में होता है, वह अठ-पानी रोग से पीड़ित होता है, यह उद्योगहीन होता है तथा साधारण रूप से लोग इससे द्वेष मानते हैं, यह भी उनसे वैमनस्य मानता है। यह जातक धीरे-धीरे बहुत धन भी संग्रह कर लेता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक सदैव लाभजनक स्थिति में होता है और इसे लाभ होता रहता है। यह प्रिय वाणी बोलकर लोगों को अपने प्रति आकर्षित करता है और सम्मान पाता है। इसकी आयु मध्यम होती है तथा यह सर्वगुण भूषित व सुन्दर व्यवहार वाला होता है।

(9) जिस जातक के जन्म समय में **व्ययेश नवम भाव** में होता है, वह तीर्थों का प्रेमी होता है। उसे तीर्थाटन करने की ललचाहट लगी ही रहती है और यह अपने धन का व्यय धार्मिक कार्यों में करता है। यह दानादिकर्म करके सुख पाता है। इसका धन वैसे भी बहुत खर्च हो जाता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक गुरुजनों के द्वेषी, ब्राह्मणों और देवताओं का निन्दक, उनका अनादर करने वाला होता है और यह अपने ही स्वार्थ साधन में केन्द्रित होने से सम्मान नहीं पाता।

(10) जिस जातक के जन्म समय में उसकी कुण्डली में **व्ययेश दशम स्थान**

में दर्शाती है, वह अपनी स्त्री को बहुत चाहता है। उसके जीवन को पराई स्त्रियाँ बहुत प्रभावित करना चाहती हैं, परन्तु यह उनसे कभी प्रभावित न होकर उनसे विमुख ही रहता है। इसका हृदय पवित्र होता है, इसके सुधर्मा पुत्र होते हैं। यह धन संग्रह करने में ही परम सुख मानता है। इसे अपनी माता की ओर से व्यथा होती है, क्योंकि वह कड़वे वचन बोलने वाली होती है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक राज्य के कारण बहुत व्यय भार उठाता है। पिता हेतु भी इसे अपने धन की हानि उठानी होती है। इसको पिता और राज्य दोनों तरफ से सुख नाममात्र का होता है। यह जातक प्रत्येक कार्यों को करने में परम उत्साही नहीं होता और यह बाधाओं के कारण शंकित रहता है।

(11) जिस जातक के जन्म समय **व्ययेश आय स्थान** में होता है, वह जातक धनवान होता है। उसकी आयु दीर्घ होती है और वह सुकर्म करने वाला उत्तम स्थान में रहता है। इसके व्यवहार में कोई अनुचित बात नहीं होती, इसका आचरण सत्य और सबकी भलाई करने वाला होता है। यह दानी, दूसरों का उपकार करने वाला और लोक में विख्यात होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक अपने कार्यों को बिना विघ्न-बाधाओं के पूरा नहीं कर सकता। इसके लाभ के कार्यों में बाधा ही पड़ती है और यह कठिनाई से अपने कार्य साधन करके लाभ प्राप्त करता है। यह दूसरे के धन से, जो रखा हुआ होता है, इसे प्राप्त होता है, धनी हो जाता है।

(12) जिस जातक के जन्म समय में **व्ययेश व्यय भाव** में होता है, वह सम्पत्तिवान होता है, उसके पास चल-अचल सम्पत्ति का अभाव नहीं होता। वह अपने निवास स्थान में सुखी, धन का संग्रह करने वाला तथा पशुओं का संग्रह करता है। इसका जीवन अधिक लम्बा नहीं होता है, यदि दीर्घायु होता है तो ग्राम का प्रधान होता है। **जातकाभरण** के अनुसार यह जातक लोक में आदर प्राप्त नहीं करता है। यह लोक का द्वेषी होता है। यह शरीर-सुख से हीन होता है तथा अपने ही क्रोध से अपने कार्यों को बिगाड़ लेता है। यह अपव्यय करते रहने के कारण कष्ट उठाता है।

■

भावानुसार राशि-स्थिति का फल प्रतिपादन

प्रत्येक कुण्डली के बारह भावों के अलग-अलग राशियों के आधिपत्य होता है। यदि प्रथम भाव में मेष राशि होगी तो आगे के घरों में वृष, मिथुन, कर्कादि राशियों के क्रम से सभी राशियाँ होंगी। इसी प्रकार दूसरे भाव में मेष राशि होगी तो तीसरे में वृष, चौथे में मिथुनादि राशियाँ आगे के घरों में होंगी और लग्न में मीन राशि होगी। इसी प्रकार तीसरे भाव में मेष के होने पर चौथे भाव में वृष तथा पाँचवें में मिथुन राशि होगी। उससे आगे के घरों में क्रम से आगे की राशियाँ होंगी। इस प्रकार जो भी राशियाँ प्रत्येक भाव में होती हैं, वह उस भाव के द्वारा द्योतक फल पर पूरा-पूरा प्रभाव डालती हैं, क्योंकि राशि ही प्रत्येक भाव की भूमि होती है, उसी पर ग्रहों तथा अन्य बलाबल का महल बनता है, अतः कौन-कौन-सी राशि किस-किस भाव में होने से क्या फल देती है, यहाँ इसी पर विचार करेंगे—

प्रथम भाव में राशि स्थिति फल *पृष्ठ 42* पर दिये जन्म लग्न फल के अनुसार समझें।

द्वितीय भाव में राशि स्थिति अनुसार फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **द्वितीय भाव में मेष राशि** हो तो जातक अनेक प्रकार के धर्म कार्यों को करता है तथा धनोपार्जन करने को छल-प्रपंच का सहारा नहीं लेता है। इस जातक के पुत्र भी उसी के अनुसार धर्मात्मा और नीतिवान, धनी और वाहनों से युक्त पंडित होते हैं।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दूसरे भाव में वृष राशि** हो तो वह जातक कृषि कार्य से धन लाभ करता है। उसको गाय-भैंस आदि चौपायों से भी लाभ होता है। इस जातक के पास स्वर्ण तथा रत्नों का भी अभाव नहीं होता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **धन भाव में मिथुन राशि** होती है तो वह स्त्रियों की कृपा और स्नेह से स्त्रियों के सहयोग और सहायता से धन लाभ करता है। यह जातक स्वर्ण और चाँदी को प्राप्त करता है तथा अच्छे-अच्छे वाहनों पर आरूढ़ होता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **धन भाव में कर्क राशि** होती है तो वह वृक्षों द्वारा जो कुछ भी देय होता है, जैसे फल फूल, लकड़ी, छाल आदि, उससे धन लाभ करता है। अपने द्वारा उपार्जित धन से भी यह जातक अपने मित्रों तथा अन्य सुहृदजनों के साथ आनन्द करता है और उसका सुख उसके पुत्र भी प्राप्त करते हैं। इस जातक को जल से भय होता है।

(5) जिस जातक के जन्म समय में **दूसरे भाव में सिंह राशि** होती है, उसे वन प्रान्त से, वस्तुओं से, वन के जीव-जन्तुओं से तथा अपने पराक्रम द्वारा धन प्राप्त होता है। यह धन वह सबके उपकारार्थ व्यय करता है।

(6) जिस जातक के जन्म समय में **दूसरे भाव में कन्या राशि** होती है, उसको राजा से धन लाभ होता है। वह भूमि, मोती, रत्न, वाहनादि राज्य में प्रभावशाली या राजा का प्रिय व्यक्ति होने के कारण प्राप्त करता है।

(7) जिस जातक के जन्म समय में **धन भाव में तुला राशि** होती है, वह बहुत पुण्यात्मा होता है और नीति व धर्म से युक्त होकर पाषाण तथा मृतिका और इन्हीं के पदार्थों के व्यापार और कार्य से प्रचुर धन प्राप्त करता है।

(8) जिस जातक के जन्म काल में **धन भाव में वृश्चिक राशि** से युक्त होता है, वह अपने धर्म में दृढ़ रहता है, स्त्रियों से प्रेम करता है, विलासी और सुरतप्रिय होता है, यह हास-विलास युक्त वाणी से सबको प्रसन्न करता है। ब्राह्मणों का भक्त होता है।

(9) जिस जातक के जन्म काल में **धन भाव में धनु राशि** का क्षेत्र होता है, वह ऐसे कार्यों द्वारा धन लाभ करता है, जो दीर्घकालिक जमाव रखे रहते हों, जैसे लम्बे समय से स्थित दुकान, कोई प्रतिष्ठान या कार्यालय या कोई फैक्टरी या उद्योग संगठन। यह जातक अनेक प्रकार के स्थायी धन को प्राप्त करके धर्म कार्यों में व्यय करता है।

(10) जिस जातक के जन्म काल में **मकर राशि धन भाव** में होती है, वह व्यक्ति अनेक प्रकार के प्रपञ्चों द्वारा, राज्य सेवा से, कृषि से और देश-विदेश की यात्राओं से धन प्राप्त करता है।

(11) जिस जातक के जन्म समय में **कुम्भ राशि दूसरे भाव** में होती है, वह फल-फूल और जल से उत्पन्न वस्तुओं से धन लाभ करता रहता है, यह जातक साधुओं का सेवक तथा उन्हीं की तृप्ति करके स्वयं भी तृप्त होता है तथा परोपकारी होता है।

(12) जिस जातक के जन्म समय में **मीन राशि दूसरे भाव** में होती है, वह माता-पिता द्वारा उपार्जित धन का भोग करता है। वह मनुष्य बुद्धि, विद्या, उपवास, व्रतों से सर्वत्र मान्य होता है तथा धन प्राप्त करता है। अपनी विद्या के प्रभाव से यह निधि खोज निकलने को भी उद्यत होता है।

तृतीय भाव स्थित राशियों के फल

(1) यदि किसी जातक जन्म समय में **तीसरे भाव में मेष राशि** हो तो वह परोपकारी, धार्मिक ग्रन्थों का श्रवण करने वाला, पवित्र हृदय, परोपकार और अनेक विद्याओं का ज्ञाता, राज्य में भी मान्य और प्रतिष्ठित होता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म काल में **तीसरे भाव में वृष राशि** हो तो वह राजाओं का मित्र होता है, इसका प्रताप बहुत दूर तक फैला होता है। यह अपने यश से जनता को अभिभूत करने वाला, दानी, पण्डित और कवि होता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म काल में **तीसरे भाव में मिथुन राशि** होती है तो वह उत्तम वाहनों का स्वामी होता है, स्त्रियाँ उसे प्रेम करती हैं। सत्य बोलने वाला, उदार, अपने कुल में भूषण और लोक में मान्य होता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **तीसरे भाव में कर्क राशि** होती है तो वह व्यापारियों से मित्रता प्राप्त करने वाला, खेती करके धनी, धर्माचरण से सभ्य और प्रतिष्ठित विनम्र लोगों का प्रिय होता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **तीसरे भाव में सिंह राशि** हो तो वह ... और पराक्रमी होता है। उसका उत्साह अद्भुत होता है। उसके मित्र अच्छे नहीं होते हैं, ... धन का लोभी, हिंसा करने वाला, कठोर वाणी से कष्ट देने वाला तथा गर्व से युक्त ... कथाओं का श्रवण करने वाला होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **तीसरे भाव में कन्या राशि** होती है तो वह शास्त्रों का अभ्यास करने वाला, सुशील और सद्व्यवहारी विनम्र होता है। इसके अनेकों अच्छे मित्र होते हैं और यह उनके सहयोग से धन का संग्रह करता है। इसे ब्राह्मणों में श्रद्धा होती है। देवताओं का पूजन करने वाला यह जातक गुरुजनों की भी सेवा करता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **तीसरे भाव में तुला राशि** हो तो वह निम्न श्रेणी के दुखःदायी लोगों से मैत्री करता है। यह छोटे बच्चों से भी अधिक चंचल होता है, यह उन्हीं की तरह चमत्कारी कथाओं में अनुरक्त रहता है तथा अपने लड़के से भी छोटे बच्चे जैसी बातें करता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **तीसरे भाव में वृश्चिक राशि** हो तो वह अपने प्रति किये गए उपकार को अस्वीकार करने वाला, अत्यन्त साहसी, झगड़ालू, पापियों तथा दरिद्रों का मित्र, बुरे आचार वालों के साथ रहने पर सुखी और अव्यवस्थित जीवन बिताने वाला होता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **तीसरे भाव में धनु राशि** होती है तो वह राज्य में उच्च पदारूढ़ राजमंत्री, वीर, राजाओं के मध्य बैठने वाला होता है। इसकी वाणी शुभ और प्रिय होती है। यह धर्माचरण करने वाला उदार, सदा प्रसन्न, दया से युक्त शत्रुओं को पराजित करने वाला होता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **तीसरे भाव में मकर राशि** हो तो वह सदा प्रसन्न रहकर दूसरों को भी प्रसन्न करने की चेष्टा करता है। यह अत्यन्त सौम्य, ... स्थिर कार्यों को करके लाभ प्राप्त करने वाला, अपने प्रयत्नों में सफल पुत्र वाला, देवताओं को पूजने वाला, मित्रों से स्नेह करने वाला और गुरु की सेवा में तत्पर, माता-पिता का भक्त, धनवान तथा बहुत विद्वान पंडित होता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **तीसरे भाव में कुम्भ राशि** होती है तो वह लोक में प्रकाशित, यशस्वी, क्षमा रूप उदार व्यक्ति होता है। यह महान व्रती, ... संकल्प को पूरा करने वाला, सत्याचरण पर कष्टों में दृढ़ रहने वाला, संगीत, गीतकाव्य ...

वैरी-जन से इसको आदर देने वाला तथा अपने सत्य स्वभाव तथा किसी से घृणा न करने के कारण दुष्टों को भी सहृदयता देता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में तीसरे भाव में मीन राशि होती है तो वह जातक धनवान, पुत्रों से युक्त, अपने कार्यों में सफल, उनमें उत्साहपूर्वक लगे रहने वाला, पुण्यात्मा, अतिथियों की सेवा करके लोक में विख्यात होता है।

सुख (चतुर्थ) भाव में राशियों के फल

(1) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **चौथे भाव में मेष राशि** हो तो वह भोगी, विलासी अनेक प्रकार के भोगों को भोगने वाला, अन्नपानादि भोगों के अतिरिक्त विलासिनी स्त्रियों का प्रिय, अपने बाहुबल से उपार्जित धन से सुख प्राप्त करता हुआ धनी होता है। इसे चतुष्पदों से भी बहुत लाभ होता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चौथे भाव में वृष राशि** हो तो वह श्रीमान्य लोगों से, विविध प्रकार से सुख लाभ करता है। इसे अनपेक्षित स्थितियों में भी सम्मान तथा सुख मिलता है, इसके कष्ट अपने आप छूट जाते हैं। यह अपने पराक्रम से राज्य में बहुत मान्य होता है तथा अनेक प्रकार के आचार नियम पालन करते रहने से भी इसे सुख प्राप्त होता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म काल में **चतुर्थ भाव में मिथुन राशि** हो तो वह स्त्रियों का प्रिय होता है, इसे जल विहार में आनन्द आता है, बसन्त आदि आनन्ददायिनी ऋतुओं में यह जातक वन भ्रमणादि करके रसोपभोग करता है। इसे अलंकार प्रिय होते हैं। यह सुहासनी मधुर वाणी बोलने वाली कामिनियों के संग से सुखी होता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म काल में **चतुर्थ भाव में कर्क राशि** हो तो वह कुलीन, सबको प्रिय लगने वाला भाग्यवान और विनम्रता से पूर्ण होता है। यह जातक स्त्रियों का भरपूर सुख प्राप्त करता है, सुन्दर सुहासवाली कोमल विलासिनी स्त्रियाँ इसे घेरे रहती हैं। इसमें सद्गुणों का भण्डार होता है, विद्या से भूषित और सर्वत्र सम्मान पाने वाला होता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चौथे भाव में सिंह राशि** हो तो वह क्रोध रखने के कारण पूर्ण सुख प्राप्त नहीं करता। यह अत्यन्त क्रोध करता है। यह अपने गर्व और अहंकार के कारण आडम्बरपूर्ण ढंग से सबको प्रभावित करता है, अपने आपको बहुत ऊँचा मानता है। इसको कन्या सन्तान अधिक होती है तथा यह दरिद्रता से युक्त दुःखी होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चौथे भाव में कन्या राशि** होती है तो वह धन प्राप्त करने के लिए सत्संग या सुसंग का विचार नहीं करता, वह कुमित्रों के साथ रहता है। यह पराई निन्दा तथा इधर की उधर लगाने वाला, तान्त्रिक क्रियाओं को करके मारण, मोहनादि के लिए साधनाओं को करने वाला तथा अवसर होने पर चोरी से भी धन संग्रह करने में पीछे नहीं हटता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चौथे भाव में तुला राशि** का स्थान होता है तो वह सरल स्वभाव का व्यक्ति होता है। साधारण रूप से अपना जीवनयापन करके, सत्कार्यों में तल्लीन रहता है। इसमें विनम्रता, शील और व्यावहारिक माधुर्य का जरा भी अभाव नहीं होता है। यह शुभ कर्मों से लोक में पूज्य व श्रद्धा का पात्र होता है। यह विद्यावान तथा धनवान होता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चौथे भाव में वृश्चिक राशि** होती है तो वह विपत्तियों से युक्त होकर भी धैर्यवान होता है। यह जातक तीक्ष्ण व प्रखर स्वभाव का होता है, इसे अपने मन में दूसरों से सहज-सा अलगाव होता है, कभी-कभी कापुरुषता इसे घेर लेती है और यह अनेक लोगों की सेवा करता है, परन्तु यह अपने कार्यों में चतुर व दक्ष होता है तथा इसे कोई भी मतिभ्रम न होकर काम करने में लगन होती है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चौथे भाव में धनु राशि** होती है तो वह अपने साथ के लोगों से सुख प्राप्त करता है, इसे सब लोग अपने से श्रेष्ठ मानकर इसकी सेवा करते हैं। इससे सलाह लेते हैं। इसके पास उच्च प्रकार के घोड़े (वाहनादि) होते हैं। यह अपने ही द्वारा की गई व्यवस्था से और अपने सेवा कार्य से सुख पाता है।

(10) यदि जन्म समय में किसी जातक के **चतुर्थ भाव में मकर राशि** होती है तो वह मनुष्य अनेक प्रकार के विलास विभूषण प्राप्त करने में संलग्न रहता हुआ उन्हें प्राप्त करके सुख पाता है। इसे जल विहार करने में आनन्द आता है। उद्यान, वाटिका, तालाब आदि स्थान इस जातक के विहार स्थल होते हैं। इसे मित्रों के साथ आनन्द करना अच्छा लगता है। स्त्रियों के साथ सम्भोगरत रहने की इसकी इच्छा बहुत बलवती होती है।

(11) यदि जन्म समय में किसी जातक के **चतुर्थ भाव में कुम्भ राशि** हो तो वह प्रेमदाओं (मदोन्मत युवतियों) के सानिध्य से सुख प्राप्त करता है। उनसे इसे नाना प्रकार के खाद्य एव अन्य पदार्थों की प्राप्ति होती है। यह उनकी विलासवाणी और पारस्परिक क्रीड़ा विहार से सुख पाता है। निश्चय ही यह जातक धन प्राप्त करने के लिए उत्साहित बना रहता है, उद्यम करने में कठिनाई होने से धनार्जन में बाधा पड़ती है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **चौथे स्थान में मीन राशि** होती है तो वह बहुत सुखी होता है, उसे माता-पिता का निरन्तर सुख प्राप्त होता है, उनके उपार्जित धन का भोग करता है। यह जातक गम्भीरतापूर्वक अपने कार्यों को धीरे-धीरे करता है, उनको पूरा करने के लिए सदैव सचेष्ट रहता है और यह देवकृपा से अनेक प्रकार के धन को प्राप्त करता है।

पञ्चम भाव स्थित राशियों के फल

(1) यदि कोई जातक अपने जन्म समय में **पंचम भाव में मेष राशि** से विभूषित होता है तो उसे अन्य लोगों के साथ-साथ अपने पुत्रों का स्नेह व आदर प्राप्त रहता है। इसके पुत्र इसके सम्मान की रक्षा करते हैं। इसे अपने ज्ञान के कारण भी बहुत सम्मान प्राप्त होता

है। इसके अनन्तर भी यह विलास भाव से युक्त होकर सुरा-सुन्दरियों से निरत नहीं होता है, यह अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल भी कभी-कभी क्षुद्र व पाप कार्यों को करते हुए लाभ प्राप्त करने को उद्यत होता है।

(2) यदि कोई जातक अपने जन्म समय में **पाँचवे भाव में वृष राशि** से युक्त होता है तो वह सुन्दर सुलक्षणों से युक्त कन्या प्राप्त करता है। यह कन्या कला-संगीत में निपुण लावण्यवती और सबकी प्रिय होती है। इस कन्या को अपने पितृ व श्वसुर दोनों गृहों में आदर मिलता है। यह जातक के लिए सौभाग्यवान परन्तु अपने लिए व सन्तान हेतु कष्ट पाने वाली होती है।

(3) यदि किसी जातक के पाँचवें भाव में जन्म समय में **मिथुन राशि** होती है तो उसे सुन्दर, सुशील तथा गुणवान पुत्र प्राप्त होते हैं। इस जातक के पुत्र पंडित, ज्ञानी व विद्यावान होते हैं। यह स्वयं भी बहुत विद्वान और ज्ञानी होता है, इसके पुत्र आज्ञाकारी और इसके प्रति अनुकूल होते हैं और यह पर्याप्त बल से युक्त होते हैं।

(4) यदि किसी जातक के पाँचवें भाव में जन्म समय में **कर्क राशि** होती है तो वह अपने पुत्रों से सद्व्यवहारिक और ज्ञानी होने के कारण सुख प्राप्त करता है। इसके पुत्र यशस्वी, उदार, धनी, विनम्र और सुशील होते हैं।

(5) यदि किसी जातक के पाँचवे स्थान में जन्म समय में **सिंह राशि** होती है तो वह उत्साही व गर्वीले पुत्रों से युक्त होता है। यह पुत्र अपने क्रोध से कष्टदायक होते हैं। इनके नेत्र सुन्दर होते हैं, इन्हें माँसाहार से आनन्द प्राप्त होता है और इनके कन्या सन्तान अधिक होती हैं। यह लोग परदेश में वास करने वाले और आहार के लिए सदैव उतावले रहते हैं।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **पाँचवे भाव में कन्या राशि** होती है तो वह जातक अधिक कन्या सन्तान वाला होता है। इस जातक को पुत्रहीन होने से या अन्य प्रकार के पुत्र के हेतु दु:खी होना पड़ता है। इसकी कन्याएँ पतिव्रता होती हैं, अपने कार्यों में निपुण और निष्पाप रहकर पति सुख प्राप्त करती हैं। इन्हें आभूषण बहुत प्रिय होते हैं।

(7) यदि किसी जातक के जन्म काल में **तुला राशि पाँचवे भाव में होती है तो** वह व्यक्ति सुन्दर और सुशील पुत्रों वाला होता है। यह बहुत बुद्धिमान और स्वरूपवान होते हैं। इनके नेत्र सुन्दर तथा अंग प्रत्यंग भी आकर्षक होतें हैं। अच्छे लक्षणों से युक्त यह जातक को सुख देने वाले होते हैं।

(8) यदि किसी जातक के जन्म काल में **पंचम भाव में वृश्चिक राशि** हो तो वह जातक अपने पुत्रों के यशस्वी होने से स्वयं भी भाग्यवान होता है। पूरी तरह सुशील और शुभ चरित्र के उसके पुत्र अपने धर्म में तत्पर रहते हुए कीर्ति प्राप्त करते हैं। इनके स्वभाव में उग्रता और स्त्रियों के प्रति आकर्षण होता है। उनके सानिध्य का सुख प्राप्त करने की इनकी कामना बलवती होती है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म काल में **पंचम भाव में धनु** राशि की स्थिति हो तो वह जातक सुन्दर-सुन्दर वाहनों से युक्त होता है। उसके पुत्र भी वैसे ही होते हैं। यह लोग

शस्त्रधारी तथा शत्रुओं को हराकर उनके धर्म को खण्डित करने वाले होते हैं। इन्हें राजा से आदर प्राप्त होता है। यह अनेक प्रकार के गुणों को धारण करके कीर्ति लाभ करते हैं।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **पंचम भाव में मकर राशि** होती है तो वह अपने पुत्रों के कारण दु:खी होता है। वह रूप से युक्त नहीं होते, कुरूप होते हैं। दुष्ट स्वभाव के कारण लोगों को पीड़ा देते हैं तथा इनका प्रभाव कुछ दूसरे ही प्रकार का होता है, जिसके कारण इन्हें अपयश प्राप्त होता है। इनके कारण जातक को लज्जित होना होता है।

(11) यदि कोई जातक अपने जन्म समय में **पाँचवे भाव में कुम्भ राशि** को प्राप्त करता है तो वह अपने पुत्रों के कारण सौभाग्यशाली होता है। यह लोग जातक को लोक में गौरव प्रदान करते हैं। फिर कार्यों को करने से इनकी प्रतिष्ठा समाज में होती है। इनका आचरण अच्छा तथा यह कष्ट को भी सहकर अपने सत्कार्यों को नहीं छोड़ते हैं। इनका धन तथा यश इन्हें तथा जातक को सुख देता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **पाँचवे स्थान में मीन राशि** होती है तो वह व्यक्ति सुन्दर पुत्रों का पिता होता है। यह पुत्र इस जातक के आज्ञाकारी, विनम्र और कुल को यश प्रदान करने वाले होते हैं। यह जातक इनके सत्कर्मों से सुखी व यश प्राप्त करता है।

षष्ठ भाव स्थित राशियों के फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **छठे भाव में मेष राशि** होती है तो वह व्यक्ति अकारण ही लोगों से शत्रुता रखने वाला होता है। यह अपने उग्र स्वभाव के कारण स्वयं ही कष्ट पाता है और दूसरों को भी कष्ट देता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **छठे भाव में वृष राशि** होती है तो वह व्यक्ति अपनी ही सन्तान से कष्ट पाता है, उनमें तथा अपने कुल की स्त्रियों में उसे विश्वास नहीं होता, इसी कारण अपने ही बन्धु वर्ग में उसकी शत्रुता होती है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **छठे भाव में मिथुन राशि** होती है तो वह अपनी स्त्री से भी शत्रुता प्राप्त करता है। दुष्टों से, व्यापारियों से तथा ऐसे लोगों से जो नीच कार्यों में रत रहते हैं। इस जातक को सदैव अशान्ति और कष्ट प्राप्त होता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **छठे भाव में कर्क राशि** होती है तो वह अपने पुत्रों के कारण राजकोष का भागी होता है। इस जातक की ब्राह्मण तथा अन्य प्रतिष्ठित और धनी प्रभुता सम्पन्न लोगों से अन्य लोगों के कारण शत्रुता होती है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय पर **सिंह राशि रिपु भाव (षष्ठम)** में हो तो वह अपने पुत्रों तथा बन्धुओं से शत्रुता प्राप्त करता है। यह जातक उनके कारण दु:खी रहता है, परन्तु अपने दुष्कर्मों के कारण स्वयं ही ठीक भाव से उनके बैर को और बढ़ाता है, क्योंकि इसका साथ पराई स्त्रियों का होता है तथा यह उनके संग से अपने धन को नष्ट कर देता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **कन्या राशि षष्ठ भाव** में हो तो उसकी किसी से शत्रुता नहीं होती, वह सबको समभाव से ही मानता है और सबसे स्नेह करता है, किन्तु एक काम-दोष के कारण अपने धन का नाश यह व्यक्ति दुराचारिणी स्त्रियों और वेश्याओं पर कर देता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **तुला राशि षष्ठ भाव** में हो तो वह व्यक्ति अपने उपार्जित और संचित धन को पृथ्वी में दबाकर रखता है या साधू और सज्जन व्यक्तियों के ऊपर व्यय करता है। इसके धन का इस तरह से व्यय करना या छिपाकर रखना घर के लोगों को पसन्द नहीं होता, अत: उनसे इसकी नहीं बनती।

(8) यदि किसी व्यक्ति के जन्म समय में **वृश्चिक राशि षष्ठ भाव** में होती है तो वह जातक परनिन्दकों, पराई चुगली खाने वालों से, सरीसृप, बिच्छुओं आदि पीड़ा देने वाले जीवों से भयभीत रहता है। इसे चोरों से भी भय रहता है। इसको विलासी व धनी लोगों से बैर-भाव बना रहता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **धनु राशि षष्ठ भाव** में होती है तो इस व्यक्ति का शस्त्र धारण करने वालों से बैर-भाव रहता है। जो व्यक्ति राग युक्त मोह के कारण अन्धे हो रहे हैं, वह भी इसे अच्छे नहीं लगते। इसको धनी, घोड़े-हाथी वाहनों के स्वामी तथा पुण्यात्माओं से भी कष्ट होता है और उनसे द्वेष रखता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **मकर राशि षष्ठ भाव** में होती है तो धन सम्पदा के कारण अपने जनों से इसकी शत्रुता हो जाती है। इसके अतिरिक्त यह साधुजनों की सहायता करने व मित्रों का उपकार करते रहने से भी अपने लोगों को नहीं सुहाता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **कुम्भ राशि षष्ठ भाव** में हो तो वह व्यक्ति धनी मानी राजा के समान लोगों से मेल मानता है। राजा से, बापी-तड़ाग जो पानी से पूरित होते हैं, जल में रहने वाले जन्तुओं से हानि उठाता है। अत: इनसे वह दूर रहता है।

(12) यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में **षष्ठम स्थान पर मीन राशि** हो तो वह अपने पुत्रादि, बन्धु व हितैषियों से, स्त्री से स्वार्थ सिद्धि हेतु आड़े आने पर शत्रुता प्राप्त करता है।

सप्तम भाव स्थित राशियों के फल

(1) यदि जन्म समय में किसी जातक के जन्म चक्र में **सातवें भाव में मेष राशि** हो तो उसकी स्त्री अच्छे स्वभाव की नहीं होती है। वह धन पिपासु होती है और उसें न दया होती है न सहृदयता। वह क्रूर, दुष्टा, पापिनी और कठोर होती है। वह अनाचार में मन लगाने वाली अशोभनीय कार्य करती है।

(2) यदि जन्म समय में किसी जातक की कुण्डली में **सातवें भाव में वृष राशि** होती है तो वह सुन्दर स्त्री का पति होता है। इस मनोहर नारी की मुस्कान लुभित करने

वाली, वाणी मीठे वाक्यों वाली और यह घर के काम-काज में चतुर होती है। इसका स्वभाव शान्त और सबको सुख देने वाला होता है। यह ब्राह्मण, देवताओं की भक्त और अतिथियों को पूजा करती है।

(3) यदि जन्म समय में किसी जातक की कुण्डली में **सप्तम भाव में मिथुन राशि** हो तो वह धनवान स्त्री का पति होता है। यह रूप लक्ष्मी, सर्वगुणों से सम्पन्न, सदाचारिणी, कोमल स्वभाव माननीय होती है।

(4) यदि जन्म समय में किसी जातक के कुण्डली चक्र में **सप्तम भाव में कर्क राशि** होती है तो वह मन को हरण करने वाली स्त्री का पति होता है। रूप से समस्त घर को प्रकाशित करने वाली यह स्त्री बहुत अच्छे गुणों से युक्त होती है। यह सदैव प्रसन्न रहती है, झगड़े से डरने वाली होती है तथा अपने पति के (जातक के) अनुकूल होकर उसे प्रसन्न रखती है।

(5) यदि जन्म काल में किसी जातक के कुण्डली चक्र में **सप्तम भाव सिंह राशि** से युक्त हो तो वह तीव्र स्वभाव वाली स्त्री का पति होता है। उसे अपने रूप पर व्यर्थ का गर्व होता है, अपने गुणों को गुणहीन होने पर भी श्रेष्ठ मानती है, श्रृंगार युक्त वेश को न धारण करके भी अपने को विशिष्ट आकर्षण से युक्त समझते हुए अभिमानिनी होती है। यह अन्यों के घर में रहने वाली, धन की तृष्णा से पूर्ण कृशगात्र की पतली स्त्री होती है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म काल में **सप्तम भाव में कन्या राशि** होती है तो वह अत्यन्त सुन्दरी स्त्री का पति होता है। इसका शरीर सौष्ठव दर्शनीय होता है। इसका सौभाग्य अखण्ड, भोग-सामग्री व विलास-सुख से युक्त होता है तथा यह प्रिय और सत्याचरण पर स्थिर रहने वाली व्यवहार कार्य में दक्ष होती है।

(7) जिस जातक के जन्म समय में **सप्तम भाव में तुला राशि** हो उसकी स्त्री अनेक प्रकार के गुणों से सम्पन्न और सौन्दर्य शालिनी होती है। वह पुण्य कार्यों में निमग्न रहकर अपने कुल का मान बढ़ाती है। यह धर्मपरायण, गुणी पुत्रों से युक्त और इतनी गम्भीर होती है कि अपने प्रति किए गए अपराध को भी पृथ्वी की तरह क्षमा कर देती है।

(8) जिस जातक के जन्म कुण्डली के **सप्तम भाव में वृश्चिक राशि** होती है, वह अपनी स्त्री के विविध कलाओं को ज्ञाता होने के कारण बहुत प्रसन्न रहता है, यह स्त्री जातक के कुल में सुख लाने वाली तो होती है, परन्तु हठी और विनय रहित भी होती है तथा यह अवसर के अनुसार स्वार्थ होने पर ही लोगों का सत्कार करती है। जातक को इसके कारण कष्ट भी उठाना पड़ता है।

(9) जिस जातक की जन्म कुण्डली के **सातवें भाव में धनु राशि** होती है, वह जातक दुष्ट स्वभाव वाली कुशील स्त्री का पति होता है। यह स्त्री लज्जा से रहित, दूसरे के दोषों को देखने में कुशल, कभी भी अपने को दोष युक्त न समझकर गुणवती मानने वाली होती है। यह द्वेषभाव से पूर्ण दम्भ और ईर्ष्या से जलने वाली होती है।

(10) जिस जातक की जन्म कुण्डली में सातवें भाव में मकर राशि होती है, वह अपनी स्त्री के दम्भी और अधर्म प्रकृति का होने के कारण सुखी नहीं रहता है। यह निर्ल्लज तथा लोभ में युक्त दुष्ट स्वभाव से सबको पीड़ा देने वाली होकर स्वयं भी दु:खी होती है।

(11) जिस जातक के जन्म कुण्डली में **सातवें भाव में कुम्भ राशि** होती है वह व्यक्ति सुन्दर व स्थिर स्वभाव की स्त्री का पति होता है। यह स्त्री स्वरूपवान और ब्राह्मण देवताओं तथा अतिथियों की भक्त होती है, इसमें सत्य और दया होती है तथा यह अपने सद्गुणों से सबको अपना बना लेती है।

(12) जिस जातक की जन्म कुण्डली में **सातवें भाव में मीन राशि** द्वारा पूरित किया जाता है, उसकी स्त्री बहुत विकारों से युक्त, जातक से प्रत्येक बात पर मतभेद करने वाली तथा धर्माचार के पालन में दम्भ से युक्त होती है। इसमें नम्रता नहीं होती और इसके पुत्र कुत्सित विचारों के होते हैं। उनके कारण जातक को कष्ट उठाना पड़ता है। इस जातक की स्त्री कठोर तथा धन की लोलुप और लोभी होती है।

अष्टम भाव स्थित राशियों के फल

(1) यदि जातक के जन्म समय में **अष्टम भाव में मेष राशि** हो तो वह रोग से युक्त, कष्ट पाने वाला, परदेश में रहता है। इस जातक को अपने जीवन में बीते हुए समय की याद आती है और अपने अतीत को जिसमें उसने सब प्रकार के आनन्द भोगे थे, याद कर वह मूर्च्छित-सा हो जाता है। अतः वह दु:खी होता है। इसके पास धन का अभाव नहीं होता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **अष्टम भाव में वृष राशि** होती है तो वह समय से पीड़ित होकर दु:खी होता है और असमय में मृत्यु को भी प्राप्त हो जाता है या दुष्टजनों के संसर्ग से, चौपायों द्वारा आघात पाने के कारण या अति खाने से उदर विकार होकर उसकी मृत्यु हो जाती है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **आठवें भाव में मिथुन राशि** होती है तो वह शत्रु के साथ से, लोभ के वशीभूत हो जाने से या किसी विषैले पदार्थ के सेवन करने पर या गुदा रोग से प्रमेहाक्रांत हो जाने से मृत्यु को प्राप्त होता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **आठवें भाव में कर्क राशि** होती है तो वह जल के कारण किसी नदी-तालाब आदि में डूबकर या जल में भीग जाने पर सर्दी से जकड़कर या किसी सरीसृपादि कीड़े के काट लेने पर या कहीं दूसरे देश में किसी मनुष्य द्वारा मारे जाने पर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **आठवें भाव में सिंह राशि** हो तो किसी वन्य जन्तु या किसी व्यक्ति के द्वारा वन प्रदेश में या चोर से या किसी चतुष्पद द्वारा आघात किए जाने पर किसी भी स्थान पर उसकी मृत्यु होती है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **आठवें भाव में कन्या राशि** हो तो वह

अपने हितैषियों की बातों को न सुनकर मनमानी करने से अधिक भोग-विलास के कारण या किसी स्त्री के हत्या के अपराध में या विषयुक्त भोजन करने से या अपने ही घर में किसी स्त्री के हेतु मृत्यु पाता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **अष्टम भाव में तुला राशि** हो तो वह व्यक्ति किसी मनुष्य के आघात या षड्यन्त्र से मृत्यु प्राप्त करता है। इस जातक की मृत्यु आधिक उपवास करने से रात्रि के समय हो जाती है या यह व्यक्ति शत्रु के कोप में पड़कर उसके द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है या शत्रु के प्रताप से संतृप्त होकर यह प्राणों को त्याग कर देता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **अष्टम भाव में वृश्चिक राशि** होती है तो वह व्यक्ति शोणित विकार से मृत्यु को प्राप्त करता है या इसको कोई सर्पादि काट लेता है तो मृत्यु हो जाती है अथवा अपने ही स्थान पर विष द्वारा इसका मरण होता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **अष्टम भाव में धनु राशि** होती है तो वह व्यक्ति शस्त्र के आघात से (शर या किसी नुकीले शस्त्र बल्लम आदि से छेदा जाकर) या गुप्तेन्द्रिय के रोग से या किसी चतुष्पद के सींग द्वारा कुचले जाने से या जल में डूब जाने पर मृत्यु को प्राप्त करता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **अष्टम भाव में मकर राशि** होती है तो वह व्यक्ति अत्यन्त मानी, दानी और शूर होता है। उसकी विद्वता के कारण सर्वत्र लोग उसका अभिनन्दन करते हैं। उसका शरीर, छाती विशाल होती है तथा अपने प्रताप से यह लोगों को ईर्ष्याग्नि में जलाता है। इसकी मृत्यु सहसा शरीर में उत्पन्न किसी विकार से युवावस्था में ही हो जाती है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **अष्टम भाव में कुम्भ राशि** होती है तो वह व्यक्ति अग्नि में जल मरता है, साथ में उसकी सम्पत्ति भी नष्ट हो जाती है या उसे अनेक प्रकार से शरीर में हुए क्षत मृत्यु प्रदान करते हैं या वायु विकार या अधिक श्रम से उत्पन्न किसी व्याधि से उसका शरीरान्त पराये घर में होता है।

(12) यदि किसी जातक के समय में **आठवें भाव में मीन राशि** होती है तो वह व्यक्ति अतिसार के रोग से स्वर्गस्थ होता है। यह पित्त ज्वर, जल या किसी खून के विकार से या शस्त्र के आघात से उसकी मृत्यु हो जाती है।

नवम भाव स्थित राशियों के फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **नवें भाव में मेष राषि** हो तो वह पशुओं के पालन-पोषण से, दानादि धर्म करके, उनके प्रति उदार होने से पुण्य प्राप्त करता है और उसके भाग्योदय में यह धर्म कारण भी बनता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **नवम भाव में वृष राशि** होती है तो वह व्यक्ति अपने द्वारा अर्जित धन द्वारा अनेक दान-धर्म करता है। तरह-तरह से अन्न दान, वस्त्र दान, स्वर्ण तथा आभूषण दान भी करता है। अनेक प्रकार से विचित्र-विचित्र प्रकार से विपुल धन का दान करते हुए अनेकों गौओं का दान करता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **नवम भाव में मिथुन राशि** होती है तो वह सदैव अपने सदाचार से एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। वह ब्राह्मणों को भोजन, अभ्यागतों की सेवा और दीन-दुखियों पर दया और उनके सुख के लिए अनेक प्रकार से धर्म करता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **नवें भाव में कर्क राशि** हो तो यह व्यक्ति विविध तरह के व्रत-उपवास करता है, तीर्थयात्राएँ करके सुखी होता है। इसके अतिरिक्त योगादि अभ्यास करता हुआ वन में तपस्या पर आरूढ़ होकर भगवान का भजन करता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **नवें भाव में सिंह राशि** हो तो वह व्यक्ति अपने धर्म के प्रति पूरी आस्था नहीं रखता और न धर्म को मुख्यता देता है। यह अन्य धर्मों में प्रेम रखता है और उन्हें भी मानकर अपने को स्वच्छन्द रूप से महत्व देने में लगा रहता है। यह बिना भावना के ही तीर्थों में घूमता है तथा इसमें विनम्रता या विनय भावना नहीं होती।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **नवें स्थान में कन्या राशि** हो तो वह व्यक्ति पाखण्डी होता है, उसकी स्त्री जो धर्म-कर्म करती है, उसी को मानने वाला होता है, अन्य स्त्री की प्रेरणा से भी वह धर्मादि कर्मों को करता रहता है, वह स्वयं में विश्वास नहीं करता है। वह भक्तिहीन होता है तथा अन्य मत को मानकर किसी विशेष धर्म के बन्धन भाव को स्वीकार नहीं करता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म काल में उसके जन्म चक्र में **नवें भाव में तुला राशि** होती है तो वह व्यक्ति अपने कुल क्रमागत धर्म का पालन करता है, देवताओं का पूजन करता है, ब्राह्मणों की दानादि से सेवा-सत्कार करता है और लोकानुरागी होकर जनता की सेवा करता है। यह बहुत श्रेष्ठ, अद्भुत व्यक्ति होता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **नवें भाव में वृश्चिक राशि** हो तो वह व्यक्ति पाखण्ड कर्मों को ही धर्म मानता है। उसके मन में धार्मिक कार्यों को करके प्रशंसित होने और लोक में वाहवाही लूटने की इच्छा विशेष होती है और वह प्रदर्शन का अवसर होने पर बिना भक्ति भावना के ही ब्राह्मणों और देवताओं का पूजन करता है। यह दूसरे लोगों को अपने धार्मिक कार्यों को करके अन्यथा रूप में पीड़ित भी करता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म काल में **नवें भाव में धनु राशि** के होने पर वह व्यक्ति ब्राह्मण और देवताओं का भक्त होता है। वह उनकी पूजा करता है। वह शास्त्र विहित धर्म-कर्म करता हुआ अपनी इच्छाओं की पूर्ति करता है। जो तीनों लोक में प्रसिद्ध धर्म है, उसका आचरण उसी के अनुसार करता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **नवें भाव में मकर राशि** होती है तो वह

व्यक्ति अधर्म का आश्रय लेता है। अपने प्रताप को बढ़ाने के प्रयत्न में ही रहकर उसे धर्म या अधर्म की चिन्ता नहीं होती, यदि धर्म करता भी है तो यह देखकर कि इसे करने से उसका प्रताप बढ़ेगा या नहीं। बाद में विडम्बना युक्त होने पर यह वास्तविकता को समझकर कुल धर्म का पालन करने से सुखी होता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में नवें भाव में कुम्भ राशि होती है तो वह जातक देवताओं की भक्ति करता है, बगीचा लगाता है, कुँए खुदवाता है, तालाब और धर्मशालाएँ, मन्दिर बनाता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में नवें भाव में मीन राशि होती है तो वह व्यक्ति लोक में विविध प्रकार से धार्मिक कार्यों को करता हुआ सज्जन लोगों की सेवा करता है। परोपकारार्थ दानादि कर्मों को करके सन्तुष्ट होता है, अपनी उदारता के लिए विख्यात होता है, तीर्थों का भ्रमण करता है, वहाँ पर बगीचे, तालाब व कुँए खुदवाता है।

दशम भाव स्थित राशियों के फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दसवें भाव में मेष राशि** हो तो वह जातक स्वच्छन्द कर्मों को करने वाला, विनयहीन होकर साधुजनों द्वारा निन्दा पाने योग्य कार्यों से सन्तुष्ट तथा चुगलखोरी करके आनन्दित होता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दसवें भाव में वृष राशि** हो तो वह जातक अपने उपार्जित धन को साधुजनों के उपकारार्थ खर्च करता है। यह व्यक्ति देवता, ब्राह्मणों का भक्त होता है, उनके सत्संग, ज्ञान गोष्ठियों में बैठकर प्रीतकर कार्यों को करता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दसवें भाव में मिथुन राशि** हो तो वह जातक गुरुजनों के आदेश का पालन करता है। लोगों को अच्छे लगने वाले, प्रीतिकर कर्म करता हुआ यश प्राप्त करता है तथा कृषि कर्म द्वारा धन लाभ करता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दसवें भाव में कर्क राशि** हो तो वह जातक कूप, तालाब, बगीचा आदि लगाता है तथा लोक के उपकारार्थ अन्य दूसरे काम करता है। इसके कर्म निष्पाप होते हैं।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दसवें भाव में सिंह राशि** हो तो वह व्यक्ति निन्दनीय कार्यों को स्वेच्छाचारितापूर्वक करता है। वह लोक निन्दा की उपेक्षा कर देता है। उसे हिंसात्मक कर्मों को करने में भी कोई हिचक नहीं होती। उसके कार्यों में अर्थ-अनर्थ का विचार नहीं होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म सयम में **दसवें भाव में कन्या राशि** हो तो वह व्यक्ति मूर्खों के समान कार्य करता है। यह स्त्री और राजा के यहाँ अपमान प्राप्त करता है इसका मन साहसहीन होता है और अपने कार्य के प्रति इसमें हीनता होती है। यह अल्प वीर्य और निर्धन होता है। स्त्रियाँ इसे अपने अनुगत जानकर इससे निन्दनीय सेवा लिया करती हैं।

(7) यदि कोई जातक अपने जन्म समय में **दसवें भाव में तुला राशि** प्राप्त करता है तो वह वाणिज्य-व्यापार कार्य करके प्रचुर धन प्राप्त करता है। यह अपने गुणों से दूसरों का प्रिय करता है और जिन्हें लाभ भी कराता है। यह धर्म और नीति के अनुसार धनोपार्जन करता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दसवें भाव में वृश्चिक राशि** होती है तो वह व्यक्ति शास्त्रों और लोक सम्मत कार्यों को करता हुआ धनार्जन करता है। वह देव, ब्राह्मण और गुरुजनों के प्रति भक्ति भाव रखता है, उनके हेतु व्यय करने में संकोच नहीं करता है। इसके अनन्तर भी इसके अनेक ऐसे कार्य लिए जाते हैं, जो अनीतिकर और निर्दयता युक्त भी होते हैं।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दसवें भाव में धनु राशि** होती है तो वह व्यक्ति अपने कार्यों को दक्षतापूर्ण ढंग से करता है, इसे नित्य प्रति लाभ होता है। वह परोपकार में संलग्न, राज्य में कार्य करने वाला, भूमि से धनार्जन करता है। इसकी लोक में प्रशंसा होती है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दसवें भाव में मकर राशि** होती है तो वह व्यक्ति प्रताप से लोक में मान्य होता है और अपने कर्म को ही प्रधान रूप से मानकर सदैव कर्म में तत्पर रहता है। यह किसी को दयाभाव से देखकर अपने कार्यों में विघ्न नहीं डालता तथा यह खलों से भी काम कराता है, बन्धुओं से युक्त होता है, तथापि धर्म को विशेष महत्व नहीं देता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **दसवें भाव में कुम्भ राशि** हो तो वह व्यक्ति कर्म को ही प्रधान मानता है। यह अपने कर्म को करता हुआ दूसरों को प्रवंचित करके अपना लाभ प्राप्त करने में भी कोई संकोच नहीं करता है। इसका लोक में किसी व्यक्ति पर विश्वास नहीं होता है, यह पाखण्डी और लोभी होता है। इसके आचरण सत्य मार्ग से अलग भी होते हैं।

(12) जिस जातक के जन्म काल में **दसवें भाव में मीन राशि** होती है, वह व्यक्ति अपने कुल में परम्परा से किए जाने वाले कार्य करते हुए धर्म कार्य से धनोपार्जन करता है। यह ब्राह्मण, साधुओं का आदर करता है। यह स्थिर बुद्धि और समझदार होता है। इसके यश के कारण लोग इसे श्रद्धा करते हैं।

एकादश भाव स्थित राशियों के फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में मेष राशि** हो तो वह व्यक्ति पशुओं के क्रय-विक्रय से लाभ प्राप्त करता है। राज्य की सेवा में रहकर भी उसे लाभ होता है तथा देशान्तर में गमनागमन से उसे अर्थ लाभ होता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में वृष राशि** होती है तो उसे स्त्रियों द्वारा लाभ होता है। किसी स्त्री के माध्यम से उसके भाग्य की भी उन्नति होती

है। उसे अभिजात वर्ग के लोगों से सदा लाभ होता है। वह ऋण देकर सूद से तथा गोधन से भी लाभ प्राप्त करता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में मिथुन राशि** हो तो वह सब कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाला होता है। स्त्रियाँ उसे चाहती हैं तथा वह उत्तम-उत्तम पदार्थों का सेवन करने वाला और पण्डितजनों में आदरणीय होता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में कर्क राशि** का स्थान होता है तो उसे कृषि कार्य तथा सेवा धर्म द्वारा आर्थिक लाभ होता है। इसके साथ ही इसे उत्तम लोगों से तथा शास्त्रानुकूल कार्यों को करने से व सज्जन साधु लोगों से अर्थ लाभ होता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में सिंह राशि** होती है तो वह व्यक्ति निन्दित कार्यों को करके लाभान्वित होता है। वह नाना जन्तुओं की हिंसा करके आर्थिक लाभ प्राप्त करता है, इसको देश-परदेश में जाकर कार्य करने से तथा शारीरिक व्यायाम आदि के प्रदर्शन द्वारा लाभ होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में कन्या राशि** होती है तो वह व्यक्ति विभिन्न कार्यों द्वारा लाभ प्राप्त करता है। इसको शास्त्रों, पुराणों के वाचन तथा हेतु से भी आर्थिक लाभ होता है। यह अपने विनय-विवेक से सर्वत्र पूजित होता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में तुला राशि** होती है तो यह व्यक्ति विभिन्न वस्तुओं के क्रय-विक्रय से लाभ प्राप्त करता है। यह साधु पुरुषों की सेवा और अपनी नम्रता से लोक में प्रशंसित होता है और सुख भागी होता है।

(8) यह किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में वृश्चिक राशि** होती है तो ऐसा व्यक्ति आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के लिए छल-कपट, प्रपञ्च से युक्त कार्यों का मार्ग अपनाता है। इसे दूसरों की चुगली करने से, झूठी बातें करने से और असत्य व्यवहार से ही लाभ होता दिखाई देता है, अत: दिन-प्रतिदिन इसी तरह के मायाजाल के सहारे अर्थ प्राप्त करके निन्दित रहता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में धनु राशि** होती है तो यह व्यक्ति राजा के साथ रहने वाला तथा उसी की तरह से आनन्द प्राप्त करने वाला होता है। इसे साधुओं की सेवा से और अपने उद्यम व पुरुषार्थ से विशेष लाभ होता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में मकर राशि** होती है तो वह व्यक्ति जलमार्ग से देश-विदेश की यात्राएँ करता है। इसे राजा की सेवा करने से लाभ होता है और यह अपने परिश्रम का पूरा फल प्राप्त करता है। इसकी आय थोड़े से श्रम से ही अधिक होती है। इसकी व्यय करने की प्रवृत्ति भी बहुत होती है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में कुम्भ राशि** हो तो वह व्यक्ति क्षुद्र कार्यों को करते हुए भी धैर्य और ब्याज से धन लाभ करता है। यह कुत्सित कर्मों को भी अपने विद्या, उद्यम व गुणों से सत्कर्मा जैसा बना देता है और इसे इनसे ही आर्थिक लाभ होता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **एकादश भाव में मीन राशि** होती है तो वह व्यक्ति विभिन्न कार्यों को करके, एक से अधिक प्रकार के उपायों द्वारा तथा मित्रों से, राज्य के सहारे से, राज कार्य करके, विविध कथा-पुराणों के अध्ययन व श्रवण उपदेश से भी अर्थ लाभ करने वाला होता है।

द्वादश भाव स्थित राशियों के फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **द्वादश भाव में मेष राशि** हो तो वह व्यक्ति उत्तम भोजन-वस्त्र आदि उपकरणों में, शान से रहने-सहने में, गाय आदि पशुओं से अपने उपार्जित धन को व्यय करता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **द्वादश भाव में वृष राशि** हो तो वह व्यक्ति सुन्दर वस्त्रों का प्रेमी होता है, सुन्दर स्त्रियों के लिए भी लालायित रहता है, अत: यह इन्हीं के हेतु अपने उपार्जित तथा राज्य से प्राप्त हुए लाभ से मिले धन का व्यय करता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **द्वादश भाव में मिथुन राशि** हो तो वह नौकरों को वेतन देने में, दुष्ट लोगों के साथ रहकर बुरे व्यसनों में और स्त्रियों के साथ प्रेम करने में अपने उपार्जित धन को व्यय करता है। इसका अधिकतर व्यय व्यर्थ ही होता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **द्वादश भाव में कर्क राशि** हो तो यह व्यक्ति धार्मिक कार्यों में, अतिथि सत्कार में, ब्राह्मण और साधुओं के स्वागत में तथा देवता और धर्म के संसाधन में अपना धन व्यय अधिकतर करता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **द्वादश भाव में सिंह राशि** हो तो वह व्यक्ति तामस भाव से प्रज्वलित रहता है, यह क्रोध के कारण ऐसे कार्य कर डालता है कि इसे आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। इसके धन का व्यय व्यर्थ ही होता है। इसको राजा और चोर से भय होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **द्वादश भाव में कन्या राशि** हो तो वह व्यक्ति स्त्रियों के साथ भोग-विलास में रत रहने के कारण उन पर बहुत व्यय करता है। इसका व्यय विवाहादि मंगल कार्यों तथा श्रेष्ठ लोगों का स्वागत-सत्कार करने में भी बहुत होता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **द्वादश भाव में तुला राशि** हो तो वह व्यक्ति देवता, ब्राह्मण, बन्धु, वेद और शास्त्रों का परायण व उपदेश देने वाले लोगों पर अपने धन का व्यय करता है। यह अपने व्रत नियम का पालन करता हुआ सर्वदा श्रेष्ठजनों की सेवा में अपना धन अर्पण करता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **द्वादश भाव में वृश्चिक राशि** होती है तो वह अनेक प्रकार के विडम्बना युक्त आडम्बर में फँसने से, कुमित्रों के प्रपंच में उनकी सहायता तथा दुर्बुद्धि से चोरी करने वाले लोगों पर विश्वास करके उनके ऊपर अपना धन व्यय करता है। यह जातक लोक में निन्दित होता है।

(9) यदि कोई जातक जन्म काल में **द्वादश भाव में धनु राशि** होती है तो व पापियों की संगति में पड़कर, दूसरों की प्रवंचना में फँसकर तथा स्वजाति के अधिका लोगों की खुशामद तथा उनके सत्कार में, कृषि कर्म में और दूसरों के कहे अनुसार उनक आधीनता मानने के कारण अपने उपार्जित धन का व्यय करता है।

(10) यदि कोई जातक जन्म काल में **द्वादश भाव में मकर राशि** को प्राप्त कर है तो वह व्यक्ति निन्द्य वस्तुओं को खाने में तथा निन्दित लोगों के स्वागत सत्कार, खुशाम में, अधिकारियों की सेवा सुश्रुषा में और अन्य निन्दित कर्मों को करते रहने में अपना ध व्यय करता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **द्वादश भाव में कुम्भ राशि** हो तो व व्यक्ति अपना धन धार्मिक आचार-व्यवहारों के पालन में, अतिथि सेवा में, देव, ब्राह्मण तपस्वी आदि की पूजा में व्यय करता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म काल में **द्वादश भाव में मीन राशि** हो तो व व्यक्ति अपने धन को विवादों में, विदेश व देश में यात्राओं को करने में तथा ऐसे वाह बनवाने में जिनका जल से सम्बन्ध हो, करता है।

राशि-ग्रह-सम्बन्ध फल

फलाफल विचार में भाव और राशि तथा भाव और ग्रहों के सम्बन्ध से भी अधिक महत्वपूर्ण राशि और ग्रहों का सम्बन्ध होता है। जब हम भाव और राशि और भावों तथा ग्रहों के प्रति सम्बन्ध का विचार करते हैं तो हमें राशि और ग्रहों के पारस्परिक सम्बन्धों का भी ज्ञान रखना आवश्यक होता है। राशियों का आधिपत्य ग्रहों को ही प्राप्त है। मेष और वृश्चिक राशि के स्वामी मंगल होते हैं, वृष तथा तुला राशि के स्वामी शुक्र होते हैं, मिथुन तथा कन्या के स्वामी बुध होते हैं, कर्क के स्वामी चन्द्रमा होते हैं तथा सिंह के स्वामी सूर्य होते हैं। मकर और कुम्भ के स्वामी शनि होते हैं, धन और मीन के स्वामी गुरु होते हैं। परस्पर सभी ग्रह एक-दूसरे के मित्र नहीं होते। कुछ ग्रह आपस में मित्र होते हैं, कुछ शत्रु होते हैं तथा कुछ ग्रह परस्पर न मित्र होते हैं, न शत्रु होते हैं। जब एक ग्रह अपने शत्रु के स्वामित्व वाली राशि में चल रहा होता है तो उसे शत्रु क्षेत्रीय कहा जाता है और यदि वह अपने मित्र की राशि में होता है तो वह मित्र क्षेत्रीय होता है। इसके अतिरिक्त जब ग्रह अपनी ही राशि में चलते हैं तो स्वक्षेत्रीय कहलाते हैं। यह स्वाभाविक ही है कि जब कोई ग्रह अपने ही घर अर्थात् अपनी ही राशि में होता है तो उसका फल विशेष रूप से, उस भाव की परम वृद्धि करता है, जिस भाव में वह होता है, अर्थात् जिस भाव का वह स्वामी होता है, उसी भाव के सभी लाभ वह जातक को देता है। इसी प्रकार जब ग्रह अपने मित्र की राशि में होता है तो वह भी उस भाव के अनुकूल होता है और जातक का यथा शक्ति लाभ पहुँचाता है, परन्तु शत्रु के क्षेत्र में होने पर जातक को निश्चय ही सम्बन्धित भाव के फलों से वंचित करता है या विपरीत फल देता है।

ज्योतिर्विदों ने हर ग्रह के विभिन्न राशियों में स्थित होने से उनके फल सम्बन्धी कुछ निष्कर्ष निकाले हैं। अनुभव और पर्यवेक्षण से यह निष्कर्ष भी पाए गए हैं कि कभी-कभी शत्रु क्षेत्र में भी ग्रह फलदायक होता है, परन्तु यह सामान्यत: उसके शत्रु क्षेत्र में होने के अशुभ फल का अपवाद जैसा होता है। इनका पूरा-पूरा चित्रण एक विशद् व्याख्या की अपेक्षा करता है, जो कि यहाँ इस लघु अध्याय में करना सम्भव नहीं है, किन्तु कुछ प्रमुख दैवज्ञों के मतानुसार ग्रहों का विभिन्न राशियों में स्थित होने से जो फल माना गया है, उसका निरूपण यहाँ किया जा रहा है—

द्वादश राशि स्थित सूर्य का फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य मेष राशि** में हो तो वह जातक साहसी, रक्तपित्त विकार से दु:खी, परन्तु राजा या राजा के समान तेजस्वी तथा बुद्धिमान होता है। यह जातक अच्छे लोगों का हितैषी होता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य वृष राशि** में होता है, वह पुष्प सुगन्ध माला और सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों को धारण करने वाला विलास साम्रगी का उपभोग करने वाला, भोजन, धन-धान्य तथा वाहन आदि से सन्तुष्ट और प्रसन्न रहता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य मिथुन राशि** में हो तो वह जातक गणित तथा कलाओं में निपुण होता है। यह कोमल तथा प्रिय वचन बोलकर हितपूर्ण कार्य करता है। वह विनम्र तथा नीति के अनुसार चलता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य कर्क राशि** में हो तो वह जातक सरल नहीं होता, वह सरल और सीधे से स्वभाव का होने पर भी खलों के लिए अपनी सृजनता को हटाकर रख देता है और ऐसे खलों को अपनी शत्रुओं द्वारा दण्ड देता है। वह समय को पहचानता है तथा पिता की सलाह या आज्ञा की भी आवश्यकता होने पर अवमानना कर देता है। उसके पास कभी बहुत धन होता है, कभी वह धन से रहित निर्धन होता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य सिंह राशि** में होता है तो वह जातक स्थिर बुद्धि से कार्यों को करता है, उसके भीतर धैर्य का अभाव नहीं होता। अपने पराक्रम से और परोपकारी गुणों से वह राजा तथा प्रजा दोनों का स्नेह भाजन बनता है। वह कीर्ति युक्त और वैभवशाली होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य कन्या राशि** में होता है तो वह व्यक्ति शत्रुओं को पराजित करने वाला परिश्रमी, वीर होता है। वह प्रिय वचन बोलने वाला, कई विषयों का विद्वान, संगीतज्ञ और राज्य से लाभान्वित होकर सुखी रहता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य तुला राशि** में होता है तो वह व्यक्ति राजा से डरता है, वह दूसरों के कार्यों को करने तथा हित साधने में बहुत ही आनन्दित होता है। इसके पापाचारी और कलहकारी जैसा लगने पर भी कोई इसे दोष नहीं देता। धन-धान्य का अभाव रहने पर भी इसको लोग दु:खी नहीं देख सकते हैं।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य वृश्चिक राशि** में हो तो वह व्यक्ति धन को आवश्यक कार्यों में भी व्यय नहीं करता, प्रत्युत उसे प्राणों से बढ़कर संचय करता है, झगड़ालू और क्रोधी होता है। माता-पिता का विरोध करता है तथा किसी कार्य में इसकी उन्नति नहीं होती। इस जातक को विष या शस्त्राघात से भय होता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य धनु राशि** में हो तो वह व्यक्ति परम बुद्धिमान होता है। अपने लोगों की मूर्खताओं पर इसे क्रोध भी बहुत आता है तथा यह साधु समाज का भक्त, लोक को अपनी बुद्धि से प्रकाश देने वाला तथा अति धनवान होता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य मकर राशि** में हो तो वह व्यक्ति पर्यटनशील होता है। एक स्थान पर बैठना या रुकना इसके स्वभाव में नहीं होता। इसे अपने लोगों से बन्धु-बान्धवों से विशेष मोह नहीं होता, उनका किसी प्रकार से अहित हो जाने पर भी न तो वह उनकी सहायता करता है, न कोई हित की दूसरी बात करता है। यह अनुत्साही तथा धन वैभव से युक्त नहीं रहता।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य कुम्भ राशि** में हो तो वह व्यक्ति हृदय की भावनाओं का निरादर करने वाला, उन्हें बिल्कुल भी न समझने वाला कठोर होता है। उसका मन स्वच्छ नहीं होता है तथा यह दया भाव से रहित कठोर हृदय वाला होता है। यह अन्न, वस्त्रादिक से युक्त होता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सूर्य मीन राशि** में हो तो यह जातक बहुत धन-धान्य से सुखी होता है। व्यापार क्रिया द्वारा अतिधनी होता है। इसे अपने लोगों से भय होता है, यह लोकोपकारी होने के कारण कीर्तिवान और बुद्धिमान होता है। सज्जनों का स्नेहपात्र होकर उनके बीच शोभित होता है।

द्वादश राशि स्थित चन्द्रमा का फल

ज्ञातव्य—चतुर्थ अध्याय में चन्द्र राशि फल-विचार को देखें। किसी जातक के जन्म समय में चन्द्रमा जिस राशि में स्थित होता है, वही उस जातक की राशि होती है। चन्द्र राशि विचार उक्त अध्याय में लिखा गया है।

द्वादश राशि स्थित मंगल का फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **मंगल मेष राशि** में होता है तो वह व्यक्ति राज्य से भूमि लाभ करता है। उसे धन, सम्मान व मान्यता प्राप्त होती है। यह जातक प्रिय वाणी से सबको प्रसन्न करने वाला, तेजस्वी तथा साहस-पराक्रम युक्त होता है। इसे लोक में सब प्रिय मानते हैं।

(2) जब किसी जातक के जन्म समय में **मंगल वृष राशि** में होता है तो वह गृह, धन तथा अन्य साधनों का सुख कम प्राप्त करता है। वह शत्रुओं से पीड़ा प्राप्त करने वाला, पराये घर में वास करने को विवश तथा सन्तान से दु:खी रहता है।

(3) जब किसी जातक के जन्म समय में **मंगल मिथुन राशि** में होता है तो वह व्यक्ति बहुकलाविद् होता है, अपने कुल में कलह का हेतु बनता है, क्योंकि घर के लोग किसी कारण इससे सन्तुष्ट नहीं रहते, अन्य स्थान में जाकर रहने को भी यह जातक विवश होता है; वैसे अपने पुत्रादि से सुखी होता है।

(4) जब किसी जातक के जन्म समय में **मंगल कर्क राशि** में होता है, वह व्यक्ति दूसरे के गृह में रहने वाला और दीन होता है। बुद्धि से भी यह अल्प और इसके अनेक शत्रु होते हैं। इसको स्त्री का कलह भी बहुत दु:ख देता है, क्योंकि वह इससे प्रबल होती है।

(5) जब किसी जातक के जन्म समय में **मंगल सिंह राशि** में होता है, वह व्यक्ति स्त्री-पुत्र से सुखी होता है। शत्रुओं को परास्त करने के पराक्रम से युक्त, अनेक उद्योग करने के लिए सदैव उद्यत और बहुत साहसी प्रकृति का यह व्यक्ति होता है। यह जातक कार्य साधन को ही मुख्य समझता है—चाहे वह नीति से हो या अनीति से।

(6) जब किसी जातक के जन्म समय में **मंगल कन्या राशि** में होता है तो सज्जनों का अनुगामी तथा उनमें श्रद्धा करने वाला होता है, वह स्वयं भी लोक व समाज में प्रतिष्ठित होता है, यज्ञ आदि कराने में अग्रणी होकर धार्मिक कार्यों में रत हुआ धनवान होता है तथा स्त्री सुख से भी सन्तुष्ट रहता है।

(7) जब किसी जातक के जन्म समय में **मंगल तुला राशि** में होता है तो वह अपव्ययी होता है, वह अपने धन को व्यर्थ के कार्यों में व्यय करता है। वह गुरुजनों की उपेक्षा करने वाला, अंगहीन हो जाने से दु:खी तथा भूमि के लाभ से रहित, स्त्री से दु:खी होता है।

(8) जब किसी जातक के जन्म समय में **मंगल वृश्चिक राशि** में होता है तो उस व्यक्ति को विष, अग्नि और शस्त्र से जीवन में भय होता है। अपनी जीवनचर्या में वह अपनी पत्नी, पुत्र-पुत्रियों की ओर से सुखी रहता है, राज्य में कीर्तिमान तथा राजा की ओर से भी मान-सम्मान को प्राप्त करने वाला और शत्रुओं को अपने आधीन करने की शक्ति से युक्त होता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **धनु राशि में मंगल** होता है तो वह जातक अनेक वाहनों को रखने वाला होता है। यह अपनी गौरव-गरिमा से समाज व लोक में सम्मानित, सुशीला स्त्री को सहधर्मिणी रूप में पाकर सुखी तथा अनेक अन्य स्त्रियों के साथ रहकर आनन्दोपभोग करने वाला होता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **मकर राशि में मंगल** होता है तो वह बहुत प्रतापी होता है, स्त्री की ओर से सुख प्राप्त करने वाला होता है। अपने जनों में विशेष रूप से मान्यता प्राप्त करने व आदर पाने की इच्छा से यह उन्हीं के विरुद्ध कार्यों को करके उन्हें नीचा दिखाकर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के फेर में रहता है। यह प्रभुत्व व सम्पत्ति से युक्त होता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **कुम्भ राशि में मंगल** होता है तो वह उद्दण्ड होता है, समाज में विशेष रूप से अपनी स्थिति का दर्शन कराने के लिए विनयहीनता का परिचय दिया करता है। अपने ही लोगों का विरोध करने वाला होकर वह जातक दुष्ट तथा दु:खी होता है। यह व्याधि पीड़ा से भी घिरा रहता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **मीन राशि में मंगल** हो तो वह अनेक तरह के व्यसनों से पीड़ित होता है, इसका हृदय सुन्दर कार्यों तथा विचारों से रहित होता है तथा यह दुष्टतापूर्ण व्यवहार को करने में सुखी व उत्साही होता है। यह अपने लोगों से अलग अन्यत्र रहता है तथा इसके साथी लोग भी निर्बुद्धि होते हैं।

द्वादश राशि स्थित बुध का फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म काल में **बुध मेष राशि** में स्थित हो तो वह व्यक्ति मलीन बुद्धि का होता है, वह दुष्टतापूर्ण व्यवहार करता है तथा कलह करने में उसकी रुचि होती है। यह मिथ्यावादी तथा किसी कार्य में सफल न होकर दु:खी रहता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **बुध वृष राशि** में होता है तो वह दाता, गुणी, अनेक कलाओं का ज्ञाता, उनमें कुशल तथा स्त्रियों में आकर्षित रहने वाला होता है। उसके पास धन का अभाव नहीं होता, वह अपने भाइयों की ओर से दु:ख प्राप्त करता है तथा स्त्री से भी और पुत्रों से भी सदा सुखी रहता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **मिथुन राशि में बुध** होता है तो वह मधुर वचन बोलकर सबको मोहित करने वाला होता है। उसके कार्यक्रम बहुत बुद्धिमतापूर्ण होते हैं। इस जातक की दो माँ होती हैं। इसका स्वरूप दर्शनीय तथा इस ग्रह सुन्दर और यह अच्छे भोजन करता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **कर्क राशि में बुध** होता है तो वह जातक स्त्रियों के पीछे घूमने वाला, उनमें घोर रूप से आसक्त तथा उचित-अनुचित बिना विचारे उनसे सम्बन्ध बनाता है। वह परदेश गमन करता रहता है, गीत नृत्य में रुचि रखने वाला होता है तथा राजा से भी आदर प्राप्त करता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सिंह राशि में बुध** होता है तो वह असत्य का आश्रय लेने वाला मिथ्याचरण करता है। अपने साझेदारों से शत्रुता का व्यवहार करता है। इसके शत्रु उन्नति करते हैं तो उन्हें देखकर दु:खी होता है, क्योंकि वह तो उन्नति नहीं कर सकता है, न शत्रुओं का कुछ बिगाड़ सकता है। स्त्री का अनुगत रहकर स्त्री को सुख देता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **कन्या राशि में बुध** होता है तो वह अपने मधुर वह बुद्धियुक्त वचन बोलकर सबको सुख देता है, अपनी बुद्धिमता और चतुराई से बिगड़े हुए कार्यों को भी बना लेता है और अपने लेखन द्वारा भी प्रशंसा प्राप्त करता है। सदैव उन्नति की ओर बढ़ता हुआ यह जातक सुन्दर स्त्री का भोग करता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **तुला राशि में बुध** होता है तो वह व्यक्ति मिथ्या भाषी होता है, मिथ्या आचरण में पड़कर वह बहुत व्यय करने वाला होता है, स्त्रियों के प्रति आकर्षित रहता हुआ दुराचरण में प्रवृत रहता है। वह व्यर्थ बकवास करके अपने को प्रतिष्ठा प्राप्त करने की चेष्टा करता है, किन्तु ऐसा नहीं हो पाता। व्यसनी तथा अत्यन्त असाधुता से युक्त यह जातक शिल्प विद्या में निपुण होता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **वृश्चिक राशि में बुध** होता है तो वह व्यक्ति अपने धन को खर्च नहीं करता है। उसको संचय करके ही सुखी रहता है। यह अपनी कृपणता के कारण सुन्दर वस्तुओं की क्षति सहन करता है। कोई कार्य आरम्भ कर देने के बाद उसे पूरा करने से यह पीछे रह जाता है। यह आलसी होता है तथा स्त्रियों के आसक्त और रतिक्रिया सुख पाने के लिए सदैव तत्पर रहता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **बुध धनु राशि** में हो तो वह व्यक्ति अपने धन को दान में देकर सुखी होता है। इसके पास धन की प्रतिक्षण वृद्धि होती है तथा यह दान देने से भी धनहीन नहीं होता है। यह कुल में श्रेष्ठ होता है, कलाओं में कुशल तथा स्त्रियों से प्रेम प्राप्त करने वाला होता है। इसकी पत्नी हितकारिणी व इसे सुख देने वाली होती है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **बुध मकर राशि में** होता है तो
व्यक्ति शत्रुओं से भयभीत रहता है। अपनी बुद्धि के ही कारण दु:खी रहता है और
ओजस्वी होता है, न पराक्रम से युक्त होता है। दूसरों की सेवा में रहकर जीवनयापन
है, यह व्यसनों में फँसा रहता है, परन्तु विनयी और विनम्र होता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **बुद्ध कुम्भ राशि में** होता है तो
व्यक्ति घर में कलहकारी होता है, दीन हीन होकर मलिन भाव से प्लावित रहता है।
निर्धन होता है तथा धर्म कार्यों को नहीं कर सकता। इसका पराक्रम व उद्यम व्यर्थ
तथा यह शत्रु से कष्ट पाता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **बुद्ध मीन राशि में** होता है तो
व्यक्ति दूसरों के धन की रक्षा करने वाला होता है। यह देवताओं की पूजा करने वाला
ब्राह्मणों की सेवा में तत्पर रहता है। स्त्री के वशीभूत होने के कारण यह जातक बिना
के कोई कार्य नहीं करता है।

द्वादश राशि स्थित गुरु का फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **मेष राशि में गुरु** हो तो वह बहुत
पराये दु:ख को महसूस करके उसके लिए कुछ-न-कुछ करने की चेष्टा वाला, यहाँ
कि शत्रुओं का भी उपकार करता है। इसके पास परम वैभव होता है तथा इसकी
बहुत श्रेष्ठ होती है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **वृष राशि में गुरु** हो तो वह
देवताओं का पूजन करता है, ब्राह्मणों की सेवा करता है, उसके पास धन-सम्पत्ति
अभाव नहीं होता है। वह धन, वाहन और प्रतिष्ठा से युक्त होता है। संग्राम में या
में अपने शत्रुओं को नीचा दिखाता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **मिथुन राशि में गुरु** होता है तो
साहित्य का प्रेमी होता है, स्वयं कवि होता है तथा अपने अपने प्रिय वचनों से सब लोगों
सुखी करता है, इसका हृदय पवित्र होता है, इसका चरित्र निर्मल होता है। यह मित्रों
स्नेह भाजन और परोपकारी होता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **कर्क राशि में गुरु** होता है तो वह
सदैव लक्ष्मी से युक्त रहता है। स्त्रियों को भोग करने वाला और उनके हास-
अपने चित्त की आसक्ति के कारण बहुत सुख प्राप्त करता है। इसके द्वार पर वाहन
रहते हैं और इसका भवन दर्शनीय होता है तथा यह लोक में मान्य होता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **सिंह राशि में गुरु** होता है तो वह
वन, पर्वत तथा दुर्ग की प्रभुता वाला होता है। वह शरीर व पराक्रम से बलवान,
और उत्साही होता है, यह जातक धर्मात्मा तथा अपने धन का करने वाला होता है।

को पराजय देने वाला तथा उनके धन को यह जातक अपहरण कर लेता है। यह प्रिय वचनों से सर्वत्र आदर व प्रेम पाता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **गुरु कन्या राशि** में हो तो वह व्यक्ति पुष्प, सुगन्ध तथा अनेक प्रकार के आभूषणों और सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों को धारण करने का सुख प्राप्त करता है। उसके पास नाना प्रकार की सम्पत्ति होती है। वह शत्रुओं का हनन करने में सक्षम होता है। दानी और निर्मल-हृदय तथा कान्तिवान होता है। इसमें शत्रुओं को नीचा दिखाने की शक्ति भरपूर होती है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म काल में **गुरु तुला राशि** में हो तो वह जातक शास्त्रों का अध्ययन करने में बहुत आनन्द प्राप्त करता है, उसे धार्मिक कार्यों के कर्म व्यवहार में रुचि होती है, वह जप-होमादि करने वाला होता है, देव-ब्राह्मणों का भक्त होता है, दानी और चतुर होता है। शत्रु इसके पराक्रम से घबड़ाते हैं और भयभीत रहते हैं।

(8) यदि किसी जातक के जन्म काल में **गुरु वृश्चिक राशि** में हो तो वह व्यक्ति धन के नाश को अपनी आँखों से देखता है, उसके कारण वह दु:खी और निराश होता है। यह अपने दम्भ के कारण भी सुख प्राप्त नहीं कर पाता है। यह जो नहीं होता है, वैसा दिखाने की चेष्टा करता है, अत: घर बाहर हास्यास्पद होता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **गुरु धनु राशि** में हो तो वह व्यक्ति धर्म और धन से पूरा होता है। इसके पास धन-सम्पत्ति का अभाव नहीं होता है और न दान देने वाली उदारता का। यह दूसरों के दु:खों को दूर करने वाला दाता होता है। यह सद्बुद्धि, शास्त्रों को जानने वाला, उन्हीं के अनुसार आचरण करने वाला और उत्तम वस्त्रादि धारण करने वाला अनेक वाहनों से युक्त होता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **गुरु मकर राशि** में हो तो वह जातक बुद्धिमान नहीं होता है। उसकी बुद्धि दुष्कर्मों की ओर प्रवृत्त रहने वाली होती है। यह अपने कार्यों को करके जीविकोपार्जन नहीं करता, दूसरों की सेवा रहकर उनके कार्यों को करता है। यह बहुत क्रोधी, लोक में किसी का भी प्रिय नहीं होता है, वीर्य हीन और निर्बल होता है। इसके मनोरथ सफल नहीं होते हैं।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **गुरु कुम्भ राशि** में है तो वह व्यक्तियों से पीड़ित होता है, अपने धन को अनिवार्य रूप से आवश्यक कार्यों में भी व्यय न करके दु:ख उठाता है। यह जातक दुर्बुद्धि पूर्ण कार्यों को करके कष्ट उठाता है। इसके दाँतों में भी कष्ट होता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **गुरु मीन राशि** में होता है तो वह राजा की कृपा से धन लाभ पाता है। उसका मन स्त्रियों और भोजन में बहुत रमता है और इसके पास नित्य नवीन भोग उपलब्ध रहते हैं। यह नवीन घर का निर्माण करके उसमें वास करता है। यह अपने धन का उदात्त होकर दान देने में व्यय करता है तथा गुरु-ब्राह्मण व साधुओं की सेवा में तत्पर होकर आनन्दोपभोग करता है।

द्वादश राशि स्थित शुक्र का फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शुक्र मेष राशि** में हो तो वह व्यक्ति ... मानी होता है, उसके पास भवनादि, सम्पत्ति तथा वाहनों का अभाव नहीं होता। यह लोक ... मान्य होता है और सब लोग इसका आदर करते हैं। यह गाँव का मालिक, भ्रमण क... वाला उदारचित्त और शत्रुओं से रहित होता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शुक्र वृष राशि** में हो तो वह व्यक्ति स्त्री ... पुत्रादि से सुखी होता है। उसे स्त्री सुख बहुत होता है तथा इसके सुहृद लोग भी इस... अनुगत और इसका आदर करने वाले होते हैं, यह रुचिर कलाओं का ज्ञाता तथा वस्त्राभूष... गन्ध-सुगन्ध, आभूषणों को धारण करने वाला होता है। यह कृषि कार्य से धन प्राप्त कर... है। अचल सम्पत्ति का स्वामी तथा शत्रुहीन होता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शुक्र मिथुन राशि** मे होता है तो व... समस्त शास्त्रों का ज्ञाता होता है, कलाओं में कुशल व पारंगत होता है, इसका स्वभाव स... होता है। शरीर से सुन्दर, विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थों को प्राप्त करने वाला और प्रि... वक्ता होता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शुक्र कर्क राशि** में हो तो वह जातक ... सद्कार्यों को करने में प्रवृत रहता है, सज्जनों का साथी व गुणवान होता है। यह अपनी क... और मधुर वाणी से सबको अपने अनुकूल बना लेता है और सबका स्नेह भाजन ब... जाता है।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शुक्र सिंह राशि** में होता है तो वह अप... जीवन में स्त्री के महत्व का सुख अत्यधिक रूप से भोगता है। वह स्त्री के सहयोग व... सहायता-धन-मान और सुखों का भोग करता है। इस जातक को अपने लोग, मि... भाई-बन्धु आदि दुःखी करते हैं, परन्तु शत्रुओं के कारण इसे सुख प्राप्त होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **कन्या राशि में शुक्र** होता है तो व... व्यक्ति अत्यन्त धनी होता है। इसकी चित्तवृत्ति धार्मिक कार्यों में संलग्न होती है तथा व... तीर्थों में भ्रमण करके देवभूमि के दर्शन करता है, दानादि कर्मों को करके पुण्य प्राप्त कर... है। इसके पास सब प्रकार की सम्पत्ति, सुख व ऐश्वर्य की स्थिरता होती है। इसे अधि... बातें करने की आदत नहीं होती है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म सयम में **तुला राशि में शुक्र** होता है तो वह ना... प्रकार के सुगन्ध, वस्त्राभूषणादि, धन-सम्पत्ति से युक्त होता है। यह काव्यकर्ता त... मान-सम्मान से पूज्य होकर इसे श्रेष्ठ कवियों में भी श्रेष्ठ होने का आदर प्राप्त होता है। ... बहुत स्थानों का भ्रमण करने वाला, ज्ञान सम्पन्न व्यक्ति होता है।

(8) जिस जातक के जन्म समय में **शुक्र वृश्चिक राशि** में होता है, वह व्यक्ति ... निन्दित कार्यों को करता है। उसे लोक में आदर व सम्मान प्राप्त नहीं होता है तथा उसक...

लोगों से, अपने घर तथा बाहर भी जरा-जरा सी बात पर लड़ाई-झगड़ा हो जाता है।। यह जन्म से ही रोगग्रस्त होता है, दूसरों को चोट पहुँचाने में नहीं चूकता, धन नाशक और व्यसनशील होता है।

(9) जिस जातक के जन्म समय में **शुक्र धनु राशि** में होते हैं, वह स्त्री-पुत्र का सुख प्राप्त करने वाला होता है, उसके पास नित्य धनागम होता है और वह नाना प्रकार से सुखी होता है। वह राज्य में मन्त्री पद प्राप्त करता है तथा अपने व्यवहार से सबको सुख देता है। यह व्यक्ति धन से परिपूर्ण तथा चिरंजीवी होता है। इसे कवियों तथा संगीतज्ञों से प्रेम होता है।

(10) जिस जातक के जन्म समय में **शुक्र मकर राशि** में होता है, वह व्यक्ति अपनी उम्र से अधिक उम्र की स्त्री के प्रेम में पड़कर सुख प्राप्त करता है, अपने धन को वह व्यय करने में कष्ट अनुभव करता है। यह व्यर्थ की चिन्ता से पीड़ित और जर्जर देह होता है। यह कवियों के समाज में रहता है तथा एकान्तवास का सुख भी उठाता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शुक्र कुम्भ राशि** में होता है तो सुन्दर-सुन्दर भोगों से भी वंचित रहता है। अच्छे-अच्छे वस्त्राभूषणों से वह हीन होता है। यह अपने आलसी स्वभाव के कारण अपने कार्यों को करने में भी सुस्त हो जाता है, अतः इसके पास जो सम्पत्ति होती है, वह भी कम होती चली जाती है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शुक्र मीन राशि** में होता है तो वह व्यक्ति राज्य से धन-सम्पत्ति प्राप्त करता है। इसको जल क्रीड़ा से प्रेम होता है तथा व्यवसाय से धनार्जन करता हुआ सुखों को प्राप्त करता है। अपने साथ व्यवसाय करने वालों का मुखिया होता है, उनमें लाभ का वितरण करता है और शत्रुओं से भी न आतंकित होता है, न भयभीत होता है।

द्वादश राशि स्थित शनि का फल

(1) यदि किसी जातक के जन्म काल में **शनि मेष राशि** में होता है तो वह जातक शरीर से क्षीण होता है, लोक में इसका विरोध होता है तथा इसके कार्यों को इसी कारण बहुत हानि होती है। चारों ओर से विरोधियों के कारण इसको लाभ से वंचित रहना होता है। यह जातक स्वजनों से भी अशान्ति प्राप्त करता है तथा धनहीन होता है।

(2) यदि किसी जातक के जन्म काल में **शनि वृष राशि** में होता है तो वह स्त्री का सुख प्राप्त नहीं कर पाता। इसकी बुद्धि मलीन होती है, यह चुगलखोरों का साथी और उनके साथ दुरभिसन्धि करता रहता है। इसको सन्तान से भी कष्ट प्राप्त होता है।

(3) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि मिथुन राशि** में होता है तो वह व्यक्ति भ्रमण करने की प्रकृति से युक्त होता है। वह इधर-उधर घूमकर अपना जीविकोपार्जन करता है तथा उसका हृदय ऊँचे व सद्विचारों से रहित होता है, यह राज्य से भी या किसी श्रेष्ठ धनी पुरुष से कोई सुख प्राप्त नहीं कर पाता है।

(4) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि कर्क राशि** में होता है तो वह व्यक्ति अपने बाल्यकाल में ही माता को खो देता है या उसकी माता उसका परित्याग कर देती हैं या यह जातक माता से अलग हो जाता है। इसके पास सम्पत्ति का अभाव नहीं होता तथा शत्रु इससे भयभीत होते हैं।

(5) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि सिंह राशि** में होता है तो वह लेखन कला में प्रवीण होता है। वह किसी से बनाकर नहीं रख पाता और वह अपनी बात के कटने पर उत्तेजित हो जाता है, इसको व्यवहार करने की बुद्धि नहीं होती तथा यह नैतिक-अनैतिक रूप से स्वार्थ के वशीभूत हुआ अपने पक्ष का समर्थन करने में तथा अपना अधिकार अन्यायपूर्ण ढंग से भी प्राप्त करने में नहीं हिचकता। यह स्त्री-पुत्र के सुख से रहित होता है।

(6) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि कन्या राशि** में हो तो वह व्यक्ति अपने समस्त कार्यों को अपनी ही बुद्धि से बिगाड़ लेता है। वह विनयहीन होकर विनम्रता को दूर से ही प्रणाम करता है। इसकी मैत्री स्थिर नहीं होती तथा यह अपनी बुद्धि से ही अपनी निर्मलता पर भी दाग लगा लेता है। यह साधारण रूप से बलवान और उत्साही होता है।

(7) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि तुला राशि** में हो तो वह अपने कुल में श्रेष्ठ होता है, शक्तिशाली होने से सब स्थान में आदर प्राप्त करता है। इसे स्त्रियों के प्रति बहुत आकर्षण होता है। यह अपने धन को उदारतापूर्वक भोगता है तथा दुखियों की सहायता करने में तथा श्रेष्ठजनों को दान करने में भी सुख का अनुभव करता है। यह राज्य में सदैव सम्मान प्राप्त करता है और राजा से उपकृत होता है।

(8) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि वृश्चिक राशि** में हो तो वह अपने धन को नष्ट कर देता है। अपनी बुद्धि से ही वह अपने कार्यों को बिगाड़ लेता है तथा शत्रुओं से कष्ट पाता है। वह व्यक्ति सन्तान से भी कष्ट प्राप्त करता है। उसके पास धन का अभाव होता है तथा वह शत्रु, विष, अग्नि तथा शस्त्र के आघात से पीड़ा पाने की आशंका से घिरा रहता है।

(9) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि धनु राशि** में हो तो वह व्यक्ति वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है। इसकी कीर्ति चारों ओर फैलती है, इसको राज्य से सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। वह सदाचारी और कीर्ति से मंडित तथा अपनी सन्तान से भी पूर्ण सुखी रहता है।

(10) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि मकर राशि** में हो तो वह राजा के समान सुख-ऐश्वर्य का भोग करता है। उसकी आज्ञा का पालन करने वाले लोग उसके प्रति बहुत स्नेह युक्त होते हैं तथा वह अपने सद्कार्यों से लोक में सराहा जाता है। यह तरह-तरह से सुखकर जीवन को व्यतीत करता है, सुगन्धित पदार्थों को भोगता है।

(11) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि कुम्भ राशि** में हो तो वह व्यक्ति

व्यसनशील होता है। अपनी व्यसनों के कारण इसे हानि होती है, यह आलसी होता है, अपने कार्यों को पूरा कनने की भी इसे चिन्ता नहीं होती। यह अपने संचित धन का भोग करता रहता है। यह व्यक्ति बुद्धिमान व्यक्तियों से उपकृत होता है। यह दम्भी और गर्व से युक्त होता है।

(12) यदि किसी जातक के जन्म समय में **शनि मीन राशि** में हो तो वह जातक व्यवहार कुशल होता है। उससे घर तथा बाहर के सभी लोग प्रसन्न रहते हैं। वह सज्जनों का प्रेमी तथा उन्हें आदर देने वाला होता है, उसके गुणों की सर्वत्र सराहना होती है। वह परोपकारी और सब प्रकार की सम्पत्ति से युक्त होता है।

राशियों में एकाधिक ग्रह-स्थिति

किसी जातक के जन्म समय यह आवश्यक नहीं है कि एक राशि में एक ही ग्रह हो। कभी-कभी एक से अधिक ग्रह भी एक राशि में संचरण करते हैं। ऐसी अवस्था में जबकि जन्म कुण्डली के किसी भाव और राशि में एक से अधिक ग्रह होते हैं तो उनका फल मिश्रित होता है। साधारणत: जो ग्रहों की परस्पर नैसर्गिक मित्रता होती है या तात्कालिक स्थिति के अनुसार मैत्री होती है, उनके एक-दूसरे के साथ होने पर उसका विचार तो दैवज्ञ अपने विवेक अनुसार करते ही हैं और करना भी चाहिए, परन्तु प्राचीन समय में मान्य दैवज्ञों के ज्ञान के आधार पर जो निष्कर्ष हमें ज्योतिष ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं, उनका भी विचार ज्योतिर्विद को फलादेश करते समय करना चाहिए। उसी प्राचीन मताधार पर एक, दो, तीन या अधिक ग्रहों के एक राशि में होने वाले योग फल का उल्लेख संक्षिप्त में दिया जा रहा है।

द्विग्रह योग फल

(1) **रवि-चन्द्र योग**—यदि किसी जातक के जन्म समय में सूर्य और चन्द्रमा एक ही स्थान में हों तो वह जातक स्त्री के वशीभूत होता है, क्रूर कर्म करने में पटु होता है, अशिष्टतापूर्वक व्यवहार करने वाला और अपने कार्यों को पूरा करने की दृढ़ इच्छा वाला होता है। अत्यन्त उत्साही परन्तु छोटे हृदय वाला होता है—**मानसागरी**। यह जातक पाषाण यन्त्रों का क्रय-विक्रय करने वाला, गुप्त कार्यों (कूट क्रिया) से धनोपार्जन करने वाला, अत्यन्त कामी और स्त्रियों द्वारा प्रीतिपूर्वक स्वीकार किया जाने वाला तथा अपने अहम् से युक्त अपनी गरिमा को प्रदर्शित करने वाला व्यक्ति होता है—**जातकाभरण**।

(2) **रवि-मंगल योग**—सूर्य और मंगल, साथ-साथ, एक ही भाव में जिस जातक की कुण्डली में होते हैं, वह महातेजस्वी और बलवान होता है, किन्तु उसका बल और तेज सात्विक नहीं होता, क्योंकि उसके बुद्धि-विचार से प्रेरित कर्म किसी की भलाई कम तथा अपना शौर्य प्रदर्शन कर, मूढ़ रूप से आतंक अधिक फैलाते हैं। अत: वह पापी, मिथ्याभाषी और मूर्खों की श्रेणी में आता है। यह जातक अपने बन्धुओं के प्रति निष्ठा रखता है, जो कि पूरी तरह एक अन्धी निष्ठा होती है—**मानसागरी और जातकाभरण**।

(3) **रवि-बुध योग**—जिस जातक के जन्म समय में रवि तथा बुध एक घर में होते हैं, वह विद्वान होता है, वह प्रिय वाणी बोलने वाला तथा प्रिय व्यवहार करने वाला, अपने गुणों से कीर्ति प्राप्त करने वाला तथा सेवा कार्य को विनम्रतापूर्वक करके राजमान्य होता है। उसके पास लक्ष्मी स्थिर रूप से वास करती है—**मानसागरी**। यह जातक राज्य की सेवा में

सचिव पद को भोगता है, प्रिय वाणी से सबको प्रसन्न रखता है तथा सेवा कार्य से धन प्राप्त करता है और संचय करता है। कला-कुशल तथा धार्मिक आचार का यह जातक वेद-शास्त्रों वाला ज्ञाता होता है। **जातकाभरण**।

(4) **रवि-गुरु योग**—जिस जातक के जन्म समय में रवि और गुरु एक साथ एक ही भाव में होते हैं, वह अध्यापक, धर्म में निष्ठापूर्वक विश्वास रखने व धार्मिक आचार से जीवन व्यतीत करने वाला, बहुत मित्रों का शोभा पाने वाला, धनी तथा कीर्तिवान होता है—**मानसागरी**। यह जातक पोरोहित्य कर्म में निपुण होता है, राजा का मन्त्री तथा मित्रों की सहायता से धनार्जन करने वाला, सम्पत्तिशाली, परोपकार करने में सदैव आगे तथा चतुर होता है—**जातकाभरण**।

(5) **रवि-शुक्र योग**—जिस जातक के जन्म समय में रवि और शुक्र का योग होता है, वह शस्त्र विद्या को मानने वालों में अग्रणी होता है, नृत्यादि रंगमंचीय कलाओं को जानने वाला होता है, आँखों से दुर्बल होता है, स्त्री के साथ से धन का लाभ करता है और अपने कार्यों को करने में प्रवीण होता है—**मानसागरी**। यह जातक स्त्री-मित्रादि से सुखी रहता है, संगीत वाद्य का प्रेमी, शास्त्रों के ज्ञान से परिपूर्ण और आँखों से निर्बल होता है—**जातकाभरण**।

(6) **रवि-शनि योग**—यह जातक जो अपनी जन्म कुण्डली में रवि और शनि को एक ही भाव में प्राप्त करता है, वह विद्वान होता है। अपने कार्यों को निष्ठापूर्वक करता है। इसे साधुओं के मर्म का ज्ञान होता है। इसकी विचारधारा तथा कार्यकलाप वृद्धों की तरह होते हैं। अन्त समय में यह स्त्री और पुत्र से हीन हो जाता है—**मानसागरी**। यह जातक धातुओं की क्रिया को जानने वाला, व्यापार करने में निपुण तथा गुणवान होता है। धर्माचार करने में रुचि रखने वाला यह जातक स्त्री-पुत्रादि से सुखी रहता है तथा सम्पत्तिवान होता है—**जातकाभरण**।

(7) **चन्द्र-मंगल योग**—यदि किसी जातक के जन्म समय में चन्द्र-मंगल एक ही भाव में स्थित हों तो वह शोणित विकार से पीड़ित होता है। यह व्यक्ति मिट्टी, चर्म और धातुओं के शिल्प बनाता है। इसके पास धन भी होता है तथा यह वीर भी होता है—**मानसागरी**। यह जातक आचारहीन होता है, इसका हृदय, शुद्ध नहीं होता, कुटिल चालों से भरा होता है। कलह करना इसके स्वभाव में होता है, माता से विरोध करने वाला तथा व्याधि पीड़ित होता है। अपनी जीविका यह व्यक्ति व्यापार से चलाता है—**जातकाभरण**।

(8) **चन्द्र-बुध योग**—यदि जन्म समय में किसी जातक की कुण्डली में चन्द्रमा और बुध एक ही स्थान में हों तो वह व्यक्ति स्त्री के आधीन होता है, उसमें पूरी तरह आसक्त, स्वरूपवान, काव्य करने वाला तथा बहुत कुशल होता है। बहुत ही हँसमुख, सबको प्रसन्न रखने वाला, अपने कुल में श्रेष्ठ और धर्मात्मा होता है। धनवान तो यह होता ही है, गुणी भी होता है—**मानसागरी और जातकाभरण**।

(9) **चन्द्र-गुरु योग**—यदि जन्म समय में किसी जातक की कुण्डली में चन्द्रमा और गुरु एक ही घर में स्थित हों तो वह देवताओं और ब्राह्मणों की सेवा-अर्चना करने

वाला होता है, अपने बन्धु-बान्धवों का सत्कार करता है। स्वयं भी सत्कार पाने वाला तथा धनवान होता है। इसका प्रेम निष्कपट होता है तथा स्थिर होता है। यह सरल हृदय व सुशील होता है—**मानसागरी**। यह जातक विनम्र, गुरुजन को सम्मान देने वाला, अपने धर्म को पालन करने वाला, उदार और परोपकारी होता है। यह अपने विचारों को गुप्त रखता है—**जातकाभरण**।

(10) **चन्द्र-शुक्र योग**—चन्द्र और शुक्र का योग जिस जातक के जन्म काल पर एक ही भाव में होता है, वह बहादुर, उत्साही परन्तु कलहकारी स्वभाव का होता है। यह क्रय-विक्रय से जीविका चलाता है तथा धन का उपार्जन करके धनी होता है। इसके पास वस्त्रादि अधिक नहीं रहते हैं—**मानसागरी**। यह जातक वस्त्र के व्यापार में कुशल होता है, इसे अनेक व्यसन होते हैं, व्यवहारकुशल होता है, इसे सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों तथा गन्ध-सुगन्ध से प्रेम होता है—**जातकाभरण**।

(11) **चन्द्र-शनि योग**—जिस जातक के जन्म समय में चन्द्र और शनि एक ही भाव में होते हैं, वह हाथी, घोड़ों का पालन करने वाला, स्वभाव का दु:शील तथा वृद्धा (अपने से आयु में यथेष्ठ बड़ी) स्त्री से प्रेम करने वाला, थोड़े पुत्र वाला तथा वेश्या से धन लाभ प्राप्त करता है—**मानसागरी**। यह जातक अनेक स्त्रियों से प्रेम करता है, वेश्यागामी, लोक में ख्याति प्राप्त पिता की सन्तान न होकर अन्य पिता का पुत्र होता है। असद् आचार युक्त जीवन व्यतीत करने वाला तथा धन से रहित होता है—**जातकाभरण**।

(12) **मंगल-बुध योग**—जिस जातक के जन्म काल में मंगल तथा बुद्ध दोनों एक ही राशि में हों, वह व्यक्ति धनहीन होता है। यह किसी विधवा स्त्री या दु:स्त्री (बुरे आचार वाली स्त्री) का स्वामी होता है। यह सोना तथा लोहा आदि का क्रय-विक्रय करता हुआ धनार्जन करता है—**मानसागरी**। यह जातक मल्ल युद्ध कर्म में कुशल होता है। इसकी आसक्ति विशेष रूप से स्त्रियों में अधिक होती है। यह औषधियों का व्यापार करने वाला होता है। सोना, लोहा आदि की वस्तुएँ भी बनाता है—**जातकाभरण**।

(13) **मंगल-गुरु योग**—जिस जातक के जन्म समय में मंगल तथा गुरु एक ही राशि में होते हैं, वह व्यक्ति बुद्धिमान होता है। वह शिल्प शास्त्र में निपुण तथा वाक्पटु, अश्व पर आरूढ़ होने वाला तथा अपने स्थान में मुखिया होता है—**मानसागरी**। यह जातक मंत्र तथा शस्त्र-विद्या का जानकार होता है। यह इन्हीं कलाओं में पारंगत होता है, विवेकी तथा शूर होता है। यह सेनापति, राजा या नगर का प्रधान पुरुष हो सकता है—**जातकाभरण**।

(14) **मंगल-शुक्र योग**—जिस जातक के जन्म समय में मंगल और शुक्र एक ही राशि व भाव में होते हैं, वह ज्योतिष विद्या का जानकार होता है। इसके गुणों के कारण इसे अत्यन्त गुणी कहा जा सकता है, परन्तु मिथ्याचरण करने वाला द्यूत में अनुरक्त होता है। यह पराई स्त्रियों का सेवन करता है, अपने कार्यों के कारण लोक में मान्य होता है—**मानसागरी**। **जातकाभरण** के अनुसार उपरोक्त कथन के अतिरिक्त गौर वर्ण तथा सबसे अकारण ही शत्रुता करने वाला भी होता है।

(15) **मंगल-शनि योग**—जिस जातक के जन्म समय में मंगल और शनि एक ही भाव में होते हैं, वह व्यक्ति वक्ता होता है, बुद्धिमान परन्तु अपने अन्दर के भाव के कारण झगड़ा करने वाला, धर्महीन होता है। यह विष और मदिरा का व्यापार करता है—**मानसागरी**। यह जातक अस्त्र-शस्त्र बनाने की कला में श्रेष्ठ, युद्ध में चतुर, चोरी और मिथ्या व्यवहार करने वाला और सुखहीन होता है—**जातकाभरण**।

(16) **बुध-गुरु योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में बुध और गुरु एक ही भाव में हों तो वह जातक नृत्य-संगीत में गति रखने वाला विद्वान और कलाकार होता है, धैर्यवान, पण्डित तथा सुखी होता है—**मानसागरी**। यह जातक संगीतज्ञ, विनयी, न्यायाधीश, अत्यन्त मनोहर स्वरूप से युक्त, धीर-गम्भीर और उदार तथा गन्ध-सुगन्ध प्रिय होता है—**जातकाभरण**।

(17) **बुध-शुक्र योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में बुध और शुक्र एक ही राशिगत स्थित हो तो वह नीतिज्ञ होता है, अनेक कलाओं को जानने वाला बहुत बड़ा शिल्पज्ञ होता है। यह धनवान तथा सुन्दर वाणी को बोलने वाला, वेद का ज्ञाता तथा संगीत-काव्य से लोक का रंजन करने वाला होता है—**मानसागरी**। यह जातक अपने कुल में श्रेष्ठ, प्रिय वचन बोलने वाला, आनन्द युक्त, सुन्दर स्वरूप, बहुतों का पोषक, गुणी तथा विवेक युक्त होता है—**जातकाभरण**।

(18) **बुध-शनि योग**—यदि किसी जातक के जन्म समय में बुध और शनि एक ही भाव में स्थित हों तो वह व्यक्ति क्षीण शरीरी, अधिकतर इधर-उधर घूमने वाला और निरुपाय होता है। स्वभाव से ही वाद-विवाद करने में पटु, रुचिर वाणी द्वारा सबको प्रसन्न करने में दक्ष और अपने कार्यों को करने में कुशल होता है—**मानसागरी**। यह जातक चंचल स्वभाव का होता है, वाद-विवाद में तर्कशील, कला-कुशल और सुवेशधारी होता है। यह बहुत लोगों का पोषक होता है—**जातकाभरण**।

(19) **गुरु-शुक्र योग**—जिस जातक के जन्म समय में गुरु और शुक्र एक ही राशि में होते हैं, वह जातक अत्यन्त धनी होता है। धर्म में उसकी आस्था गहन रूप से होती है, विद्या से जीविका कमाने वाला, वेदादिशास्त्रों का ज्ञाता और आस्तिक होता है। इसकी पत्नी दिव्यरूपधारिणी, अत्यन्त मनोहर होती है—**मानसागरी**। यह जातक अनेक विद्याओं का मर्मज्ञ पण्डित होता है। अनेक विद्वानों के मध्य शोभा पाता हुआ उनसे शास्त्रार्थ करने वाला होता है तथा धन-पुत्र-मित्र व पत्नी से पूरी तरह सुखी होता है—**जातकाभरण**।

(20) **गुरु-शनि योग**—जिस जातक के जन्म समय में गुरु और शनि एक ही भाव में स्थित हों तो वह व्यक्ति सिद्ध होता है, अपनी जीविका के प्रति निश्चिन्त, नगर का अधीश्वर या प्रधान होता है। यह सेना युक्त, लोक में कीर्ति लाभ करने वाला वीर होता है—**मानसागरी**। यह जातक शूरवीर, सम्पत्तिशाली, पुर का अधीश्वर होता है। अपने गुणों एवं कुशल कार्यों में लोक में यश लाभ प्राप्त करता है—**जातकाभरण**।

(21) **शुक्र-शनि योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में शुक्र व शनि एक ही

भाव में हों तो वह मत्त (मस्त) रहने वाला, पशुओं का स्वामी, लकड़ी कार्य में दक्ष, खा- अम्ल का प्रेमी तथा शिल्पज्ञ होता है—**मानसागरी**। यह जातक चित्रकारी और शिल्प कला के कौतुकपूर्ण आलेख करने वाला, युद्धप्रिय, संग्राम से कभी भी पीठ दिखाने वाला, अश्वविद्या का जानने वाला, तेजस्वी व्यक्ति होता है—**जातकाभरण**।

त्रिग्रह योग फल

(1) **सूर्य-चन्द्र-मंगल योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में एक ही भाव में सूर्य, चन्द्रमा तथा मंगल स्थित हों तो वह पाषाण की वस्तुएँ बनाने में कुशल होता है, अपनी विद्या में बहुत प्रवीण कीर्तिवान होता है। शोणित विकार से पीड़ित बहुत वीर, पराक्रमी तथा पुत्रहीन होता है—**मानसागरी**। यह जातक युद्ध प्रिय शूरवीर, अश्वज्ञान का ज्ञाता तथा यन्त्रों की विद्या में भी निपुण होता है। यह स्वभाव से कठोर तथा दया माया को कम ही अपने पास आने देता है—**जातकाभरण**।

(2) **सूर्य-चन्द्र-बुध योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में सूर्य, चन्द्रमा तथा बुध एकत्र हों तो वह काव्य कथा का प्रवचन करने वाला, रूप, गुण विद्या से सम्पन्न, धनवान होता है। राजा की कृपा से कीर्तिवान तथा प्रभावशाली यह जातक प्रिय वचन बोलकर सबको सुख देता है—**मानसागरी**। यह जातक अत्यन्त तेजस्वी, राजकाज में संलग्न, व्यवहार कुशल, शस्त्रादि सम्बन्धित युद्ध कला में प्रवीण होता है—**जातकाभरण**।

(3) **सूर्य-चन्द्र-गुरु योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में सूर्य, चन्द्र तथा गुरु एक ही भाव में एकत्र हों तो वह व्यक्ति धर्मात्मा, राज्य में मंत्री, दृढ़ बुद्धि से युक्त, बन्धु-बान्धवों से आदर पाने वाला तथा देवताओं की पूजा और ब्राह्मणों का अभ्यर्थना करने वाला होता है—**मानसागरी**। यह जातक सेवा कार्यों में पटु, विदेश गमन करने वाला, बहुत बड़ा विद्वान, चतुर तथा व्यवहार कुशल होते हुए भी धूर्तता के सहारे भी अपने कार्यों को साधने की कला जानता है।

(4) **सूर्य-चन्द्र-शुक्र योग**—यदि किसी जातक के जन्म समय में सूर्य, चन्द्रमा तथा शुक्र एक साथ एक भाव में होते हैं तो वह व्यक्ति शरीर से सुन्दर, शत्रुओं को पराजित करने की शक्ति व शौर्य से युक्त, राज्य में सम्मानित, राजा का प्रिय और दंत रोग से पीड़ा पाता है—**मानसागरी**। यह जातक व्यावहारिक ज्ञान में कुशल होने के कारण दूसरों के धन का बहुत योग्यता से अपहरण कर लेता है। वह व्यसन में फँसा हुआ, सत्कार्यों को करने से विमुख रहता है।

(5) **रवि-चन्द्र-शनि योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में सूर्य, चन्द्रमा तथा शनि एक साथ हों तो वह व्यक्ति धर्मात्मा होता है, हाथी-घोड़ों को पालने वाला तथा सत्कर्म करने के मार्ग पर रहता है, किन्तु यह जातक शील के अभाव के कारण व्यवहारकुशल नहीं होता और न धनी होता है—**मानसागरी**। यह जातक अपने निकट आने वाले लोगों की

चेष्टा से ही उनके मन की बात समझ लेने में कुशल होता है, धातु के कार्यों में कुशल होता है, आलसी होने से इसका काम सफल नहीं होता तथा यह धनहीन होता है।

(6) **रवि-मंगल-बुध योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में यह तीनों ग्रह एक भाव में हों तो वह लोक में विख्यात होता है। उसके कार्य साहसिकता लिए हुए होते हैं। हृदय में उसके दया कम ही होती है तथा उसे कोई लज्जा नहीं होती, वह निर्ल्लजतापूर्वक तुच्छ कार्यों को भी कर सकता है, तथापि वह धनी स्त्री, पुत्रादिक से सुख प्राप्त व्यक्ति होता है—**मानसागरी**। इस जातक का यश दूर-दूर तक फैलता है, मन्त्रविद्या का जानने वाला यह जातक सत्साहस से युक्त, निष्ठुर चित्तवृत्ति वाला, लज्जा, धन, स्त्री, पुत्र और मित्रों से युक्त होता है।

(7) **रवि-मंगल-गुरु योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में यह तीनों ग्रह एक भाव में हों तो वह व्यक्ति सुन्दर होता है, स्वरूपवान पुत्रादि में स्नेह रखने वाला, अपने कार्यों में दक्ष व समर्थ होता है। इसका मन विषयासक्त रहता है तथा स्त्रियों के प्रति इसे सदैव आकर्षण होता है। इसके नेत्रों में कष्ट होता है तथा यह शील रहित भी होता है—**मानसागरी**। यह जातक बहुत भाग्यवान तथा अत्यन्त बुद्धिमान होता है। विनय और विनम्रता से युक्त कुलीन घर में जन्म लेने वाला, सत्य वक्ता होता है। यह अल्पभाषी होता है—**जातकाभरण**।

(8) **रवि-मंगल-शनि योग**—यदि किसी जातक के जन्म समय में रवि, मंगल तथा शनि एक साथ हों तो वह व्यक्ति मूर्खों की तरह व्यवहार करता है, उसके पास धन का अभाव होता है, वह रोग से पीड़ित और अपने लोगों से रहित या उनके सद्भाव, सहायता को न प्राप्त करने वाला, विफल और कलहकारी होता है—**मानसागरी**। यह जातक धन के लिए प्रयत्न करता हुआ भी धनहीन होता है, कलह इसके स्वभाव में होती है, अपनी विवेकहीनता से यह बन्धु-बान्धवों तथा पिता से भी अलग हो जाता है—**जातकाभरण**।

(9) **रवि-बुध-गुरु योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में सूर्य, बुध और गुरु एक साथ, एक ही स्थान में हों तो वह जातक आँखों के रोग से पीड़ित होता है, शास्त्रों का ज्ञाता, शास्त्रों के ज्ञान से पूर्ण तथा लेखक (लिपिकर्त्ता) होता है—**मानसागरी**। यह जातक शास्त्रज्ञ, धर्म की गति को जानने वाला, कलाओं में निपुण, धन का संग्रहकर्त्ता, बलवान तथा सुशील होता है। इसे आँखों के रोग कष्ट देते हैं—**जातकाभरण**।

(10) **रवि-बुध-शुक्र योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में सूर्य, बुध और शुक्र एक साथ एक राशि में हों तो वह अपने गुरुजनों के तिरस्कार को पाकर दुःखी होता है और बाहर चला जाता है, इसके अतिरिक्त स्त्री के कारण भी संतृप्त होता है—**मानसागरी**। यह व्यक्ति सज्जन लोगों से द्वेष करने वाला होता है। इसकी लोक में निन्दा होती है। यह स्त्री के वियोग में या स्त्री के छल के कारण संतप्त रहता है। यह कुशल वक्ता और परदेशगामी होता है।

(11) **रवि-बुध-शनि योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में सूर्य, बुध और शनि एक साथ एक राशि में हों तो वह व्यक्ति सदाचार से रहित होता है, सर्वत्र पराजित

होता है और बन्धु-बान्धवों द्वारा त्याग को प्राप्त होता है और यह विद्वेष के कारण दुःखी
होता है—**मानसागरी**। यह जातक अपने बन्धु-बान्धवों में सम्मान नहीं प्राप्त करता, दूसरे
लोग भी इसके साथ नहीं रहना चाहते, यह निन्द्य कार्यों को करता है, नपुंसकों और नीच
लोगों का साथ करता है—**जातकाभरण**।

(12) रवि-गुरु-शुक्र योग—किसी जातक के जन्म काल में यदि सूर्य, गुरु तथा
शुक्र एक ही घर में एकत्र हों तो वह जातक राज्य में मन्त्री या उच्च अधिकारी होता है,
अपने कर्त्तव्य को करते समय वह दयाहीन होता है, उसके नेत्रों में अपनापन नहीं रहता, वह
उस समय दुष्ट-दृष्टि-सा प्रतीत होता है। इसके अनन्तर वह पण्डित, शूरवीर तथा दूसरों के
कार्य का साधक होता है—**मानसागरी**। यह जातक राजा के आश्रित रहने पर भी दुःखी
और धन से रहित होता है। अपनी बात को कह पाने में असमर्थ होता है, किन्तु वीर,
पराक्रमी तथा दानी-उदारचित्त होता है—**जातकाभरण**।

(13) रवि-गुरु-शनि योग—यदि किसी जातक के जन्म समय में यह तीन ग्रह
एक स्थान में होते हैं तो वह जातक पुत्र-स्त्री तथा मित्रों के सुख से सुखी, निर्भय तथा ऐसे
राजा से, जो पीड़ित करता है, द्वेष मानता है। अपने बन्धु-बान्धवों का पोषण करने वाला
यह जातक सहृदय होता है—**मानसागरी**। यह जातक राजा का प्रिय, स्त्री, पुत्रादिक से
सुखी, मित्रों का स्नेह प्राप्त करने वाला, सुन्दर रूपवान और अपने जीवन को बहुत
सन्तुलित भाव से चलाता हुआ, व्ययशील होता है—**जातकाभरण**।

(14) रवि-शुक्र-शनि योग—यदि किसी जातक का जन्म ऐसे समय में होता है,
जब रवि, शुक्र और शनि एक ही राशि में हों तो वह जातक दुर्भाग्य से पीड़ित, आदर प्राप्ति
से रहित और कला से प्राप्त होने वाले लाभ से वंचित होता है। यह जातक कुष्ठ रोग से
पीड़ित तथा शत्रु के भय से उद्विग्न रहने वाला दुष्टाचारी होता है—**मानसागरी**। यह जातक
शत्रुओं से भयभीत रहता है। इसे सत्कथा तथा काव्यादि नहीं सुहाते हैं, यह त्वचा रोगों से
पीड़ित होता है, चरित्र से हीन, परिजन तथा धन से भी हीन होता है—**जातकाभरण**।

(15) चन्द्र-बुध-मंगल योग—जिस जातक के जन्म समय में यह तीन ग्रह एक
राशि में होते हैं, वह नीच आचरण से युक्त होता है, उसके कर्म धर्मानुकूल न होकर पापमय
होते हैं। इसे लोक में बहुत अपमान प्राप्त होता है तथा यह बन्धुहीन होकर जीता
है—**मानसागरी**। यह जातक हीनता से जीवन व्यतीत करने वाला धन-धान्य से हीन होता
है, अपने जनों में अपमानित तथा नीच लोगों का साथ करता है—**जातकाभरण**।

(16) चन्द्र-मंगल-गुरु योग—जिस जातक के जन्म समय में यह तीन ग्रह एक
राशि में होते हैं, वह जातक स्त्री में आसक्त रहने वाला, वीर्यवान, सुन्दर शरीर, स्त्रियों की
संगति से सुखी तथा चन्द्रमा के समान मुख वाला होता है—**मानसागरी**। यह जातक मनोहर
रूप वाला होते हुए भी अनेकों व्रण चिन्हों से युक्त होता है। यह क्रोधी स्वभाव का होता है।
यह स्त्री में आसक्त रहकर काम-सुख भोगता है—**जातकाभरण**।

(17) चन्द्र-मंगल-शुक्र योग—यदि किसी जातक के जन्म समय में चन्द्रमा के

साथ मंगल तथा शुक्र एक ही राशि में हों तो वह व्यक्ति सुन्दर चरित्र वाली स्त्री का न तो
पुत्र ही होता है, न पति ही अर्थात् उसकी माता तथा पत्नी दोनों ही दुःशील होती है। यह
अधिकतर घर से बाहर भ्रमण करते रहकर जीवनयापन करता है—**मानसागरी**। यह
जातक दुःशीला स्त्री का पति होता है। इसके पुत्र भी इसे दुःख देते हैं तथा यह स्वयं भी
शील से हीन होता है—**जातकाभरण**।

(18) चन्द्र-मंगल-शनि योग—यदि किसी जातक का जन्म ऐसे समय में होता है,
जिसमें चन्द्रमा के साथ मंगल तथा शनि भी एक ही राशि में हों तो वह अपने बालकपन में
मातृविहीन हो जाता है। यह हृदय में बहुत छोटा तथा लोगों से द्वेष मानने वाला और कुटिल
कार्यों को करने वाला होता है—**मानसागरी**। इस जातक को बाल्यावस्था में मातृ वियोग
होता है। यह अपने आगामी जीवन में सुखी नहीं रहता, इसे कलह की आदत होती है तथा
यह अत्यन्त निन्दा प्राप्त करता है—**जातकाभरण**।

(19) चन्द्र-बुध-गुरु योग—यदि किसी जातक के जन्म समय में यह तीन ग्रह
एक ही राशि में स्थित हों तो वह बहुत तेजवान होता है, अपने प्रताप से धनवान तथा
पुत्र-मित्रों के सुख से युक्त, सुन्दर व लोगों को मोहने वाली वाणी बोलने वाला, यशस्वी
होता है—**मानसागरी**। यह जातक विख्यात, उज्ज्वल यश से विभूषित, बुद्धिमान, बलवान
तथा अनेक मित्रों से युक्त होता है। भाग्यवान, सदाचारी, विद्वान होता है।

(20) चन्द्र-बुध-शुक्र योग—यदि किसी जातक के जन्म समय में चन्द्रमा, बुध
और शुक्र एक ही भाव में विद्यमान होते हैं तो वह विद्या युक्त होने पर भी ज्ञान से रहित
ईर्ष्या-द्वेष करने वाला, धन का लोभी और नीचाचार से निन्दा प्राप्त करने वाला होता
है—**मानसागरी**। यह जातक अनेक विद्याओं में निपुण होता है। इसे लोगों से भारी स्पर्धा
होती है, ईर्ष्या भी होती है। इसे अनाचार करने में संकोच नहीं होता, क्योंकि लोभी होता
है—**जातकाभरण**।

(21) चन्द्र-बुध-शनि योग—यदि किसी जातक के जन्म समय में चन्द्रमा, बुध
और शनि एक साथ एक ही भाव में हों तो वह राज्य में मान्य होता है। ज्ञानवान तथा अपने
उच्चाचार के कारण राजा से सदैव आदरणीय रहता है। इसका शरीर बहुत सुन्दर, विशाल
और ऊँचा होता है—**मानसागरी**। यह जातक अनेक विद्याओं का ज्ञानी होता है। यह
विख्यात तथा राजा का प्रिय होता है। ग्राम या नगर का स्वामी, प्रधान या अधिकारी होता
है। यह बहुत विनम्र भी होता है—**जातकाभरण**।

(22) चन्द्र-गुरु-शुक्र योग—जिस जातक के जन्म समय में चन्द्र के साथ गुरु
तथा शुक्र एक ही भाव में स्थित होते हैं, वह व्यक्ति सर्व कलाओं का ज्ञाता, स्वरूपवान,
सच्चरित्र और पण्डित होता है। इसकी माता पवित्र चरित्र वाली अत्यन्त उदार और जातक
को अपने प्यार से सुखी रखती है—**मानसागरी**। यह जातक बहुत भाग्यवान, अपनी
उज्ज्वल कीर्ति से सबको प्रिय तथा बुद्धिमान होता है। इसके सदाचार की सर्वत्र प्रशंसा
होती है, सभी इसका आदर करते हैं—**जातकाभरण**।

(23) चन्द्र-गुरु-शनि योग—किसी जातक के जन्म समय में यदि चन्द्रमा, गुरु और शनि एक ही राशि में होते हैं तो वह व्यक्ति रोग रहित होता है। स्त्री के वशीभूत [illegible] स्त्रियों के साथ रहने से ही यह सुखी होता है। इसे शास्त्रों का ज्ञान होता है तथा यह [illegible] नगर का पालक होता है—**मानसागरी**। यह जातक बहुविधि ज्ञानी और पंडित होता है। [illegible] मन्त्र विद्या को जानने वाला, शास्त्रों का ज्ञाता, मनोहर स्वरूप वाला तथा शक्तिशाली होता है—**जातकाभरण**।

(24) चन्द्र-शुक्र-शनि योग—जो जातक अपने जन्म समय में चन्द्र के साथ शुक्र व शनि को भी एक ही भाव में प्राप्त करता है, वह लिपिकर्त्ता लेखक होता है। उसे वेदों का ज्ञान होता है। इसका जन्म पुरोहित कुल में होता है तथा कथा वांचने वाला होता है।—**मानसागरी**। यह जातक पुरोहितों और वेद शास्त्रों के ज्ञानियों में श्रेष्ठ होता है। [illegible] धर्म परायण, पुस्तक लिखने तथा उन्हें पढ़ने में रत रहता है—**जातकाभरण**।

(25) मंगल-बुध-गुरु योग—जो जातक अपने जन्म काल में मंगल, बुध तथा गुरु को एक ही राशि के अन्तर्गत प्राप्त करता है, वह उत्तम कवि होता है। उसे युवती-स्त्रियाँ प्रेम करती हैं। दूसरों के उपकार में यह सुखी होता है, अपने प्रताप से लोक में कीर्ति प्राप्त करने वाला यह जातक गन्धर्व विद्या में निपुण होता है—**मानसागरी**। यह जातक राजा के समान प्रतापी, अपने कुल में श्रेष्ठ, काव्याकला में प्रशंसा और परोपकार में सदैव तत्पर रहता है—**जातकाभरण**।

(26) मंगल-बुध-शुक्र योग—जो जातक जन्म समय में यह तीन ग्रह एक ही भाव में प्राप्त करता है, वह अस्वस्थ होता है, उसका मन चञ्चल होता है तथा वह कुलहीन होता है। यह जातक अत्यन्त उत्साही तथा प्रत्येक स्थिति से सन्तुष्ट और अधिक बोलने वाला होता है—**मानसागरी**। यह जातक धनी होता है, इसका शरीर दुर्बल व पतला होता है। यह सुन्दर वक्ता तथा अपनी गुणवत्ता की स्वयं ही प्रशंसा करने वाला, चञ्चल, ढीठ तथा सदैव उत्साही होता है—**जातकाभरण**।

(27) मंगल-बुध-शनि योग—इन तीन ग्रहों के एक राशि में होने के समय में जो जातक जन्म लेता है, वह परदेश वासी होता है, उसकी आँखों में रोग होता है, उसके मुख में भी रोग होता है तथा वह हास्यालाप करने में चतुर होता है—**मानसागरी**। यह जातक कुरूप होता है, इसकी आँखें भी अच्छी नहीं होती, इसका शरीर कृश, वन में रहने का प्रेमी, दौत कर्म करने वाला विदेशी, बहुत हँसने वाला सहिष्णु, परन्तु अपराधी होता है।

(28) मंगल-गुरु-शुक्र योग—जो जातक अपने जन्म समय में मंगल, गुरु तथा शुक्र को एक ही राशि में प्राप्त करता है, उसकी पत्नी पतिव्रता होती है। पूरी तरह बुद्धिमान यह स्त्री जातक को सुख देती है। यह अनेक प्रकार के आनन्दों से युक्त राजमान्य होता है—मानसागरी। यह जातक स्त्री-पुत्रादिक से सुखी, राजा का मान्य और अपनी सज्जनता से सबको प्रिय होता है —**जातकाभरण**।

(29) मंगल-गुरु-**शनि योग**—यदि कोई जातक अपने जन्म समय में मंगल, गुरु तथा शनि के एक ही राशि में होने का योग प्राप्त करता है, वह व्यक्ति राजा का प्रिय होता है। उसका शरीर दुर्बल होता है। उसका आचार उत्तम नहीं होता है, वह नीच बुद्धि का निर्धन तथा मित्रों से निन्दित होता है—**मानसागरी**। यह जातक राजा से सदैव आदर पाने वाला, दुबले शरीर वाला होता है। यह मित्रों से कपट करता हुआ, दुराचार से जीवन व्यतीत करता हुआ दयाहीन भी होता है—**जातकाभरण** ।

(30) **मंगल-शुक्र-शनि योग**—यदि किसी जातक के जन्म समय में मंगल, शुक्र तथा शनि एक ही राशि में होते हैं तो वह उत्तम स्वभाव वाला होता है, परदेश में रहने को विवश होता है तथा दुःखी होता है। उसकी स्त्री भी दुःशीला होती है—**मानसागरी**। यह जातक विदेश वासी होता है। इसकी माता अच्छे चरित्र की नहीं होती है। इसकी स्त्री भी दुश्चरित्र होती है तथा सब सुखों से हीन होता है—**जातकाभरण**।

(31) **बुध-गुरु-शुक्र योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में बुध, गुरु तथा शुक्र एक ही भाव में स्थित होते हैं, वह सुन्दर और स्वरूपवान होता है। राज्य से मान्य, शत्रुजयी, सत्याचार से लोक में आदर प्राप्त करने वाला तथा कीर्तिवान होता है—**मानसागरी**। यह जातक राजा का कृपापात्र, बहुत यशस्वी, मनोहर रूप से युक्त, महाबलवान, शत्रुओं को पराजित करता है—**जातकाभरण**।

(32) **बुध-गुरु-शनि योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में बुध, गुरु तथा शनि एक ही राशि में एकत्र हों तो वह सुन्दर स्त्री का पति होता है। बहुत भाग्यवान तथा धन और ऐश्वर्य से पूर्ण, पण्डित तथा धैर्य से अपने कार्यों को साधन करके सुख प्राप्त करता है—**मानसागरी**। यह जातक स्थान का स्वामी, बहुत धनी और ऐश्वर्यवान होता है। इसकी बोलने की शक्ति बहुत होती है। यह धैर्यवान और सदाचारी होता है—**जातकाभरण**।

(33) **बुध-शुक्र-शनि योग**—यदि किसी जातक के जन्म काल में इन तीन ग्रहों का स्थान एक ही राशि में होता है तो वह मुँहफट होता है, जो वचन मुख से निकालता है, वह उचित है या अनुचित इसका ज्ञान किए बिना ही बोलता है। दूसरों की स्त्रियों के साथ रमण करने वाला तथा अधमजनों की संगति में सुख प्राप्त करता है। अपने देश की भक्ति से ओत-प्रोत यह व्यक्ति, अनेक कलाओं का ज्ञाता भी होता है—**मानसागरी**। यह जातक दुष्ट स्वभाव वाला, मिथ्याभाषी, व्यर्थ बोलने वाला, धूर्त, दूर-दूर तक यात्रा करने वाला होता है। हीन स्वभाव का होने पर भी यह अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है—**जातकाभरण**।

(34) **गुरु-शुक्र-शनि योग**—यदि कोई जातक अपने जन्म काल में गुरु, शुक्र तथा शनि को एक ही भाव में प्राप्त करता है तो वह व्यक्ति राजा होता है। उसका यश चारों ओर फैलता है। यदि जातक नीच कुल में भी उत्पन्न होता है तो भी वह राजा के समान प्रतापी व ऐश्वर्यवान होता है। वह शील युक्त, विनम्र तथा सहृदय होता है—**मानसागरी**। यह जातक नीच कुल में जन्म लेकर भी यशस्वी होता है। राजा या राजा के समान सदाचारी और सद्वृति युक्त होता है—**जातकाभरण**।

विशेष—उपर्युक्त ग्रह योग में यह समझ लेना चाहिए कि पाप ग्रहों से युक्त चन्द्रमा

माता को दु:ख देता है। इसी प्रकार सूर्य यदि पाप ग्रहों के साथ हो तो पिता को कष्ट होता है। रवि और चन्द्रमा क्रमश: शुभ ग्रहों से युक्त होते हैं तो पिता और माता के सुखद होते हैं। इसी तरह जिस जन्म कुण्डली में तीन पाप ग्रह एक ही राशि में होते हैं जातक को दु:ख देते हैं। इसके विपरीत यदि तीन शुभ ग्रह एक ही भाव होते हैं तो जातक को सदैव सुखदायक होते हैं।

चतुर्ग्रह योग फल

(1) **रवि, चन्द्र, मंगल और बुध**—जब किसी जातक की जन्म कुण्डली में एक ही भाव में स्थित होते हैं तो वह जातक को लेखक (लिपिकार), चोरी, तस्करी करने तथा उचित-अनुचित का ध्यान किए बिना बहुभाषी बनाते हैं। स्त्रियों में इस जातक की प्रीत बहुत होती है, यह मायावी तथा अपने कार्यों में कुशल होता है—**मानसागरी।**

(2) **रवि, चन्द्र, मंगल और गुरु**—जब किसी जातक के जन्म समय में एक भाव में स्थित हों तो वह व्यक्ति निपुण होता है, हर कार्य को करने की कुशलता उनमें है, धनी तथा तेजस्वी होता है। नीतिशास्त्र का ज्ञाता होने के कारण शोक रहित भी होता है—**मानसागरी।**

(3) **रवि, चन्द्र, मंगल और शुक्र**—जब किसी जातक के जन्म समय में एक भाव में साथ-साथ हों तो उसके पास विद्या और धन का विपुल संग्रह होता है। यह आदि पढ़ने से जीविकोपार्जन करता है। पतिव्रता स्त्री का स्वामी यह व्यक्ति पुत्रादि से सुखी रहता है—**मानसागरी।**

(4) **रवि, चन्द्र, मंगल और शनि**—किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह जातक बुद्धिहीन मूर्ख होता है। शरीर से बौना या कुबड़ा तथा निर्धन माँगने वाला होता है—**मानसागरी।**

(5) **रवि, चन्द्र, बुध और गुरु**—जब किसी जातक के जन्म समय में एक राशि में होते हैं तो वह जातक चित्रकार, धनवान, सुन्दर कांति और नेत्रों से युक्त, रूप व्यक्ति होता है—**मानसागरी।**

(6) **रवि, चन्द्र, बुध और शुक्र**—जब किसी जातक के जन्म समय में एक राशि में हो तो वह व्यक्ति छोटे कद वाला स्वरूपवान होता है। राज्य द्वारा उसकी मान्यता होती है। इसकी वाक्शक्ति बहुत अच्छी होती है और धन और ज्ञान प्राप्त करने को सदैव विकल रहता है—**मानसागरी।**

(7) **रवि, चन्द्र, बुध और शनि**—जिस जातक के जन्म समय में एक ही राशि में स्थित होते हैं, वह उसके माता-पिता द्वारा ही भिक्षुक बना दिया जाता है। उसकी जीविका भिक्षाटन से ही होती है तथा वह आँख का रोगी और निर्धन होता है—**मानसागरी।**

(8) **रवि, चन्द्र, गुरु और शुक्र**—जिस जातक के जन्म समय में एक ही भाव में स्थित हों, वह व्यक्ति राज्य में सम्मान प्राप्त होता है। समुद्र, वापी, नद-नदी, आदि

स्थानों का, तथा वनप्रदेश आदि का भी अधिकारी होता है। अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए कार्यकुशल और सदा सुखी होता है—**मानसागरी।**

(9) **रवि, चन्द्र, गुरु और शनि**—जिस जातक के जन्म सयम में एक ही घर में होते हैं, वह व्यक्ति शरीर से पतला-दुबला परन्तु तेजस्वी होता है। इसके नेत्रों में अद्‌भुत आकर्षण होता है, सौन्दर्य का धनी यह जातक स्त्रियों का प्रिय होता है। इसके अनेक पुत्र होते हैं तथा यह धनी होता है—**मानसागरी।**

(10) **रवि, चन्द्र, शुक्र और शनि**—जिस जातक की जन्म कुण्डली में एक ही भाव में होता है, वह व्यक्ति स्त्रियों की तरह व्यवहार-कार्य को करने वाला होता है, स्वभाव से ही भीरु होता है, शरीर से दुर्बल तथा कोई कुछ न कह दे, इससे डरकर पहले ही कार्य करने लग जाता है—**मानसागरी।**

(11) **रवि, मंगल, बुध तथा गुरु**—यदि किसी जातक के जन्म समय में एक ही भाव में होते हैं तो वह व्यक्ति सूत्रों का रचयिता, विद्वान होता है। शूरवीर होता है तथा चक्र धारण करने वाला प्रतापी होता है। इसके अनन्तर पराई स्त्रियों को भोग करने वाला, अपने आप में दु:खी भी होता है—**मानसागरी।**

(12) **रवि, मंगल, बुध तथा शुक्र**—यदि जन्म समय में किसी जातक की जन्म कुण्डली में एक राशि में स्थित हों तो वह व्यक्ति पराई स्त्रियों की आसक्ति में डूबा रहता है। वह निर्लज्ज भी होता है, दुष्ट तथा चोर और विषम अंग युक्त होता है—**मानसागरी।**

(13) **रवि, मंगल, बुध तथा शनि**—जब किसी जातक की जन्म कुण्डली में एक ही भाव में होता है तो वह व्यक्ति बहादुर, निर्भीक योद्धा होता है। काव्य का रचयिता, उच्चाधिकारी तथा राजमान्य व्यक्ति होता है। इसकी प्रकृति उग्र होती है, अत: जनता को कष्ट देने वाले अपने कार्यों के कारण यह निन्दित होता है—**मानसागरी।**

(14) **रवि, मंगल, गुरु और शुक्र** के योग की स्थिति जब किसी के जन्म काल में एक ही राशि में होती है तो वह लोक में आदर प्राप्त करने वाला मान्य व्यक्ति होता है। वह धनवान राज्य में मान्यता प्राप्त तथा नीतिकुशल होता है—**मानसागरी।**

(15) **रवि, मंगल, गुरु और शनि** नामक चारों ग्रह जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही भाव या राशि में होते हैं तो वह लोक में मुख्यता प्राप्त करने वाला मान्य पुरुष होता है, अपने स्वभाव में कुछ उन्मत्ता से मुख्य, राज्य में मान्य तथा अपने कार्यों को सिद्ध करने में सफल व्यक्ति होता है—**मानसागरी।**

(16) **रवि, मंगल, शुक्र और शनि** एक ही राशि में होने से वह जातक समाज और लोक को द्वेष करता है, वह सबको दोष देता है। उसके आचरण नीचतापूर्ण होते हैं, उसकी आकृति जड़ होती है तथा वह मूर्ख होता है—**मानसागरी।**

(17) **रवि, बुध, गुरु और शुक्र** नामक चारों ग्रह जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में स्थित होते हैं तो वह व्यक्ति तीक्ष्ण बुद्धि होता है। उसके पास धन का अभाव नहीं होता, अपने प्रयोजन के सफल होने से सन्तुष्ट तथा हर्षयुक्त रहता है—**मानसागरी।**

(18) रवि, बुध, गुरु और शनि—जब किसी जातक के जन्म समय में एक ... में होते हैं तो वह व्यक्ति स्वभाव से ही अहंकारी होता है तथा अपने ज्ञान तथा स्थिति ... श्रेष्ठ समझने के कारण स्वभाव से ही झगड़े डालने का आदी होता है। इसके कई ... हैं तथा इसका आचार ल्कीव (नपुंसक) लोगों जैसा होता है। संचित धन का उपभोग ... वाला उद्योग से रहित होता है—**मानसागरी।**

(19) रवि, बुद्ध, शुक्र और शनि—जब किसी जातक के जन्म समय में ... राशि में हों तो वह जातक अनेक मित्रों से शोभा पाता है। इसका हृदय पवित्र विचारों ... युक्त होता है, किन्तु यह बिना इस बात का ध्यान किए कि बात कड़वी है या ... स्पष्टवादी होता है। यह स्वरूपवान, ज्ञानी तथा सुखी होता है।—**मानसागरी।**

(20) रवि, गुरु, शुक्र तथा शनि—नामक चारों ग्रहों के एक राशि में ... जातक के जन्म काल में एक ही भाव में होने पर यह व्यक्ति चारों का प्रिय होता है। ... का प्रेमी तथा कविता का रचने वाला, कला कर्मियों में श्रेष्ठ होता है, राजा इसको सम्मान ... देता है। यह व्यक्ति धन का अत्यन्त लोभी, धन का संग्रह करके सुखी रहता है—मानसागरी।

(21) चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु यदि किसी जातक के जन्म समय में एक ... राशि में होते हैं तो वह व्यक्ति शास्त्रों का ज्ञाता, बुद्धिमान, राजा द्वारा सम्मान को प्राप्त ... वाला तथा लोक में भी आदरणीय होता है—**मानसागरी।**

(22) चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र—यह चार ग्रह जब किसी जातक के जन्म ... समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह जातक अपने बन्धु-बान्धवों से द्वेष रखता ... स्वभाव से ही नीचाचार में रत रहने के कारण झगड़ालू होता है। इसको नींद अधिक आती ... है तथा इसकी पत्नी भी अन्य पुरुषों की अंकशायिनी होती है—**मानसागरी।**

(23) चन्द्र, मंगल, बुध और शनि नामक चारों ग्रह जब किसी जातक के जन्म ... समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह व्यक्ति विमाता युक्त होता है, अर्थात् उसकी दो मा... होती हैं। वह अच्छे व प्रसिद्ध कुल में जन्म लेकर अच्छे स्त्री-पुत्रों का मुख प्राप्त करता ... है—**मानसागरी।**

(24) चन्द्र, मंगल, गुरु और शुक्र नामक चार ग्रहों का योग यदि किसी जातक ... के जन्म समय में एक ही स्थान पर होता है तो वह धनी होता है, स्त्री-पुत्रादिक से भी सुखी ... होता है। वह अपने ज्ञान व विद्या के अभिमान से मानी होता है। वह किसी से भयभीत ... होने वाला साहसी होता है। इसके अंग विकल रहते हैं, अर्थात् यह किसी बात से सन्तुष्ट ... नहीं रहता—**मानसागरी।**

(25) चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि नामक चारों ग्रह जब किसी के जन्म समय में ... एक ही राशि में होते हैं तो वह जातक कर्णदोष से युक्त होता है या हो जाता है। वह उन्मादी ... किसी कार्य को करने के लिए शांत, आरूढ़ रहकर कर देने वाला, वीर व्यक्ति होता है ... उसके पास धन की कमी नहीं होती, जो वचन देता है, उसका पालन करता है—**मानसागरी।**

(26) चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि—जब किसी के जन्म समय में एक ही राशि ... में होते हैं तो वह मलिन भावों व कार्यों को करने वाला होता है। वह अपनी ही बातों को सर्वोपरि मानने वाला, किसी अन्य की उचित सलाह को भी ठुकरा देने वाल ढीठ होता है। उसकी आँखें सर्प की तरह बहुत चञ्चल और चौकन्नी होती हैं। सदैव उद्वेग से चित्त को चलायमान रखने वाला यह व्यक्ति कुलटा स्त्री का पति होता है—**मानसागरी।**

(27) चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र नामक चार ग्रह जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह व्यक्ति शरीर से स्वस्थ व सुन्दर होता है। माता-पिता से यह हीन होता है, इसका ज्ञान बहुत गहन तथा लोक में सम्मानित होता है। यह शत्रु रहित अत्यन्त धनवान होता है—**मानसागरी।**

(28) चन्द्र, बुध, गुरु तथा शनि जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह जातक बन्धु-बान्धवों से युक्त उनका प्रिय होता है। काव्य का रचयिता, लोक में मान्य और प्रतापी होता है। इसका यश चारों ओर फैला होता है तथा यह राजा से मान्य राजमन्त्री धर्माचरण करने वाला होता है—**मानसागरी।**

(29) चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि—जिस जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं, वह व्यक्ति राजा से पूज्य होता है, राजा द्वारा उसे ग्रामादि प्रान्त मुखिया बनाया जाता है, अपने प्रताप व तेज से वह लोक में आदर पाने वाला धनवान व्यक्ति होता है। उसके कई स्त्रियाँ होती हैं। उसे नेत्र रोग से कष्ट प्राप्त होता है—**मानसागरी।**

(30) चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि— जब किसी जातक के जन्म काल में एक ही भाव में स्थित होते हैं तो वह व्यक्ति पराई स्त्रियों के साथ आनन्दोपभोग करने वाला होता है। वह बुद्धिमान तथा पण्डित होता है, निर्धन लोगों पर दया भाव रखने वाला उनका सहायक होता है। इसकी पत्नी स्थूल शरीर वाली होती है—**मानसागरी।**

(31) मंगल, बुध, गुरु तथा शुक्र—जिस जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह स्त्री से झगड़ा व कलह करने वाला होता है, वह धनी तथा अच्छे आचरण वाला विनम्र, शीलवान व्यक्ति होता है। लोक में उसका आदर होता है तथा वह स्वस्थ होता है—मानसागरी।

(32) मंगल, बुध, गुरु तथा शनि—जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह व्यक्ति अपनी शूरवीरता से लोक में प्रख्यात होता है। अपने सत्याचरण से, पवित्र कार्यों को करने से उसे बहुत सम्मान प्राप्त होता है। वह अपने व्रत से नहीं डिगता है, किन्तु वह धनहीन तथा दीन होता है—**मानसागरी।**

(33) मंगल, बुध, शुक्र और शनि—जब यह चार ग्रह किसी जातक के जन्म समय में एक ही घर में होते हैं तो वह अपने माता-पिता के अलावा अन्य लोगों से पोषण करता है या अन्य लोगों की सेवा करके अपनी जीविका चलाता है। इसे कुत्तों से प्रेम होता है। इसका शरीर बलवान और स्वरूपवान होता है। इसे योद्धा के रूप में सब पहचानते हैं—**मानसागरी।**

(34) मंगल, गुरु, शुक्र तथा शनि नामक चार ग्रहों के एक राशि में स्थित योग में

जब कोई जातक उत्पन्न होता है तो वह विषय-वासना में आसक्त होता है। वह अन्य की स्त्रियों में आसक्त होता है तथा मानी और धूर्त होता है—मानसागरी।

(35) **बुध, गुरु, शुक्र और शनि** नामक चार ग्रहों के एक राशि योग में जब जातक जन्म लेता है तो वह बुद्धिमान होता है। उसकी विचारधारा सुबुद्धि जनित होती है। वह शास्त्रों को अध्ययन करते रहने वाला होता है, अपने वचन को पालन करने वाला, तीर्थ का प्रेमी होने से तीर्थाटन करने वाला, परन्तु स्त्रियों में आसक्त होता है—मानसागरी।

पञ्च ग्रह योगफल

(1) **रवि, चन्द्र, मंगल, बुध और गुरु** नामक पाँच ग्रह जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह व्यक्ति बहुत प्रपंची होता है, अपने कार्यों से दुःखी तथा स्त्री के वियोग को प्राप्त होकर दुःखी होता है—**मानसागरी।**

(2) **रवि, चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र** नामक पाँच ग्रह जब किसी के जन्म समय में एक ही राशि में स्थित हों तो वह जातक सत्याचरण से रहित होता है, बन्धु-बान्धवों से हीन होता है, दूसरों के कार्यों को करने वाला तथा नपुंसकों का मित्र होता है—मानसागरी।

(3) **रवि, चन्द्र, मंगल, बुद्ध तथा शनि** जब किसी जातक के जन्म समय एक राशि में इकट्ठे होते हैं, तो वह मनुष्य छोटी आयु का होता है, विफल रहने वाला, दुःखी होता है। इसे पुत्र-सुख प्राप्त नहीं होता तथा इसे जेल में रहना होता है—मानसागरी।

(4) **रवि, चन्द्र, मंगल, गुरु और शुक्र**—पाँच ग्रह जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में एकत्र होते हैं तो वह अत्यन्त दुःखी होता है। माता-पिता के सुख से वंचित होता है, परन्तु हाथी पालने वाला होता है—**मानसागरी।**

(5) **रवि, चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि**—किसी के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह जातक दूसरे के धन का अपहरण करने वाला होता है। योद्धा, परन्तु दूसरों को कष्ट देने वाला दुष्ट हृदय होता है तथा यह जातक अपनी सामर्थ्य से बहुत अधिक अभिमानी तथा कठोर होता है—**मानसागरी।**

(6) **रवि, चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि**—जब किसी के जन्म समय में एक राशि में स्थित होते हैं तो वह जातक सम्मान तथा आदर से रहित होता है, इसके आचरण अच्छे नहीं होते हैं तथा धन से दीन होता है। इसकी आसक्ति पराई स्त्रियों में होती है—मानसागरी।

(7) **रवि, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र**—जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह जातक राज्य में मान्य व्यक्ति या राजमन्त्री होता है। वह धनी, यन्त्रों की कला व विद्या को जानने वाला, दण्डनायक, लोक में प्रख्यात व कीर्तिवान व्यक्ति होता है—मानसागरी।

(8) **रवि, चन्द्र, बुध, गुरु और शनि** नामक पाँच ग्रह जिस जातक के जन्म समय में एक राशि में होते हैं, वह व्यक्ति उन्मादी या उन्माद रोग से पीड़ित होता है। दूसरों के दिये गये भोजन पर जीवनयापन करने वाला, मित्रों से निरादर व कष्ट पाकर दुःखी और अपमानित होता है। यह हीनताएँ उसे धूर्त और क्रूर बना देती हैं—**मानसागरी।**

(9) **रवि, चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि** जब किसी जातक के जन्म काल में एक ही राशि में होते हैं तो वह जातक धन, पुत्रों के सुख से हीन और वंचित हो जाता है। यह व्यक्ति अपने शरीर पर अधिक लोकयुक्त होता है। इसका कद लम्बा होता है तथा इसे कोई भी अत्यन्त साहस का कार्य करने से भय नहीं लगता, सदैव मृत्यु को गले लगाने को तत्पर रहता है—मानसागरी।

(10) **रवि, चन्द्र, गुरु, शुक्र और शनि** नामक पाँच ग्रह जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में स्थित होते हैं तो वह बुद्धिमान, ज्ञानी और सुन्दर वाणी बोलने वाला होता है। यह समर्थ तथा विनययुक्त मधुर आचरण वाला होता है। चञ्चल चित्त स्त्रियों का प्रिय ऐन्द्रजालिक होता है—**मानसागरी।**

(11) **रवि, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र** नामक पाँच ग्रह जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं तो वह जातक स्वच्छ हृदय, सदाचार से युक्त और राजा का प्रिय होता है। उसके पास सुन्दर-सुन्दर अश्व होते हैं। अनेक स्त्रियों का भोग करने में आसक्त, धनी, राजा की तरह प्रतापी और स्वस्थ शरीर, सुन्दर होता है—**मानसागरी।**

(12) **रवि, मंगल, बुध, गुरु और शनि** का योग जिस जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होता है, वह व्यक्ति रोगी होता है, उसका मन कभी शान्त नहीं रहता है, वह तेजहीन, अनुत्साही तथा वृद्ध के समान होता है और भीख माँगकर उदर पूर्ति करता है—मानसागरी।

(13) **रवि, मंगल, बुध, शुक्र और शनि** का योग जिस जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होता है, वह व्यक्ति रोगों से ग्रस्त तथा शत्रुओं से पीड़ित रहता है और अपने स्थान से भ्रष्ट हो जाता है। भूखा रहकर दुःख भी उठाता है—**मानसागरी।**

(14) **रवि, मंगल, गुरु, शुक्र तथा शनि** का योग जिस जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होता है, वह व्यक्ति विद्वान होता है, गम्भीर विचारों वाला एवं सक्षम, धातु-यन्त्रों को बनाने वाला तथा रसायन विद्या का जानकार होता है। वह मनुष्य अपने विवेक से अच्छे कार्यों को करने वाला लोक में विख्यात होता है—**मानसागरी।**

(15) **रवि, बुध, गुरु, शुक्र और शनि** नामक पाँच ग्रह जिस जातक के जन्म समय में किसी एक राशि में होते हैं तो वह व्यक्ति बहुत धन का भोगी होता है। उसके उदर में आँव रोग होने से उसे कष्ट होता है तथा कानों से विकल होता है। यह व्यक्ति शास्त्रों का जानकार, विद्वान तथा लोक में मान्य होता है—**मानसागरी।**

(16) **चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र**—जिस जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होते हैं, वह उसे साधु पुरुष बनाते हैं। वह लोगों का कल्याण करते रहने के विचारों से युक्त और धन-विद्या से पूर्ण होता है। उसके कई पुत्र होते हैं तथा वह अपना जीवन सुख से व्यतीत करता है—**मानसागरी।**

(17) **चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि** का योग जिस जातक की जन्म कुण्डली

में एक ही भाव में होता है, वह दूसरे के भोजन पर जीवित रहता है, वह मलिन ... वाला नहीं होता है। विप्र वर्ण का यह व्यक्ति याचना पर जीवनयापन करता है—मानसागरी।

(18) **चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि** का एक राशि में होने का ... जातक के जन्म समय में होता है, वह व्यक्ति दुर्भाग्यवान होता है, मलिन होता है ... होता है। वह अन्य लोगों की सेवा में रहने वाला सेवक, निर्धन तथा पुंसत्वहीन ... है—मानसागरी।

(19) **चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि** का एक ही राशि में जिस जातक ... जन्म कुण्डली में साथ होता है, उसके अनेक मित्र होते हैं, शत्रु भी बहुत होते हैं। ... स्वभाव से दुष्ट तथा आचार से दुःखी होता है। अभिमानी प्रकृति का यह ... कष्ट देने वाला होता है—मानसागरी।

(20) **चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि**—पाँच ग्रह जिस जातक के जन्म समय ... एक ही राशि में स्थित हों तो वह व्यक्ति स्वयं राजा या राजा के तुल्य या राजमंत्री होता है। वह लोक में मान्य, आदर प्राप्त करने वाला और गुणवान होता है—मानसागरी।

(21) **मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि**—नामक पाँच ग्रह यदि किसी के जन्म समय में एक ही राशि में हों तो वह जातक आलस्य से घिरा रहने वाला, तामस भाव से ... प्रकृति का उन्मादी होता है। उसे सदैव निद्रा घेरे रहती है, किन्तु यह राजा का प्रिय होता है—मानसागरी।

षष्ठ ग्रह योग फल

(1) **रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र** नामक छः ग्रह जब किसी जातक के जन्म काल में एक ही राशि में होते हैं तो वह विद्या, धर्म, कर्म तथा धन-धान्य से पूर्ण अनेक प्रकार के भोगों को भोगने वाला भाग्यवान होता है—मानसागरी।

(2) **रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शनि** नामक छः ग्रहों का जिस जातक के जन्म समय में एक ही राशि में होने का योग होता है, वह दूसरों के कार्यों को करके ... सुख देता है, अपने धन से भी वह उनकी कठिनाई दूर करने वाला दाता होता है, हृदय से पवित्र तथा प्रत्येक क्षण कुछ-न-कुछ करने के लिए आतुर रहता है। इसके सामने शत्रु पराजित रहते हैं—मानसागरी।

(3) **रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि**—जब किसी जातक के जन्म समय में एक भाव में होते हैं, तो वह व्यक्ति लोक में विख्यात शत्रुओं को जीतने वाला, युद्ध में अग्रणी वीर और मानी होता है। शरीर से स्वस्थ, सुन्दर तथा संशय युक्त होता है, ... उसे सहज ही दूसरों का विश्वास नहीं होता है। विवाद करने इसके स्वभाव में ... है—मानसागरी।

(4) **रवि, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि**—जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही भाव में स्थित होते हैं तो वह अपनी स्त्री का प्रिय होता है, उसे युद्ध कार्य में बहुत

उत्साह होता है, उसे किसी विषय में भ्रम नहीं होता, शीघ्र ही निर्णय लेता है। वह क्रोध और लोभ पर विजय प्राप्त नहीं कर पाता है—मानसागरी।

(5) **रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि**—जब किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में स्थित होते हैं तो वह व्यक्ति अपनी स्त्री को जल्दी ही खो देता है और उसका धन भी उसे त्याग देता है, किन्तु परिश्रम, विवेक और बुद्धि से धैर्य धारण करते हुए भी राजमन्त्री होता है तथा वह शत्रुओं को क्षमादान देने वाला होता है—मानसागरी।

(6) **चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि** नामक छः ग्रह यदि किसी जातक के जन्म समय में एक ही राशि में स्थित हों तो वह धनवान होता है, राजमन्त्री, इन्द्रियों का निग्रह करने वाला, पवित्र विचारों से युक्त तथा अनेक पत्नियों का सुख भोगने वाला, राजा का प्रिय, उच्च अधिकारी तथा प्रतापी होता है—मानसागरी।

(7) **रवि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि**—यदि किसी जातक के जन्म समय में एक ही भाव में स्थित हो तो वह धन, स्त्री तथा पुत्र से हीन होता है। वह तीर्थों का भ्रमण करने वाला या वनाश्रित होता है—मानसागरी।

सप्तग्रह योग फल

यदि किसी जातक के जन्म समय में सातों ग्रह एक ही राशि में हों तो वह व्यक्ति सूर्य के समान प्रतापी होता है, उसके तेज से समस्त लोक प्रभावित होता है। वह महादेव का भक्त, दाता तथा धनवान होता है। ■

ग्रहों का दृष्टिफल

कोई ग्रह जब किसी राशि में होता है तो वह उस राशि में अपनी स्थिति के अनुसार प्रभावोत्पादक होकर जिस तरह फल देता है, उसी तरह यह भी समझ लेना चाहिए कि उसके रश्मि-मार्ग में जो भी ग्रह या राशि क्षेत्र आते हैं, उनका प्रभावित होना भी स्वाभाविक है, अतः ऐसे प्रभाव के कारण भी फल होता है। जो फल इस तरह होते हैं, वह ग्रहों के दृष्टि-फल कहे जाते हैं। ग्रहों के रश्मि चक्र को उनकी दृष्टि के नाम से जाना जाता है। जिस राशि में जो ग्रह होता है, उससे सातवीं राशि उस ग्रह के पूर्ण रश्मि क्षेत्र में होती है, अतः उसे उस ग्रह की पूर्ण दृष्टि कहा जाता है। जो राशियाँ ग्रहों के पूर्ण दृष्टि क्षेत्र में नहीं होती या जो उनके दृष्टि क्षेत्र में होती ही नहीं, उन पर निम्नांकित रूप से ग्रहों की चतुर्थांश, अर्द्धांश या त्रि-चतुर्थांश दृष्टि होती है। इनको ग्रहों की एक चरण, दो चरण या तीन चरण दृष्टि भी कहते हैं।

प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से **तीसरे तथा दसवें स्थान को एक चरण** से देखता है। अपने स्थान से **पाँचवें और नवें** स्थानों को वह **दो चरण दृष्टि** से देखता है। अपने स्थान से **चौथे तथा आठवें** भावों को ग्रह **तीन चरण** से देखने वाले कहे जाते हैं। सातवें स्थान को वह **पूर्ण** (चारों चरण) दृष्टि से देखते हैं।

मंगल, गुरु तथा शनि की विशेष रूप से सातवें घर पर पूर्ण दृष्टि के अलावा भी निम्नलिखित घरों पर पूर्ण दृष्टि होती है—

(क) मंगल अपने स्थान से चौथे तथा आठवें स्थानों को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है, अर्थात् अपने घर से चौथे, सातवें तथा आठवें घर पर मंगल की पूर्ण दृष्टि होती है।

(ख) गुरु अपने स्थान से पाँचवें तथा नवें स्थानों को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है, अर्थात् अपने घर से पाँचवें, सातवें, तथा नवें घर पर पूर्ण गुरु की पूरी दृष्टि होती है।

(ग) शनि अपने स्थान से तीसरे तथा दसवें भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है, अर्थात् शनि अपने घर से तीसरे, सातवें तथा दसवें घर पर पूर्ण दृष्टि रखता है।

एक ग्रह की दूसरे ग्रह पर जो दृष्टि होती है, उसका भी वही महत्व है, जो एक ग्रह का दूसरे ग्रह के साथ एक ही भाव में रहने का होता है। ग्रह एक-दूसरे से दृष्ट होने पर जो फल देते हैं, उनके सम्बन्ध में जो विशेष निष्कर्ष प्राचीन ज्योतिर्विदों ने प्राप्त किए हैं, वह उस सामान्य प्रभाव के अतिरिक्त है, जो ग्रहों के परस्पर शत्रु, मित्र, अधिमित्र, सम, शत्रु या अधिशत्रु होने के कारण होते हैं। इस सम्बन्ध में जो रूढ़ निष्कर्ष प्रतिपादित किए गए हैं,

उनकी भी फलादेश करते समय सामान्य रूप से मित्र या शत्रु ग्रहों की दृष्टि के फलों से उपयोग में लाना चाहिए, जो भी फल ग्रहों की दृष्टि के बारे में ज्योतिर्विदों द्वारा कहे गए हैं, वह उनकी पूर्ण दृष्टि के हैं। साधारणतः ग्रहों की पूर्ण दृष्टि को ही फलादेश करते समय विशेष रूप से अधिक महत्व दिया गया है, क्योंकि इसका प्रभाव पूर्ण होता है। अतः निम्नांकित फल उनकी पूर्ण दृष्टि के ही फल हैं।

(1) मेष तथा वृश्चिक राशि में सूर्य के स्थित होने पर

चन्द्र दृष्टि फल—मेष या वृश्चिक राशि में सूर्य हो तथा उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो ऐसा योग जिस जातक की कुण्डली में होता है, वह दान-धर्म को करने वाला, बहुत सारे नौकर-चाकरों से सेवा प्राप्त करके सुखी होता है। वह जातक अपने घर पर रहने में ही सुख मानता है तथा उसका तन कोमल और निर्मल होता है।

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है, वह व्यक्ति क्रूर, संग्राम प्रिय तथा क्रोधी होता है। उसके नेत्र लाल और चरण भी रक्तिम होते हैं। वह बहुत बलवान होता है।

बुध दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में यह योग होता है, वह सत्व से युक्त नहीं होता है। उसके पास धन और सुख भी नहीं होता। वह अपनी निर्धनता के कारण तथा अपनी स्थिति के कारण सदैव मलिन चिन्ताकुल रहता है। परदेश में रहकर नौकरी करता है और दूसरों के वशीभूत रहता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में यह योग होता है, वह व्यक्ति बहुत दानी होता है, दयालु और सदैव परोपकार करने वाला होता है। इसके पास धन का अभाव नहीं होता है। राज्य में उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है तथा अपने वंश में श्रेष्ठ होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में यह योग होता है, उसकी गति अधम तथा दुष्चरित्र स्त्रियों में होती है। वह उन्हीं के अधीन रहता है। धन से हीन रहकर दुष्कर्म करने वाले लोगों के साथ रहकर धन प्राप्त करने में लगा रहता है। इसको चर्म रोग होता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में यह योग होता है, वह अपने प्रति हीन भावना से युक्त मलिन तथा दीन होता है। उसकी बुद्धि विपरीत कार्यों को करती है और उसके दुःख-दरिद्र का कारण बनती है। वह [illegible] और दुःखी होता है।

(2) वृष तथा तुला राशि में सूर्य के स्थित होने पर

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है, वह वेश्या को प्रेम करने वाला, अधिक स्त्रियों के साथ रमण करने में आसक्त तथा जल के संयोग से जीविका चलाने वाला होता है।

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में इस प्रकार का योग होता है, वह अनेकों स्त्रियों में आसक्त होता है और उनमें प्रीति रखता है। वह बहुत कुटिल, धूर्तता में लिप्त, क्रूर कर्मों को करने में कोई भी संकोच नहीं करता है। यह अत्यन्त साहसी, वीर होता है। इसकी प्रकृति कफ होती है।

बुध दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में इस प्रकार का योग होता है, वह व्यक्ति धूर्त होता है, राजा का सेवक होने से अपने अधिकार का दुरुपयोग करता है। यह तेजस्वी तथा विद्वानों द्वारा आदर प्राप्त करता है। लेखाकार्य में निपुण, बुद्धिमान भी होता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में इस प्रकार का योग होता है, वह व्यक्ति देवालय, बाग-बगीचा, तालाब, कुँए, बावड़ी बनाने में तत्पर रहता है। अपने लोगों के बीच सम्मान प्राप्त करने वाला तथा उनका प्रिय होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में इस प्रकार का योग होता है, उसे चर्म रोग हो जाता है, वह क्रोध में अपना ही अहित करने वाला, अपयश प्राप्त करने वाला होता है। यह कभी उत्सव नहीं मनाता है, अपने ही लोगों से त्यागा जाकर कष्ट उठाता है तथा इसके मन में दया नहीं होती है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में इस प्रकार का योग होता है, वह शठतापूर्ण कार्यों को करने वाला, दूसरे के बने बनाये कार्यों में विघ्न डालकर बिगाड़ने वाला तथा अपने बन्धु-बान्धवों को अनेक प्रकार से सन्ताप देता है।

(6) धनु और मीन राशि में सूर्य के स्थित होने पर

चन्द्र दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह व्यक्ति बहुत सुन्दर होता है, वाणी विलास से स्वयं तथा अन्य लोगों को आनंदित करने वाला स्त्रियों का प्रिय होता है। यह जातक अपने कुल की कीर्ति को बढ़ाता है।

मंगल दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह व्यक्ति युद्धप्रिय और साहस के कार्यों को करने में अग्रणी होता है। यह अपने शत्रुओं को विजय करता है। बोलने तथा भाषण करने में चतुर होता है तथा यह विरक्त लोगों की संगति में सुख अनुभव करता है।

बुध दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह व्यक्ति धातु क्रिया के अन्तर्गत धातु से बनने वाली वस्तुओं को बनाने में चतुर, काव्य कला में निपुण होता है, इसकी वाणी सुख देने वाली और सत्याचार से युक्त होती है। अपने विचारों को यह गुप्त रखता है और अपनी सद्‌मंत्रणा द्वारा सबका भला करता है। यह सज्जन व्यक्तियों का प्रिय होता है।

गुरु दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह व्यक्ति राजा का मंत्री होता है, अपने कुल में श्रेष्ठ कलाओं का ज्ञाता, विधि का पंडित, धन-धान्य से सम्पन्न तथा विद्वानों में अपना श्रेष्ठ स्थान रखने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह व्यक्ति सुगन्धित, पुष्प, चन्दन आदि पदार्थों का सेवन करने वाला तथा अन्य भोग्य पदार्थों का भोग करने वाला और सुन्दर वस्त्राभूषण करके आनन्दित होता है।

शनि दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह व्यक्ति दूसरों के अन्न का भोग करने वाला, नीच कर्मों में रत रहकर जीविका प्राप्त करता है। यह पशुओं के पालन में आनन्द लेता है। दीनावस्था को प्राप्त हुआ यह जातक दूसरों का सदा मुखापेक्षी रहता है।

(7) मकर और कुम्भ राशि में सूर्य के स्थित होने पर

चन्द्र दृष्टि फल—इस योग में जिस जातक का जन्म होता है, वह स्त्रियों की आसक्ति के कारण बहुत धन का नाश करता है। उनके प्रेम में वह निर्धन हो जाता है। उसका स्वभाव चञ्चल, कपट भाव से दूसरों को धोखा देने वाला होता है।

मंगल दृष्टि फल—इस योग में जिस जातक का जन्म होता है, वह व्यक्ति दूसरों के लड़ाई-झगड़े एवं विवाद से धन का नाश कर देता है। रोग और शत्रु से पीड़ित होता है। वह शरीर से विकल और सदैव चिन्ताओं से घिरा रहता है।

बुध दृष्टि फल—इस योग में जिस जातक का जन्म होता है, वह व्यक्ति नपुंसक की तरह की प्रकृति वाला होता है। यह बहुत साहसी और वीर होता है। अपनी कठोरता से यह दूसरों के वित्त (आजीविका) का भी हरण कर लेता है। इसे साधुजन पसन्द नहीं करते हैं और वह इससे दूर रहते हैं।

गुरु दृष्टि फल—इस योग में जिस जातक का जन्म होता है, वह व्यक्ति सज्जन होता है, सत्कर्म करके यह बहुत सत्कार प्राप्त करता है, बुद्धिमानीपूर्वक यह अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करता है, यह बहुत लोगों का पालन करके सुख देता है और इसका यश चारों ओर फैलता रहता है।

शुक्र दृष्टि फल—इस योग में जो जातक जन्म लेता है, वह व्यक्ति शंख, मोती, मूँगा, आदि रत्नों का व्यापार करके धन लाभ करता है। उसे स्त्रियों के द्वारा भी धन प्राप्त होता है। सुन्दर स्त्रियाँ उससे प्रसन्न रहती हैं।

शनि दृष्टि फल—इस योग में जिस जातक का जन्म होता है, वह व्यक्ति अपने उज्ज्वल और प्रचण्ड प्रताप से शत्रुओं के पक्ष को पराजित कर देता है। यह राजा का कृपापात्र होता है और चारों तरफ अंमित प्रतिष्ठा प्राप्त करके लोक में विख्यात होता है। इस जातक को लोक में सभी प्यार और आदर करते हैं।

(8) मेष राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में यह योग होता है, वह व्यक्ति उग्र स्वभाव का होता है, परन्तु ऐसा होने पर भी सज्जन लोगों के सामने नम्र हो जाता है। यह

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है, वह व्यक्ति अत्यन्त बलवान तथा पौरुष से युक्त होता है। युद्ध में शत्रुओं को पराजित करके प्रसन्न होता है। अपने साहस से यह जातक धन का लाभ करता है तथा इसका शरीर कृश होता है।

बुध दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है, वह व्यक्ति संगीत, काव्य और कलाओं में तथा लेखानादि में बहुत रुचि रखता है। काव्य की रचना करने वाला, अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। यह सदैव प्रसन्न रहने वाला और सुखी होता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है, वह जातक अपनी कुल परम्परानुसार राज्य में मंत्री या ऊँचे अधिकारी का पद प्राप्त करता है। वह वस्त्राभूषण का प्रेमी, सुन्दर-सुन्दर बहुमूल्य रत्नों का स्वामी होता है। वह दीन कर्म करने से डरने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है, वह व्यक्ति सुन्दर नेत्रों और सुकुमार स्वरूपवान शरीर से सबको आकर्षित करता है। वह लोक में मान्य तथा मुखिया होता है। उसके मित्र तथा शत्रु दोनों ही बहुत होते हैं। वह जातक विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं से युक्त रहता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है, वह धन-हीन तथा दीन व्यक्ति होता है। उसे आलस्य घेरे रहता है तथा अकेले कार्यों को आलस्य के कारण बिगाड़ लेता है। इसकी मनोवृत्ति अपनी स्त्री की मनोवृत्ति से भिन्न होती है। यह साधुता के विपरीत व्यवहार करता है और रोगी होता है।,

(3) मिथुन और कन्या राशि में सूर्य के स्थित होने पर

चन्द्र दृष्टि फल—यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह अपने मित्रों तथा शत्रुओं दोनों से दुःख प्राप्त करता है। विदेश गमन करने पर धन की हानि करता है और सदैव उद्वेग से युक्त रहता है।

मंगल दृष्टि फल—यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह शत्रुओं के कलह से विपन्न रहता है, उसे सदा दैन्य घेरे रहता है और वह हर जगह नीचा देखता है। अपनी हीन भावना के जागृत रहने से वह लज्जावान और आलसी हो जाता है।

बुध दृष्टि फल—यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह राजा से आदर प्राप्त करता है, धन भी प्राप्त करता है। वह सन्तान से सुखी रहता है तथा शत्रु से भी उसे धन प्राप्ति होती है।

गुरु दृष्टि फल—यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह व्यक्ति अपने विचार व मन्त्रणा को गुप्त रखता है अपने विचार से स्वतन्त्र होता है, स्त्री-पुत्रादि, परिजनों तथा बन्धु-बान्धवों की सम्पन्नता और सुख-ऐश्वर्य के कारण गर्व अनुभव करता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह परदेश में रहकर सुख व आनन्दोपभोग करता है। वह विदेश में राजकार्य से निवास करता है और तरह-तरह के विलास का भोग करता है। यह अत्यन्त चञ्चल होता है। इसको विष, अग्नि या शस्त्र से आहत होने का भय होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह व्यक्ति चालाक होता है। वह दूसरों की सेवा में रत रहता हुआ, स्वामी के हित की कभी न सोचने वाला तथा अपनी मूर्खता से उसे दुःख ही देता है, स्वयं भी दुःखी रहता है। इसका चित्त सदा उद्विग्न और उद्वेग से पूर्ण रहता है।

(4) कर्क राशि में सूर्य के स्थित होने पर

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्मांग चक्र में यह योग होता है, वह व्यक्ति जलोत्पन्न पदार्थों के व्यापार से अतिधनी हो जाता है। यह व्यक्ति स्वयं राजा या राजमन्त्री होता है।

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक के जन्मांग चक्र में यह योग होता है, वह अपने बन्धु वर्ग से उदासीनता ग्रहण किए रहता है। उसे भगन्दर तथा शोथ रोग से पीड़ा होती है।

बुध दृष्टि फल—जिस जातक के जन्मांग चक्र में यह योग होता है, वह व्यक्ति विद्या, कीर्ति तथा सम्मान प्राप्त होता है। उसे राजा की कृपा से धन का सदैव लाभ होता है। वह जातक लोक में विख्यात, शत्रु से रहित होता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक के जन्मांग चक्र में यह योग होता है, वह व्यक्ति अपने कुल का दीपक, निर्मल कीर्ति से लोक में प्रकाशित तथा राजा की कृपा से अनेक पदार्थों को प्राप्त करके सुखी होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्मांग चक्र में यह योग होता है, वह व्यक्ति स्त्री के द्वारा लाभान्वित होता है। स्त्री या स्त्रियों के आश्रय से उसे वस्त्र तथा धन आदि प्राप्त होते रहते हैं। वह स्वयं स्त्रियों के आश्रित होने से हीन मनोवृत्ति से ग्रस्त हो जाता है, अतः यह दूसरों के पुरुषार्थ तथा उत्कर्ष से जलता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्मांग चक्र में यह योग होता है, वह व्यक्ति कफ तथा वात का रोगी होता है, चुगलखोरी करके द्वेषभाव फैलाने से आनंदित होता है। इसे अन्य लोगों के कार्यों को बिगाड़ने में सुख मिलता है। वह स्वयं बहुत दुःखी और कष्ट में रहता है। इसका स्वभाव चञ्चल होता है।

(5) सिंह राशि में सूर्य के स्थित होने पर

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में इस प्रकार का योग होता है, वह व्यक्ति धूर्त होता है, परन्तु अपनी गम्भीरता से धूर्तता को छिपाने में सफल भी होता है। यह व्यक्ति राजा के द्वारा मान्य होता है तथा अपने पुरुषार्थ और राजकृपा से धन लाभ प्राप्त करता है। यह लोक में विख्यात होता है।

धीरज युक्त, राजा से आदर भी प्राप्त करने वाला होता है तथा इसे झगड़ा-फसाद से डर लगता है।

भौम दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में यह योग होता है, उसे अग्नि, वायु (तूफान) और शस्त्र से भय होता है। उसे मूत्रकच्छ रोग होता है। किसी महान व्यक्ति के आश्रय से सुखी होता है। इसे दाँतों और नेत्र के रोगों से दुःख होता है।

बुद्ध दुष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में यह योग होता है, वह सभी विद्याओं में प्रवीण होता है, उसके पास धन-धान्य की कमी नहीं होती, इसकी कीर्ति सब ओर फैलती है और इसे सब लोग चाहते हैं।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में यह योग होता है, वह व्यक्ति राजा या राजमंत्री होता है। इसके अतिरिक्त वह उच्च अधिकारों से युक्त प्रभावशाली तथा प्रतापवान होने से बहुत सम्मान प्राप्त करता है। इसके पास सम्पत्ति का अभाव नहीं होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में यह योग होता है, वह मनुष्य वस्त्राभूषण, धन, स्त्री, पुत्र आदि के सुख को पाने वाला होता है। सुन्दर भाषण करने वाला तथा अनेक प्रकार के भोगों को भोगने वाला यह क्रोध रहित शान्त चित्त व्यक्ति होता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में यह योग होता है, वह व्यक्ति रोगी होता है, निर्धन तथा मनहूस होता है। यह असत्य वाणी बोलने वाला तथा लोक में अनादर प्राप्त करता है।

(9) वृष राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

सूर्य दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह कृषि कर्म करके जीविकोपार्जन करता है तथा व्यवहार-विधि का ज्ञाता, गम्भीरतापूर्वक अपनी मंत्रणा तथा योजनाओं को गुप्त रूप से देने वाला, धनवाहानादि युक्त, अपने कार्य साधन में सदैव संलग्न रहता है।

भौम दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह स्त्रियों के हृदय को हरण करने वाला सुन्दर व्यक्ति होता है। उनके साथ कामासक्त रहता हुआ वह उन्हें तृप्त करता है तथा इसे सज्जन लोग प्यार करते हैं, इसकी विचारधारा बहुत पवित्र होती है तथा यह सदैव प्रसन्नचित्त रहता है।

बुध दृष्टि फल—इस योग में जो जातक जन्म लेता है, वह मनुष्य पण्डित, व्यवहारकुशल, सामाजिक तथा न्यायिक व्यवहार को जानने वाला, सबका हितैषी, दयालु और गुणवान होता है।

गुरु दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह व्यक्ति स्त्री, पुत्रादि से सुखी होता है, वह धार्मिक कार्यों को करने वाला, माता-पिता का भक्त होता है। उसकी सुन्दर कीर्ति का गान करते हुए लोग गद्-गद् होते हैं।

शुक्र दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह व्यक्ति वस्त्र, आभूषण तथा भवन, आसन, शय्या, सुगन्ध, माला आदि भोग्य वस्तुओं से युक्त होता है। उसके यहाँ पशुधन का भी कोई अभाव नहीं होता है।

शनि दृष्टि फल—जो जातक इस योग में जन्म लेता है, वह अपने माता-पिता के लिए अशुभ होता है। अन्य शुभ ग्रह कुण्डली में कोई शुभ योग न बनाते हों तो दोनों में से किसी-न-किसी की मृत्यु होती है।

(10) मिथुन राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म लेता है तो वह व्यक्ति विद्वान, अनेक तरह के ज्ञान से युक्त पण्डित होता है। वह सबके प्रति विनम्र तथा सब लोगों को प्रसन्न करने के लिए तत्पर रहने वाला होता है। इस जातक के पास धन का अभाव होता है। इसे कई प्रकार से कष्ट भी होता है।

मंगल दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म लेता है तो वह व्यक्ति बुद्धिमान, शौर्य से प्रचण्ड, शत्रुओं को परास्त करने वाला, विवेकयुक्त और धनवान होता है। इसके पास उत्तम वाहन होते हैं तथा इसकी स्त्री अत्यन्त उदार और परोपकार करने वाली होती है।

बुध दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म लेता है तो वह व्यक्ति धीर, वीर और सदाचारी होता है। उसका हृदय उदार तथा वह राजा से धन लाभ करने वाला होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म लेता है तो वह व्यक्ति विद्या-विवेक से सम्पन्न, धनवान तथा विख्यात होता है। उसकी विनम्रता की चारों तरफ प्रशंसा होती है, वह विनयी और पुण्यात्मा होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म लेता है तो वह व्यक्ति, सुन्दर-सुन्दर मदमाती स्त्रियों को भोग करने वाला, मूल्यवान वस्त्राभूषण धारण करने वाला और उत्तम वाहनों पर आरूढ़ होकर सुख का विभिन्न प्रकार से भोग करता है।

शनि दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म लेता है तो वह धन, वाहन, स्त्री-पुत्रादि के सुख से हीन होता है।

(11) कर्क राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब कोई जातक जन्म के समय इस योग को प्राप्त होता है तो वह लोगों को व्यर्थ ही कष्ट देता है। राजा के आश्रित रहकर यह शक्ति सम्पन्न किले का अधिकारी होता है, परन्तु यह अपने प्रभुत्व का दुरुपयोग करता है।

भौम दृष्टि फल—जब कोई जातक जन्म के समय इस योग को प्राप्त करता है तो वह सब प्रकार से दक्ष तथा शूरवीर होता है। इसका शरीर दुर्बल होता है तथा इसको अपनी माता के विरोध में ही सुख मिलता है।

बुध दृष्टि फल—जब कोई जातक जन्म के समय इस योग को प्राप्त करता है तो वह स्त्री-पुत्र, धन-धान्य से सुखी होता है। वह मनुष्य नीतिज्ञ, सेनापति तथा राजमन्त्री होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म लेता है तो वह राजा का विश्वासपात्र, स्वामीभक्त अधिकारी होता है। वह बहुत गुणी, नीतिशास्त्र को जानने वाला, धनी तथा पराक्रमी होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म लेता है तो वह विभिन्न प्रकार के रत्न-आभूषण, स्वर्ण तथा अनेकों अलभ्य भोग पदार्थों तथा सुन्दर स्त्रियों को प्राप्त करने वाला होता है।

शनि दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म ग्रहण करता है तो वह असत्य भाषण करने वाला, सत्य के आधार से दूर, मिथ्याचार को प्राप्त करने वाला होता है। व्यर्थ ही इधर-उधर घूमता है तथा माता से विरोध रखता है। इसके कर्म नीच होते हैं तथा इसके पास धन नहीं होता है।

(12) सिंह राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

सूर्य दृष्टि फल—जब किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह मनुष्य गुणी, राजा का प्रिय पात्र, उच्च पद पर आसीन होता है। इस व्यक्ति की प्रशंसा चारों तरफ होती है और इससे किसी को कष्ट नहीं मिलता, परन्तु यह सन्तान के लिए दुःखी होता है।

भौम दृष्टि फल—जब किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह व्यक्ति धन, स्त्री, वाहनादि का आनन्द भोगने वाला होता है।

बुध दृष्टि फल—जब किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह व्यक्ति धन, स्त्री, वाहन तथा सन्तानादि के सुख को प्राप्त करता है और अपने बन्धु-बान्धवों में प्रिय होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह व्यक्ति अनेक विद्याओं का प्रेमी, बहुत बड़ा विद्वान और अपने साधु स्वभाव के लिए लोक में प्रसिद्ध होता है। राजा उसका बहुत आदर करता है तथा वह राज्य में प्रधान पुरुष होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो वह व्यक्ति उत्तम वैभव तथा सुन्दर स्त्री से युक्त होता है। वह स्वयं भी गुणी तथा दूसरे गुणवान मनुष्यों का आदर करने वाला होता है। व्यवहार में यह पूरी तरह कुशल होता है।

शनि दृष्टि फल—जब किसी जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है तो उस व्यक्ति को स्त्री सुख से वंचित होना पड़ता है, वह कृषि कार्य को करके जीविकोपार्जन करने वाला और राज्य में किले का अधिकारी होता है। इसके पास धन की विपुलता नहीं होती है।

(13) कन्या राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जो जातक अपने जन्म काल में ऐसे योग को प्राप्त करता है तो वह राजा का कोषाध्यक्ष होता है, गुरुजनों का भक्त वह सदाचारी तथा स्त्री से वियोग प्राप्त करके दुःखी होता है।

मंगल दृष्टि फल—जो जातक अपने जन्म काल में ऐसे योग को प्राप्त करता है, वह हिंसारूढ़, पराक्रमी, वीर राजा के आश्रय में रहने वाला तथा रण में विजय प्राप्त करके यशस्वी होता है।

बुध दृष्टि फल—जो जातक अपने जन्म काल में ऐसे योग को प्राप्त करता है, वह ज्योतिष विद्या का पंडित, काव्य और संगीत का प्रेमी और स्वयं भी काव्य रचने व संगीत में निपुण होता हैं। इस जातक को शास्त्रों के ज्ञाता होने के कारण भी लोक में बहुत यश मिलता है। युद्ध में भी जय प्राप्त करने से कीर्तिवान होता है।

गुरु दृष्टि फल—जो जातक अपने जन्म काल में ऐसे योग को प्राप्त करता है, वह बन्धु-बान्धवों से युक्त, राजा से सदैव सम्मान प्राप्त और उसका प्रिय होता है। उसके शुभ कार्यों की कीर्ति चारों और फैलती है। वह सत्याचरण से सबको सुख देता है।

शुक्र दृष्टि फल—जो जातक अपने जन्म समय में ऐसे योग को प्राप्त करता है, वह व्यक्ति उत्तम स्त्री, धन तथा अन्य भोगों से युक्त होता है। वह अनेक स्त्रियों का प्रिय, पत्नी से भी पूर्ण निष्ठा को प्राप्त करके सुखी, राजा के निकट तथा उससे धन लाभ करने वाला होता है।

शनि दृष्टि फल—जो जातक अपने काल में ऐसे योग को प्राप्त करता है, वह अनिश्चित तथा बुद्धि से हीन होता है। अपनी माता का सुख उसे प्राप्त नहीं होता है तथा वह स्त्रियों के आश्रय से धन की प्राप्ति करता है।

(14) तुला राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में ऐसा होता है तो वह व्यक्ति देशाटन करने वाला, सुख तथा धन से विहीन होता है। उसे स्त्री-पुत्रादि का सुख भी प्राप्त नहीं होता है। उसको मित्रों तथा जो लोग मित्र नहीं हैं, उनसे भी कष्ट प्राप्त होता है।

भौम दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में चन्द्र और मंगल ऐसी स्थिति में होते हैं तो वह व्यक्ति पराये कार्यों को नष्ट करने या उनमें व्याघात डालने की बुद्धि से युक्त होता है। विषय भोगों में लिप्त और मायावी होता है।

बुध दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में चन्द्र और बुध की ऐसी स्थिति होती है तो वह कला और व्यवहार का जानकार, ज्ञानी, धन-धान्य से युक्त, अपनी वक्तृता से सभा को मोहने वाला विद्वान होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में चन्द्र और गुरु की ऐसी

स्थिति होती है तो वह सुन्दर बुद्धि से युक्त, वस्त्राभूषण धारण करने से सुवेश और ... होता है। वस्त्राभूषण का क्रय-विक्रय कर यह व्यक्ति जीविकार्जन करता है तथा ... होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में तुला स्थित चन्द्रमा पर शुक्र की दृष्टि हो तो वह जातक पण्डित, कई तरह के उद्योगों को करके धन का लाभ करने वाला, राजा का प्रिय और हष्ट-पुष्ट होता है।

शनि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में चन्द्रमा और शनि की ऐसी स्थिति होती है तो वह धन-धान्य से पूर्ण, उत्तम वाहनों का स्वामी, परन्तु स्त्रियों से ... होता है।

(15) वृश्चिक राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब किसी जातक का चन्द्रमा जन्म काल में रवि से इस प्रकार दृष्ट हो तो वह व्यक्ति सदाचार से रहित होता है और दूसरों को तिरस्कारपूर्ण भाव से देखता है। उसके पास धन का अभाव नहीं होता, किन्तु जन-समाज में उसे प्यार नहीं मिलता। वह बहुत परिश्रमी होता है तथा राजा की सेना में अधिकारी होता है।

भौम दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है तो वह युद्धभूमि में जय प्राप्त करके यश प्राप्त करता है। वह गम्भीर तथा गौरव से युक्त होता तथा राजकृपा से धन लाभ प्राप्त करता है।

बुध दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है तो वह सुन्दर व प्रिय वाणी बोलने वाला, चतुर तथा रण विद्या में कुशल होता है। वह गीत-नृत्य में रुचि रखने वाला, इन विद्याओं का जानकार होता है तथा कूटनीतिज्ञ होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है तो वह व्यक्ति लोकप्रिय होता है, उसका स्वरूप आकर्षक और उसका सद्आचार उसको ... प्राप्त कराता है। उसको धन, वस्त्राभूषण की कमी नहीं होती है।

शुक्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है तो वह व्यक्ति प्रसन्नचित्त, उदार, कूटनीति में योग्य तथा धन वाहन से युक्त होता है। इस जातक का बहुत-सा धन स्त्रियों पर व्यय होता है।

शनि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है तो वह जातक स्थान भ्रष्ट होकर दुःख प्राप्त करता है। वह दीन, दुःखी तथा धन की कमी से ... मनोवृत्ति का हो जाता है। उसकी सन्तान भी नीच होती है तथा वह सत्व से रहित, उद्योग ... और यक्ष्मा रोग से पीड़ित होता है।

(16) धनु राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

सूर्य दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में ऐसा योग होता है, वह उत्तम ...

... युक्त, सम्पत्तिशाली, विभिन्न वाहनों का स्वामी तथा तेजस्वी होता है। संग्राम में वह शत्रुओं को पराजित करता है तथा राजा का प्रिय होता है।

भौम दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में ऐसा योग होता है, वह सेनापति होता है, उसका प्रताप बहुत बड़ा-चढ़ा होता है। उसके पास सब प्रकार की सम्पत्ति तथा वस्त्राभूषण और वाहन होते हैं।

बुध दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में ऐसा योग होता है, वह मनोहर और अच्छी वाणी बोलने वाला, बहुत से सेवकों की सेवा से सुख प्राप्त करने वाला होता है। ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता और शिल्प विद्या में निपुण होता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में ऐसा योग होता है, वह उच्च पद प्राप्त करता है, धनी और सदाचारी होता है। उसका स्वरूप सुन्दर और उसका व्यवहार सत्य आचरण से युक्त होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में ऐसा योग होता है, वह सन्तान तथा अर्थ से युक्त, धार्मिक आचार का पालन करने वाला, सदैव सुखी रहता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में ऐसा योग होता है, वह बहुत बलवान होता है, उसे शास्त्रों में अनुराग होता है, सत्य भाषण करने वाला और बहुत तेजस्वी एवं प्रचण्ड होता है।

(17) मकर राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह अपने धन के नष्ट होने से या धन के उपार्जन होने से ही दुःखी होता है। वह अपने कार्यों को अपनी मति से ही बिगाड़ लेता है और अपने दुष्ट स्वभाव से सबको दुःखी करता है।

भौम दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह बहुत तेजस्वी, सब लोगों के बीच प्रति प्रचण्ड, धन वाहनों से पूर्ण बुद्धिमान, विद्वान, स्त्री-पुत्रादिक आदि से सुखी होता है।

बुध दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह निर्बुद्धि होता है, निर्धन तथा घर से भी त्यागा गया होता है। स्त्री-पुत्रों से भी वह त्यक्त होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह राजकुल का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। उसका व्यवहार, वाणी तथा आचरण सत्य होता है। वह दूसरों के गुणों का आदर करने वाला, स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त होता है।

शुक्र योग फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म प्राप्त करता है तो वह धन-सम्पत्ति से युक्त होता है, उसके पास वाहन, वस्त्राभूषण का पूरा सुख होता है। उसके नेत्रों में बहुत आकर्षण होता है, जिनके कारण उसकी ओर सब लोग सहज ही आकर्षित होते हैं।

शनि योग फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह पूरी तरह आलसी होने का आनन्द प्राप्त करता है। उसके पास चाहे धन की कमी हो, किन्तु वह उद्यमहीन और उद्योग न करके उसी स्थिति में सन्तुष्ट रहता है। वह मलिन तथा अनेक व्यसनों में पड़कर दु:ख उठाता है।

(18) कुम्भ राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—इस प्रकार की ग्रह स्थिति में जिस जातक का जन्म होता है, वह कृषि कार्य करता है। राजा के आश्रय से धन प्राप्त करता है। अपनी राजकीय स्थिति से वह अनुचति लाभ प्राप्त करता है और धूर्तता के कार्य करता हुआ भी लोक में धर्मात्मा समझा जाता है।

भौम दृष्टि फल—इस प्रकार की ग्रह स्थिति में जिस जातक का जन्म होता है, वह बहुत बोलने वाला, व्यर्थ ही अपनी स्थिति को बहुत ऊँचा दिखाने की चेष्टा करने वाला, मलिन हृदय होता है। विषयतम पदार्थों को उत्पन्न करके यह जातक अपने को श्रेष्ठ मानने वाला, गृह और माता-पिता से रहित होता है। यह सद्आचार से रहित धूर्त होता है।

बुध दृष्टि फल—इस प्रकार की ग्रह स्थिति में जिस जातक का जन्म होता है, वह विषय में पूरी तरह आसक्त होता है, अपने प्रिय भाषण से वह सबको अपनी ओर आकृष्ट करता है, अच्छे-अच्छे रुचिकर भोजन करने में उसकी रुचि होती है तथा उसका हृदय पवित्र होता है।

गुरु दृष्टि फल—इस प्रकार की ग्रह स्थिति में जिस जातक का जन्म होता है, वह नगर, ग्राम में मुख्य, सम्पत्तिशाली, सुखी, भोगी, सज्जनों का प्रिय होता है। उसे विभिन्न प्रकार के भोग भोगने में बहुत आसक्ति होती है तथा यह लोक में मान्य और श्रेष्ठ होता है।

शुक्र दृष्टि फल—इस प्रकार की ग्रह स्थिति में जिस जातक का जन्म होता है, वह सब प्रकार से दु:खी होता है, उसके पास धन-सम्पत्ति नहीं होती तथा वह लोक में निंदित होता है।

शनि दृष्टि फल—इस प्रकार की ग्रह स्थिति में जिस जातक का जन्म होता है, वह गधे, ऊँट, हिरन, खच्चर आदि पशुओं का व्यापार से धनी होता है। उसका आचरण सराहनीय होकर भी धर्म के विरुद्ध होता है। उसका प्रेम बुरे आचरण की स्त्री से होता है।

(19) मीन राशि में चन्द्रमा के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में रवि-चन्द्रमा की यह स्थिति होती है तो वह विषय-वासना तथा स्त्रियों में प्रीति रखने वाला वीर और शत्रुओं को पराजित करने वाला बहुत दृढ़ व्यक्ति होता है। वह सभी भोगों से युक्त अपने कार्यों को सिद्ध करने में कुशल होता है।

भौम दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में भौम-चन्द्रमा की यह स्थिति होती है तो वह शत्रुओं से पराजित, चरित्रहीन स्त्री का प्रेमी, सुख से रहित तथा पाप कर्मों में प्रवृत रहता है।

बुध दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में बुध-चन्द्रमा की ऐसी स्थिति होती है तो वह बहुत उदार, सुन्दर, उत्तम, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, ज्ञानी, धनी और राजा का प्रिय पात्र होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में गुरु-चन्द्रमा की यह स्थिति होती है तो वह बहुत उदार होता है, उसका शरीर कोमल होता है और उसकी स्त्री विनम्र सबकी बातों को मानने वाली सुशील होती है। उसे अपने पुत्रों से आदर प्राप्त होता है। उसके पास धन-सम्पत्ति का अभाव नहीं होता। वह सब प्रकार से भरा पूरा और यशस्वी होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में शुक्र-चन्द्रमा की ऐसी स्थिति हो तो वह संगीत-वाद्य में कुशल होता है। उसकी स्त्री गुणवती होती है। वह विद्या-बुद्धि से युक्त तथा रमणी भोग-विलास से बहुत आनन्द प्राप्त करने वाला होता है।

शनि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में शनि-चन्द्रमा की यह स्थिति होती है तो वह कामाचार में सदैव प्रवृत रहने वाला, पुत्र-पुत्री के सुख से वंचित, पराक्रम व उद्योग से भी हीन होता है। इस जातक का प्रेम नीच स्त्री से होता है।

(20) मेष या वृश्चिक राशि में मंगल के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—यदि किसी जातक के जन्म समय में मंगल-रवि की यह स्थिति होती है तो वह व्यक्ति सुन्दर वाणी से युक्त भाषण करने वाला, बुद्धिमान होता है। माता-पिता में इसका पूरा अनुराग होता है, लोक में अग्रगण्य और अपनी उदारता के लिए विख्यात होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि किसी जातक के जन्म समय में मंगल-चन्द्र की यह स्थिति हो तो वह अन्य व्यक्ति की स्त्री में बहुत आसक्त होता है, शूरवीर तथा अपने कर्त्तव्य में दृढ़ किसी के प्रति कृपा करके अनुचित कार्यों को नहीं करता है। इसके पराक्रम से चोर घबड़ाते हैं।

बुध दृष्टि फल—यदि किसी जातक के जन्म समय में मंगल-बुध की यह स्थिति होती है तो यह व्यक्ति वेश्याओं में आसक्त होता है। उन्हें वस्त्राभूषणों से सज्जित करता है और विलास का आनन्द लेता है। यह जातक दूसरों के धन का अपहरण करने में कभी संकोच नहीं करता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि किसी जातक के जन्म समय में मंगल-गुरु की यह स्थिति होती है तो वह व्यक्ति अपने कुल में श्रेष्ठ होता है, वह व्यक्ति धनवान, अपने क्रोध को वश में न रखने वाला, राजा के समान उच्चाधिकार से युक्त होता है। इसकी चोरों से मित्रता होती है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि किसी जातक के जन्म समय में मंगल-शुक्र की यह स्थिति

हो तो वह पुण्यकर्मी होता है। उसकी इच्छा अच्छे-अच्छे भोजन करने की रहती है। उसे सुन्दरी स्त्रियों के प्रति बहुत आकर्षण होता है तथा वह वाहनों के लिए चिन्तित रहता है।

शनि दृष्टि फल—यदि किसी जातक के जन्म समय में मंगल-शनि का ऐसा योग होता है तो वह जातक मातृवियोग को प्राप्त करता है। उसे अपने सद्मित्रों से भी विछोह होता है तथा वह अपने दुर्बल शरीर के कारण दु:खी होता है। अपने कुटुम्बीजनों का विरोधी और ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है।

(21) वृष या तुला राशि में मंगल के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में सूर्य-मंगल की ऐसी स्थिति होती है तो वह जातक स्त्री में थोड़ी प्रीति रखने वाला होता है। वह वन प्रदेश में एकान्त भाव से विचरने वाला और अपने ही मन के अनुसार कार्य को करने वाला होता है। वह यह नहीं देखता कि उसका कार्य लोक के अनुकूल है या प्रतिकूल, वह बहुत क्रोधी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में चन्द्र-मंगल की ऐसी स्थिति होती है तो वह जातक अपनी माता का विरोधी होता है। यह युद्ध तथा झगड़े-फसाद से डरने वाला होता है तथा इसकी आसक्ति बहुत स्त्रियों में होती है, वह भी इसके प्रति आकृष्ट रहती है।

बुध दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में बुध-मंगल की ऐसी स्थिति होती है तो वह शास्त्रों में पारंगत विद्वान, अपने ज्ञान को बहुत प्रकाशित करने के लिए सचेष्ट होने के कारण बहुत बोलने वाला, धनी नहीं होता है। इसका शरीर सुन्दर होता है। प्राय: विवाद और झगड़ा भी करता है।

गुरु दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में गुरु-मंगल की ऐसी स्थिति होती है तो वह अपने परिवारीजनों को प्यार करने वाला, अत्यन्त भाग्यशाली, गीत-संगीत-नृत्य में प्रवीण होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में शुक्र-मंगल की ऐसी स्थिति होती है तो वह अपने बन्धु-बान्धवों को प्यार करने वाला, प्रशस्त्र यश से युत, राजमंत्री या सेनापति तथा अनेकों सुख भोग करता हुआ लोक में सम्मानित होता है। इसे अनेक स्त्रियों से प्रीत होती है।

शनि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में शनि-मंगल की ऐसी स्थिति होती है तो वह लोक में ख्याति प्राप्त होता है। वह विनयी और धनी होता है। उसके अच्छे-अच्छे मित्र होते हैं। वह बुद्धिमान, शास्त्रों का ज्ञाता, सद्बुद्धि से युक्त, नगर या गाँव का मालिक होता है।

(22) मिथुन या कन्या राशि में मंगल के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब कोई जातक इस ग्रह योग में जन्म लेता है, तो वह विद्यावान

बलवान तथा गुण सम्पन्न व्यक्ति होता है। उसके पास ऐश्वर्य की कमी नहीं होती। अपने पराक्रम से यह जातक लोक में विख्यात होता है। यह दुर्ग, पर्वत और वनाप्रान्त में विहार करने वाला होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब कोई जातक इस ग्रह योग में जन्म लेता है, तो वह राजा की रक्षा में नियुक्त राजा का विश्वासी अधिकारी होता है। यह बहुत तेजस्वी, बलवान तथा संतोष से युक्त होता है। इसका मन स्त्रियों में आसक्त रहता है।

बुध दृष्टि फल—जब कोई जातक इस ग्रह योग में जन्म लेता है, तो वह अधिक बोलने वाला और काव्य प्रेमी होता है। इस जातक का प्रेम गणित में विशेष होता है तथा यह मधुर वचन बोलने वाला होता है। इसके वचनों में सत्य-असत्य का आश्रम होता है तथा वह दौत्य कर्म में अत्यन्त चतुर होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब कोई जातक इस ग्रह योग में जन्म लेता है तो वह दूसरे देश में गमन करके अनेक व्यसनों से युत होकर दुख-सुख का भोग करता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब कोई जातक इस ग्रह-योग में जन्म लेता है तो वह वस्त्र, अन्नपानादि से सुखी रहता है। उसे कान्तासुख प्राप्त करने में बहुत आसक्ति होती है तथा वह अत्यन्त धनवान होता है।

शनि दृष्टि फल—जब कोई जातक इस ग्रह योग में जन्म लेता है तो वह अत्यन्त पराक्रमी और शूर होता है। उसे आलस बहुत होता है तथा अस्त-व्यस्त रहने वाला होता है; इसे वन, पर्वत और वन में विहार करने पर बहुत सुख प्राप्त होता है।

(23) कर्क राशि में मंगल के स्थित होने पर

सूर्य दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में इस प्रकार का योग होता है, तो वह पित्त प्रकोप से पीड़ित होता है। उसका धैर्य बहुत गम्भीर होता है। वह अत्यन्त बलशाली तथा दण्डाधिकारी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में इस प्रकार का योग होता है, तो वह रोग से पीड़ा प्राप्त करने वाला, अपनी खो जाने वाली वस्तुओं की हानि से दु:खी, कुत्सित वेश रखने वाला और हीनाचार में लिप्त रहता है।

बुध दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में इस प्रकार का योग होता है, तो इस जातक के मित्र नहीं होते हैं, इसका कुटुम्ब थोड़ा होता है। यह पापाचार में रत रहकर ही सुख समझता है तथा इसका चरित्र अच्छा नहीं होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में ऐसा योग होता है, तो वह राजा के यहाँ सम्मानित राजमन्त्री होता है। उसके गुण बहुत सराहनीय होते हैं तथा वह गौरव से युक्त बहुत यशस्वी होता है। वह लोक में मान्य होता है, दाता तथा विख्यात होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में ऐसा योग होता है, तो वह अपने धन का नाश दुर्व्यसनों में कर डालता है और वह सदैव अनुचित कार्यों को करके सुख प्राप्त करता है।

शनि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में ऐसा योग होता है, तो वह धन-धान्यादि से युक्त बहुत सुखी होता है। इसका स्वरूप होता है तथा वह राजा से धन प्राप्त करने वाला उसका प्रिय व्यक्ति होता है।

(24) सिंह राशि में मंगल के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह अपने लोगों का हितैषी होता है। अपने प्रताप से लोक विख्यात, पराक्रमी और शत्रुओं को नष्ट करने वाला होता है। उसे वन, पर्वत में विहार करने पर सुख प्राप्त होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह पुष्ट शरीर का स्वामी होता है। उसका स्वभाव सरल नहीं होता। वह बहुत कठोर-सा प्रतीत होने वाला बहुत उदार होता है। अपनी माता को यह जातक बहुत प्यार करता है तथा अपने कार्यों को कुशलतापूर्वक करने वाला तीक्ष्ण बुद्धिमान होता है।

बुध दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह व्यक्ति सत्कार्यों में लगा रहकर काव्य और शिल्पकर्त्ता होता है। यह बहुत विद्वान तथा अपने कार्य साधन में निमग्न रहता है। इस जातक का मन चञ्चल होता है तथा लोभ से पूरित इस जातक का हृदय अपने स्वार्थ साधन में बहुत सचेष्ट होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह कुशाग्र बुद्धि, राजा का स्नेही और मित्र होता है। यह सेनापति तथा लोक में मान्य यशस्वी होता है। अनेक विद्याओं में प्रवीण यह जातक प्रतिष्ठित होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह जगत में गौरवान्वित, अत्यन्त सुन्दर स्वरूप से युक्त, अनेकों सुन्दर-सुन्दर रमणियों के साथ भोग करने वाला होता है। इसके पास कभी भी सम्पत्ति का अभाव नहीं होता है।

शनि दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह अन्य व्यक्ति के घर में निवास करता हुआ अत्यन्त निर्धन तथा दुःखी होता है। यह युवावस्था में ही वृद्ध जैसा लगता है।

(25) धनु या मीन राशि में मंगल के स्थित होने पर

सूर्य दृष्टि फल—जिस जातक के जन्मकाल में यह योग होता है, वह व्यक्ति वन, पहाड़, दुर्ग में वास करने वाला होता है। यह जातक सौभाग्यशाली तथा धन-धान्य-सम्पत्ति से युक्त होता है। अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ और कठोर भी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में यह योग होता है, वह व्यक्ति विद्वान तथा नीति-नियमों के व्यवहार जानने वाला, अपने मन में अपने आपको बहुत उच्च मानकर सबको हेय समझने के कारण राजा से भी यह सम्मान प्राप्त नहीं करता है। झगड़ा, वाद-विवाद प्रिय तथा अकेला रहना पसन्द करता है।

बुध दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में यह योग होता है, वह व्यक्ति विद्वान होता है। शिल्प विद्या में निपुण, सुशील, सब विद्याओं का ज्ञाता और विनम्र होता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में यह योग होता है, वह व्यक्ति स्त्री में आसक्त होता है। शत्रुओं के साथ झगड़े फसाद में संलग्न रहने वाला यह जातक स्थान से च्युत हो जाता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में यह योग होता है, वह व्यक्ति उदार हृदय होता है, उसका चित्त विषय-वासना में रत रहता हुआ अनेक प्रकार के वस्त्राभूषणों से युक्त रहता हुआ भाग्यवान होता है और अपने सद्स्वभाव के कारण वह लोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में यह योग होता है उसका शरीर कान्तिहीन होता है। वह अनेकों स्थानों में घूमता है। वह अन्यों के कार्य में संलग्न तथा दुःखी रहता है।

(26) मकर या कुम्भ राशि में मंगल के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में ऐसा ग्रह योग बनता है, वह स्त्री-पुत्रों से सुखी रहता है। श्यामवर्ण का, तीव्र स्वभाव और शूरवीर होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में ऐसा ग्रह होता है, वह वस्त्र, आभूषण धारण करने का सुख विलास प्राप्त करने वाला होता है। उसे माता का सुख प्राप्त नहीं होता है, अपने स्थान से अलग हो जाता है और इसकी मित्रता स्थिर नहीं होती, परन्तु हृदय का उदार होता है।

बुध दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म काल में ऐसा ग्रह योग होता है, वह व्यक्ति प्रिय वाणी बोलने वाला, कुशल वक्ता, भ्रमण से धन लाभ करता हुआ जीविकोपार्जन करता है। यह अन्यन्त निर्भय होता है, यह शक्तिशाली होता है तथा सत्य से युक्त होता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में ऐसा ग्रह योग होता है, वह व्यक्ति राजा का कृपापात्र, प्रिय और मन्त्री होता है। अपने गुणों से सबको प्रसन्न करने वाला, अपने बन्धुओं का प्रिय, सुन्दर शरीर से युक्त, स्त्रियों के अनुराग से सुख भोग प्राप्त करने वाला, अपने कार्यों को कुशलता से सम्पादित करता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में ऐसा ग्रह योग होता है, वह व्यक्ति उत्तम भोगों को प्राप्त करने वाला होता है, वह सौभाग्यशाली स्त्रियों का प्रिय तथा भोगसुख से पूरी तरह अतृप्त, विवाद और झगड़ा करने के स्वभाव से भी मुक्त होता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में यह ग्रह योग होता है, उसे राजा से धन प्राप्त होता है, उसे स्त्रियों से विरोध होता है। वह बहुत बुद्धिमान, अनेक विषयों का ज्ञानी, अति बुद्धिमान, कष्टयुक्त तथा युद्ध से प्रसन्न होने वाला होता है।

(27) मेष या वृश्चिक राशि में बुध के स्थित होने पर

सूर्य दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार दृष्ट हो तो वह जातक बन्धु-बान्धवों को प्यार करने वाला, सत्य वक्ता तथा अपने वाणी विलास से सबको प्रसन्न करता है। इसको राजा से आदर व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार दृष्ट हो, वह व्यक्ति संगीत-नृत्यकला में रुचि रखने वाला, स्त्रियों का प्रेमी, धन, वाहन, सेवकों से युक्त होता है। यह आवश्यकता पड़ने पर सद्भाव त्याग कर बहुत कुटिल हो जाता है।

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार दृष्ट हो, वह व्यक्ति राजा का प्रिय पात्र होता है, उसके पास धन का अभाव नहीं होता है। वह पराक्रम व वीरता से युक्त, अनेकों कलाओं का ज्ञाता होता है। किसी तरह भी गलत व्यवहार या बात को सहन न करने वाला, आवश्यक होने पर कलह करने से भी पीछे नहीं हटता। इसको सदैव कुछ-न-कुछ खाने की इच्छा बनी रहती है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार गुरु से दृष्ट हो तो वह व्यक्ति सब सुखों से युक्त होता है। वह चतुर और प्रिय वाणी बोलने वाला होता है, वह स्त्री-पुत्रादि से सुखी, सदैव प्रसन्न रहता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार शुक्र से दृष्ट होता है, वह स्त्री का भरपूर सुख प्राप्त करता है। वह बहुत गुणवान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होता है, मित्रों का हित करने वाला, बहुत बुद्धिमान तथा विनम्र तथा शील से युक्त सबसे स्नेह मानने वाला होता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार दृष्ट होता है, वह व्यक्ति उत्तम साहस से युक्त होता है, यह अपने उग्र स्वभाव के कारण कुल परिवार में कलह से अशान्ति पैदा करता है, ऐसी हालत में इसकी वृति असद् होती है।

(28) वृष या तुला राशि में बुध के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार से दृष्ट होता है, वह व्यक्ति दरिद्र होता है, रोगी और कृश शरीर होता है। यह इतना होने पर भी दूसरे के दुःख में दुःखी और परोपकार करने में संलग्न रहता है। इसका स्वभाव शान्त तथा हृदय पवित्र विचारों वाला होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार से दृष्ट होता है, वह व्यक्ति धन-धान्य से युक्त होता है, अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ होता है और लोक में सम्मान प्राप्त विख्यात होता है, इसके साथ ही राज कार्यों हेतु तथा अपने कार्यों की सिद्धि हेतु प्रपञ्च करने में सिद्धहस्त भी होता है।

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार से दृष्ट होता है,

वह विषय सुख की तृष्णा से युक्त रहने पर भी सदा तृषित रहता है, इसे राज्य से अपमान प्राप्त होता है और यह व्याधिग्रस्त होने से दुःखी होता है। इसके मित्र इसको त्याग देते हैं।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार से दृष्ट होता है, वह देश, ग्राम, नगर का अधीश्वर होता है। वह परम बुद्धिमान, गुणी तथा विनम्रता से युक्त होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार से दृष्ट होता है, वह सुन्दर और स्वरूपवान होता है, उसे वस्त्राभूषण बहुत प्रिय होते हैं, स्त्रियों में इसकी आसक्ति होती है। इसका हृदय बहुत उदार होता है तथा यह सब प्रकार से भाग्यवान होता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक के जन्म समय में बुध इस प्रकार से दृष्ट होता है, वह पुत्र, मित्र तथा स्त्री से भी कष्ट प्राप्त करता है। वह सुख तथा धन के लिए सदैव तृषित रहता है।

(29) मिथुन या कन्या राशि में बुध के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—इस प्रकार जब बुध पर रवि की दृष्टि जिसके जन्म समय में होती है, वह जातक सत्य वक्ता होता है, उसको उत्तम हास्य व विलास का आनन्द लेना आता है। उसे राजा से उन्नति व आदर प्राप्त होते हैं। उसका शरीर दुर्बल होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—इस प्रकार जब बुध पर चन्द्र की दृष्टि जिसके जन्म समय में होती है, वह जातक मधुर वाणी तो बोलता है, परन्तु इसे अधिक बोलने की लत होती है। यह राजा के समीप रहने वाला तथा कलह में रुचि लेने वाला होता है।

मंगल दृष्टि फल—इस प्रकार जब बुध पर मंगल की दृष्टि जिस जातक के जन्म समय पर होती है, वह प्रसन्न रहने वाला, कलाओं के ज्ञान से परिपूर्ण, राजकार्य में संलग्न रहने वाला, बहुत कुशल तथा लोक में मान्य होता है। राजनीति में सक्रिय होने के कारण तथा अपने व्यक्तित्व को दूसरों पर आरोपित करते रहने के लिए कुटिल व्यवहार भी यह करता है।

गुरु दृष्टि फल—इस प्रकार जब बुध पर गुरु की दृष्टि जिस जातक के जन्म समय में होती है, वह धन, बल तथा अन्य प्रकार से बहुसामर्थ्यशाली, राजा से मान्य तथा अधिकार प्राप्त करने वाला होता है। इसके पास धन-वैभव का अभाव नहीं होता है।

शुक्र दृष्टि फल—इस प्रकार जब जिस जातक के जन्म समय में शुक्र की दृष्टि बुध पर होती है तो वह व्यक्ति राजा का दूत होने का सौभाग्य प्राप्त करता है, अपने शत्रु वर्ग को पराजित करने की शक्ति से सम्पन्न होता है। यह दो पक्षों में बीच सन्धि कराने में कुशल होता है तथा विषयों में अनुरक्त किसी सुन्दर वेश्या का प्रेमी होता है।

शनि दृष्टि फल—इस प्रकार जब बुध पर शनि की दृष्टि जिस जातक के जन्म समय में होती है, वह जातक कार्य को आरम्भ करके कभी अधूरा नहीं छोड़ता है, वह विनयी तथा वस्त्राभूषण से सुखी रहता है। इस जातक की समृद्धि इसका सर्वत्र मान कराती है।

(30) कर्क राशि में बुध के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में इस प्रकार रवि की दृष्टि हो, वह व्यक्ति स्त्री से अपमान को प्राप्त करता है, इसका धन व्यर्थ ही खर्च होता है, जिसके कारण यह दुःखी होता है और इसके पीछे अनेक उपसर्ग प्रकट होते हैं।

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में बुध पर चन्द्र की दृष्टि इस प्रकार होती है, वह व्यक्ति वस्त्र प्रक्षालन करने वाला रत्नों का संग्रहकर्त्ता होता है। इसे गृह निर्माण कला में बहुत ज्ञान होता है। यह पुष्प मालाएँ बहुत अच्छी बनाता है।

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में बुध पर मंगल की दृष्टि इस प्रकार से होती है, वह अर्थ संग्रह करने में तत्पर रहता है, उसके पास विद्या अधिक नहीं होती। शूरवीर, प्रिय वक्ता तथा कूटनीतिज्ञ होता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में बुध पर इस प्रकार गुरु की दृष्टि होती है, वह विद्वान, व्यवहार विधि का ज्ञाता, प्रिय तथा सत्य वाणी से सबको प्रसन्न करने वाला, राजा का प्रिय पात्र होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में बुध पर इस प्रकार शुक्र की दृष्टि होती है, वह प्रिय वाणी बोलता है, उसकी देह सुन्दर होती है तथा वह संगीत वाद्य में पटु होता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में बुध पर इस प्रकार शनि की दृष्टि होती है, वह अपने बन्धु-बान्धवों के सुख से रहित होता है, उसमें गुण नहीं होते, मिथ्या भाषण करने वाला, दम्भी और कृतघ्न होता है।

(31) सिंह राशि में बुध के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में बुध पर रवि की दृष्टि इस प्रकार हो तो यह व्यक्ति विशुद्ध सांसारिक होता है, उसे अपना स्वार्थ साधना सर्वोपरि होता है, वह दूसरे पर कृपा नहीं करता है। उसका स्वभाव चंचल और ईर्ष्या युक्त होता है। उसका हृदय क्षुद्र और वह हिंसक तथा क्रूर होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में बुध पर चन्द्र की इस स्थिति में दृष्टि होती हो तो वह जातक स्वरूपवान होता है, बुद्धि से युक्त यह व्यक्ति विनयी, संगीत तथा नृत्य का ज्ञाता और अच्छे आचार व व्यवहार वाला होता है।

मंगल दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में बुध पर चन्द्र की दृष्टि इस स्थिति में होती हो तो वह काम-वासना से युक्त नहीं होता है। उसका शरी क्षत-विक्षत होता है अर्थात् उसके बहुत चोट लगती है या व्रण आदि होते हैं। वह बुद्धिहीन तथा दुःखी होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में बुध पर गुरु की दृष्टि इस स्थिति में होती है तो वह व्यक्ति विद्वान होता है, विधि-व्यवहार का पण्डित, भाग्यवान, मन को प्रसन्न करने वाला अच्छी वाणी बोलता है। राजा उसे सम्मान तथा आदर देता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में बुध पर शुक्र की दृष्टि इस स्थिति में होती है तो वह व्यक्ति अच्छा वक्ता होता है, उसकी वाणी प्रिय तथा उसका रूप सुन्दर होता है। वह राजा का आश्रित और धन वाहनादि से युक्त होता है।

शनि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म समय में बुध पर शनि की दृष्टि इस प्रकार होती है, वह व्यक्ति गन्दे शरीर को धारण करने वाला होता है। उसके शरीर से दुर्गन्ध निकलती है। वह कुरूप तथा उग्र होता है। वह सुखी नहीं रहता है।

(32) धनु या मीन राशि में बुध के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में यह योग होता है, वह शूल, पथरी, प्रमेह आदि रोगों से पीड़ित होता है। वह लोक का साथ नहीं पाता, अतः एकान्तवासी होकर कहीं पर शान्ति से वास करता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में यह योग होता है, वह व्यक्ति लेखन क्रिया में निपुण होता है, अच्छी संगत में रहने वाला तथा साधु और मित्रों के साथ रहकर सुख भोगने वाला होता है। वह सदा सुखी रहता है।

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है, वह व्यक्ति कुल परम्परागत चोर होता है, कहीं वन में रहने वाला होता है। धन-धान्य तथा ग्रह विहीन यह व्यक्ति दुःखी रहता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में ऐसा योग होता है, वह व्यक्ति राजा, विज्ञानवेत्ता, कुलवंत, राजा के कोष का अधिकारी, लेखक तथा बहुत लोगों का करने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में यह योग होता है, वह व्यक्ति राजा का मंत्री या लेखाधिकारी होता है, वह चौर्य कार्य में आसक्त होता है, उसका शरीर पोषण, सुकुमार तथा रूपवान होता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में यह योग होता है, वह व्यक्ति बहुअनभोजी, मलिन, अनाचारी, वन, पर्वत तथा दुर्ग आदि स्थानों में रहने वाला, मलिन और अनाचारी होता है। वह किसी भी कार्य को ठीक प्रकार से नहीं सिद्ध कर पाता है।

(33) मकर या कुम्भ राशि में बुध के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसे योग की स्थिति होती है, तो वह प्रारब्ध से होने वाले कार्यों के सम्पन्न होने से अत्यन्त प्रतापी हो जाता है। मल्ल विद्या में निपुण होता है तथा अपने कुटुम्ब (परिवार) से भरा पूरा होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसा योग स्थित हो तो वह जातक जलोत्पन्न वस्तुओं से जीविकोपार्जन करता है, वह फल-फूल, कन्द तथा फूलों के क्रय-विक्रय से भी लाभ प्राप्त करता है।

मंगल दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है तो जातक लज्जालु, किसी के सामने आने से बचने वाला, आत्मज्ञान युक्त सौम्य स्वभाव का होता है। वह बोलने में चतुर, बुद्धिमतापूर्ण बातों को करने वाला तथा धनी होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है तो जातक धन-धान्य-सवारी आदि से सुखी होता है, महाबुद्धिमान, ग्राम या नगर का अधिकारी होता है। उसके पास किसी वस्तु का अभाव नहीं होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है तो वह नीच व व्यभिचारी लोगों की संगति का आनन्द लेने वाला, काम-वासना का दास होता है। उसके सन्तान बहुत होती है, स्वयं कुरूप और बुद्धिहीन भी होता है।

शनि दृष्टि फल—जब किसी जातक के जन्म काल में ऐसा योग होता है तो वह सुख से वंचित, पाप कार्यों को करने वाला, दीन और अकिंचन दरिद्र तथा हीन स्थिति के लोगों के साथ रहने वाला होता है।

(34) मेष या वृश्चिक राशि में गुरु के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब कोई व्यक्ति ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह सत्य का पालन करने वाला, असत्य को पास भी न फटकने वाला, धर्माचार में रत, विख्यात, भाग्यवान और विनयी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब कोई व्यक्ति ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह जातक लोक में ख्याति प्राप्त करता है, विनीत होता है और स्त्रियों में आसक्त उन्हें प्यार करता है। वह सुजन व्यक्तियों का प्रिय होता है। उसका स्वभाव धर्म में आरूढ़ रहे आने से शान्ति अनुभव करता है।

मंगल दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह व्यक्ति क्रूर होता है। उसके मन में दुष्टों और शत्रुओं के लिए दया माया नहीं होती, वह धूर्त और शत्रुओं के गर्व का मर्दन करने वाला होता है। उसकी जीविका राजाश्रय से चलती है तथा वह बहुत लोगों का पालक होता है।

बुध दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह सत्याचार से दूर रहने वाला, प्रिय वचन बोलने में अपनी नीची मानने वाला तथा दूसरों के छिद्र देखकर प्रसन्न होने वाला तथा वह विनय, वाणी व खुशामद से प्रसन्न होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म लेता है तो वह व्यक्ति गृह, वस्त्राभूषण, शय्या-आसन, स्त्री-पुत्रादि, माला-चन्दन तथा शृंगारिक प्रसाधनों से युक्त सर्वदा सुखी रहता है।

शनि दृष्टि फल—जब कोई जातक इस योग में जन्म लेता है तो वह व्यक्ति लोभी, साहसी, भयानक कार्यों को करने वाला, मित्र, सन्तानादि के सुख से हीन तथा निष्ठुर होता है।

(35) वृष या तुला राशि में गुरु के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—ऐसे योग में उत्पन्न जातक संग्राम में विजय प्राप्त करने वाला होता है। उसका शरीर घावों के चिन्हों से सुशोभित होता है। वह रोग से दुःखी होता है, परन्तु नौकर-चाकरों की सेवा से सुखी, अनेक वाहनों का स्वामी राज मंत्री होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—ऐसे योग में उत्पन्न जातक सत्य वक्ता, सदाचार से रहने वाला, विनय भूषित, परोपकारी तथा पवित्र विचारों वाला, कभी किसी का अहित करना तो दूर मन में भी न लाने वाला, भाग्यवान होता है।

मंगल दृष्टि फल—ऐसे योग में उत्पन्न जातक भाग्यवान, पुत्र के सुख को प्राप्त करने वाला, प्रिय वाणी बोलने वाला, राजा से आदर प्राप्त और सदाचारी होता है।

बुध दृष्टि फल—ऐसे योग में उत्पन्न जातक सच्ची मन्त्र विद्या में निपुण होता है, बहुत भाग्यवान, विद्यावान, पंडित और ज्ञानी होता है। यह राजा से धन पाने वाला सब कलाओं का ज्ञाता होता है।

शुक्र दृष्टि फल—ऐसे योग में उत्पन्न जातक धन-धान्य से युक्त, सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषणों से अपने को विभूषित करने वाला, सदाचारी, वैभव व सम्पत्तिवान और लोक में यश प्राप्त करके गौरव से रहता है।

शनि दृष्टि फल—ऐसे योग में उत्पन्न जातक सुपुत्र, मायावी, स्त्री का स्वामी होता है, पण्डित, ज्ञानी तथा ग्राम-नगर में होने वाले उत्सवों को कराने वाला, उनसे सुख तथा धन पाने वाला चतुर होता है।

(36) मिथुन या कन्या राशि में गुरु के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—इस योग में जो जातक जन्म लेता है, वह स्त्री, पुत्र, धन, मित्रों से सुखी रहता है। उसकी लोक में उत्तम प्रतिष्ठा तथा मान होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—इस योग में जो जातक जन्म लेता है, वह गुणी, ग्राम और शहर का उपकार करने वाला तथा अनेक प्रकार के यश से सुशोभित गौरव प्राप्त व्यक्ति होता है।

मंगल दृष्टि फल—इस योग में जो जातक जन्म लेता है, वह रण में विजय प्राप्त करता है, शत्रुओं के मान का मर्दन करते हुए शरीर पर अनेक घावों से विभूषित होता है। वह धनी तथा शक्तिशाली होता है।

बुध दृष्टि फल—इस योग में जो जातक पैदा होता है, वह स्त्री, पुत्र, मित्र तथा बन्धु-बान्धवों से युक्त हुआ सुखी होता है। उसके मित्र उत्तम होते हैं, उसके पास धन-धान्य का अभाव नहीं होता। वह अपने कार्यों में दक्ष होता है, ज्योतिष तथा शस्त्र विद्या का जानने वाला सत्य वक्ता होता है।

शुक्र दृष्टि फल—इस योग में जो जातक जन्म प्राप्त करता है, वह धन-धान्य, पुत्र, मित्र के सुख को प्राप्त करता है। उसका ग्रह एक प्रासाद ही होता है, वह बाग, वापी,

तालाब बनवाता है तथा कृषि कार्य द्वारा भी बहुत धन पैदा करता है। वह हँसमुख प्रसन्नचित्त रहता है।

शनि दृष्टि फल—जो जातक ऐसे योग में उत्पन्न होता है, वह व्यक्ति राजा से सम्मान प्राप्त करता है। उसके घर में नित्य उत्सव मनाये जाते हैं, वह गुणी तथा गुणवानों का आश्रय होता है। वह गाँव या शहर का मुख्य अधिकारी होता है।

(37) कर्क राशि में गुरु के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—यदि कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह अपने आरम्भिक युवावस्था में स्त्री, पुत्र और धन का कम सुख प्राप्त करता है। उसके अनन्तर बाद में उसे इन सबका पूरा सुख प्राप्त रहता है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह राजा के कोष का अधिकारी, सुन्दर धन वाहन से सुखी और अच्छे आचार से जीवन निर्वाह करता है।

मंगल दृष्टि फल—यदि कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह अच्छे और सुन्दर अपने अनुकूल पुत्रों का पिता होता है। उसकी स्त्री उसके प्रति अनुरागित होती है तथा वह अपने परिवार सहित धन और वस्त्राभूषण से सुखी रहता है। वह बहुत गुणी, शूरवीर, पंडित तथा युद्ध में अपने साहस और पराक्रम के साक्ष्य स्वरूप क्षतों से युक्त शरीर वाला होता है।

बुध दृष्टि फल—यदि कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो उसके सब कार्य मित्रों की सहायता से सम्पन्न होते हैं। वह सद्वृत्ति वाला, बुद्धिमान तथा तेजस्वी व्यक्तित्व वाला राज्यमन्त्री होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह अनेक स्त्रियों से युक्त होता है तथा स्त्री, पुत्र-वैभव से युक्त और सुखी रहता है।

शनि दृष्टि फल—यदि कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह लोक में आदर पाता है, वस्त्र अलंकारों से सज्जित सब ओर आदर प्राप्त करता है। वह अत्यन्त विनम्र, सुशील, सेनापति या नगर का अधिकारी होता है। वह अधिक बोलने वाला होता है।

(38) सिंह राशि में गुरु के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस प्रकार की ग्रह स्थिति में जन्म लेता है तो वह अधिक व्यय करने वाला, विख्यात होता है। दुर्जनों और स्वार्थियों के लिए धूर्त, राजा से धन प्राप्त करके सुखी और शुभ कार्यों को करता हुआ सदाचारपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस प्रकार की ग्रह स्थिति में पैदा होता है, उसका मुख सदा खिला रहता है, तथापि वह अपने मन में दुःखी होता है, जिसको वह प्रकाशित नहीं करता है। उसे स्त्री के माध्यम से धन लाभ होता है तथा वह परोपकारी और दाता होता है।

मंगल दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस प्रकार की ग्रह स्थिति में पैदा होता है तो वह अपने गुणों के प्रकाश तथा गौरव के कारण गुरुजनों और अन्य श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा भी मान्य होता है। वह सदैव सुकर्मों में लगा रहता है।

बुध दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस प्रकार की ग्रह स्थिति में पैदा होता है तो वह भवन निर्माण में चतुर होता है, गुरुजनों में भी अग्रणी तथा प्रिय वक्ता और राजमन्त्री होता है। अपने कार्यों में वह कुशल होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस प्रकार की ग्रह स्थिति में पैदा होता है तो वह राजा से उच्च पद प्राप्त करता है। स्त्रियों को प्रसन्न रखने में समर्थ तथा गुणवान होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस प्रकार की ग्रह स्थिति में पैदा होता है तो वह कृश, शरीर निर्बल, मलिन होता है, तथापि उसकी वाणी प्रिय होती है, वह अपने वचनों से किसी का हृदय दुःखी नहीं करता है, कभी दूसरों की खुशियों से अलग रहकर स्वयं उत्सव आनन्द नहीं मनाता है।

(39) धनु या मीन राशि में गुरु के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में पैदा होता है तो वह राजा से मतभेद रखता है तथा उससे विरुद्ध मत से युक्त होता है, उसकी अपने जनों से भी नहीं बनती, अपनी बुद्धि में श्रेष्ठ और मानी होने के कारण उससे बहुत लोग शत्रुता करते हैं।

चन्द्र दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह धन व भाग्य की वृद्धि से युक्त भाग्यवान होता है। वह गौरवान्वित, लोक में विख्यात होता है। वह प्रिय तथा अप्रिययजनों का भी हितैषी तथा सुखी होता है।

मंगल दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह रणभूमि में अपने जौहर दिखाने वाला तथा अनेक व्रणों के चिन्ह धारण करने वाला योद्धा होता है। वह अपने शत्रुओं पर दया नहीं करता, क्रूरता और हिंसापूर्ण हो उठता है। साधारणतः वह परोपकारी होता है।

बुध दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे समय में जन्म लेता है तो वह राजा से उच्चाधिकार प्राप्त करने वाला, आश्रय प्राप्त अधिकारी होता है। स्त्री, पुत्र, धनादि से सुखी होता है तथा परोपकारी स्वभाव का सबका भला करने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह सुखी, धनवान, प्रसन्नचित्त और बुद्धिमान होता है। उसकी लोक में प्रशंसा होती है तथा उसके ऐश्वर्य व प्रभुत्व से लोग विनत रहते हैं।

शनि दृष्टि फल—जब कोई जातक ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह अपने पद से च्युत होता है, किसी प्रकार का सुख मिल जाय तो यह उसका परम सौभाग्य समझिए, अन्यथा उसे किसी प्रकार का सुख नहीं प्राप्त होता है। वह संग्राम में पराजित तथा दीन दुःखी होता है।

(40) मकर या कुम्भ राशि में गुरु के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—वह जातक जो गुरु पर रवि की ऐसी दृष्टि के समय पैदा होता है, सुन्दर व अमिट कान्तिवान होता है। उसकी वाणी, मधुर, प्रिय वक्ता, परोपकार करने वाला तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—वह जातक जो गुरु पर चन्द्र के ऐसे दृष्टि योग में जन्म लेता है, अपने कुल का पोषण करने वाला होता है। उसकी बुद्धि तीक्ष्ण, विनम्रता से युक्त, धर्मानुकूल होती है तथा वह उदार माता-पिता का भक्त तथा अभिमान रहित होता है।

मंगल दृष्टि फल—वह जातक जो गुरु पर मंगल के ऐसे दृष्टि योग में जन्म लेता है, उसके कार्य राजकृपा से सिद्ध होते हैं। वह यशस्वी तथा सुखी होता है।

बुध दृष्टि फल—वह जातक जो गुरु पर बुध के ऐसे दृष्टि योग में जन्म लेता है, वह शान्त स्वभाव का होता है, स्त्रियों का प्रिय और धर्म कार्यों में तत्पर रहता है।

शुक्र दृष्टि फल—वह जातक जो गुरु पर शुक्र के ऐसे दृष्टि योग में जन्म लेता है, वह विद्या, विवेक और धन से युक्त होता है, उसको राजाश्रय से अपने अभीष्ट की सिद्धि प्राप्त होती है।

शनि दृष्टि फल—वह जातक जो गुरु पर शनि के ऐसे दृष्टि योग में जन्म लेता है, वह स्त्रियों के पीछे अपने कार्यों की भी उपेक्षा करने वाला, धन-धान्यादि से युक्त होता है। उसकी सर्वत्र प्रशंसा होती है, विख्यात और विनयी होता है।

(41) मेष या वृश्चिक राशि में शुक्र के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—इस योग में जब शुक्र किसी जातक की जन्म कुण्डली में हो तो वह राजा की कृपा से धन, ऐश्वर्य और समस्त सुख प्राप्त कर लेता है, परन्तु अपनी स्त्री से ही उसे कष्ट होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—इस योग में जब शुक्र किसी जातक की जन्म कुण्डली में स्थित होता है तो वह अत्यन्त प्रतिष्ठा प्राप्त, चंचल चित्त होता है। उसका मन निरन्तर स्त्रियों से आसक्त होता है।

मंगल दृष्टि फल—इस योग में जब शुक्र जातक की जन्म कुण्डली में स्थित होता है तो वह धनी-मानी होने से वंचित रखता है। वह दीन और विशेष रूप से मलिन होता है।

बुध दृष्टि फल—इस योग में जब शुक्र किसी जातक की जन्म कुण्डली में स्थित होता है तो वह दुराचार युक्त जीवन व्यतीत करता है, वह धन से रहित तथा परिजनों के स्नेह को न पाकर दुःखी रहता है। वह अपने बुद्धि-बल को व्यर्थ में ही नष्ट करता है, क्रूर तथा अन्य लोगों के धन का अपहरण करने वाला होता है।

गुरु दृष्टि फल—इस योग में जब शुक्र किसी जातक की जन्म कुण्डली में स्थित होता है तो वह धन-धान्य, स्त्री, पुत्रादि सभी सुखों से सुखी होता है। शरीर से स्वस्थ तथा बहुत सुन्दर होता है। अपने विनयी और परोपकारी स्वभाव के कारण लोक में प्रशंसा प्राप्त करता है।

शनि दृष्टि फल—इस योग में जब शुक्र किसी जातक की जन्म कुण्डली में स्थित होता है तो वह अपनी अर्जित तथा संचित धन को गुप्त रखता है, वह लोक में मान्य होता है तथा गरीबों को दान देकर सुखी होता है। वह अपने लोगों के अनुकूल चलकर उन्हें सुख देता है और शान्त स्वरूप का होता है।

(42) वृष या तुला राशि में शुक्र के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में शुक्र और रवि का ऐसा योग होता है, वह सुन्दर वीरांगनाओं का सुख प्राप्त करने वाला, धन, वाहनादि से सदैव सुख पाता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में शुक्र और चन्द्रमा का ऐसा योग होता है, वह अनेकों स्त्रियों के साथ विलास करता है, अपने कुल में श्रेष्ठ और सम्मानित होता है। उसकी बुद्धि निर्मल होती है, वह सुशील तथा श्रेष्ठ बातों से सबको प्रसन्न करता है।

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में शुक्र और मंगल का ऐसा योग होता है, वह गृह आदि के सौख्य से वंचित होता है। पारस्परिक विवाद, वैमनस्य या लड़ाई-झगड़े में पराजित होकर दुःखी होता है।

बुध दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में शुक्र और बुध का ऐसा योग होता है, वह सुन्दर, स्वरूपवान, गुणों से विभूषित, सौम्य तथा कामोपभोग प्रेमी, बलवान तथा तेजस्वी धीर होता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में शुक्र और गुरु का ऐसा योग होता है, वह उत्तम सवारी, गृह, स्त्री, पुत्रादिक से तथा धन-सम्पत्ति से सम्पन्न होता है।

शनि दृष्टि फल—जिस जातक की जन्म कुण्डली में शुक्र तथा शनि का योग होता है, उसे रोग व्याधि घेरे रहती है, साधु स्वभाव से रहित विपरीत आचार का वह पालन करने वाला होता है। वह धन के लिए सदा दुःखी रहता है।

(43) मिथुन या कन्या राशि में शुक्र के स्थित होने पर

सूर्य दृष्टि फल—ऐसे योग में शुक्र-सूर्य के होते हुए जो जातक जन्म प्राप्त करता है, वह राजा के अन्तःपुर का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी, विनयी, गुणी, शास्त्रों का ज्ञाता, पण्डित होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—ऐसे योग में शुक्र-चन्द्रमा के होते हुए जो जातक जन्म प्राप्त करता है, उसे उत्तम अन्न, वस्त्रादि का अभाव नहीं होता है। वह व्यक्ति नीलकमल के समान सुन्दर होता है।

मंगल दृष्टि फल—ऐसे योग में शुक्र-मंगल के होते हुए जो जातक जन्म लेता है, वह कामकला का मर्मज्ञ और भाग्यवान होता है। वह स्त्री के कारण या उसके हितार्थ या उसके कहने पर बहुत धन व्यय करता है।

बुध दृष्टि फल—ऐसे योग में शुक्र-बुध के होते हुए जो जातक जन्म लेता है, वह

बहुत बुद्धिमान होता है। उसके पास बड़े अच्छे-अच्छे वाहन होते हैं, वह राज्य में सेनापति या दूसरे उच्च पदों की शोभा बढ़ाता है। उसके परिवार में सदैव आनन्द बना रहता है।

गुरु दृष्टि फल—ऐसे योग में शुक्र-गुरु के होते हुए जो जातक जन्म लेता है, वह सद्बुद्धि से युक्त, बहुत धन-सम्पत्ति का भोग भोगने वाला, प्रसन्न मुख तथा विनयशील होता है।

शनि दृष्टि फल—ऐसे भोग में शुक्र-शनि के होते हुए जो जातक जन्म लेता है, वह शत्रु द्वारा पराजय को प्राप्त होता है। वह जन-शून्य स्थान में रहता है, एकान्त स्थान में रहने पर भी मन की चञ्चलता के वशीभूत रहता है। वह स्वयं बहुत दुःखी और लोक प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं कर पाता है।

(44) कर्क राशि में शुक्र के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस ग्रह दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह क्रोधी स्त्री से कभी सुख नहीं पा सकता और शत्रुओं से हार मान लेता है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस ग्रह दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह प्रथम सन्तान के रूप में कन्या प्राप्त करता है। उसके बाद उसे पुत्र प्राप्ति होती है। इस जातक को अपनी सौतेली माता से सुख प्राप्त होता है तथा इसे लोक में बहुत गौरव मिलता है।

भौम दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस ग्रह दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह कलाओं में चतुर, अपने शत्रुओं को पराजित करने वाला, बुद्धिमान होता है, किन्तु सुन्दरियों के कटाक्ष से आहत उनके हेतु चिन्ता व्यग्र रहता है।

बुध दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस ग्रह दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह विद्याओं में प्रवीण होता है, वह गुणों में श्रेष्ठ तथा दूसरे गुणीजनों को भी अपने निकट आदर-सम्मान देता है। इस जातक को अपनी स्त्री तथा पुत्र से कष्ट प्राप्त होता है। अपने बन्धु-बान्धवों द्वारा इसका परित्याग किया जाता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस ग्रह दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह अति चतुर और उदार होता है। वह बहुत ही प्रिय वाणी बोलने वाला विनीत और विद्या-बुद्धि सम्पन्न ऐश्वर्यवान होता है। वह धन, पुत्र, स्त्री आदि के सुख से तृप्त होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि कोई जातक इस ग्रह दृष्टि में जन्म लेता है तो वह सदाचार से हीन, सुख प्राप्त नहीं करने वाला निर्धन होता है। उद्योग में असफल, अपने स्थान से भ्रष्ट हुआ यह व्यक्ति नष्ट हुए धन को प्राप्त करने का असफल प्रयत्न करता है। यह स्त्री के वश में रहता है।

(45) सिंह राशि में शुक्र के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—यदि कोई जातक शुक्र-रवि के ऐसे योग में जन्म प्राप्त करता है, तो वह दूसरे लोगों के साथ स्पर्धा करता रहता है, इसी प्रतिस्पर्द्धा में वह अपना धन बढ़ाता

है। स्त्री के आश्रित हुआ यह व्यक्ति धन प्राप्त करता है तथा इसके पास ऊँट की सवारी होती है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि कोई जातक शुक्र-चन्द्र के ऐसे योग में जन्म लेता है तो उसके पिता के एक से अधिक स्त्रियाँ होती हैं तथा उसका अपनी पत्नी से विरोध होता है। यद्यपि वह धनार्जन हेतु विशेष प्रयत्नशील नहीं रहता, किन्तु धन ऐश्वर्य से युक्त होता है।

भौम दृष्टि फल—यदि कोई जातक शुक्र-भौम के ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह राजा का प्रिय, धन-धान्यादि-सम्पत्ति से युक्त तथा कामवाणों से आहत सुन्दरी रमणियों का सेवन करने वाला होता है।

बुध दृष्टि फल—यदि कोई जातक शुक्र-बुध के ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह धन संग्रह करके सुखी रहने वाला, परन्तु लोभ के कारण निरन्तर उसी को प्राप्त करने के पीछे उचित-अनुचित कार्यों को करने से न हिचकने वाला, स्त्रियों को प्राप्त करने की चेष्टा में रत, निन्दित कार्यों को करके अपयश प्राप्त करता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि कोई जातक शुक्र-गुरु के ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह राजा, मन्त्री, धन, वाहनादि से युक्त, स्त्री-पुरुष सेवकों से सानिध्य और सेवा से प्रसन्न रहने वाला, विख्यात व्यक्ति होता है।

शनि दृष्टि फल—यदि कोई जातक शुक्र-शनि के ऐसे योग में जन्म लेता है तो वह राजा या राजा के तुल्य होता है। वह सब प्रकार से समृद्ध होता है। वह दण्डाधिकार प्राप्त ऐश्वर्य और कीर्ति युक्त एक अति प्रभाव वाला व्यक्ति होता है।

(46) धनु या मीन राशि में शुक्र के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब किसी व्यक्ति का जन्म ग्रहों के इस दृष्टि योग में होता है तो वह बहुत क्रोधी होता है, साथ ही विद्वान और बुद्धिमान सभी प्रकार के सौभाग्य से युक्त तथा स्वरूपवान होता है। वह बहुत तेजस्वी, धनी तथा अनेक देशों में भ्रमण करता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब किसी व्यक्ति का जन्म ग्रहों के दृष्टि योग में होता है तो वह राजा से सम्मान और आदर प्राप्त करता है। उसका यश दूर-दूर तक फैलता है, विनयी और अनेक प्रकार के भोगों को भोगने वाला वह धीर और तेजस्वी, बली होता है।

भौम दृष्टि फल—जब कोई जातक ग्रहों के इस दृष्टियोग में पैदा होता है तो उसके शत्रुओं को सदा नीचा देखना होता है। वह उसके बल, वैभव तथा वीरता से भय खाते हैं। वह स्त्रियों में आसक्त उन्हें प्रसन्न करने वाला प्रसन्नचित्त तथा पुण्यवान और उत्तम सवारियों पर आरूढ़ होने वाला होता है।

बुध दृष्टि फल—जब किसी जातक का जन्म ग्रहों के इस दृष्टि योग में होता है तो उसके पास उत्तम वाहन होते हैं। धन, वस्त्राभूषण तथा उत्तम आवास, भोजनादि से वह पूरी तरह सुखी रहता है। वह सदैव उन्नति करता है और उसके उद्यम सफल होते हैं।

गुरु दृष्टि फल—जब किसी जातक का जन्म ग्रहों के इस दृष्टि योग में होता है तो

वह हाथी-घोड़े आदि की सवारी का उपभोग करने वाला, वस्त्र तथा अलंकारों से युक्त, सुन्दर स्त्रियों का प्रेमी होता है। उसके पास धन-वैभव का कभी अभाव नहीं होता है।

शनि दृष्टि फल—जब किसी जातक का जन्म ग्रहों के इस दृष्टि योग में होता है तो वह व्यक्ति भोगी, सुखी, उत्तम कर्मों को करके सर्वत्र यश का लाभ करने वाला, सदैव उत्सवयुक्त वातावरण में रहकर और समृद्धि को प्राप्त करता रहता है।

(47) मकर या कुम्भ राशि में शुक्र के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—इस दृष्टि योग में जो जातक जन्म प्राप्त करता है, वह स्थिर स्वभाव का व्यक्ति होता है, ऐश्वर्य, महाजनी तथा बलवान होता है। इसको अनेकानेक सुन्दरियों का भोग प्राप्त रहता है।

चन्द्र दृष्टि फल—इस दृष्टि योग में जो जातक जन्म प्राप्त करता है, वह तेजस्वी, सुन्दर शरीर, महाबलवान, धन, वाहनादि से सुखी रहता है।

मंगल दृष्टि फल—इस दृष्टि योग में जो जातक जन्म प्राप्त करता है, वह बहुत परिश्रम करता है तथा उसके कारण कष्ट उठाता हुआ रोगी होकर दुःख भी प्राप्त करता है। विभिन्न कार्यों को करने से उसे धन हानि होती है।

बुध दृष्टि फल—इस दृष्टि योग में जो जातक जन्म प्राप्त करता है, वह विद्वान तथा व्यवहार बुद्धि से विभूषित, धनी, सन्तोषी और बलवान होता है। कूटनीति में चतुर, प्रपञ्च करने में भी यह जातक कुशल होता है, इसकी वाणी मनोहर तथा लुभाने वाली होती है।

गुरु दृष्टि फल—इस दृष्टि योग में जो जातक जन्म लेता है, वह पुष्प चन्दनादि सुगन्ध का धारण करने वाला, वस्त्राभूषणों से विभूषित और सुखी, संगीत वाद्य में कुशल तथा पवित्र विचारों से युक्त होता है।

शनि दृष्टि फल—इस दृष्टि योग में जो जातक जन्म लेता है, वह व्यक्ति प्रसन्न, मुख सदा मुस्कराते हुए रहने वाला, विचित्र प्रकार के लाभों से युक्त, धन, वाहन तथा स्त्री आदि से सुखी होता है।

(48) मेष या वृश्चिक राशि में शनि के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब कोई जातक रवि-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म धारण करता है तो वह भैंस, गाय, भेड़, बकरी आदि पशुओं के व्यापार से धन का लाभ करता है। उसे कृषि कार्य में विशेष सुख भी मिलता है तथा धन लाभ भी होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब कोई जातक चन्द्र-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह नीच लोगों की संगति करने वाला, चंचल, दुष्ट स्वभाव, खल और सुख-धन से रहित होता है।

मंगल दृष्टि फल—जब कोई जातक मंगल-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह बहुत बोलने वाला, उत्तम पदार्थों से वंचित, कार्यों में असफल तथा धन हानि को प्राप्त रहने वाला होता है।

बुध दृष्टि फल—जब कोई जातक बुध-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह चौर्य कर्म में कुशल होता है। विवादी और झगड़ालू यह जातक स्त्री सुख से भी वञ्चित होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब कोई जातक गुरु-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है तो धन ऐश्वर्य सुख से सम्पन्न, राजा के आश्रित मुख्य अधिकारी या राजमन्त्री या राजा का प्रिय पात्र होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब कोई जातक शुक्र-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह बहुत यात्राओं को करने में संलग्न रहता हुआ कान्तिहीन, दुष्टाओं में प्रीति रखने वाला तथा कुमति होता है।

(49) वृष या तुला राशि में शनि के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब कोई जातक रवि-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह विद्या और विचारों के योग्य, बहुत बोलने वाला, दूसरे के अन्न पर आश्रित रहने वाला, धनहीन, परन्तु शान्त स्वभाव का होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब कोई जातक चन्द्र-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह राजकृपा से उच्च पद को प्राप्त करता है। स्त्री, वस्त्र, आभूषण, धन-धान्य से सम्पन्न होता है। सभी प्रकार का सुख माँगने वाला बलवान भी होता है।

मंगल दृष्टि फल—जब कोई जातक मंगल-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म प्राप्त करता है तो वह युद्ध विद्या में निपुण होता है। वह बहुत बोलने वाला तथा अत्यन्त प्रसन्नचित्त, ऐश्वर्यवान होता है।

बुध दृष्टि फल—जब कोई जातक बुध-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह स्त्री में आसक्त, नीच लोगों का संग करने वाला, हास्य-विनोदी, धन के लिए दुःखी और नपुंसकों का साथी होता है।

गुरु दृष्टि फल—जब कोई जातक गुरु-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह परोपकार में तत्पर रहता है। दूसरों के दुःख में स्वयं दुःखी रहता है, उदार मना होकर दान देने वाला, उद्योगों में सफल रहकर धनार्जन करने वाला तथा सब लोगों का प्रिय होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब कोई जातक इस दृष्टि योग में जन्म लेता है तो वह सुवर्ण रत्नादि का लाभ करता है। उसे भोग-विलास हेतु सुन्दरियों का अभाव नहीं रहता, बहुत बलवान तथा राजा से लाभ, मान-सत्कार पाता है।

(50) मिथुन या कन्या राशि में शनि के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—यदि किसी जातक का जन्म ग्रहों की इस स्थिति में होता है तो वह नीच लोगों का साथी और धनहीन तथा सुख से रहित व्यक्ति होता है। वह क्रोधी और धर्माचार का विरोधी तथा दूसरे लोगों से द्रोह करने वाला, परन्तु धीर पुरुष होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—यदि किसी जातक का जन्म ग्रहों की इस स्थिति में होता है तो वह प्रसन्नचित्त, राजकृपा से उच्च पद का भोगी, सदैव उन्नतिशील तथा ऊँचे अधिकारों पर आसीन होता है।

मंगल दृष्टि फल—यदि किसी जातक का जन्म ग्रहों की ऐसी स्थिति में होता है तो वह तीक्ष्ण बुद्धि, व्यवहार-ज्ञानी, विख्यात तथा गम्भीर विचार वाला होता है।

बुध दृष्टि फल—यदि किसी जातक का जन्म ग्रहों की ऐसी स्थिति में होता है तो वह धनी और बुद्धिमान होता है। उसकी बुद्धि अच्छे विचारों से युक्त रहती है तथा वह विनम्र भाव से सबको मोहने वाला होता है, संगीत-गीत में रुचि रखने वाला, संग्राम कला में चतुर तथा शिल्पज्ञ होता है।

गुरु दृष्टि फल—यदि किसी जातक का जन्म ग्रहों की ऐसी स्थिति में होता है तो वह राजा का आश्रित उसका प्रिय होता है। वह उत्तम गुणों से युक्त, साधुओं का प्रिय, धन को गुप्त रखने वाला, प्रसन्नचित्त होता है।

शुक्र दृष्टि फल—यदि किसी जातक का जन्म ग्रहों की ऐसी स्थिति में होता है तो वह स्त्रियों के आभूषण बनाने में कुशल, सदाचारी तथा धर्म कार्य में तत्पर और स्त्री में आसक्त रहता है।

(51) कर्क राशि में शनि के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म रवि-शनि के इस दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह स्त्री, पुत्र, धन आदि के हर्ष को प्राप्त नहीं करता है। उसको अच्छे भोज्य पदार्थों की प्राप्ति नहीं होती है तथा उसके कार्यों से माता कष्ट पाती है।

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म चन्द्र-शनि के इस दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह अपने बन्धु-बान्धवों को पीड़ा देता है, माता को भी कष्ट देता है तथा अपने उद्यम-उद्योग में तत्पर रहता हुआ धन वृद्धि करता है।

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म मंगल-शनि के इस दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह बलहीन, कृश शरीर तथा राजा से प्राप्त हुए अर्थ का उपभोग करता है।

बुध दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म बुध-शनि के इस दृष्टि सम्बन्ध में होता है वह कड़वी वाणी बोलने वाला, अनेक प्रकार की चेष्टा करके धन संग्रह करने वाला, दम्भी तथा चतुर होता है। वह चारों तरफ भ्रमण करता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म गुरु-शनि के इस दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह भूमि, ग्रह, धन-आभूषण, वाहन आदि से सुखी, स्त्री, पुत्र द्वारा शान्ति प्राप्त करने वाला होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म शुक्र-शनि के इस दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह उदारता, गौरव, सम्मान से हीन होता है। वह सुन्दर नहीं होता तथा उसके वचन कठोर होते हैं।

(52) सिंह राशि में शनि के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म रवि-शनि के ऐसे दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह धन-धान्य, वाहन, सदाचार तथा उत्तम कार्यों से वंचित रहता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म चन्द्र-शनि के ऐसे दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह स्वर्ण, रत्न-आभूषणों से युक्त, वस्त्र, गृह से सुखी, स्त्री, पुत्र, मित्र से स्नेह सेवा प्राप्त तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है। उसे उत्तम कीर्ति की प्राप्ति होती है।

मंगल दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म मंगल-शनि के ऐसे दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह युद्ध कला में चतुर, दयाहीन, क्रोधी और क्रूर-प्रकृति वाला होता है।

बुध दृष्टि फल— जिस जातक का जन्म बुध-शनि के ऐसे दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह धन, पुत्र, पुत्री से हीन होता है। वह नीच कार्यों को करने में तत्पर तथा दरिद्री होता है।

गुरु दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म गुरु-शनि के ऐसे दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह विनम्रता से व्यवहार करने वाला, ग्राम या शहर का मुखिया होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जिस जातक का जन्म शुक्र-शनि के ऐसे दृष्टि सम्बन्ध में होता है, वह धन-धान्यादि के सुख को भोगने वाला, अपने वाहनों में घूमने वाला होता है, किन्तु स्त्री-पुत्रों द्वारा अपमानित होता है।

(53) धनु या मीन राशि में शनि के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जब कोई जातक इन दोनों ग्रहों की इस दृष्टि स्थिति में जन्म लेता है तो वह विख्यात और धनवान होता है। उसका गौरव और यश लोक में बहुश्रुत होता है। उसे अन्य की सन्तान से स्नेह होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जब कोई जातक इन दोनों ग्रहों की इस दृष्टि स्थिति में जन्म लेता है तो वह सदाचारी होता है, उसकी माता का बचपन में ही निधन हो जाता है। उसको दो नामों से जाना जाता है तथा स्त्री, पुत्र, धन-ऐश्वर्य से युक्त होता है।

मंगल दृष्टि फल—जब कोई जातक इन दोनों ग्रहों की इस दृष्टि स्थिति में जन्म लेता है तो वह वात रोगी, लोक में विरोध करने वाला, विदेश वासी और दुःखी होता है। इसके पास न धन का अभाव होता है, न बाहुल्य होता है। अपनी ऐसी दशा में वह दीन होता है।

बुध दृष्टि फल—जब कोई जातक इन दोनों ग्रहों की इस स्थिति में जन्म लेता है। वह अनेक गुणों से युक्त बुद्धिमान तथा चतुर व्यक्ति होता है। उसके पास प्रचुर धन होता है तथा वह राज्य में अधिकारी होता है। वह धर्म कार्यों को करके यश प्राप्त करता है।

गुरु दृष्टि फल—जब कोई जातक इन दोनों ग्रहों की इस दृष्टि स्थिति में जन्म लेता है तो वह मित्र, पुत्र, स्त्री आदि से सुखी होता है, उसके गुण लोक में सराहे जाते हैं, अपने

गुणों तथा सदाचार के कारण विख्यात होता है। राजा का प्रधानमंत्री या सेनापति, बलवान और परोपकारी होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जब कोई जातक इन दोनों ग्रहों की इस स्थिति में जन्म लेता है तो वह विदेश वासी, कई कार्यों को एक समय में करने वाला, अपने कुल में दत्तक पुत्र तथा बहुत पवित्र चरित्र से युक्त होता है।

(54) मकर या कुम्भ राशि में शनि के स्थित होने पर

रवि दृष्टि फल—जो जातक रवि-शनि के इस योग में जन्म लेता है, वह कुरूप, कटु वचन बोलने वाली पत्नी का पति होता है। वह दूसरों के अन्न का भोगी तथा विदेश में रहकर अनेक प्रयास करता रहकर धनार्जन करता है। वह रोगग्रस्त होता है।

चन्द्र दृष्टि फल—जो जातक चन्द्र-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है, वह धन तथा स्त्री की ओर से दुःखी रहता है, पाप कर्मों में रत रहता हुआ चञ्चल और मातृ विरोधी होता है। उसका मन स्त्रियों में लगा रहता है।

मंगल दृष्टि फल—जो जातक मंगल-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है, वह शूरवीर और रण विद्या का पारंगत होता है। उसका स्वभाव योद्धाओं की तरह निर्मोही तथा कड़ा होता है। वह अत्यन्त साहसी, गुणों में उत्कृष्ट तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है।

बुध दृष्टि फल—जो जातक बुध-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है, वह उत्तम वाहन, साहस, धन तथा यश से युक्त होता है, वह बली होता है और धैर्य से अनेकों कठिन कार्यों को पूरा कर सकता है।

गुरु दृष्टि फल—जो जातक गुरु-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है, वह गुणी, राजा का मन्त्री, निरोग, स्वरूपवान तथा धनी होता है।

शुक्र दृष्टि फल—जो जातक शुक्र-शनि के इस दृष्टि योग में जन्म लेता है, वह कामातुर, नियम का पालन नहीं करने वाला होकर उच्छृंखल होता है। वह सुखी, धनी और विभिन्न प्रकार के भोगों में भोगने वाला होता है।

■

स्पष्ट फल निरूपण विचार

प्रत्येक व्यक्ति का जीवनक्षेत्र बहुत विस्तृत होता है—चाहे वह एक धनी आदमी का हो, ऐश्वर्यमान का हो, राजा का हो या एक निर्धन व दीन व्यक्ति का हो। यदि किसी भी प्रकार के सामाजिक स्तर के आदमी के जीवन को देखा जाय तो उसमें बहुत उतार-चढ़ाव होते हैं। अधिकतर जातकों के जीवन में होने वाले उतार-चढ़ाव मात्र उन्हें अपने आपको, अपने घर को ही या उनके परिजन और बन्धु-बान्धवों को ही प्रभावित करते हैं, किन्तु किसी जातक के जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव समाज तथा उससे भी बड़े क्षेत्र के जन-जीवन को अपनी लपेट में लेते हैं। यह सब जानकारी ज्योतिर्विद भारतीय ज्योतिष के अनुसार जातक की जन्म कुण्डली के सूक्ष्म विवेचन से करते हैं, किन्तु इस विवेचन से पूर्व यह देखना भी आवश्यक होता है कि जातक के जन्म काल का क्षण जिसके आधार पर जन्म कुण्डली की रचना होती है, किस संवत्सर, युग, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, दिन या रात्रि, नक्षत्र, योग, करण के अन्तर्गत है। इन सबके विशिष्ट फल होते हैं, क्योंकि जीवनवृत्त की आधारशिला इन्हीं संवत्सरादि के प्रभाव की मिट्टी से रखी होती है। इस मिट्टी को ज्योतिर्विद किसी जातक की जन्म कुण्डली को देखकर जान लेते हैं। इसका ज्ञान बहुत आवश्यक है, क्योंकि ग्रह राशियों की न्यूनाधिक अंश कलाओं द्वारा जातक के जीवन के सूक्ष्म उतार-चढ़ाव का जो ताना-बाना बुना जाता है, वह इस मिट्टी के ऊपर बुना जाता है। इस ताने-बाने के तार कैसे हैं, महीन या मोटे, यह तो बाद की बात है, परन्तु वह जिस मिट्टी के ऊपर फैली है, उसे देखते हुए इन्हें कैसा रंग मिला होना चाहिए, प्रारम्भिक रूप से यह जान लेना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश का स्वरूप विकृत हो जायेगा। इसी कारण संवत्सरादि के फल का महत्व होता है।

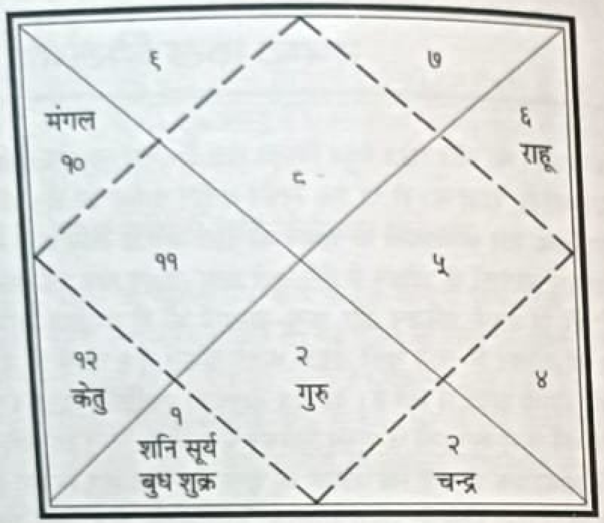
यही विवचेन, कुछ जातकों की जन्म कुण्डलियों के उदाहरण देकर यहाँ करना प्रासंगिक है।

अगले पृष्ठ पर जनमांक चक्र डॉ. प्रमोद कुमार का है। इनका जन्म आगरा में शुभ संवत्सर वैशाख शुक्ल 5 संवत् 1998, शके 1863 उत्तरायण सूर्योदय के 36 घटी 22 पल 30 विपल तदनुसार अंग्रेजी तारीख एक मई 1941 ई. को भारतीय समयानुसार रात्रि 8 बजकर 2 मिनट 36 सेकण्ड पर गुरुवार को हुआ।

जन्म समय आर्द्रा नक्षत्रमान 57 घटी 59 पल, सुकर्मा योग 16 घटी 23 पल गर-करण, दिनमान 32/31, रात्रि मान 27/29, अयनांश 23/59/6, सायनार्क 1/12/15/58 था।

शुभ नाम संवत्सर में जन्म लेने के कारण यह व्यक्ति सौभाग्यवान, दक्ष कीर्तिमान, धर्म और प्रजा का पालक एवं निपुण होता है। विद्या और विनय से युक्त पुण्यात्मा, दीर्घजीवी और पुत्रादि सुख से युक्त इसे सम्पत्तिवान होना चाहिए।

डॉ. प्रमोद कुमार (उदाहरण 1)



अष्टम युग (शुभ नामक संवत्सर 36वाँ संवत्सर होता है। 36वें से 40वें संवत्सर तक की कालावधि आठवाँ युग होता है) इस युग में जन्म लेने के कारण यह जातक पापी होने पर भी संतोषी, व्याधि भोग से दुःखी और दूसरों की हिंसा करने की प्रवृत्ति वाला होना चाहिए।

उत्तरायण में जन्म पाने के कारण यह जातक धर्म, अर्थ और काम से युक्त होना चाहिए। स्वरूप का सुन्दर व गुणों का धनी भी होना चाहिए।

ग्रीष्म ऋतु में जन्म पाने के कारण इस जातक को बहुत से कार्यों को एक साथ आरम्भ करके सुख अनुभव करना चाहिए। इसका स्वभाव विलम्ब से कार्य करने में संतोष प्राप्त करने वाला तथा तुरन्त ही कार्य को निपटाने की इच्छा वाला नहीं होना चाहिए। साधु स्वभाव का होने पर भी अति उत्कट काम-वासना में चित्त को रमाने वाला होना चाहिए।

वैशाख मास में जन्म लेने के फलानुसार यह जातक अनेक भोगों को प्राप्त करेगा, यह सुन्दर स्वरूपवान व सुन्दर नेत्रों से युक्त होगा। इसको क्रोध शीघ्र आना चाहिए तथा यह स्त्रियों को सदैव प्रिय लगने वाला होना चाहिए।

शुक्ल पक्ष में जन्म प्राप्त करने के कारण इस जातक को पूर्णचन्द्र के समान शोभा प्राप्त होगी, धन प्राप्त होगा तथा यह उद्योगी होगा। इसको अनेक शास्त्रों का ज्ञानी होना चाहिए, कार्य करने में कुशल तथा बुद्धिमान भी होना चाहिए।

पञ्चमी को इस जातक ने जन्म प्राप्त किया है, अतः इस तिथि में जन्म लेने के कारण यह जातक व्यवहार का ज्ञानी होगा, कुशल होगा और विधि का ज्ञाता, दूसरों के गुणों की प्रशंसा करने वाला होगा। यह व्यक्ति माता-पिता का भक्त, दानी, भोगी तथा प्रेम भाव से युक्त होगा।

पूर्णा तिथि (पंचमी) में जन्म के कारण इस जातक को धन-धान्य का कभी भी अभाव नहीं रहेगा, वेद और शास्त्रों का यह ज्ञाता होगा। सत्य वाणी को बोलने वाला, चित्त का शुद्ध तथा अनेक विषयों का इस व्यक्ति को ज्ञान होगा।

गुरुवार में जन्म लेने के कारण यह धनवान होना चाहिए। इस जातक की बुद्धि सुन्दर, विवेक युक्त और सूक्ष्म होनी चाहिए। यह लोक में मान्य, राजा द्वारा मान्य राज्य मंत्री होना चाहिए। इसको जन्म के सातवें मास में कष्ट प्राप्त होना चाहिए, तेरहवें तथा सोलहवें वर्ष की आयु में भी कष्ट मिलना चाहिए। इसकी आयु 84 वर्ष की होनी चाहिए।

रात्रि में जन्म प्राप्त करने के कारण यह व्यक्ति कम बोलने वाला, कामी, मलिन रूप धारण करने वाला और कुटिल हृदय का होना चाहिए। क्षय रोग से पीड़ित यह जातक गुप्त रूप से पाप कर्मों में लिप्त रहने की प्रवृत्ति वाला भी होना चाहिए।

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म धारण करने के कारण यह जातक रुक्ष शरीर वाला होना चाहिए। इसकी क्षुधा बहुत प्रदीप्त रहनी चाहिए। स्त्री तथा बन्धु-बान्धवों का प्रिय, बहुत क्रोधी, दया और उदारता इसमें कम होनी चाहिए।

सुकर्मा योग में जन्म हुआ यह जातक सदैव प्रसन्न रहने वाला होना चाहिए, कलाओं में निपुण और मान्य होना चाहिए। यह जातक अनने कार्यों का बहुत उत्साह और साहसपूर्ण निर्वाह करने वाला होना चाहिए। यह व्यक्ति परोपकारी और अच्छे कार्यों द्वारा जीवनयापन करके प्रसन्नता प्राप्त करने वाला होना चाहिए।

बव करण में इस जातक के जन्म लेकर कामी और दयालु होने का स्वभाव पाया हुआ होना चाहिए। इसकी बुद्धि तीव्र तथा सहज ही नवीन विचार वाली होनी चाहिए। यह अपने कार्यों को सरलतापूर्वक निपटा डालने वाला, सम्पत्तिशाली और भाग्यशाली होना चाहिए।

मनुष्य गण (आर्द्रा नामक नक्षत्र में जन्म होने से) में इस जातक द्वारा जन्म प्राप्त करने के कारण इसे देव ब्राह्मणों की भक्ति भी प्राप्त होनी चाहिए। इसे अपने गुणों के कारण अभिमानी, अपने धन, बल और कलाओं का प्रदर्शन करने वाला, अपने गुण, धन व कलाओं का भूखा होना चाहिए। इसके द्वारा अनेकों का पालन होना चाहिए तथा सहज ही दयार्द्र होकर दूसरों के दुःखों को दूर करने वाला कांतिवान, ज्ञानी व पण्डित भी इसको होना चाहिए।

कूकर योदि (आर्द्रा में जन्म लेने के कारण) में यह जातक जन्म प्राप्त करके उद्यमी व उत्साही होना चाहिए। यह वीर तथा अपने बन्धुओं से झगड़ा करने वाला तथा अपने माता-पिता का भक्त होना चाहिए।

फल-विवेचन–इस प्रकार इस जातक के जन्म काल में समय की जो लघु या दीर्घकालिक इकाइयाँ विद्यमान थी तथा एक से दूसरी इकाई में जो कड़ी रूप में विद्ध थी, उनके फल हुए। इन सबका अध्ययन करके यह देखना उचित होगा कि वास्तव में कौन-सा

फल विशिष्ट रूप से जातक के जीवन को प्रभावित करेगा। इसका विश्लेषण इस ढंग से करना उचित होगा–

इस जातक के जन्म समय में **शुभ नामक संवत्सर** विद्यमान था। यह संवत्सर बारह युगों में से **आठवें युग** में होता है, अर्थात् आठवें युग का एक भाग, वह भी प्रारम्भिक पहला संवत्सर आठवें युग के फल में जातक को **पाप कर्म करने पर भी संतोषी, व्याधियों से ग्रस्त, दूसरों की हिंसा करने वाला** माना गया है, परन्तु शुभ नामक संवत्सर के फल में इन अवगुणों का नाम भी नहीं है। चूँकि युग का एक भाग संवत्सर होता है, अतः आठवें युग के इस दोषपूर्ण फल को **शुभ नामक संवत्सर के शुभ फल ने निरस्त कर दिया है।** अतः यह जातक व्यापक रूप से जिस फल को प्राप्त करने वाला होना चाहिए, वह शुभ है, अर्थात् वह **सौभाग्यवान, धर्म तथा प्रजा का पालक, कीर्तिवान, विद्या-विनय से युक्त, पुण्यात्मा, दीर्घजीवी व पुत्रादि सुख से युक्त होना चाहिए।**

यह शुभ फल, उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु, वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी व पूर्ण तिथि और गुरुवार के फलों से पुष्टि प्राप्त करता है। इनके अनुसार इस जातक में **काम-वासना का प्रभाव भी अधिक, स्त्रियों को प्रिय लगने वाला यह व्यक्ति दूसरों का गुण ग्राहक दानी, भोगी भी होना चाहिए।**

चूँकि इस व्यक्ति ने रात्रि के प्रथम प्रहर में जन्म लिया है, अतः रात्रि में जन्म लेने के जो फल होते हैं, वह पूर्ण रूप में नहीं होना चाहिए। यह सूक्ष्म या बहुत अल्प प्रभाव वाला इसलिए भी नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय की जिस पंचमी (पूर्णा) तिथि जन्म प्राप्त करने के शुभ फल जातक को प्राप्त है, उसी की अवधि में जातक का जन्म हुआ है, परन्तु रात्रि के देवता अपना नाममात्र का प्रभाव दिये बिना नहीं छोड़ सकते, अतः यह जातक शारीरिक रूप से चाहे गुप्त पाप कर्म न करे, तामस भाव से कुटिल हृदय न हो और मलिन रूप धारण करने वाला भी न हो, किन्तु सात्विक भाव या किसी परोपकार हेतु कुटिलता से काम लेते हुए, चुपचाप किसी के प्रति दयालु होने के कारण उसे लाभान्वित करने के लिए कोई पापकर्म भी गुप्त भाव से कर डाले तो आश्चर्य भी क्या है। उसका कामी होना, दूसरे फलों की पुष्टि करना ही है और अल्पभाषी होने का एक भाव और प्रकाश में आता है, अतः रात्रि में जन्म लेने के कारण इस जातक के जीवन में एक विशेष महत्व है। **इन गुणों (जो कि अवगुणों की तरह लगते हैं) के सन्दर्भ में शुभ गुणों की विद्यमानता जातक में एक अद्भुत तीखापन देती हैं।**

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने का एक फल है, रूक्ष शरीर, प्रदीप्त क्षुधा और क्रोध की अधिकता, परन्तु यह सब अन्य शुभ कार्यों में संदर्भित ही माने जायेंगे। सुकर्मा योग, बव करण, मनुष्य गण और कूकर योनि में जन्म लेने के फल इस जातक को पूरा मनुष्य–**मानव धर्म का पालन करने वाला तथा एक सत्स्वभाव मानव गुणों से सम्पन्न व्यक्ति के रूप में उपस्थित करते हैं।**

अब इस जातक की इसी जीवन भूमि पर जो लग्नादि फल हैं, उन पर विचार करते हैं–

इस जातक की लग्न वृश्चिक है। वृश्चिक लग्न में जो जातक पैदा होता है, कुल में श्रेष्ठ, विवेक से कार्य करने वाला तथा परिवार का पोषण करता है। उसके पास धन का अभाव नहीं होता तथा वह बहुत ज्ञानी होता है। यह जातक राज्य में मान्य, गुणवान, शास्त्रों में रुचि रखने वाला तथा शत्रुजयी और क्रोधी होता है। इसमें वृद्धों की सी गम्भीरता होती है। इस जातक को दूसरे माह में कष्ट होता है। सात वर्ष की आयु में रोग होता है, आठवें वर्ष में जलाघात, 13वें वर्ष में वृक्षाघात होता है। 32वें व 35वें वर्ष में रोग और लोहघात सम्भव है। 45वें वर्ष में अंग रोग होता है, 63वें वर्ष में अल्प मृत्यु योग होता है। यदि चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो यह जातक 75 वर्ष 2 माह 7 दिन जीवित रहता है। इसका ज्येष्ठ कृष्णा 11 को मंगलवार तथा रेवती नक्षत्र में शरीरान्त होता है।

लग्न के इस फलादेश को देखते हुए ज्ञात होता है कि यह फल उपर्युक्त संवत्सरादि के फलाफल की पुष्टि करता हुआ जातक के स्वभाव, कार्यों तथा स्थिति का सही अवलोकन कराता है। दोनों फलादेशों की साम्यता को देखते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि जातक **एक उच्च स्तरीय विचाराधारा, ज्ञान तथा धन का स्वामी होता है। समाज व लोक में इसकी प्रतिष्ठा होती है। यह उद्धार और लोक में हितैषी होता है।** अब आता है सूक्ष्म फलादेश, जिसके अनुसार जातक के जीवन में अनेक कष्ट व आपदाओं का उल्लेख हुआ है। निश्चय ही ग्रहों की अपनी स्थिति, अंशकलादि के प्रभाव के फलस्वरूप इन सबमें परिवर्तन होता है, यह संकट आते भी हैं, कुछ नहीं भी आते, इनके बारे में विशद् रूप से विचार करने के लिए अन्य ग्रह दशा का भी अध्ययन करना चाहिए। यदि ग्रहों का बल नगण्य हो तो यही सामान्य फल होते हैं।

इसी प्रकार उपर्युक्त बातों से– (1) चन्द्र राशि फल, (2) चन्द्रमा से ग्रहों की स्थिति का फल, (3) राशिस्थ ग्रहों के प्रभाव, (4) भावेशों की अन्य स्थानों में स्थिति-फल, (5) ग्रह योग फल, (6) दृष्टि योग फल का भी तुलनात्मक अध्ययन करके निष्कर्ष निकालने चाहिए जैसा कि आगे अंकित है–

इस जातक की चन्द्र राशि मिथुन है, अतः जातक की राशि मिथुन इस राशि में जन्मानुसार इस जातक को अपनी मीठी वाणी से संसार को मोह लेने वाला होना चाहिए। यह जातक अपनी कमनीय आँखों से स्त्रियों को मोह लेने में समर्थ होता है तथा सुन्दरियों के साथ रमण सुख प्राप्त करता है। यह गन्धर्व विद्या में निपुण और कीर्ति प्राप्त करने वाला, महाभाग्यवान धनी होता है। इसे काम रोग की पीड़ा होती है।

इस जातक की जन्म कुण्डली में सूर्य, चन्द्रमा से ग्यारहवें भाव में है, अतः यह जातक राज्य में गौरव प्राप्त करने वाला, धनी एवं अनेक विषयों का ज्ञाता, लोक में विख्यात तथा कुल में श्रेष्ठ होता है।

इस जातक की जन्म कुण्डली में मंगल, चन्द्रमा से आठवें भाव में है, अतः यह जातक जीव घाती, पशु-पक्षियों का वध करने वाला, पापकर्म में रत, शीलहीन तथा सत्याचरण से दूर रहता है।

इस जातक की जन्म कुण्डली में बुध, चन्द्रमा से ग्यारहवें भाव में है, अतः यह व्यक्ति को पूरी तरह से लाभ प्राप्त कराने वाला होता है। इसका भाग्योदय पत्नी के प्राप्त करने के बाद होता है।

इस जातक की जन्म कुण्डली में गुरु, चन्द्रमा से बारहवें भाव में है, अतः यह व्यक्ति अपने कुटुम्बीजनों से विरोध रखने वाला होकर शत्रुओं को सुखी रखता है।

इस जातक की जन्म कुण्डली में शुक्र, चन्द्रमा से ग्यारहवें भाव में है, अतः यह व्यक्ति शत्रुओं से भय प्राप्त नहीं करता है। इस रोग क्लेश भी नहीं सताते हैं। यह दीघार्यु होता है तथा इसे धन का अभाव नहीं रहता है।

इस जातक की जन्म कुण्डली में शनि, चन्द्रमा से ग्यारहवें भाव में है। अतः यह व्यक्ति अनेकों पशुओं का स्वामी होता है। इसकी आयु लम्बी होती है तथा यह सुखी रहता है।

इस जातक की जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से चौथे स्थान में राहु तथा दसवें स्थान में केतु होने के कारण, यह जातक धनी होते हुए भी सुख प्राप्त नहीं कर पाता है। यह क्लेश में रहता है। इसके पास सुजनों का निवास होता है, परन्तु इसके कष्ट में वह भी इसकी सहायता नहीं कर पाते हैं।

फल विवेचन—चन्द्र कुण्डली (चन्द्रमा से ग्रहों की स्थिति) के अनुसार जब हम उपर्युक्त बातों पर विचार करते हैं तो देखते हैं कि चन्द्रमा से मंगल का सम्बन्ध अच्छी स्थिति का परिचायक नहीं है। इसके अतिरिक्त बुध की स्थिति के अनुसार जातक का भाग्योदय विवाह के बाद, गुरु की स्थिति के अनुसार कुटुम्त्रियों का विरोधी तथा शनि की स्थिति के अनुसार पशुओं का पालने वाला और राहु-केतु के प्रभाव से यह धनी होते हुए भी दुःखी रहने वाला तथा कष्टों में भी सुजनों से कोई सहायता न मिलना, आगे लग्नानुसार ग्रह स्थिति व भावेशों की स्थिति से इन फलों की पुष्टि कर लेनी आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक फल प्रति-सम्बन्धित होता है। जो फल बलवान ग्रहों के पारस्परिक मेल से बनते हैं, वही फलीभूत होते हैं, निर्बल ग्रहों के फल बहाने मात्र को प्राप्त होते हैं।

(1) भावस्थ ग्रहों में सूर्य इस जातक की जन्म कुण्डली में छठवें भाव में है, जिसके अनुसार—यह व्यक्ति, शत्रुओं के लिए बहुत प्रबल, विपत्तिग्रस्त, मित्र का धन व्यय करके भी रक्षा करने वाला, परदेश गमन करने पर दुष्टों द्वारा ठगा या लूटा जाना, मामा के लिए भारी, चौपायों से हानि प्राप्त करने वाला, विख्यात, सुखी व धनी, योगी, सुबुद्धिमान, अनेक लोगों का पोषण करने से सुखी, उत्तम रूप, विलासी, शत्रुजयी, सत्कर्मों से लोक पूज्य होता है।

(2) चन्द्रमा इस जातक की जन्म कुण्डली में आठवें भाव में है, जो इस जातक को चिन्ता युक्त, उद्विग्न, रोगी, दुर्बल शरीरी, राजा और चोरों से भयभीत होने पर भी युद्ध के लिए उत्सुक, दानी, विनोदशील और विद्वान बनाता है। चूँकि इस जातक का जन्म शुक्ल पक्ष की रात्रि का है, अतः शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा इसकी रक्षा माता के समान करता है। स्त्री के कारण यह जातक बन्धुओं का त्याग करता है, तथा इसकी सम्पत्ति का नाश 44वें वर्ष में बहुत होता है।

टिप्पणी—अष्टम भाव में चन्द्रमा एक अशुभ योग बनाता है, किन्तु यह अशुभ योग इसका जन्म शुक्ल पक्ष की रात्रि में होने के कारण शुभ में बदल जाता है, अतः जातक इस शुभ योग को भोगेगा।

(3) इस जातक की जन्म कुण्डली में मंगल तीसरे भाव में है। तीसरे भाव में मंगल के होने से जातक अपने साहस और भुजबल से बलवान होता है। उसका अपना ही उद्यम व अध्यवसाय उसे लक्ष्मी प्रदान करता है। यह भाई के लिए कष्टकारक होता है। धार्मिक प्रवृत्ति का होता है, जिससे वह अपने यहाँ यज्ञ, अनुष्ठान आदि कराता है। यह राजा का कृपा पात्र होता है, यह व्यक्ति शत्रुओं को भी कष्टदायी, छोटे भाई को नष्ट करने वाला होता है, वेश्याओं और पराई स्त्रियों से रति सुख प्राप्त करता है तथा अपने धैर्य व पराक्रम से लोक में सम्मान प्राप्त करता है।

(4) बुध की स्थिति भी इस जातक के लिए शुभ है। उसके छठे भाव में होने से यह जातक लोगों के साथ विरोध रखता है, शत्रुओं को पूरी तरह प्रतिरोध देता है, संन्यासियों का भक्त होता है। बन्धु-बान्धवों के साथ सुखी नहीं रहता है, यह तार्किक, शत्रुवान गुणी, परन्तु निष्ठुर होता है। यह आप्तों का विरोधी, ईर्ष्यालु, कामुक, किन्तु विद्वान होता है। यह दांभिक, बहुश्रुत तथा लेखक होता है, परन्तु इसकी शिक्षा में विघ्न होता है।

(5) गुरु इस जातक के जन्मांग चक्र में सातवें भाव में स्थित है, जिसके अनुसार यह व्यक्ति शीघ्र परम उच्च स्थान पर अधिष्ठित होता है। इसे राज्य से पूरा धन, सम्मान तथा स्त्रियों से पूरा रति सुख प्राप्त होता है। अपने पिता की अपेक्षा गुणों में अधिक श्रेष्ठ होता है। यह चित्र कर्मा, विचित्र कार्य करने वाला होता है। इसकी पत्नी गुणवती तथा पुत्रवती होती है। यह स्त्री के माध्यम से बहुत धन प्राप्त करता है। अपने जीवन के 34वें वर्ष में बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। पिता तथा गुरुजनों से इस व्यक्ति को विशेष प्रेम नहीं होता है।

(6) शुक्र इस जातक की जन्म कुण्डली में छठवें भाव में है, जिसके कारण यह व्यक्ति शत्रुओं से त्रस्त रहता है, इसके शत्रु कभी समाप्त नहीं होते।

टिप्पणी—इसके अतिरिक्त शुक्र अन्य प्रकार के भी अशुभ फल देता है, परन्तु भृगुसूत्रानुसार यह शुक्र जातक को सन्तान से युक्त करता है, शत्रुओं को नष्ट करता है, अपने जाति बन्धुओं का पोषक होता है। यह अपने धन को अनुचित रूप से खर्च करने वाला होता है, साथ ही कपटी और रोगी होता है।

(7) इस जातक के जन्मांग चक्र में शनि भी छठे स्थान में है, जिसके अनुसार यह

न चोर से भयभीत होता है, न राजा से, न इसे शत्रु ही भयभीत कर सकते हैं। यह जातक महाबली होता है। यह जातक कभी कुकर्म नहीं करता है, न किसी को सताता है, न अपराध वृत्ति से धन प्राप्त करता है, न करने देता है। यह निडर, शत्रु संतापी तथा पशुओं से लाभान्वित होता है, यह साहित्यानुरागी भी होता है। भृगुसूत्र के अनुसार यह जातक धन-धान्य से समृद्ध होता है, इसके शत्रु कम होते हैं तथा स्वजातीय लोग भी कम होते हैं।

(8/9) इस जातक के राहु ग्यारहवें भाव में हैं, जिसके कारण इसे म्लेच्छों से धन प्राप्त होना चाहिए। इसे अपने ही देश में किसी वस्तु का अभाव नहीं होना चाहिए, अतः परदेश जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। यह दुरभिसन्धि करने वाले धूर्तों का मित्र होना चाहिए। इसके पास ठगी का धन भी आना चाहिए। अन्य मतानुसार इस जातक को विपुल धन-लाभ होना चाहिए, राज से मान व सुख प्राप्त होना चाहिए और यह सफल मनोरथ होना चाहिए। भृगुसूत्रानुसार इस व्यक्ति को धन-धान्य से समृद्धि, स्वस्थ, ऐश्वर्यवान, स्त्री से सुख युक्त, नीच जाति के लोगों से लाभ प्राप्त करने वाला होना चाहिए।

सारांश–उपर्युक्त प्रकार से ग्रहों का भावों में होना भी जातक को ऐश्वर्यवान, धनवान, सुखी और पुत्र-पौत्रों से युक्त लम्बी आयु प्रदान करता है। शत्रुओं से कोई भय नहीं होता। गुणी होते हुए अन्य गुणवानों को यह अवसर देता है, साहित्य व काव्य का प्रेमी होता है। सभी ग्रहों के द्वारा जातक को संवत्सरादि तथा चन्द्र लग्न द्वारा दिये गए फल की पुष्टि होती है, अतः जातक की श्रेष्ठता में संदेह नहीं है।

इसके अतिरिक्त अब हमें और विशद् रूप से ग्रहों की स्थिति की दूसरे दृष्टिकोण से परीक्षा करनी चाहिए। प्रत्येक ग्रह किसी-न-किसी भाव का अधिपति होता है, इस जन्मांग चक्र में ग्रह निम्नलिखित प्रकार भावेश हैं–

(1) **सूर्य**–दशम भाव का स्वामी होकर छठे भाव में है।

(2) **चन्द्र**–नवम भाव का स्वामी होकर अष्टम भाव में है।

(3) **मंगल**–छठे व लग्न भाव का स्वामी होकर तीसरे भाव में है।

(4) **बुध**–आठवें व ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर छठे भाव मे है।

(5) **गुरु**–द्वितीय व पंचम भाव का स्वामी होकर सातवें भाव में है।

(6) **शुक्र**–सातवें व बारहवें भाव का स्वामी होकर छठवे भाव में हैं।

(7) **शनि**–तीसरे व चौथे भाव का स्वामी होकर छठवें भाव में हैं।

ग्रहों की इस स्थिति के अनुसार उनके फलाफल यहाँ दिये जा रहे हैं–

(1) **सूर्य**–जब दशम भाव का स्वामी छठवें में अधिष्ठित होता है तो इसे शत्रुओं का भय रहता है। इसे कलह और झगड़ा करने में आनन्द आता है। यह कृपण होता है। इसे दयाभाव से रहित होना चाहिए तथा इसे कोई रोग नहीं होना चाहिए। यह पिता के सुख को प्राप्त नहीं करता है। यह बहुत चतुर होता है, परन्तु चतुराई से भी धनी नहीं हो पाता।

(2) **चन्द्र**–नवम भाव का स्वामी चन्द्रमा है, वह आठवें स्थान में स्थित है। जब नवम भाव का स्वामी अष्टम में होता है तो जातक के विचारों को विकृत करता है। यह

जातक अपने गृह और बन्धुओं से रहित जीवन व्यतीत करता है। अच्छे कर्मों को न करके यह अपने जीवन की सफलता दुष्कर्मों में समझता है। यह जातक भाग्य का हीन होता है, इसे कष्ट उठाने पड़ते हैं। यह अपने छोटे भाइयों से अपनी बुद्धि-बल से सुख पा लेता है, परन्तु बड़े भाई का सुख नहीं पाता, यह सद्कार्यों को करके भी उल्टा फल पाता है।

(3) **मंगल**–लग्नेश है तथा छठवें भाव का भी स्वामी है। यह तीसरे भाव में स्थित है–

(क) लग्नेश जब तीसरे भाव में होता है तो जातक की उत्तम मित्रों से युक्त करता है, बन्धु-बान्धवों के साथ प्रसन्न रहने वाला बनाता है, धर्माचरण में रत दाता, सिंह के समान पराक्रमी, सम्पत्ति से युक्त दो पत्नियों का सुख देता है।

(ख) षष्ठेश जब तीसरे भाव में होता है तो जातक लोगों को कष्ट पहुँचाने वाला, नीचता युक्त आचरण करने वाला, लड़ाई-झगड़े करने वाला, क्रोधी, पराक्रमहीन तथा सेवकों से अवमान्यता प्राप्त करने वाला होता है। इसका इसके भाई से साथ शत्रुवत् व्यवहार होना चाहिए।

(4) **बुध**–आठवें व ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर छठवें स्थान में है।

(क) जब अष्टमेश छठवें भाव में होता है तो वह जातक को राजा का विरोधी मानता है। रोगी, क्रोधी, भयभीत, कायर और कष्ट से युक्त करता है। अन्य मतानुसार यह जातक अपने शत्रुओं को नीचा दिखाने में समर्थ होता है। इसे बालपन में सर्प तथा जल से भय होता है।

(ख) आयेश (ग्यारहवें भाव का स्वामी) जब छठे स्थान में होता है तो यह दीर्घ रोगी होता है। इसे शत्रु दुःख देते हैं। यह दूर देश में रहकर जीविका प्राप्त करता है तथा इसकी मृत्यु परदेश में किसी चोर के द्वारा भी हो सकती है।

(5) **गुरु**–द्वितीय व पंचम भाव का स्वामी होकर सातवें स्थान में है।

(क) जब द्वितीयेश सातवें भाव में होता है तो वह जातक को सुशीला स्त्री का पति बनाता है। यह सौभाग्यवती तथा धन का संग्रह करने वाली, सुखी होती है। यह जातक परस्त्रीगामी होता है तथा लोगों को औषधि देने वाला वैद्य होता है।

(ख) जब पंचम भाव का स्वामी सातवें भाव में होता है तो यह जातक सर्वत्र सम्मान पाता है, सभी धर्मों में समभाव रखकर प्रेम करता है, पुत्र-पौत्रादि के सुख से युक्त होता है तथा परोपकार में सुख प्राप्त करता है।

(6) **शुक्र**–सातवें व बारहवें स्थान का स्वामी होकर छठवें भाव में है।

(क) जब सातवें भाव का स्वामी छठे स्थान में होता है तो यह जातक स्त्री से विरोध रखने वाला होता है। उसकी स्त्री रोगिणी होती है। स्त्री संग से रहित अन्य स्त्रियों का प्रेमी होता है। इसके मरण का योग भी षष्ठेश-सप्तमेश के दु:सम्बन्ध से होता है।

(ख) जब बारहवें भाव का स्वामी छठवे भाव में होता है तो यह जातक कृपण होता है, इसे बालारिष्ट भी हो सकता है। यह अपने आँखों का रोगी और नेत्रहीन भी हो सकता है।

ही स्वजनों का शत्रु होता है, क्रोधी और पापी होता है। यह अपने आप ही अपने कार्यों को बिगाड़ लेता है। इसके सम्बन्ध परस्त्रियों से होते हैं।

(7) **शनि**—तीसरे व चौथे स्थान का स्वामी होकर छठवें भाव में स्थित है।

(क) जब तीसरे भाव का स्वामी छठवें भाव में होता है तो वह व्यक्ति बन्धुओं का विरोधी होता है, उसकी आँखों में रोग होता है। वह भूमि, उपार्जन करता है। यह जातक भाई का शत्रु तथा मामा से भी शत्रुता करने वाला, परन्तु मामी के प्रति आकृष्ट होता है।

(ख) जब चौथे भाव का स्वामी छठवें स्थान में होता है, वह माता के धन का नाश करने वाला होता है, पिता का छिद्रान्वेशी और धन संचय करने वाला होता है। यह क्रोधी, चोर तथा व्याभिचारी होता है। इसका हृदय स्वेच्छाचारी तथा दुष्ट भावनाओं वाला होता है।

व्याख्या—भावेशों की स्थिति के अनुसार उपर्युक्त फलों को अंकित किया गया है, जिन्हें देखने से ज्ञात होता है कि ग्रहों की स्थिति का राशियों में उनकी स्थिति के अनुसार जो फल लिखा गया है, उससे कहीं-कहीं वैषम्य है, अतः वास्तविक निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए दोनों की सम्मिलित बातों को देखना होगा तथा सभी ग्रहों की राशि व भावेशों की भाव स्थिति के पूरे फल का उनके बली या निर्बली होने के अनुसार निष्कर्ष निकालना होगा, क्योंकि बली भावेशों का फल निर्बल ग्रहों की राशि स्थिति तथा उनके भावेश रूप फल को दबा देता है। यही बात ग्रहों की युति व उनकी दृष्टि के फल पर भी लागू होती है।

चतुर्ग्रह योग—इस जन्म कुण्डली में चार ग्रह सूर्य, बुध, शुक्र व शनि की एक राशि में (एक भाव में) युति हुई है। इस युति का फल निम्नलिखित प्रकार है—

इस प्रकार की युति जिस जातक की कुण्डली में होती है, वह अनेक मित्रों से शोभा पाता है। इसका हृदय पवित्र विचारों से युक्त होता है, किन्तु यह जातक बिना इस बात का ध्यान दिये कि बात कड़वी है या मीठी, स्पष्टवादी होता है। यह स्वरूपवान, ज्ञानी तथा सुखी होता है।

इस जन्म कुण्डली में निम्नलिखित पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध हैं—

(1) शनि की दृष्टि अपने से तीसरे स्थान में स्थित मिथुन राशि स्थित चन्द्रमा पर।
(2) शनि की दृष्टि अपने से दसवें स्थान में स्थित मकर राशि स्थित मंगल पर।
(3) मंगल की दृष्टि अपने से चौथे स्थान में स्थित मेष राशि स्थित शनि पर।
(4) मंगल की दृष्टि अपने से चौथे स्थान में स्थित मेष राशि स्थित बुध पर।
(5) मंगल की दृष्टि अपने से चौथे स्थान में स्थित मेष राशि स्थित शुक्र पर।
(6) मंगल की दृष्टि अपने से चौथे स्थान में स्थित मेष राशि स्थित शुक्र पर।

(1) **शनि का मिथुन राशि स्थित चन्द्र पर दृष्टि फल**—इस दृष्टि योग में जन्म लेने वाला जातक धन वाहनादि, स्त्री-पुत्र के सुख से हीन होता है।

(2) **शनि का मकर राशि स्थित मंगल पर दृष्टि फल**—इस दृष्टि योग में जन्म लेने वाला जातक राजा से धन प्राप्त करता है, उसे स्त्रियों से विरोध होता है। वह बहुत बुद्धिमान, अनेक विषयों का ज्ञानी, अति बुद्धिमान, कष्टयुक्त व युद्ध से प्रसन्न रहने वाला होता है।

(3) **मंगल की मेष राशि स्थित शनि पर दृष्टि फल**—यह जातक युद्ध विद्या में निपुण होता है। बहुत बोलने वाला, अत्यन्त प्रसन्नचित्त तथा ऐश्वर्यवान होता है।

(4) **मंगल की मेष राशि स्थित बुध पर दृष्टि फल**—यह जातक का प्रिय पात्र होता है। उसके पास धन का अभाव नहीं होता है। वह पराक्रम व वीरता से युक्त अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। किसी तरह से गलत बात या व्यवहार को सहन न करने वाला होता है। आवश्यक होने पर कलह से भी पीछे नहीं हटता। इसे सदैव कुछ-न-कुछ खाने की इच्छा बनी रहती है।

(5) **मंगल की मेष राशि स्थित शुक्र पर दृष्टि फल**—यह जातक धनी मानी होने से वंचित रहता है, वह दीन तथा विशेष रूप से मलिन रहता है।

(6) **मंगल की मेष राशि स्थित सूर्य पर दृष्टि फल**—यह जातक क्रूर, संग्रामप्रिय होता है, इसके नेत्र लाल तथा क्रोधी व चरण भी रक्तिभ होते हैं। वह बहुत बलवान होता है।

टिप्पणी—हमने इस कुण्डली पर संवत्सरादि के अनुसार जन्म लेने के फलों को देखा, लग्न फल का भी विवेचन किया, जिसके अनुसार जातक जैसा होना चाहिए, वह पहले लिखा जा चुका है। चन्द्र राशि फल व चन्द्रमा से ग्रहों की स्थिति के अनुसार जो फल है, उसके अनुसार भी जो जातक के विषय में स्पष्ट ज्ञात होता है, वह पिछले निष्कर्ष की पुनः पुष्टि करता है—कुछ फल; जैसे—**चन्द्र-मंगल सम्बन्ध, चन्द्र-गुरु सम्बन्ध, शनि व चन्द्र-राहु सम्बन्ध**—कुछ अशुभ व कुछ शुभ बातों की ओर भी संकेत करते हैं। इसी प्रकार विभिन्न भावों में स्थित ग्रहों का फल भी शुभ तथा अशुभ फलों का मिश्रण है। परन्तु अशुभ या शुभ योगों का निराकरण अन्य योगों द्वारा सम्भाव्य होता है।

इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान रखने की बात है कि दृष्टि, युति और ग्रहों की स्थिति आदि दोनों में से कौन प्रबल हो सकता हो, वह ग्रहों के बलाबल और अंशाधारण पर आश्रित होता है, क्योंकि प्रबल दृष्टि में कुण्डली से जातक का जो मिला-जुला अस्पष्ट-सा स्वरूप, स्वभाव तथा भूत, भविष्य, वर्तमान प्रकट होता है, उसमें से उपर्युक्त बातों का स्पष्टतम चित्र ग्रहों की बलाबल स्थिति से उनकी आधारभूत स्थिति का सामंजस्य करके प्राप्त करना होता है। उनकी आधारभूत स्थिति के विरोधाभासी फलों में से जीवन में वास्तविक रूप से आकार ग्रहण करने वाले फलों को ग्रहों के बलाबल को जानकर ही चयन करना होता है। ऐसे फल जो ग्रहों की स्थिति-दृष्टि-युति आदि द्वारा सम्भाव्य माने गये हैं, वह यदि ग्रह निर्बल हैं तो उनके फल जातक के भावों, विचारों, ऊहापोह या स्वप्नों या परिकल्पनाओं तक सीमित होकर रह जाते हैं।

अतः इस जातक के विषय में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—

(1) **स्वास्थ्य**—यह जातक स्वस्थ, स्वरूपवान और निरोगी होना चाहिए।

(2) **धन**—इस जातक के पास धन का अभाव नहीं होना चाहिए।

(3) **मित्र, भाई, बन्धु**—इस जातक के मित्र अच्छे होने चाहिए। भाइयों का सुख नहीं मिलना चाहिए।

(4) **माता सुख**—इसे माता का सुख नहीं प्राप्त होना चाहिए।

(5) **विद्या बुद्धि**—इसकी बुद्धि तीव्र और कार्य कुशल, व्यवहार में उत्तम होनी चाहिए। पुत्रादि संतान सुख अच्छा होना चाहिए।

(6) **शत्रु रोगादि**—इसका स्वास्थ्य ठीक होना चाहिए। इसे रोगों से रहित रहना चाहिए। इसके शत्रु इससे भयभीत रहने चाहिए। यह स्वतन्त्र विचार वाला स्वच्छन्द व्यक्ति होना चाहिए। साहसी व क्रोधी होना चाहिए। शत्रुओं से इसको कभी-कभी परेशानी भी होनी चाहिए।

(7) **कलत्र**—इसे सुख होना चाहिए। इसकी पत्नी सदाचारिणी, परिवार की पोषक होनी चाहिए।

(8) **आयु**—इसकी आयु दीर्घ होनी चाहिए।

(9) **भाग्य**—यह सौभाग्यवान, धार्मिक विचारों का गुण ग्राहक, धर्माचरण करने वाला होना चाहिए।

(10) **कर्म**—इसको लोक में सम्मान व यश मिलना चाहिए। इसे दवा बाँटने वाला वैद्य होना चाहिए। (संकेत है कि इसे राज्य से मान-सम्मान व प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। आजकल राजा नहीं है, लोकतन्त्र है, अत: लोकतन्त्र में मान्यता को ही राजा से मान-सम्मान मान लेना उचित होगा)

(11) **आय**—इसको नीची स्थिति के लोगों से, म्लेच्छों से धन लाभ होना उत्तम है। निरन्तर आय होनी चाहिए। धन का प्रवाह कम नहीं होना चाहिए।

(12) इसका व्यय सद्कार्यों में होना चाहिए।

टिप्पणी—जहाँ-जहाँ अशुभ फलों को कहा गया है, उन्हें देखने में मालूम होता है कि इस जातक को वह भी प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन कहीं पर शुभ-अशुभ फलों के बारे में दैवज्ञों में मतान्तर है, कहीं पर जो अशुभ फल अंकित है, वह यहाँ स्थूल रूप में ही निर्दिष्ट किए हैं, जिनका निराकरण अन्य ग्रह योग द्वारा हो जाता है, परन्तु जन्म कुण्डली का सूक्ष्म विश्लेषण करके ही उनका पूर्ण रूप से स्पष्ट निष्कर्ष प्राप्त करना उत्तम होता है। बिना ग्रहों के बलाबल का अध्ययन किए अशुभ योगों के बारे में अंकित निष्कर्ष नहीं कहना चाहिए।

श्री सुरेश चन्द्र गोयल (उदाहरण 2)

इस जातक का जन्म आगरा में दिनांक 20 अगस्त 1941 ईसवी, तदनुसार विलम्ब नामक 32 वें संवत्सर में भाद्रपद कृष्णा 13 बुधवार सम्वत् 1995, शकाब्द 1893, पुनर्वसु नक्षत्र, सिद्ध योग, गर करण में 13 घड़ी 35 पल पर (दिन में 11 बजे) तुला लग्न में हुआ था। तत्कालीन ग्रह स्थिति के अनुसार जन्म कुण्डली निम्नांकित है–



जातक के उपर्युक्त शुभाशुभ चक्र के अनुसार जो बातें स्पष्ट होती हैं, उन्हें यहाँ दिया जा रहा है–

(1) कि इस जातक का परिवार बड़ा होना चाहिए। बहुत मित्रों से युक्त तथा सबका प्रिय, सदा हर्षित, सुन्दर प्रफुल्लित, मृदु वाणी से युक्त, शीलवान यह जातक व्यर्थ की बातें करने पर भी सबका प्रिय होना चाहिए।

(2) कि यह जातक जन्म से ही अपने गृह में निवास करने वाला होना चाहिए। धनी होना चाहिए।

(3) कि यह जातक परोपकारी, दानी और उदार, साहसी, अपने कार्य में समर्थ महत्वाकांक्षी होना चाहिए। इसको नौकर-चाकरों की कमी नहीं होनी चाहिए।

(4) कि यह जातक अपने घर में विशेष आसक्ति नहीं रखता। भूमि, धन-धान्य से व अपने ग्रह में रहने से सुखी होता है। इसके पास सवारी होती है। उत्तम सुखों का भोगी होता है।

क्रमांक	नाम संवत्सरादि (जन्म समय)	अनुकूल-शुभ-लाभकर अच्छा	प्रतिकूल-अशुभ-अलाभकर बुरा
1.	तारण संवत्सर	सबका प्रिय, धर्म को मानने वाला, राजा से आदरणीय।	
2.	सप्तम युग (31वें से 35वें संवत्सर तक)	बहुत मित्रों से युक्त, व्यापार में चतुर।	कुटिल बुद्धि, कामातुर।
3.	याम्यायन (दक्षिणायन)		असत्यवादी, प्रपञ्ची, मायावी, व्याधिग्रस्त तथा अधार्मिक।
4.	वर्षा ऋतु	गुणी, भोगी, राजमान्य, जितेन्द्रिय, चतुर, अपने प्रयोजन में केन्द्रित।	
5.	भाद्रपद	सदाहर्षित, प्रफुल्लित, मृदुल वाणी से युक्त, शीलवान, पुत्रवान।	व्यर्थ की बातें करने वाला।
6.	कृष्ण पक्ष	बड़े परिवार वाला	निष्ठुर, कष्ट देने वाला, वचन बोलने वाला, स्त्रियों के प्रति द्वेषी, बुद्धिहीन, पराश्रित।
7.	त्रियोदशी	महासिद्ध पुरुष, महापण्डित, ज्ञानी इन्द्रियजित, परोपकारी, शास्त्रों का निरन्तर पाठ करने वाला।	
8.	जयातिथि	राजमान्य, पुत्र-पौत्रादि से उसका घर पूर्ण रहता है। शान्त, दीर्घायु और महात्वांकांक्षी होता है।	
9.	बुधवार	लेखन कार्य से जीविका चलाने वाला, वाणी का मधुर, पण्डित, बुद्धिमान, सौन्दर्य और सम्पत्तिशाली, आयु 64 वर्ष।	8वें मास व 8वें वर्ष में कष्ट पाता है।
10.	दिवा	अनेक पुत्रों से युक्त, बहुत मित्रों वाला, भोगों को भोगने वाला, कामातुर वस्त्राभूषणों से युक्त, बुद्धिमान व सुन्दर।	

क्रमांक	नाम संवत्सरादि (जन्म समय)	अनुकूल-शुभ-लाभकर अच्छा	प्रतिकूल-अशुभ-अलाभकर बुरा
11.	पुनर्वसु	सदैव मित्रों से घिरा रहनेवाला, शास्त्रों का अध्ययन करने वाला, आभूषणों से युक्त, दानी और उदार। इसके पास भूमि, धन-धान्य का अभाव नहीं होता।	
12.	सिद्धयोग	बहुत कुशल, उदार चित्त, सुशील, शास्त्रों के अनुकूल चलने वाला, तत्व ज्ञानी, अच्छे आचरण से युक्त, स्वभाव का सुन्दर।	
13.	गर करण	परोपकारी, हर जगह सम्मान पाने वाला, विवेकी, बुद्धिमान, हर कार्य को चतुराई से करने वाला। धैर्य-धीरज से युक्त। शत्रुओं को पराजित करने वाला।	
14.	देवगण	वाणी विलास करने वाला, सुन्दर, सरल, गुणी, दूसरे गुणी लोगों का आदर करने वाला, धनवान।	
15.	मार्जार योनि	वीर, अपने कार्य में समर्थ, मिष्ठान्न खाने वाला, निर्भय।	दुष्ट स्वभाव।

क्रमांक	नाम भाव व ग्रह स्थिति	अनुकूल-शुभ-लाभकर अच्छा	प्रतिकूल-अशुभ-अलाभकर बुरा
1.	तुला लग्न	बुद्धिमान, सुकर्म से जीविका चलाने वाला ज्ञानवान, कलाओं का ज्ञाता, धनी, लोक में मान्य, कफ प्रकृति, राज्य में सम्माननीय, देव पूजक।	(1) पर स्त्री में आसक्त। (2) चौथे व सोलहवें मास में कष्ट। चौथे व सोलहवें वर्ष में जलाघात सम्भव, 21 व 33 वर्ष की आयु में जल से भय, 51वें वर्ष में देव-दोष लगता है। 61वें वर्ष में लघु मृत्यु योग। पूर्णायु 85 वर्ष सम्भव। **स्वर्गवास**—वैशाख शुक्ल पक्ष की तेरहवीं तिथि, शुक्रवार चित्रा नक्षत्र, मध्यान्ह में सम्भव।
2.	चन्द्र राशि कर्क	कार्य कुशल, धनी, वीर, पराक्रमी, धर्मात्मा, विदेश यात्राओं का आनन्द लेने वाला, अच्छे लोगों से मित्रता, अपने अहम् पर आघात लगने पर क्रोधी, कुटिलतापुर्वक शत्रुओं को पराजित करने वाला।	
3.(क)	चन्द्रमा से सूर्य (द्वितीय भाव में)	राज्य में मान्य, बहुत नौकर-चाकरों वाला, धनी तथा यशस्वी।	
(ख)	चन्द्र से मंगल (नवें भाव में)	सम्पत्तिशाली, वृद्धावस्था में संतान से सुखी।	
(ग)	चन्द्र से बुध (दूसरे भाव में)	धन-धान्य से पूर्ण, जन्म से ही अपने ग्रह में निवास करने वाला, बन्धु-बान्धवों से सुखी।	शीत रोग से मृत्यु सम्भव।
(घ)	चन्द्र से गुरु (ग्यारहवें भाव में)	जातक उत्तम सवारी करने वाला, राज्य में मान्य, उत्तम-सुखों को भोगने वाला।	
(ङ)	चन्द्र से शुक्र (तीसरे भाव में)	धनी, म्लेच्छ जातियों से धनागम, देह दुर्बल, परन्तु क्षमतावान।	

क्रमांक	नाम भाव व ग्रह स्थिति	अनुकूल-शुभ-लाभकर अच्छा	प्रतिकूल-अशुभ-अलाभकर बुरा
(च)	चन्द्र से शनि (ग्यारहवें भाव में)	अनेक पशुओं का स्वामी, सुखी, लम्बी आयु।	संतान के कारण दुःख प्राप्त करने वाला।
(छ)	चन्द्र से राहु (तीसरे भाव में) (केतु नवें भाव में)	राज्य के समान सौभाग्य देने वाला, धन-धान्य से पूर्ण।	
4.(क)	सूर्य (ग्यारहवें भाव में)	राज्य से धन प्राप्ति, अधिकारी, प्रतापी शत्रुओं को जीतने वाला, गीत शास्त्र का ज्ञाता, गायन विद्या से प्रेम।	
(ख)	चन्द्रमा (दसवें भाव में)	श्वसुर गृह से धन प्राप्त करने वाला, धर्मात्मा, राज्य-सुखी, बाल्यावस्था में अल्प सुख, यौवनावस्था पूरी तरह सुखी, रमणियों से अत्यन्त सुखी, सर्वत्र सफल।	बड़े पुत्र से सम्बन्ध मधुर नहीं रहते हैं।
(ग)	मंगल (छठवें भाव में)	पराक्रमी, साहसी, शक्तिशाली, मनीषी, विचार बुद्धि से सम्पन्न, अच्छे लोगों से मित्रता, शरीर से पुष्ट, सदैव धनी।	भूख अधिक, क्रोधी, स्त्रियों की ओर सदैव आकृष्ट, कामुक।
(घ)	बुध (ग्यारहवें भाव में)	अत्यन्त द्रव्य लाभ करने वाला, अतिगुणी, स्त्रियों का प्रिय, धनी, भोगी, दीर्घायु, कुल में हितैषी, सुन्दर, श्याम, वर्ण।	भूख कम लगती है।
(ङ)	गुरु (आठवें भाव में)	कुल परिपाटी पर चलने वाला।	पिता के घर में अधिक समय न टिकने वाला, सदैव रोगी, विवेक, विनम्रता से हीन, उद्योगहीन, आलसी, नीच वर्ग की स्त्री का भोग करने वाला, अल्पायु, नीच कार्यों का कर्ता।

क्रमांक	नाम भाव व ग्रह स्थिति	अनुकूल-शुभ-लाभकर अच्छा	प्रतिकूल-अशुभ-अलाभकर बुरा
(च)	शुक्र (बाहरवें भाव में)		विशेष खर्च करने वाला, काम क्रीडा, रति विलास में डूबा रहने वाला, सद्भावना से हीन, विवादी, झूठा, निर्दयी, स्थूल शरीर, संसारी, कामुक, दुराचारी।
(छ)	शनि (ग्यारहवें भाव में)	धनवान, दीर्घायु, शूर स्थिर बुद्धि, नाना प्रकार के भोगों को भोगने वाला, दास-दासियों से युक्त, दीर्घायु।	सैकड़ों मनुष्यों के प्रपंचों को भी अपनी बुद्धि से काट देने वाला।
(ज)	राहु (बारहवें भाव में) केतु (छठे भाव में)		दीन, अपने कार्यों में असफल, बुरे कार्यों में धन व्यय करने वाला, उद्योग का पूरा फल प्राप्त नहीं होता, प्रपंच बुद्धि।

(5) कि यह जातक–

(क) ज्ञानवान, अनेक कलाओं का जानकार और गुणी होता है। गीतशास्त्र का ज्ञाता, संगीत प्रेमी, विचार बुद्धि से इसे सम्पन्न होना चाहिए। सैकड़ों मनुष्यों के प्रपंचों को भी अपनी प्रपंच बुद्धि से काट देता है।

(ख) पुत्र-पौत्रों से युक्त, वृद्धावस्था में पुत्रों का सुख प्राप्त करने वाला होता है।

(6) कि यह जातक शत्रुओं को अपनी बुद्धि से परास्त कर देता है। पराश्रित होने के योग से कहीं सेवा कार्य करता है। राजमान्य होने तथा अधिकारी होने का योग होने से राज्य में अधिकारी होता है। इसे व्याधिग्रस्त होने का योग भी होता है।

(7) कि यह जातक स्त्रियों के प्रति द्वेषी होने पर भी उनको भोगने वाला, रमणियों से अत्यन्त सुखी, उनका प्रिय व भोगी होता है। यह परस्त्री में आसक्त होता है।

(8) कि इस जातक की दीर्घायु होती है। अनेक विदेशी यात्राओं को करने वाला होता है। पिता के घर अधिक समय तक नहीं टिकता है।

(9) कि यह जातक कुल परिपाटी पर चलने वाला, शास्त्रों का अध्ययन करने वाला, धीरज-धर्म से युक्त तत्व ज्ञानी होता है। कभी-कभी बुद्धिहीनता के काम भी करता है।

(10) कि यह जातक अपने कार्यों में समर्थ, स्वयं राजा के समान या राजमान्य होता है। सुकर्म से जीविका चलाने वाला (लेखन कार्य से जीविका प्राप्त होनी चाहिए), व्यापार में कुटिल होने का योग होने के कारण इस जातक को व्यापार भी करना चाहिए।

(11) कि इस जातक के पास धन-धान्य का अभाव नहीं होता, निरन्तर इसको द्रव्य प्राप्त होता है। यह अत्यन्त द्रव्य प्राप्त करता है। म्लेच्छ जातियों से धन पाता है।

(12) कि यह जातक विशेष खर्च करता है, काम-क्रीड़ा, रति-विलास में डूबा रहता है। स्थूल शरीरी, कामुक तथा संसारी होता है।

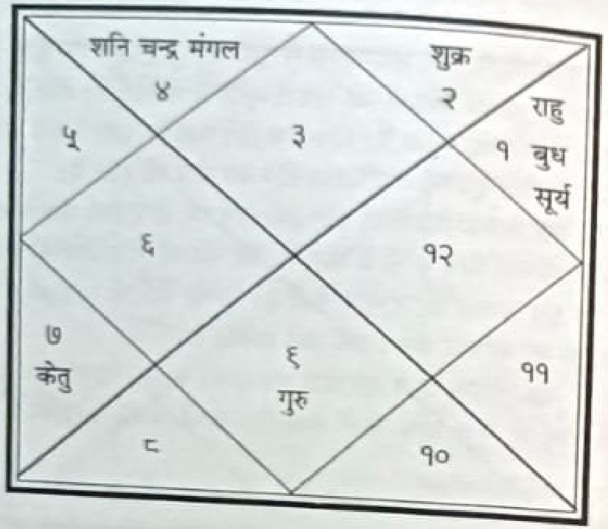
इस जातक की कुण्डली में शुभ योग अधिक है। दुर्योग हैं तो किन्तु उन्हें शुभ योगों ने निरस्त या निष्प्रभ या अत्यन्त महत्वहीन-सा कर दिया है। चूँकि जो ग्रह जिस राशि में है जिनसे दृष्ट है या जिनसे उसका योग सम्बन्ध है (जैसाकि गत पृष्ठों में उल्लेख किया गया है।) उसी अनुसार वह अच्छा या बुरा फल देंगे ही, परन्तु जहाँ निकृष्ट फल या प्रकृति को दबा देने वाले उत्तम फल का योग है, वहाँ पर वह निकृष्ट फल नगण्य ही होगा या केवल विचारों तक सीमित रहकर रह जाना स्वाभाविक है।

इसी बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण और दिया जा रहा है–

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गौड़ (उदाहरण 3)

प्रस्तुत जन्म कुण्डली जिस जातक की है, उसका जन्म विक्रम संवत् 2005, शाके 1870, शुभ संवत्सर, बसन्त ऋतु चैत्र मास, शुक्ल पक्ष तिथि दशमी, रविवार, घटी 53/2,

श्लेषानक्षत्र 28/18 शूल योग 7/26, तैतल करणी 26/3, दिनमान, 31/48 रात्रिमान 28/12, मेषार्क गतांश 0/4/57/53 तत्र श्री भास्करोदयादिष्टम् 8/30 मिथुन लग्नोदये 2/1/11/46 बुलन्दशहर (सहार ग्राम) में हुआ था।



क्रमांक	नाम संवत्सर अनुसार	अनुकूल	प्रतिकूल
1.	शुभ 36वाँ संवत्सर	सौभाग्यवान, दक्ष, कीर्तिवान, धार्मिक प्रजापालक, विद्या-विनय से युक्त, दीर्घजीवी, सम्पत्तिवान, संतोषी।	
2.	आठवाँ युग		पापी होते हुए भी रोगी होने के कारण दुःखी, परहिंसक।
3.	सौम्यवान	धर्म, अर्थ, काम से युक्त, सुन्दर, स्वरूपवान, धनी।	
4.	बसन्त ऋतु	उद्योगी, मनस्वी, तेजस्वी, बहुत कार्य करने वाला, अनेक देश घूमने वाला, सब रसों का ज्ञाता,	
5.	चैत्र मास	सदा हर्षयुक्त, अहंकारी, सुन्दर स्वरूप, लाल नेत्र।	रोग मुक्त स्त्री में आसक्त।
6.	शुक्ल पक्ष	पूर्ण चन्द्र के समान शोभायमान, धनवान, उद्योगी, बुद्धिमान, शास्त्रों का ज्ञाता, कार्यकुशल।	
7.	दशमी	धर्म-अधर्म का ज्ञाता शास्त्राभ्यासी।	स्त्री में आसक्त।
8.	पूर्णातिथि	धन-धान्य से युक्त शास्त्रों का ज्ञाता, सत्यवादी, चित्त का शुद्ध।	
9.	रविवार	पित्त प्रकृति प्रधान—चतुर, तेजस्वी, उत्साही, युद्धप्रिय दानी, आयु 60 वर्ष।	पहले, छठे, 13वें, 22वें माह में कष्ट।
10.	दिवा जन्म	अनेक पुत्र प्राप्त करने वाला, मित्रों से युक्त, अनेक प्रकार के भोगों को भोगने वाला, स्वरूपवान, सुन्दर।	कामातुर।
11.	अश्लेषा नक्षत्र		व्यर्थ ही देश-परदेश घूमने वाला, धन को नष्ट करने वाला, असाधु प्रवञ्चक, स्त्रियों में आसक्त।
12.	शूलयोग		दरिद्र, रोग से पीड़ा पाता हुआ, कष्ट पाने वाला, सत्कर्म से रहित, विनम्रता रहित, लोक में मान नहीं पाता।

क्रमांक	नाम संवत्सर अनुसार	अनुकूल	प्रतिकूल
13.	तैतल करणी	सुन्दर, सुकुमार, वाणी व विलास, सुन्दर कलाओं में निपुण, निर्मल बुद्धि, चंचल। धैर्यवान।	
14.	राक्षस गण		अल्प ज्ञानी, कठोर, क्रोधी, शील व विनम्रता से हीन, अपने बल का प्रयोग झगड़ा करने में अधिक करता है। स्वभाव का दुष्ट।
15.	मार्जार योनि	वीर, निडर, छद्म रूप से शौर्य दिखाकर शत्रु पर विजय पाने वाला, अपने कार्य करने में समर्थ।	

लग्नादि फल

क्रमांक	लग्नादि फल	अनुकूल	प्रतिकूल
1.	मिथुन लग्न	अपने लोगों का प्रिय, धनी, दाता, परोपकारी, शत्रुओं को जीतने में सफल, गौरवर्ण, सुन्दर वाणी, विनम्रता से युक्त।	कार्यों को करने में बहुत विलम्ब करने वाला, कामी और भोगी, स्त्री से आसक्त, राजा से पीड़ित, छठे मास में कष्ट पाने वाला, छः वर्ष की अवस्था में रोगी, दस वर्ष की आयु में नेत्र पीड़ित, ग्यारहवाँ व अठारहवाँ साल में आघात से आयु समाप्ति का भय, 24वें, 53वें साल में भारी कष्ट, पौष मास कृष्ण पक्ष की अष्टमी, बुध-वार हस्त नक्षत्र को शरीरान्त सम्भव।
2.	कर्क राशि में जन्म	कार्यकुशल, धीर-वीर-पराक्रमी, विदेश यात्राओं का आनन्द लेने वाला। कुटिलतापूर्वक शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ।	
3.	चन्द्र के साथ मंगल		रक्त सम्बन्धी रोगों से पीड़ित, वर्ण रक्ताभ नेत्र लाल रोगी, निर्धन बन्धुओं से रहित, उदासीन, गृहहीन।
	चन्द्र के साथ शनि		धनहीन, भिक्षाटन करने वाला, अपने धर्म का विरोधी, अनेक कार्यों से विद्वेषी।
	चन्द्र से छठवें में गुरु	दीर्घायु।	
	चन्द्र से नवम में बुध		
	चन्द्र से सूर्य	धर्माचरण करने वाला, सत्य वक्ता, अपने बन्धु-बान्धवों से क्लेश पाने वाला।	
	चन्द्र से दसवें भाव में शुक्र	दीर्घायु, माता-पिता का सुख पाने वाला, धनी।	
	चन्द्र से नवम भाव में राहु	बाल्यकाल और यौवनकाल में सुखी, वृद्धावस्था में धनी।	

क्रमांक	लग्नादि	अनुकूल	प्रतिकूल
4.	लग्न से ग्यारहवें भाव में सूर्य	राज्य से धन पाने वाला, अधिकारी, धनाढ्य, शुभ कर्म करने वाला, राज्य में मान्य, कीर्तिमान।	सन्तान हेतु कष्ट।
	ग्यारहवें भाव में बुध	द्रव्य काल करते रहने वाला, आनन्दी विद्वान, धनी, सुशील, सद्‌व्यवहार करने वाला, स्त्रीवल्लभ।	स्त्रियों को प्रिय।
	ग्यारहवें भाव में राहु	नीच लोगों या म्लेच्छों से धन पाने वाला, अपने ही स्थान पर धनी रहता है।	
	बारहवें भाव में शुक्र	वैभवयुक्त व तेजस्वी।	दिन-प्रतिदिन विशेष खर्च करने वाला, रुचि कामवासना में, इसका सद्‌भाव स्थिर नहीं होता।
	दूसरे भाव में चन्द्र	धनी, सुखी, कुटुम्ब से कम मोह रखने वाला, बड़े परिवार वाला, दानी, यशस्वी।	स्त्रियों के साथ विलास रत।
	दूसरे भाव में मंगल	कुटुम्ब का नाश करने वाला, धनी नहीं होने देता, अपने परिवार व धन का सुख नहीं मिलता, सदा सुखी।	परदेशवासी, दूसरों से धन लेने वाला, जुआरी, सहिष्णु, उद्यमी, दुबला-पतला।
	दूसरे भाव में शनि	सुख लाभ की इच्छा से कुटुम्ब को छोड़कर दूर रहने वाला, वहाँ पर सब प्रकार से सुखी।	वाणी का कटु, अप्रासंगिक बातें करने वाला।
	सातवें भाव में गुरु	परम उच्च स्थान पर अधिष्ठित होने वाला, राज्य से पूरा धन व सम्मान प्राप्त विवेकशील, तार्किक, विचित्र कार्य करने वाला, अच्छे मित्रों वाला, विद्वान पतिपरायण स्त्री के माध्यम से धन प्राप्त करने वाला।	स्त्रियों का सुख पाने वाला, गुरुजनों से विशेष प्रेम न मानने वाला।

क्रमांक	नाम संवत्सर	अनुकूल	प्रतिकूल
	लग्नेश ग्यारहवें भाव में	सुखी, चिरंजीवी पुत्रों से युक्त, तेजस्वी, विख्यात, विनम्र, सुशील।	स्त्रियों का प्रिय।
	चतुर्थेश ग्यारह भाव में	धर्मात्मा, परिजन पालक, पिता का भक्त, दीर्घायु-नीरोग।	
	द्वितीयेश द्वितीय भाव में	व्यवसाय द्वारा धनी, कार्यों को उद्योगपूर्वक करने वाला।	सत्याचरण से हटकर चलने वाला। सन्तानहीन।
	षष्ठेश द्वितीय भाव में	उत्तम स्थान में निवास करने वाला, मित्रों से रहित, कुल में श्रेष्ठ, परदेश में रहने वाला।	दुष्ट स्वभाव, धन संग्रही।
	आयेश द्वितीय भाव में	स्वल्पाहारी, प्राप्त सुख से ही सन्तुष्ट, धनवान।	
	अष्टमेश द्वितीय भाव में		अधिक लम्बी आयु का भोग नहीं करता है, शत्रु अधिक होते हैं, अल्प धनी।
	नवमेश द्वितीय भाव में	धार्मिक व्यवहार के कारण विख्यात अच्छे काम करने वाला, पुण्यात्मा, लोक मान्य धनी।	मुखरोगी, कामी।
	दशमेश सप्तम भाव में	अच्छे पुत्रों वाली सुन्दर, गुणवती, पति सेवा में तत्पर स्त्री का स्वामी।	
	सप्तमेश सप्तम भाव में	दीर्घायु, स्त्री का प्रेमी, सुशील, लोक में सम्मान प्राप्त करने वाला।	
	पंचमेश द्वादश भाव में		पुत्रहीन, परदेशवासी, दत्तक पुत्र को रखने वाला।
	द्वादशेश द्वादश भाव में	सम्पत्तिवान, चल-अचल सम्पत्ति का स्वामी, धन संग्रही।	दीर्घायु नहीं होता, न लोक में आदर प्राप्त करता है।
	तृतीयेश एकादश भाव में	उत्तम बन्धुओं से युक्त, राजा का कृपापात्र, आश्रितों का पालनकर्त्ता, भोगी सेवकों से युक्त, व्यापार से लाभार्जन करने वाला।	

टिप्पणी–(1) द्वादश भावों में राशि फल तथा राशियों में ग्रहों की स्थिति का फल, यथानुसार जहाँ इनका उल्लेख किया गया है, वहाँ देखकर समझ लें।

(2) इस कुण्डली में दो ग्रह-युति योग है–शनि, मंगल व चन्द्र की युति (त्रिग्रह युति) तथा सूर्य और बुध (द्विग्रह युति)। इन ग्रहों के युति फल को भी यथास्थान पर देखकर समझें।

■

उपसंहार

पिछले अध्यायों में फलों को देखने पर ज्ञात होगा कि एक ही कुण्डली में एक ग्रह स्थिति के अनुसार एक योग का फल अशुभ है तो दूसरे का शुभ है। इस पर विचार करते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि फल सामान्य है। साधारणतः जो योग ग्रहों की स्थिति दृष्टि या युति के अनुसार (बिना उनके किसी भी बलाबल या विशिष्ट स्थिति में जो होने चाहिए।) होते हैं, उन्हीं को यहाँ बताया गया है। अतः जब एक ही कुण्डली में दो प्रकार के फलों का आरोपण मिलता है तो हमें उनकी विशिष्ट स्थिति की ओर ध्यान देकर फलाफल का विचार करना उपयुक्त होता है। सामान्य योग से विशिष्टतर और उसके पश्चात् विशिष्टतम योगों का फल प्रभावी होता है, जैसे युग और संवत्सर के फलों का उदाहरण दें तो देखेंगे कि इनमें जन्म लेने वालों की सामान्य प्रवृत्तियों और प्रकृति तथा स्वभावादि के सम्बन्ध में एक स्थूल-सा उल्लेख इनसे प्राप्त होता है, किन्तु इनमें से जातक की कैसी प्रवृत्ति या प्रकृति विशिष्ट से विशिष्टतर या विशिष्टतम ग्रह स्थिति के अनुसार होनी चाहिए तदनुसार या कौन-कौन-सा फल विशिष्ट से विशिष्टतर योगों से निर्देशित है, इसको सूक्ष्मता से अध्ययन करके ही निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए। संवत्सर के फल के बाद अयन और ऋतु का, ऋतु के बाद मास का, मास के बाद तिथि आदि के फल होते हैं, जो सामान्य विशिष्ट फल की ओर ले जाते हुए हमें लग्न व जन्म राशि के फलाफल तक पहुँचा देते हैं।

यहाँ तक के फलाफल का सूक्ष्म विश्लेषण करने के बाद जातक के गुण, स्वभाव व प्रवृत्ति और प्रकृति के बारे में जो जानकारी प्राप्त होती है, उसकी पुष्टि जन्मांग चक्र के बारह भावों में स्थित–

(1) राशियों के फलाफल,
(2) भावों में स्थित ग्रहों के फलाफल,
(3) राशियों में स्थित ग्रहों के फलाफल,
(4) भावेशों की स्थित फलाफल,
(5) ग्रह युति का फलाफल,
(6) ग्रह दृष्टि का फलाफल।

से होती है। इससे सूक्ष्म फलादेश पर विचार करने को एक दृढ़ आधार मिल जाता है। दृढ़ आधार ही नहीं, बल्कि हमें जातक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों और प्रकृति और रुचि सम्बन्धी सीमाएँ भी मिलती हैं। विशिष्ट फलादेश की यही धरती और सीमाएँ, उन अनुकूल तथा प्रतिकूल बातों पर विचार करने पर किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है, जो एक ही कुण्डली में एक ग्रह के अनुकूल तथा दूसरे ग्रह के प्रतिकूल फल के होने से भ्रम में

डालती हैं या सौ अनुकूलताओं के बीच एक या दो प्रतिकूल स्थितियों के विषय में और आगे सूक्ष्म अध्ययन करने की उत्सुकता जाग्रत करती है, ताकि देखा जा सके कि उनका निराकरण होता है या नहीं।

किसी एक स्थिति के फलाफल में विद्वानों में मतभेद भी देखने को मिलता है, जैसा कि इस ग्रन्थ में स्थान-स्थान पर अंकित किया गया है। यह ज्योतिष के असत्य होने का प्रमाण नहीं है, बल्कि यह उस ग्रह स्थिति के बारे में और सूक्ष्म अध्ययन करने का संकेत है। यदि अन्य फलों द्वारा अशुभ योग की पुष्टि हो तो हमें निसंकोच एक ही ग्रह स्थिति के शुभ और अशुभ दोनों योगों में से अशुभ फल को ही लेना पड़ेगा।

इसी प्रकार एक फल के अनुसार जब जातक को एक ओर क्रूर बताया जाता है और दूसरी ओर उदार तो उदारता या क्रूरता के पोषक योगों के देखने पर क्रूरता का पोषण होता हो तो यह कहना चाहिए, कि जातक क्रूर होगा, परन्तु उदारता भी इसमें होगी। यह ऐसे ही समझना चाहिए, जैसे कोई डाकू, डाके से प्राप्त धन को दोनों हाथों से दान करें। कोई तस्कर, कुमार्ग से प्राप्त धन से धर्मशाला बनवायें।

इसके अतिरिक्त बहुत से ग्रह योगों के शुभ या अशुभ, अच्छे या बुरे फलाफल जातक के मनोभावों, परिकल्पनाओं, कामनाओं, स्वप्नों आदि में पूर्ण होते हैं। अभिनय द्वारा रंगमंचादि पर या हास-परिहास में भी प्राप्त होते हैं। अत: ज्योतिर्विद को ग्रहों की सूक्ष्म स्थिति का अध्ययन करके फलाफल निर्णय करना चाहिए।

■■

।। इति।।